कुसमा-सलहेस
आ अन्य छओ गोट नाटक

कुणाल

कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक

कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक

(नाटक)

कुणाल

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-88799-77-5

कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक

© कुणाल

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2021

मूल्य : 690.00 रुपए

प्रकाशक

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II

ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

फ़ोन : +91-9871856053

ई-मेल : antika56@gmail.com

वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग

किसुन संकल्प लोक

किसुन कुटीर, सुपौल-852131 (बिहार)

फ़ोन : +91-7004917511

आवरण चित्र : विनय अंबर

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

KUSMA-SALHES AA ANYA CHHAO GOT NATAK
(Collection of Maithili Drama) by Kunal
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 690.00

गाम गाम मे नाटक ('नाच') कर'वला
ज्ञात-अज्ञात लोक आ कलाकार लोकनि आ
'भंगिमा'क विश्वकर्मा जे. ब्रह्मानंद केँ

अनुक्रम

चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा 9
बिदापत 83
कुसमा-सलहेस 131
प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय! 201
विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह 215
प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार 241
प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र 259

चालिस चोर आ गोनू झा
उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा

पहिल मंचन (4-5 अगस्त, 1993, विद्यापति भवन, पटना)क कास्ट

प्रेमलता मिश्र
उमाकान्त
जे. ब्रह्मानंद
एल.आर.एम. 'राजन'
केशव नन्दन
कुमार मनीष अरविंद
मनोज 'मनहर'
अविनाश कुमार मिश्र
अभय कुमार मिश्र
विभूति भूषण झा
रमण आनंद

पहिल मंचनक क्रेडिट

वस्त्राभरण, रूप-सज्जा एवं प्रकाश	: कुमार शैलेन्द्र
मंच एवं सामग्री	: जे. ब्रह्मानंद, केशव नंदन
संगीत	: कुणाल, मनोज 'मनहर'
प्रकाश व्यवस्था	: संजय इलेक्ट्रीकल्स
निर्माण नियंत्रण	: एल.आर.एम. 'राजन', केशव नंदन
प्रचार	: संजीव तमन्ना
सहयोग	: आनंद कुमार, चौ. राजेश राय
सहायक निर्देशक	: कुमार मनीष अरविंद
आलेख परामर्श	: परवेज अख्तर, पं. गोविंद झा, छात्रानंद सिंह झा, विभूति आनंद एवं भंगिमाक प्रदर्शन दल।
आलेख एवं निर्देशन	: कुणाल

पात्र परिचय

पुरुष, धर्मराज, भुनभनादेव, गोनू
स्त्री, गोनूक स्त्री
हरबाह, चित्रगुप्त, बुड़िराज
दुरमतिया, काली, गाय
बरद, सुमरित, तहसीलदार
ढोलकिया, कुबड़ा, द्वारपाल, चारण, बरद
भाँट-3, देबहा, कुजड़ा
बुढ़िया, धनभुखल, महाराजाधिराज
भाँट-1, झामलाल, वृद्ध, रन्नू, बटुक-2
भाँट-2, कुंजन, भोनू, बटुक 3
भाँट-4 कखनो भाँट जकाँ, कखनो पमरिया जकाँ
भाँट-3 अनेक अवसर पर विपटा जकाँ अभिनय करत।
बच्चा (चारि-पाँच बरसक)
(बुड़िराज स केँ फ कहैए। भोनू ज केँ द कहैए। धनभूखल केँ सब वाक्य मे 'जे किने से-कहलकै जे' कहबाक अभ्यास छै।)

पूर्वरंग

(नेपथ्य संगीत। भाँट-3 मंच पर अबैए। लोक केँ देखैए। हड़बड़ाक' खसि पडैए)

भाँट-3 : अरे बाप रे बाप।

(भाँट-1 एवं भाँट-2क हड़बड़ाएल प्रवेश)

दुनू भाँट : की भेल यौ? की भेल?

भाँट-3 : *(दर्शक दिस देखबैत)* ओम्हर देखियौ।

दुनू भाँट : अरे बाप रे बाप।

भाँट-3 : हमरो इएह भेल छल।

भाँट-1 : एतेक रास लोक!
भाँट-2 : सेहो संच-मंच बैसल।
भाँट-3 : सोना सनक अवसर भेटल।
भाँट-1 : कहाँ ओ गाम-घर।
भाँट-2 : जत' अपना सबहक कोनो ने मोजर।
भाँट-3 : लोक सब मे हमरा सबहक कवित सुनबाक इच्छे मरि गेल छै।
भाँट-1 : मुदा एत' तेना नइँ बुझाइए।
भाँट-2 : ई लोकनि ककरो प्रतीक्षा क' रहल छथि।
भाँट-3 : मानि ने लिअ जे हमरे सभक प्रतीक्षा क' रहल छथि।
भाँट-1 : मानि तँ लेब मुदा जँ ओ सब आबि जाए।
भाँट-2 : के सब यौ।
भाँट-1 : जकर ई लोकनि प्रतीक्षा क' रहल छथि।
भाँट-3 : आबि जैत तँ देखल जेतै।
भाँट-1 : सैह विचार।
भाँट-2-3 : सैह विचार।
भाँट-1 : तँ होउ तैयार।
तीनू भाँट : जय हो, एत' बैसल सब गोटेक जय हो।
भाँट-1 : हुनकर माता-पिता के जय।
भाँट-2 : हुनकर धीया-पुता के जय।
भाँट-3 : हुनकर लोक वेद के जय।
भाँट-1 : हुनकर देस-कोस के जय।
भाँट-2 : हुनकर माटि-पानि के जय।
भाँट-3 : हुनकर आनि-कानि के जय।
भाँट-1 : हुनकर खेत-पथारक जय।
भाँट-2 : हुनकर हाल-चाल के जय।
भाँट-3 : हुनकर माल-जाल के जय।
तीनू भाँट : जय हो एत' बैसल सब गोटे के जय।

(लय आ गतिचर्या बदलैए।)

भाँट-1 : अहाँ, सभ गोटे अवतारी।
अहाँ केँ, कोठे पर अटारी
अहाँ केँ, भरल-पूरल बखारी
लागल, धन्य-धान्यक अभारी।

भाँट-2 : अहाँ सब छी बड़का एकबाली
कहियो जेबी हो ने खाली
अहाँ पर किरपा करती काली
कवि केँ दान देबै जँ हाली।

भाँट-3 : *(गौनाइ आरंभ करैए मुदा चुप भ' जाइए।)*

भाँट-1 : की भेल?

भाँट-3 : वायुभृंग!

भाँट-2 : से की?

भाँट-3 : की करब गाबिक'।

भाँट-1 : से किऐ?

भाँट-3 : हमरा लोकनि एत्ते गौलौं! कवित पढ़लौं। कोनो असर पड़लनि हिनका लोकनिक पर!

भाँट-2 : तखन की करब!

भाँट-1 : हमरा लोकनिक विद्या आब बेकार भ' गेलए।

भाँट-2 : हाँ! आब ककरो नीक नइँ लगै छै!

भाँट-3 : मुदा एहि ज्ञान सँ पेट नइँ ने भरत!

भाँट-2 : तँ की करब? हमरा लोकनि केँ आर किछु अबितो तँ नइँ अछि।

भाँट-3 : गीत गोबि क' देखिऐ।

भाँट-1 : अपन सब बला गीत तँ बुझाइए नइँ चलत।

भाँट-3 : अपन बला नइँ! नाच बला!

भाँट-2 : कहिया सीखलौं!

भाँट-3 : से छोड़ू ने! गाउ की नइँ से कहू!

भाँट-1 : देखियौ गाबि क'!

भाँट-3 : *(गाबए लगैए।)* हमरा सन सतबरती बहिना, हमही तँ जग मे गेलियै गे! सास-ससुर सँ बजली टनाटन दियर सँ लजेलिऐ गे!
(नचैत-नचैत थाकि जाइए। हफैए। दर्शक केँ देखि)
कोनो असर नइँ।

भाँट-2 : कोनो असर नइँ!

भाँट-3 : तँ आब की करब?

भाँट-2 : एहन अवसर आ एते लोक फेर भेटए की नइँ भेटए।

भाँट-3 : सोचबाक बात अछि!

भाँट-2 : मुदा जल्दी! लोकक कोनो ठीक नइँ!

भाँट-3 : हँ! लोकक जुटान आ भेड़िया धसान।

भाँट-1 : हँ!

भाँट-2-3 : की हँ!

भाँट-1 : जँ हमरा लोकनि नाटक करी तँ केहन रहतै!

भाँट-2 : नाटक? हम सब कहिया सीखलौं नाटक।

भाँट-3 : अरे! एहि मे सीखबाक की छै! जे रंग-तंग भेटए से लेपि लिअ, जे पुरान-धुरान भेटए से पहिरि लिअ, आ उतरि जाउ मंच पर! **(मुद्रा मे)** तेरी बाँकी अदा! मैं होता हूँ फिदा, आज से अपने चैन को गिरबी रखता हूँ मैं!

भाँट-2 : थम्हू! थम्हू! एना अनेरे नइँ उतरि जाउ!

भाँट-3 : नइँ यो! नाटक करए ले' उतरि जाउ!

भाँट-2 : आ दर्शकक लात-जुता खाउ।

भाँट-1 : तेँ हम सोचि रहल छी जे कोना नाटक करू?

भाँट-3 : एहि मे सोचबाक की छै भाइ जी! पहिने आरंभ तँ करू!

भाँट-1 : मुदा नाटक मे कोन कथा रहत से तँ निश्चित करए पड़त।

भाँट-2 : जरूरे निश्चित करए पड़त!

भाँट-3 : से करैत रहब! पहिने शुरू तँ करू!

भाँट-2 : मुदा केना शुरू करू!

भाँट-3 : से हम कहै छी! **(भाँट सब केँ ठाढ़ करा क' हाथ जोड़बैत अछि। तीनू प्रार्थना के मुद्रा मे ठाढ़ होइए।)**
हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान इनको दीजिए! शीघ्र सारे संकटों को, दूर मुझसे कीजिए!

भाँट-1 : चुप्प! ओम्हर देखू! केओ आबि रहल अछि।

भाँट-2 : संभवत: ई लोकनि। **(दर्शक केँ देखबैत)** एकेरे सबहक प्रतीक्षा क' रहल छथि।

भाँट-3 : निराशा हेतनि! कोनो देखनगर नइँ बुझाइए!

भाँट-1 : चुप्प! चलू नुकाक देखै छी। **(तीनू भाँट नुकाइए)**
[दृश्यांतर]

दृश्य-एक

(नेपथ्य सँ बरद केँ टिटकारबाक तीव्र स्वर। एक किसान हर जोतैत प्रवेश करैए। एक टा दंपतिक प्रवेश। पुरुख माथ पर मोटरी, स्त्रीक कान्ह पर बच्चा। पुरुष हरबाह केँ देखैए। मोटरी रखैए।

स्त्री : मोटरी किऐ राखि देलहक?

पुरुष : कने खैनी खा लै छी **(हरबाह सँ)** हौ भाइ हरबाह।

हरबाह : की भेलह हौ?

पुरुष : कने खैनी खा लैह तखन हर जोतिह। **(हरबाह बरद केँ ठाढ़ क' क' बाट पर अबैए)**

पुरुष : **(खैनीक ऐंठा बाहर क'क' खोटैए)** कने चून दहक।

(हरबाह चूनोटी सँ चून बहार क'क' दै छै। पुरुष खैनी चुनबैए।)

अगिला गाम कोन छै हो?

हरबाह : नइँ जनै छहक? परोपट्टा मे नामी छै ओ गाम?

पुरुष : से किऐ? कोनो सींघ नाँगड़ि छै ओइ गाम के!

हरबाह : सैह बूझि लहक!

पुरुष : माने?

हरबाह : अरे ओ गोनूक गाम छिऐ!

स्त्री : गोनूक गाम? गोनू झा बला गोनू हौ।

हरबाह : हाँ!

स्त्री : आबहु ओहन लोक सब हेतै ओइ गाम मे।

पुरुष : धुत! आब कत' सँ एलै। *(हरबाह सँ)* लैह, खैनी लैह। आब तँ खाली नाम छै। *(खैनी ठोर तर द'क' मोटरी उठबैत स्त्री सँ)* चलू!

(स्त्री पुरुष विदा भ' जाइए। हरबाह ओकरा देखैत रहैए।)

हरबाह : बड़का बात कहिक' चलि गेल।

(एक टा मौगियाह कूजड़ा अबैए। हरबाह केँ कने ठेलि दैए।)

कूजड़ा : हइ मनसा! केना बीच्चे बाट पर खुट्टा नाहित ठाढ़ भेल हय।

हरबाह : गे कूजड़नी!

कूजड़ा : हो तोहर आँखि मे खुट्टी गड़ल छह। हम एकरा कूजड़नी बुझाइ छिऐ?

हरबाह : बुझाइ तँ छें सैह। मुदा मोंछ कूजड़ा बला छौ। खैनी खेबें।

कुजड़ा : खुएब त' किऐ ने खाएब?

हरबाह : कने शक्कर देबें त' खुएबौ!

कुजड़ा : कने टेकि दैह। **(हरबाह कुजड़ाक पथिया उतारै छै, कूजड़ा ओकरा शक्कर दै छै, खैनी लैए। पथिया उठा क' विदा भ' जाइए।)**

[दृश्यांतर]

दृश्य-दू

(हरबाह हर खोलि क' बरदक पालो पर लटका क' बरद केँ विदा क' दैए। अपने स्त्री-पुरुषक पाछू विदा भ' जाइए। आगू पुरुष बीच मे स्त्री बच्चाक मुँह पाछू दिस। हरबाह बच्चा केँ रहि-रहिक' शक्कर चटबैए। एक टा चौक अबै छै। हरबाह दुनू केँ घेरि लै छै।)

स्त्री : *(स्त्री चौंकि क')* गे माए गे माए!

हरबाह : गे मौगिया गे मौगिया। हमरा बच्चा केँ चोरा क' कत' ल' जाइ छें गे मौगिया।

स्त्री : तोहर बच्चा!

हरबाह : हँ! हमर बच्चा।

स्त्री : सत्बढ़ना सँ झाँटि देब मुँहझौंसे। दिठौरी जे भ' गेलहे साफ भ' जेत'।

हरबाह : *(स्त्रीक हाथ पकड़ैत)* चल थाना! ओत' देखियही जे ककर दिठौरी साफ होइ छै।

स्त्री : *(पुरुष सँ)* ई किऐ बैसाखी कौआ जकाँ मुँह बौने ठाड़ छै? एकरा किछु कहल नइँ होइ छै।

(पुरुष केँ होश अबै छै। हरबाहक गरदनि पकड़ैत।)

पुरुष : आरे सरबा घरानि! ई तँ परेत जकाँ पाछाँ लागि गेल।

हरबाह : *(चीत्कार करैए)* दौड़े जाइ जाह हौ। ई बलिगोबिना हमर नरेटी चपने जाइए। बचबै जाइ जाह हौ। गारियो दैए हो।...

(लोक सब दुनू केँ फराक करै छै। हरबाह अपन कंठ हँसोथैए)

एक : की भेलै?

दू : के अइ ई सब!

तीन : एकर कंठ किऐ मोकै छलै।

चारि : की बात छै? की बात छै?

(सब दुनू केँ कात करैए)

हरबाह : चाण्डाल अइ चाण्डाल। कते कसि क' घेंट दाबि देलक। आइ तँ हम मरिए जैतौं।

एक : *(पुरुष सँ)* ऐं हौ! तों एकर कंठ किऐ मोकै छलहक?

पुरुष : ई हमरा जनाना के हाथ लगा देलक!

दोसर : *(हरबाह सँ)* हौ! तों एकरा जनाना केँ किऐ हाथ लगौलहक?

हरबाह : *(ग्रामीण सब सँ)* एखन तँ हमहीं टा हाथ लगौलियैए। जँ हम असली बात कहि दी तँ अहाँ सब गोटे केँ हाथ लगाबक मोन भ' जाएत।

सब : से की!

स्त्री : *(घौना पसारैए)* हे दिनकर दीनानाथ! हे इस्सर-परमेस्सर। एहि बटमारीक निसाफ तोरे हाथ मे दै छियह! जे हमरा पर बेफालतू के कलंक लगबैए तकरा नंगड़िया पील फड़तै, ओकरा कोढ़ि फूटतै, ओकरा मलेरिया-हैजा हेतै। मरकी मे जाएत ओ।

हरबाह : ई तँ घरवाली जकाँ गारि पढ़ैए। *(किछु लोक हँसैए)*

पुरुष : खबरदार! छाउर लगा क' सट्ट द' जीह खीच लेब सार।

हरबाह : चोरी पर सीनाजोरी! तों खबरदार!

पुरुष : चोरी! तोहर हम की चोरोलियहए?

ग्रामीण : बच्चा चौरौलहए!

हरबाह : हमर बच्चा चोरौलहें!

हरबाह : हँ! ई दुनू बच्चा चोर अछि।

एक : से कोना?

हरबाह : *(बच्चा केँ देखबैत)* ओ हम्मर बच्चा अछि।

स्त्री-पुरुष : नइँ, हमर बच्चा अछि।

दू : *(स्त्री-पुरुष सँ)* तों दुनू एखन चुप रहह। *(हरबाह सँ)* ई बच्चा तोहर छ?

हरबाह : हँ।

तीन : एकर सबूत!

हरबाह : एकरे दुनू लग की सबूत छै जे बच्चा एकरे छिऐ।

पुरुष : बच्चा हमरा लग अछि सैह सबूत भेलै।

हरबाह : हमरा लग आबि जैत तखन?

चारि : से कोना आबि जैत?

हरबाह : से एना जे अहाँ लोकनि कने जगह दियौक *(सब केँ गोल घेरा बनबैए)* हँ, एहिना। *(आब बच्चा ल'क' बीच मे ठाढ़ करैए। स्त्री रोकै छै। ग्रामीण सबहक कहला पर मानै छै। एहि बीच बच्चा केँ शक्कर चटा दैए।)* बहुत जाँचल तरीका छैक ई। बूझलौं। आब कहियौ बेरा-बेरी बजाब'। बच्चा जकरा लग चलि जेतै सैह ओकर बाप! की कहै छी?

ग्रामीण : ठीक, ई ठीक कहै छै।

एक : बजौनाइ आरम्भ करबै छी। *(पुरुष सँ)* पहिने तोही बजबहक।

पुरुष : हम किऐ बजबियौ। ई तँ हमरे बच्चा अछि।

दू : छ तँ तोरे लग अओतह! बजाबहक। *(हरबाह बच्चा केँ शक्कर देखबैत रहैए।)*

पुरुष : बौआ। आउ। बाउ। बौआ!।

(बच्चा असमंजस मे ठाढ़ अछि)

तीन : *(हरबाह सँ)* आब तों बजबहक!

हरबाह : *(शक्कर देखबैत)* आउ! बौआ! नुनू! आउ!

(बच्चा चलि जाइ छै। हरबाह ओकरा कोरा मे उठा लैए। पुरुष आ स्त्री हतप्रभ अछि।)

आब ई बच्चा हम्मर भेल ने!

ग्रामीण : हँ तोरे भेलह।

हरबाह : *(बच्चा केँ ल'क')* तँ ठीक छै एहि बच्चा केँ ल'क' हम चललौं।

स्त्री : आरौ दैबा रौ दैबा! एहन अनहेर *(छाती पीट' लगैए)*

पुरुष : आब हम कोन मुँह ल'क' गाम जैब!

एक : गाम कत' जैब!

दोसर : अहाँ तँ आब थाना चलू।

तेसर : पहिने हिनका किछु भोजन करा देल जाए।

चारिम : मुदा एखन तँ जलखइ के बेर छै।

एक : तँ शुभस्थ शीघ्रम!

दोसर : हम चूड़ा कुटि दै छियै। अहाँ घानी भुजू ने *(तेसर पुरुष केँ गुदगुदी लगब' लगैए दोसर धम-धमाब' चाहैए)*

स्त्री : *(पुरुष केँ बचबैए।)* मुँह मे ऊक लगा देब मरखौके! हाथ गड़रि क' खसत।

पुरुष : *(हरबाह सँ)* कोन जनमक कानि सधैलहे हौ।

स्त्री : अनजान मे कोनो गलती केलियह तँ माफ करह।

हरबाह : आब एलह ने बाट पर।

एक : कोन बाट पर।

हरबाह : एखने देखबै।

दोसर : माने कोनो दोसर खिस्सा शुरू भ' गेल की?

हरबाह : तेहनाहे बूझू!

पुरुष : हमर जान बकसि दिय। तखन अहाँ सब निश्चिन्त भ'क' बुझैत रहब!

हरबाह : ठीक छै। तँ ई कह' जे गोनू झा छथि की नइँ?

एक : एहि मे गोनू झाक कोन बात भेलै?

पुरुष : गोनू झा छथि की नइँ ताहि मे हमर कौन दोष!

हरबाह : तखन अहाँ किऐ कहलियै जे गोनू झा नइँ छथि!

पुरुष : कखन कहलियै?

स्त्री : ओ! बुझलौं की! हम जे तखन पूछने रही।

पुरुष : कखन?

स्त्री : खैनी खाए काल।

पुरुष : कथी?

स्त्री : आब गोनू झा सन लोक कत' सँ एलै?

हरबाह : एलै की नइँ?

पुरुष : के एलै?

हरबाह : गोनू झा।

स्त्री : फेर कोनो नवका जाल बुनैए।

एक : एत' गोनू झा केना एलै?

हरबाह : बाप केओ, बेटा ककरो।

दोसर : माने ई बच्चा *(बटोही केँ देखबैत)* एकरे छै?

हरबाह : हँ।

तेसर : एना किऐ केलिऐ?

हरबाह : ई किऐ बाजल जे गोनू झा आब नइँ छथि? अरे गोनू झा नइँ मरैत छथि।

एक : मुदा ई तरीका गोनू झा बला नइँ भेल।

दोसर : ओ ककरो सँ अराड़ि नइँ करैत छथि।

तेसर : जे छकब' अबैत अछि तकरे छकबैत छथि।

चारिम : बल सँ नइँ, बुद्धि सँ काज लै छथि।

हरबाह : से सोचू अहाँ!

पुरुष : अहाँ सब हमरा मार'-मार' क' छुटल रही।

स्त्री : मारि खाए बला काज तँ ई केलकए *(हरबाह दिस देखबैए)*।

ग्रामीण : ई ठीक कहैए *(लोक सब हरबाह दिस बढ़ैए)*

(भाँट सबहक प्रवेश)

भाँट सब : *(आपस मे)* इएह, अवसर अछि बजबाक। हाँ हाँ हाँ!

भाँट-1 : किऐ करै छी झंझ-मझ!

भाँट-2 : सुनियौ भ'क' संच-मंच।

भाँट-3 : दुनिया की छै रंगमंच *(हरबाह, पुरुष आ बच्चा अन्य भूमिकाक लेल तैयार होब' जाइए)*

तोनू भाँट : किऐ करै छी त्वंचाहंच!

भाँट-1 : अरे ई तँ एहन समय छै—

भाँट-2 : जखन किओ ने ककरो बात सुनै।

भाँट-3 : गाबि क' कविगण माथ धुनै।

तीनू भाँट : कविराज गओता तँ मुदा के सुनैए?

भाँट-1 : आब हमरा सब केँ के पूछैए?

भाँट-2 : हेहर प्राण छुटबो ने करैए।

भाँट-3 : मंचक माया छान बन्हैए।

तीनू : नइँ पुछह, मन केहन लगैए?

एक : ठीक छै-ठीक छै! अहाँ लोकनि ई कहू जे की कहबाक अछि।

दोसर : लोक आखिर कत्ते फकड़ा सूनत?

तेसर : हमरा लोकनि गोनू झा द' बात क' रहल छलहुँ। अहाँ सब केँ तँ तेसरे बथान!

चारिम : हमरा लगैए जे गोनू झा एखन नइँ छथि।

भाँट-1 : गोनू झा कतहु नइँ रहथि!

भाँट-2 : ओ तँ हरदम रहैत छथि।

भाँट-3 : खाली सरूप बदलै छथि।

एक : तँ ओहि समयक गोनू झा केहन रहथि?

भाँट-1 : एहि पर तँ एक टा खिस्सा छै

ग्रामीण : केहन खिस्सा छै।

भाँट सब : सुनब!

ग्रामीण : जरूर सुनब।

भाँट सब : तँ सुनू।

[दृश्यांतर]

दृश्य-तीन

(भाँट सब आगू आबि जाइए। आब स्टेज पर गोनू झाक घरक दृश्य बनैए।)

भाँट-1 : तँ लिअ। भेटि गेल ने कथा!

भाँट-2 : कोन कथा?

भाँट-3 : हमरा लोकनि घटक जकाँ कथा कहिया सँ ताक' लगलौं भाइ जी!

भाँट-1 : वैवाहिक कथा नइँ यौ बुड़ि!

भाँट-2 : तखन?

भाँट-1 : नाटकक कथा।

भाँट-3 : माने?

भाँट-1 : माने ई जे हमरा लोकनि गोनू झाक नाटक करब!

भाँट-2-3 : वाह वाह! वाह वाह! एकरे कहै छै पहिले हाथ मे पौ बारह!

भाँट-1 : थम्हू! पहिने पूरा तँ सुनि लिअ।

भाँट-2-3 : सुनाउ।

भाँट-1 : गोनू झाक खिस्सा लोकप्रिय अछि, सब गोटे केँ किछु ने किछु बुझले होयत।

भाँट-2-3 : हँ। हँ।

भाँट-1 : तँ आइ हमरा लोकनि गोनू झाक नाटक करब! *(दर्शक सँ)* परंतु! हमरा लोकनि साफे अनाड़ी छी!

भाँट-2 : पैदल सवारी छी!

भाँट-3 : बुद्धिक कियारी छी।

भाँट-1 : तेँ भूल-चूक केँ क्षमा करैत चलबै।
(संगी सब सँ) तँ आरंभ करह!

(सब कलाकार आबि जाइए गायन, नृत्य मूलक गतिचर्या)

सब : एक टा खिस्सा के खिस्सा कहब आइ हम,
अहाँ देख तँ जानब, अहाँक मरजी!
जे ने, लाठी धरए, आ ने ढाही लड़ए
मात्र कन्हैक कन्हैक सब ठाँ विजयी रहए

एहने लोकक ई खिस्सा कहब आइ हम
अहाँ देखब तँ जानब अहाँक मरजी!

(संगीत समाप्त। लोक सबहक प्रस्थान।)

भाँट-3 : अँय यौ भाइ जी! तखन तँ एक टा नाटकक ने जनम भेलै?

भाँट-1 : हँ! से ठीक कहल!

भाँट-2 : तखन एक टा सोहर भ' ने चलए। *(तीनू पमरिया जकाँ गबैए)*

तीनू भाँट : सुमिरल गुरु गोसांइ तखन जन सुमिरल हे
ललना रे सुमिरल अपन परान कि नाटक जनमल हे

[दृश्यांतर]

दृश्य-चारि

(गबैत-गबैत प्रस्थान)

(एक गोनू झा बनि जाइए। बाकी लोक सब संबंधी, गोनू झाक, गाय-वगैरह बनि जाइए।)

(गोनू झाक गोदान होइ छनि। नाँगड़ि पकड़िते गोनू आ गाय दुनू मरि जाइ छै। लोक सब शोक मनब' लगैए)

(गोनू आ गाय सुक्ष्म शरीर सँ यमराजक दरबारक यात्रा करैए। लोक सब शोक मना रहलए। दोसर कात यमराजक दरबार लगै छै। पुरुष आ हरबाह क्रमशः यमराज आ चित्रगुप्त जी बनैए। गाय आ गोनू दरबार मे अबैए।)

यमराज : चित्रगुप्तजी।

चित्रगुप्त : आज्ञा महराज!

यमराज : महोपाध्याय गोनू झाक एकाउन्ट देखि लेलियनि!

चित्रगुप्त : हँ धर्मराज!

यमराज : सुनाउ!

चित्रगुप्त : हे धर्मावतार! ओना तँ महोपाध्याय गोनू झा, मृत्युलोक मे आजन्म लोक सब केँ अपन प्रत्युत्पन्नमतित्व सँ छकबैत रहलाह परंतु स्वयं आगू भ'क' ककरो सँ गेंग नइँ जोतलनि। जे ढाही लेब' आएल से हारिक' गेल। इएह हिनकर क्रेडिट साइड छनि!

यमराज : तखन तँ ई स्वर्ग-प्राप्तिक अधिकारी भ' जाइत छथि!

चित्रगुप्त : सत्य बचन महराज! एहि तरहें हिनकर एक टा एकाउन्ट तँ सेटल भ' जाइ छनि। परतु...

यमराज : परतु की अछि चित्रगुप्त जी!

चित्रगुप्त : परंतु ई अछि धर्मावतार, जे गोनू झा कोनो वस्तुक दान नइँ केलनि। अतएव स्वर्ग मे हिनका मात्र लॉजिंग भेटि सकै छनि—फुडिंग नइँ।

गोनू झा : परंतु हम तँ दान केलहुँए धर्मराज!

चित्रगुप्त : केलहुएँ महोपाध्याय! जीवक दान केलहुँए। वस्तुक नइँ।

गोनू झा : हम तँ गोदान केलहुँए धर्मराज! गोदान केँ तँ महादान कहल गेल छै।

चित्रगुप्त : कहल गेल हेतै। परंतु एहि सँ अहाँक फुडिंग-क्लोदिंग के समस्याक निवारण नहि होइत अछि।

गोनू झा : तखन हम की करू धर्मराज!

धर्मराज : अहाँ केँ मात्र ई गाय भेटि सकैए।

चित्रगुप्त : ई गाय ल' जाउ। एकरा सँ प्रदत्त वस्तु सँ निर्वाह करू। माने गोबर खाक' गो मूत्रक पान करू। दूध तँ एहि गाय सँ भेटत नइँ, किएक तँ अहाँ बाँझ गायक दान केने छी महोपाध्याय!

(गोनू झा गाय केँ देखैए! फेर ओकर कान मे मुँह सटबैए)

गोनू झा : हे गाय! अहाँ स्त्री छी। सुनलौं ने जे ई चित्रगुप्त महोदय, सबहक सोझाँ मे अहाँ केँ बाँझ कहलनि अछि, से अहाँ चुपचाप सहि लेबै! ई तँ धरतीक स्त्री सबहक अपमानक बात अछि।

(गाय ई सुनैत देरी फोफकार छोड़ैत धर्मराज आ चित्रगुप्त केँ खेहारए लगैए। यमलोक मे भगदड़ भ' जाइ छै। भूत-प्रेत ठहाका लगबैए।)

[दृश्यांतर]

दृश्य-पाँच

(धर्मराज आ चित्रगुप्त केँ गाय खेहारि रहलए। गोनू झा तमासा देखि रहल छथि।)

चित्रगुप्त : बचाउ धर्मराज। बचाउ!

धर्मराज : चित्रगुप्त जी उपाय बताउ!

चित्रगुप्त : धरती पर पठाउ धर्मराज। गोनू आ गाय केँ वापस धरती पर पठाउ!

धर्मराज : गोनू आ गाय! वापस जाउ! वापस जाउ!

(जोर सँ शब्द होइए। धर्मराजक दरबार बिला जाइए। गोनूक घर। घर मे कन्नारोहटि। चचरी पर गोनू झा केँ सुताओल गेल

अछि। गाय एक कात पड़ल अछि। लोक गोनू केँ उठब' लगैए। गोनू उठिक' बैसि जाइए! गाय सेहो उठिक' बैसि जाइए। लोक सब आतंकित भ' जाइए।)

गोनू : तों सब डेरा गेलह! डेराब' जुनि! डेराब' जुनि! अरे हम तँ मरबाक स्वाँग क' रहल छलहुँ—स्वाँग!

भोनू : खूब स्वाँग फुराएल अहूँ केँ।

स्त्री : एखने ल' जा क' फुकि अबैत तँ सब टा स्वाँग बहरा जाइत।

(सब बाज' लगैए)

गाय : *(गाय सोचैए)* ई तँ फेर मर्त्यलोक मे आबि गेलहुँ! फेर ओएह दुख-यंत्रणा। फेर ओएह बांझ हेबाक उपालभ्य..। सब टा एहि गोनुआक...एहि गोनुआक काज अछि ई। एकरा तँ हम नइँ छोड़बै।

(गाय गोनू केँ देखिक' फोफकार छोड़ए। गोनू पर छूटैए)

गोनू : पकड़। पकड़ एहि गाय केँ। *(लोक सब पकड़ैए)* आब एकरा गरदनि मे एक टा ढेंग बान्हि दैह।

(लोक सब ढेंग बन्हैए। गाय नेंगराक' चलैए ढेंग ठेहुन पर ठक-ठक करै छइ! सब ओकरा देखैत नेपथ्य दिस जाइए)

गोनू झा के गाय ई तँ गोनू झा के गाय...

(तीनू भाँट अबैए)

भाँट-1 : एकरे कहल गेलै, गोनू झाक गाय।

[दृश्यांतर]

दृश्य-छः

(ढोलहो दैत व्यक्तिक प्रवेश। गामक लोक जमा होइए। एहि मे भाँट सब सेहो अछि।)

ढोलकिया : *(ढोलहो देलाक बाद)*

सुनू-सुनू-सुनू
सब गोटे सुनू
जी जान लगा क'
ध्यान सँ सुनू!

(ढोलहो दैए) घुसकियाही गढ़ाधिपति, राजा झुनझुना देवक स्वर्गारोहणक उपरांत, युवराज भुनभुना देवक आइ राज्याभिषेक होएब निश्चित अछि। एहि अवसर पर सब गोटे आनन्द मनाउ,

बधावा बनाउ, राजा कें उपहार देब' गढ़ दिस के जतरा बनाउ।

(ढोलहो दैत प्रस्थान)

(भाँट सबहक प्रवेश)

भाँट-1 : *(खुशी सँ नचैत)* आबि गेल-आबि गेल-आबि गेल।

भाँट-2 : अरे दिन ओ सुदिनमा आबि गेल।

भाँट-3 : ता-ता ता धिनमा!

भाँट-1 : गाबैए मनमा!

भाँट-2 : योग इनाम के लागि गेल!

भाँट-3 : भाग हमरा सबहक जागि गेल!

तीनू : अरे आबि गेल-आबि गेल-आबि गेल।

(गबैत-गबैत प्रस्थान करैए। मंच पर गढ़ घुसकियाहीक दरबार। जयजयकारक तुमुल ध्वनि।)

[दृश्यांतर]

दृश्य-सात

समवेत : भुनभुना देवक जय हो, जय हो।
भुनभुनादेव चिरायु हो, चिरायु हो।

बुड़िराज : *(मंत्रीक भूमिका सँ)* हे राजन्। आजुक एहि पुनीत अवसर पर, राज्यक समस्त गुणवंत, कलावंत, विद्वान एवं साहित्यकार, एहि सभा मे उपस्थित छथि।

भुनभुनादेव : हेबाके चाहियनि, हेबाके चाहियनि। आखिर हम राजा बनलौंए जे। ई कोनो खेल ठट्ठा थोड़बे छै। परंतु ओ लोकनि किछु ल'क' आएल छथि की खाली हाथ डोलबैत, मुँह उठौने आबि गेलाहए?

बुड़िराज : हे राजन! गुणवंत-कलावंत अपन गुण आ कलाक संग उपस्थित छथि!

भुनभुनादेव : गुण आ कला! एहि सँ की हैत—केरा?

बुड़िराज : हे राजन! आब केरा हो की कटहर, अपने प्रदर्शनक अनुमति द' दियौन!

भुनभुनादेव : द' दियौन! दियौन किऐ? हम राजा छी की हँसी-ठट्ठा! हम तँ लेबनि! कर लेबनि, जर लेबनि, सेवा लेबनि, उपहार लेबनि!

बुड़िराज : से लियनु। रोकैए के? मुदा अनुमति देला सँ मुद्रा-विमोचन नइँ होइ छै।

भुनभुनादेव : तँ की होइ छै?
बुड़िराज : मनोरंजन।
भुनभुनादेव : मुदा हम एखन मनोरंजन नइँ कराएब!
बुड़िराज : से तँ कराब' पड़त।
भुनभुनादेव : किऐ?
बुड़िराज : परंपरा छै, तेँ।
भुनभुनादेव : तखन ठीक छै। जँ मुद्रा हानि नइँ हो तँ परंपराक पालन अबस्से हेबाक चाही। हमरा अपन परंपरा सब सँ एहिना अवगत करबैत रहू बुड़िराज।
बुड़िराज : बेस महराज! परंतु...
भुनभुनादेव : फेर परंतु
बुड़िराज : अनुमति
भुनभुनादेव : कत' छै?
बुड़िराज : अहाँक मुँह मे!
भुनभुनादेव : देलियनि, अनुमति द' देलियनि!

(भाँट सबहक प्रवेश प्रणाम क'क आब' लगैए।)

भाँट सब : जय हो, सरकार के जय हो।
दुश्मन के क्षय हो
कखनो ने भय हो
सब किछु सुखमय हो
जय हो, अगबे जय-जय हो।
बल बढ़े बुद्धि बढ़े
दिन मे दुगन्ना राति चौगुन्ना सपत्ति बढ़े
फुलवारी मे फूल बढ़े
रानी के कोरा मे बच्चा बढ़े
गोशाला मे गाय बढ़े, घोरसार मे घोड़ा बड़े
सरकार के यश के पतक्खा आसमान मे उड़े
हे...

(फकड़ा सँ गीत पर आबि जाइए।)

राति मे जहिना सोभए चन्ना
सोभए दिन मे सूरज-भान
सिंहासन पर बैसल राजा

स्वर्गक राजा इन्द्र समान
जय हो। सरकार के जय हो!

सब : साधु! साधु!

भुनभुनादेव : वाह वाह! वाह! आर कहक-आर कहक।

बुड़िराज : नहि राजन आर नइँ।

भुनभुनादेव : से किएक नइँ!

बुड़िराज : आरो लोक सब छथि राजन। सब केँ अवसर भेटक चाही। अतएव!

भुनभुनादेव : अतएव?

बुड़िराज : कविराज लोकनि केँ पुरस्कार द' क' विदा कैल जाए!

भुनभुनादेव : मुँह सँ?

बुड़िराज : नहि खजाना सँ।

भुनभुनादेव : खजाना सँ किऐ?

बुड़िराज : परंपरा छै राजन!

भुनभुनादेव : *(कानए लगैए)* ई केहन परंपरा छै! यैह तँ चौदह दिन पहिने हमर पुज्य पिताश्रीक स्वर्गारोहण भेलन्हिए। तेँ ने हम एहि सिंहासन पर बैसलौए। नइँ तँ आइ पूज्य पिताश्री एहि सिंहासन पर बैसल रहितथि। हाय रे हाय! पिताश्री यौ पिताश्री! एना हमरा अनाथ क' किऐ चलि गेलहुँ पिताश्री...

बुड़िराज : *(कनैत)* राजन। हे राजन!

भुनभुनादेव : ई शोकक बात भेलै की नइँ?

बुड़िराज : बड़का शोकक बात भेलै राजन!

भुनभुनादेव : तखन ई कविराजक नाँगरि सब, खुशीक गीत गाबि रहलए! भगाउ! एकरा सब केँ हमरा सोझा सँ हटाउ।

(भाँट सब हाउ-हाऊ क'क कानए लगैए।)

भुनभुनादेव : बुड़िराज!

बुड़िराज : महराज!

भुनभुनादेव : ई सब कनैए!

बुड़िराज : हँ ई सब कनैए!

भुनभुनादेव : मुदा किऐ कनैए?

बुड़िराज : किऐ कनैए?

भुनभुनादेव : पुछियौ एकरा सब सँ, पुछियौ!

बुड़िराज : यौ कविराज लोकनि, किऐ कनै छी?

तीनू भाँट : हम सब स्वर्गीय राजाक शोक मे कनै छी।

भुनभुनादेव : शोक मे कनै छी!

बुड़िराज : हँ राजन्!

भुनभुनादेव : परंतु हम तँ एखन जीवित छी! छी की नइँ?

बुड़िराज : छी छी, सैह तँ छी!

भुनभुनादेव : केहन अलच्छ अछि ई कविराजक झर सब! आइ हमर राज्याभिषेक भेलए आ ई सब कनैए। भगाउ! एकरा सब केँ तुरंत भगाउ! *(अपने उठि जाइए।)* दरबार बरखास्त!

बुड़िराज : हमर पुरस्कार हे राजा!

भुनभुनादेव : काल्हि आउ!

(बुड़िराज केँ अपन सन मुँह होइ छै। कविराज सब मुँह लटकौने ठाढ़। बुड़िराज केँ ओकरा सब केँ दखिक' तामस होइ छै।)

बुड़िराज : इह! कविराजक आमिल नहितन। आब लोटकी जकाँ मुँह चुकड़ियौने दण्डायमान किऐ छी। नाँगड़ि सुटका घुसकंत होइ जाइ जाउ।

तीनू भाँट : ई नइँ उचित विचार। माधव ई नइँ उचित विचार।

बुड़िराज : सूनै लेल नइँ छी हम तैयार।

भाँट सब : तखन अहाँ केँ चार पर झिंगुर झाड़ा फिरत,
चिनबार पर गिद्दर मूत्ती करत
अहाँ के घी के टारा फुटत
अहाँ के खाइत काल गाड़ा लागत
अहाँ जाईत के मच्छड़ काटत।

बुड़िराज : पड़ाइ छी कि नइँ। *(भाँट सब पड़ाक' स्टेज पर अबैए।)*

[दृश्यांतर]

दृश्य-आठ

(गोनू झाक आँगन मे चहल-पहल भ' रहल छै।)

(आँगन मे गोनू झाक चुमाओनक ओरिआओन होइए। भोनूक प्रवेश। बीच आँगन मे आबि, कान्ह मे लाठी लगा ठाढ़ भ' जाइए। गोनुक स्त्री हुनका देखैत छथि।)

स्त्री : भोनू बौआ!

भोनू : हँ भौजी!

स्त्री : कखन एलहूँ हाट सँ?

भोनू : एखने एलहुँए भौजी!
स्त्री : तँ वस्तु-जात कत' अछि?
भोनू : कोन वस्तु-जात भौजी?
स्त्री : जे हाट सँ आनए कहने रही।
भोनू : ओ हाट सँ—की कहने रही?
स्त्री : गुड़!
भोनू : गुड़ नइँ भेटल!
स्त्री : पान आ केरा!
भोनू : इस्स!
स्त्री : की भेल?
भोनू : ओ तँ बिसरिए गेलिऐ!
स्त्री : तँ मोन की रहल?
भोनू : आइ भैयाक चुमाओन छनि।
स्त्री : कथी सँ चुमाओन हेतनि?
भोनू : से अहाँ जनबै कि ने।
स्त्री : अहाँ की करब?
भोनू : जे अहाँ कही? मुदा किछु जलखै दियौ। बड़ भूख लागल अछि।
स्त्री : भोनू केँ पेट भरए सँ काम! भोनू भाव की जान!
भोनू : अपने लग राखू अपन ज्ञान, हमरा दिय जलपान।
स्त्री : होबए दियौ चुमाओन!
भोनू : करू ने ओरिआओन।
स्त्री : पूरा अछि ओरिआओन!
भोनू : मुदा गूड़, केरा, पान?
स्त्री : हम अहाँ भरोसे नइँ हे अकान।

(दुनू मिलि जल्दी मे ओरिआओन करैए।)

(नेपथ्य सँ वृद्ध लोकनिक स्वर। सब खखसैए। किछु गोटे 'हमरा लोकनि अबै छी', कहै छथि। गोनू, बृद्ध लोकनिक संग अबै छथि—गोनूक स्त्री भीतर जाइ छथि। स्त्रीगणक स्वर मे चुमाओनक गीत आरंभ भ' जाइ छै। बृद्ध लोकनि मंत्रोच्चारण करैत छथि। चुमाओन समाप्त होइए। गोनू बृद्ध लोकनिक चरणस्पर्श करै छथि। भोनू, गोनूक चरण स्पर्श करैत छथि।)

(विरुदावली गबैत कविराज सबहक प्रवेश)

भाँट सब : जय हो। गोनू बाबूक जय हो।

भोनू : हे हे कविराज लोकनि! एम्हर कत'! दलान पर चलू दलान पर!

भाँट-1 : हम सब आँगने केँ दलान बुझै छी!

भोनू : तँ आँगन चलू!

भाँट-2 : चलू कत'?

भाँट-3 : आँगन मे तँ छीहे!

स्त्री : रह' ने दिअनु! हमहू सब सुनबै!

भोनू : ठीक छै। कहै जइयौ। *(भोनू एक कात भ' जाइए)*

भाँट-1 : हे गुण के गुमान
अहाँ बुद्धिक बखान
अहाँ तारा मे चान
अहाँ फोका मखान

भाँट-2 : अहाँक मुँह मे रहए पान
अहाँक बढ़िते रहए शान
होअए सब ठाँ अहाँक मान
अहाँ सब सँ महान।

भाँट-3 : अहाँ धूर्त्तक शिरोमणि भेलौं
अहाँ बड़का उपाधि लेलौं
अहाँक भेलए चुमान
दियौ हमरा सब केँ दान!

गोनू : हँ। हँ। लिअ दान ल' लिअ। *(स्त्री सँ)* एक चंगेरा क' भोज्य पदार्थ सब द' दियनु कविराज लोकनि केँ!

भाँट-1 : हमरा लोकनि केँ भोज्य पदार्थ नहि चाही।

भोनू : तँ की चाही असरफी।

भाँट-2 : नहि। हमरा लोकनि गढ़ घुसकियाहीक सुबेदारक ओत' अपमानित भेल छी। एकर प्रतिकार हो!

गोनू : केना अपमानित भेलौं।

भाँट-3 : हमरा लोकनि यशोगान केलौं तँ कहलक जे पितृशोकक समय खुशीक गीत किऐ गबै छेँ।

भाँट-1 : शोक मे कानए लगलौं तँ कहलक जे हमर अभिषेक भेलए आ तों सब कनै छैं।

भाँट-2 : कथी ले' किछु देत! दबाड़ि क' भगा देलक!

भाँट-3 : आइ तक एहन नइँ भेल छल।

भाँट-1 : हमरा सबहक प्रतिष्ठाक प्रश्न भ' गेल अछि।

गोनू : परंतु पुरस्कार लेबाक जिद किऐ?

भाँट-2 : हमरा लोकनि राज्य-संपोषित कलाकार छी! जँ शासक मुँह फेरि लेत तँ हम सब कत' जाएब?

गोनू : परंतु अहाँ लोकनि कहिया तक राज्यक मुँह तकैत रहबै?

भाँट-3 : तँ की करू?

गोनू : जनताक बीच जाउ। ओकरे मनोरंजन करू आ ओकरे सँ पोषित होउ!

भाँट-1 से तँ आगू सँ ने। परंतु एखन हमरा अपना अपमानक बदला चाही।

भाँट-2 : अहाँ सँ एकरे दान लेब।

भाँट-3 : आर किछु नइँ।

गोनू : ठीक छै। अहाँ लोकनि काल्हि ओहि दरबार मे पहुँचू। हमहू ओत' जाएब।

भाँट सब : जय हो। गोनू बाबूक जय हो *(प्रस्थान)*

स्त्री : ई अहाँ की कैलौं?

गोनू : हम एखन कहाँ किछु केलौंए।

स्त्री : नरेश अहाँ केँ धूर्त शिरोमणिक उपाधि सँ विभूषित केलनिहें आ अहाँ हुनक एक टा सूबेदार सँ अराड़ि ठानब?

गोनू : अराड़ि ठानब? ई अहाँ कोना अनुमानि लेलौं?

स्त्री : अहाँ कविराज सब केँ ल'क' जेबै, अपमानक प्रतिकारक बात करबै?

गोनू : से तँ करबै?

स्त्री : तँ ओ नरेश सँ शिकाइत करत आ उपाधि छिनबा देत।

गोनू : छिनबा देत तँ छिनबा देत। उपाधि रहओ वा नइँ रहओ। हम तँ जे छी सैह ने रहब।

भोनू : आ चुमाओन जे भ' गेलए से!

गोनू : चुमान भेलए, श्राद्ध नइँ।

स्त्री : केना एहन बात बाजल गेल!

भोनू : सैह कहियौ तँ!

गोनू : सुनू, श्राद्ध सँ सब किछु समाप्त भ' जाइ छै। सेहो भौतिक पदार्थ। चुमाओन तँ आरंभ छिऐ। आरंभे सँ डेराएब तँ अंतक कोन कल्पना!

स्त्री : बुझलौं। मुदा अहाँ हम्मर बातक जवाब नइँ देलहुँ।

गोनू : जवाब तँ द' देलहुँ। कविराज लोकनिक संग अन्याय भेलैए। ओ सब हमरा लग अएलाह। तँ हमरा की कर'क चाही?

स्त्री : ओकर सहयोग कर'क चाही। परंतु ओ सूबेदार तँ भारी मरकट अछि जँ जहल मे ध' दिअए?

गोनू : तँ की करबै। जहल मे बैसि क' प्राणायाम करब।

स्त्री : आ हम की करब?

गोनू : उदासी गाबि क' दिन काटब।

स्त्री : हमरा एहन चौल नइँ नीक लगैए।

भोनू : अहाँ चिन्ता नइँ करू भौजी। हम तँ एतहि रहब ने!

गोनू : कखनो-कखनो बाहरो गेल करू!

भोनू : एहि बेर मे तँ हम घरे मे रहैत छी।

गोनू : कहियो काल बाहरो रह'क चाही।

स्त्री : आब हिनकर बियाह करा दियनु।

भोनू : *(लजाइत)* जाउ भौजी। हम एत' सँ जाइ छी *(प्रस्थान)*

गोनू : मनुखाह भेल जाइत अछि। तकर कारण छी अहाँ।

स्त्री : हम नइँ अहाँ।

गोनू : से कोना?

स्त्री : से एना जे जकर बड़की छुलाहि तकर छोटकी तँ भाड़े लागल ने खाइ।

गोनू : नइँ यै। जकर भाजु भरदुलाहि, तकर दिअर मौगियाह।

स्त्री : नइँ यौ! जकर जेठका पपियाह, तकर छोटका मौगियाह।

गोनू : भोनूक भौजी मरखाहि।

स्त्री : भोनूक भैया मरखाह।

गोनू : भोनूक भौजी बताहि।

स्त्री : भोनूक भैया बताह।

गोनू : नइँ भेल। अहाँ तँ हमरे बात मे लिंग परिवर्तन केने जाइ छी।

स्त्री : तँ अहाँ ओहन बात कहू जकर हम लिंग परिवर्तन नइँ क' सकी।

गोनू : अहाँ बुद्धिक आदि छी माने बुधियारि छी।

स्त्री : अहूँ विद्या के वाण छी माने विद्वान छी।

गोनू : हम दुनू गोटे महान छी।

स्त्री : तखन अहाँ ई कहू जे ओहि कविराज लोकनि केँ केना पुरस्कार दिएबै?

गोनू : से तँ सोच' पड़तै। एना करबै जे साँपो मरए आ लाठिओ ने टूटए।

स्त्री : लाभ तँ चाही। हानि नइँ चाही।

गोनू : ठीक कहल।

स्त्री : मुदा ताइ लेल पुरुषार्थ चाही।

गोनू : तकर हमरा लग कोन कमी।

स्त्री : जाँचि क' देखू यौ?

गोनू : है है देखू यै।

स्त्री : *(एकाएक)*साँप-साँप!

गोनू : कहाँ अछि साँप, कहाँ अछि साँप?

(स्त्री सँ सटि जाइए)

स्त्री : ओम्हर देखियौ ने।

गोनू : पुरुख केँ बजबियौ ने।

स्त्री : किऐ अहाँ की छी?

गोनू : हम तँ गोनू झा छी।

स्त्री : तँ फल्लाँ झा पुरुख नइँ छथि।

गोनू : ऐं! हँ, छथि-छथि-छथि।

(स्त्री हँसए लगैए। हहाएल-फुहाएल भोनूक प्रवेश।)

भौनू : की भेल भौजी! की भेल? *(अवाक भ'क' ठाढ़ भ' जाइए)*

(अन्हार)

[दृश्यांतर]

दृश्य-नौ

(भाँट-3 कूद-फान करैत एक कात सँ दोसर कात जाइए। सूबेदारक दरबार। बुड़िराज बच्चाक अभिनय क' रहल अछि। सूबेदार हँसैए गोनू आ कविराज सभक प्रवेश)

गोनू : जय हो। जय हो।

भुनभुनादेव : आउ-आउ महोपाध्याय, धूर्तशिरोमणि गोनू झा। भले बेर पर जुमलहुँ अछि। आइ हमरा कौतुक देखबाक मोन अछि।

गोनू : अबस्स देखू श्रीमान्। कविराज लोकनि...

भुनभुनादेव : नइँ-नइँ। ई लोकनि तँ खाली फकड़ा पढ़ताह। आइ हमरा नवका कौतुक देखबाक मोन होइए।

गोनू : सैह हेतै श्रीमंत। यौ कविराज लोकनि, नवका कौतुक देखबियनु श्रीमान् केँ।

(तीनू कविराज आगू आबि राजाक आगू माथ झुका क' मुँह बाबि क' ठाढ़ भ' जाइए। सब एक दोसराक मुँह देखैए।)

भुनभुनादेव : ई की भेलै?

गोनू : कौतुक श्रीमान्।

भुनभुनादेव : ई केहन कौतुक भेलै?

गोनू : अपने जेहन बुझियै श्रीमान्।

(कविराज सब मुँह बौने उटपटाँग क्रिया करए लगैए)

भुनभुनादेव : यौ बुड़िराज।

बुड़िराज : आज्ञा राजन्।

भुनभुनादेव : अर्थ लगाउ।

बुड़िराज : नइँ लगैए।

गोनू : अर्थ तँ केहन सोझ छै श्रीमान्। ई लोकनि कौतुक केलनि। अपने हिनका लोकनि केँ पारितोषिक दियनु!

भुनभुनादेव : कते!

गोनू : जते पहिने भेटै छलनि ततबे!

भुनभुनादेव : पहिलुका बात की करै छी। पहिलुका बात पहिलुका लोक संगे गेल। आब कहू।

गोनू : हम की कहू श्रीमान्। कहता तँ ई कविराज लोकनि।

भुनभुनादेव : की कहता? कने कहि क' देखथु तँ।

गोनू : एत' नइँ ने कहता।

भुनभुनादेव : तँ कत' कहता?

गोनू : समाजक बीच मे। फकड़ा बना क'।

भुनभुनादेव : हमर निन्दा करताह।

गोनू : नइँ गुण-गान करताह। जेहन गुण, तेहन गान।

भुनभुनादेव : बेस। ल' जाथु एक पथिया क' धान।

गोनू : कौतुक समाप्त करू कविराज सब। जे भेटैए ताहि पर संतोष करू आ आगूक लेल सोचू।

भाँट : जय श्रीमान्-जय श्रीमान्।
अहाँ तँ छी बड़ा महान्-बड़ा महान्!

अहाँक मुँह मे गुआ पान-गुआ पान
पथिया भरि क' देलहुँ धान-देलहुँ धान।
जय श्रीमान्-जय श्रीमान्

(कविराज लोकनिक प्रस्थान)

गोनू : तँ आब हमरो आज्ञा भेटौ श्रीमान्।

भुनभुनादेव : नइँ बैसू-बैसू! आकि जेबे करब।

गोनू : हमर काज तँ समाप्त भेल! आब हमर प्रस्थाने उचित हैत।

भुनभुनादेव : हुँ रहि क' की करब। आइ तँ तीन पथिया धान घटि गेल। कौतुक देखबाक इच्छे मरि गेल।

गोनू : बेस। तँ आज्ञा भेटौ

(प्रस्थान)

(सुबेदार, बुड़िराज पर गुम्हरए। बुड़िराज डेराइए।)

भुनभुनादेव : हम तँ लुटि गेलहुँ।

बुड़िराज : राजन्!

भुनभुनादेव : राजन गेला भाँड़ मे। अहाँ केँ पोसि क' हमरा की लाभ भेल। तीन पथिया धान चलि गेल। ओ अहाँक तीन दिनका बोनि छल। से बुझलियै।

बुड़ि : राजन्!

भुनभुनादेव : जाउ। अहाँक तीन दिनका हथउठाइयो बन्द।

बुड़िराज : परंतु।

भुनभुनादेव : परंतु एहि सँ केना चलत? बुड़िराज।

बुड़िराज : राजन्!

भुनभुनादेव : एना जँ देबय पड़ल तँ राजकोष खाली भ' जैत।

बुड़ि : माने हमर सब दिनका हथउठाइ बन्द!

भुनभुनादेव : भ' जैत।

बुड़िराज : भ' जैत?

भुनभुनादेव : जँ कोनो उपाय नइँ करब।

बुड़ि : हँ! एक टा उपाय अछि।

भुनभुनादेव : सुनाउ! देखी केहन उपाय अछि।

बुड़ि : प्रजा पर कर बढ़ा देल जाय आ बढ़ल आमदनीक सूचना मिथिला नरेश केँ नइँ देल जाय!

भुनभुनादेव : वाह! अहाँ सुयोग्य बुड़िराज छी। जाउ अहाँक दण्ड केँ कम क' देब!

बुड़िराज : परंतु हम अहाँक मंत्री छी श्रीमान्।

भुनभुनादेव : तँ की करू? अहाँ केँ हटा दिअ?

बुड़िराज : से नइँ श्रीमान।

भुनभुनादेव : तखन की बुड़िराज?

बुड़िराज : हमरा बुड़िराज किऐ कहै छी?

भुनभुनादेव : तँ की कहू?

बूड़ि : मत्रीजी, नइँ तँ कम-सँ-कम मंत्री कहल जाए।

भुनभुनादेव : परंतु हमरा बुड़िराज कह' मे बेसी नीक लगैए। की विचार?

बुड़िराज : विचार? उत्तम विचार श्रीमान् **(स्वगत)** एकरे कहै छै नोकरी! नौकर छी तँ बुड़ि छी।

भुनभुनादेव : बुड़िराज।

बुड़िराज : जी श्रीमान्।

भुनभुनादेव : आइ हमरा बड़का शुल द' गेल ई गोनू झा। ओकरो छकेबाक उपाय बताउ।

बुड़िराज : गोनू केँ छकौनाइ तँ...

भुनभुनादेव : फेर अहाँक दंड बढ़ि जैत।

बुड़िराज : नइँ, नइँ श्रीमान्। हमरा सोच' दिय। *(स्वगत)* नोकरी जे ने कराबय असंभव केँ संभव करैत रहू। बुद्धि सँ गोनू के हरौनाइ तँ *(मुड़ी डोलबैए)* दिना-दृष्टि बल प्रयोग *(फेर मुड़ी डोलबैए)* राज्य सँ सम्मानित व्यक्ति छथि ... हँ ... *(राजा सँ)* राजन् जँ आज्ञा दी।

भुनभुनादेव : देलौं।

बुड़िराज : तँ गोनूक घर मे चोरि करबा देल जाए।

भुनभुनादेव : सावधानी सँ, पार लागत?

बुड़िराज : लागत श्रीमान्!

भुनभुनादेव : जँ लागि गेल तँ अहाँक पूरा दंड माफ। की बुझलियै?

बुड़िराज : बुझि गेलियै श्रीमान्।

[दृश्यांतर]

दृश्य-दस

(पमरिया जकाँ अभिनय करैत भाँट सबहक आगमन। गायन आरंभ भ' जाइए। मंच पर चोर सबहक बथान। ओत' सरदार म'र, म'र पर छै।)

समवेत : जंगल के बीच मे छै
मुलकी मड़ैया सब
ओइ मे बसै छै, रतिजीब हे।
खेतियो ने करै छै ओ
आ ने मजूरी
नहिए करै छै ओ, बनीज हे।
अगुआ जे ओकरे सबहक
अब तब मे पड़ल छै
हवा मे शोकक, गीत हे।
चलियौ मे चलै जइयौ
अगिला जे सीन मे
दैखियौ ने ओकरा सबहक रीत हे।

(भाँट सब गबैत प्रस्थान करैए—तेसर भाँट बीच मे रहि जाइए बाकी दुनू आबि क' ओकरा ल' जाइ छै।)

(चोर सबहक आवागमन। गीत समाप्त भेला पर सब सरदार केँ घेरि क' बैसैए। सरदारक लेल सब विलाप करैए।)

नइँ मिलतै...किन्नहु नइँ मिलतै।
एहन सरदार आब, फेनो नइँ मिलतै।
गोहिया ससरान मे जकर, जोड़ा नइँ छलै हौ
गिद्धा गुड़कान मे ककरो, हाथो ने लगलै
सोन्हिक कोड़ान मे, विसकरमा कहेलकै हौ
एहन सरदार आब फेनो नइँ मिलतै।
(गद्य मे) नइँ मिलतै, किन्नहु ने मिलतै।
चोर विदिया मे गुरु छलै *(लय परिवर्तन)*
हिरदय रहै उदार
सर समाजक संग करैत छल
बापे सन बेवहार।
(पद्य मे) सरग मे इस्सर धरती पर सरदार।
गुन जकर जिनगी भरि,
कियो नै भुलतै हौ।

कियो ने भुलतै
एहन सरदार आब
फेनो नइँ मिलतै। *(गद्य मे)*
नइँ मिलतै, किन्नहु ने मिलतै। नइँ मिलतै, किन्नहु नइँ मिलतै।

सरदार : *(कठिनता सँ)* एना हतास किऐ होइ छें रे। मोन छोट नइँ करै जाइ जो। हमरा बाद देबहा तोहर सरदार हेतौ। हमरो सँ नीम्मन जकाँ खियाल रखतौ।

दुरमतिया : *(ठाढ़ होइत)* मुदा सरदार। हमरा एक टा बात कहबाक छल।

किछु स्वर : की भेलै?

सुमरित : रे दुरमतिया। सरदार के बाज' दही।

दुरमतिया : हम कहाँ रोकै छियै, हमरा तँ एक टा बात कहबाक छल।

सरदार : बाज दुरमतिया। की कहबाक छौ?

दुरमतिया : सरदार। तोहर हुकुम टारबाक तागति हमरा मे नइँ छ। तेँ हरदम हमरा कात-करोट लगौने रहलह। आइ चल-चलन्ती के बेर मे तोरा हमर बात सुनहि पड़तह।

सरदार : कह। की कहै छें?

दुरमतिया : हम सब दिन छाँह जकाँ तोरा पाछाँ-पाछाँ रहली। सेन्हि फोड़' सँ ल'क' मोटा उघए तक, मे सब से आगाँ रहली। तों जे देल' ताही पर संतोष बन्हली। मुदा कहियो मुँह नइँ खोललो। मुदा आइ हम कहबे करब'।

सुमरित : तोहर कहनाम की हउ से ने बाज।

दुरमतिया : हमर कहनाम इहे जे तों सरदार बनेबाक बात करै छ तँ हमरो पर आँखि फेरहक।

सरदार : रे साफ-साफ बाज ने।

दुरमतिया : तोरा बाद, हम सरदार बनब।

कुबड़ा : से कोना हौ?

दुरमतिया : केना कथी रे? देबहा चोर, हमहू चोर। ने औकरा सी अछरक ज्ञान छै ने हमरा। जे-जे ओकरा अबै छै, से-से हमरो अबैए। समाजक आइन-कानून जते ओकरा बुझल छै, हमरा ओहि सँ बेसी बुझल हए। जते बोझा ल'क' ओ पड़ा सकइए ताहि सँ पाँच सेर बेसी ल'क' हम पड़ा सकै छी।

सरदार : सुन दुरमतिया। हम तोहर बात बुझलियौ। मुदा देबहा के सरदार

बनेबाक बात कोनो आइ सँ नइँ छै। तोरा मोन मे जे काँट छलौ से पहिने बजितें।

दुरमतिया : पहिने की आ बाद मे की सरदार। एखने कोन अबेर भ' गेलैए, हमरा सरदार बना दैह।

सरदार : आब ई नइँ भ' सकै छौ।

दुरमतिया : किऐ ने भ' सकै छै।

सरदार : अपना समाजक ई रीत नइँ छै।

दुरमतिया : रीत समयक अनुसार बदलै छै सरदार। एकरा बदलि दहक। अनेरे कलहक गाछ रोपि क' नइँ जाह।

सुमरित : रे! तों सरदार सँ मुँहाठुठी करबीही?

कुबड़ा : बड़ आइन छाँटए बला भेला हें।

झार : सरदारो सँ बेसी अकिल भ' गेलनि हें।

भुइयाँ : कुल कलंकी छियौ ई।

सुमरित : सब बात मे अनेरे के टाँग रोपि देतौ।

(सब...किछु, किछु बाजय लगैए)

(बुड़िराजक प्रवेश। ओकरा दृश्यक अर्थ नइँ लगै छै)

दुरमतिया : रे एहि मे टाँग रोप'क कोन बात भेलै?

(देबहा केँ देखबैत) एकरा सन-सन के हम चोरबिदिया मे सात जिनगी पढ़ेबै।

देबहा : पहिने अपने पढ़, तखन अबिहें हाथ मिलाब'।

दुरमतिया : एखने मिला क' देखि ले!

देबहा : रे तोरा कथीक गुमान भ' गेलौए।

दुरमतिया : अपना पर गुमान अछि-अपना पर।

देबहा : कहलकै जे, रे तों तँ सूगरक गूँह छें।

दुरमतिया : तों बिलाड़िक पाद छें।

देबहा : तों समाजक कलंक छें।

दुरमतिया : तोही कोन अलखक चान छें।

देबहा : हम तँ माथ महक ढील चोरा सकै छी।

दुरमतिया : हम तँ आँखिक काजर चोरा सकै छी।

देबहा : सरदार हमरा पच्छा मे छै।

दुरमतिया : समाज हमरा पच्छ मे छै।

देबहा : समाजक कुकुरो तोरा पच्छ मे नइँ छौ।

दुरमतिया : तखन फड़िछाइए ले।

देबहा : आबि जो बढ़ि क' मैदान मे।

दुरमतिया : तौरा नाक मे कौड़ी नइँ बन्हलौं तँ फेर की।

देबहा : तोरा नाम पर कुकुर नइँ पोसलौं तँ फेर की।

(सरदार केँ खाँसी आबि जाइ छै। बाकी चोर सब दुनू केँ फराक करैए। सरदार शान्त होइ छै।)

सरदार : चल-चलंतीक बेर मे इएह देखबाक छल। जे कहियो ने सुनलौं से भ' गेल। खैर! आब हम अपना मोन सँ निरलय नइँ करब। समाजक लोक सँ पुछै छिय। जकरा मोन मे जे छ से कहि दैह! जे देबहाक पच्छ मे छहक से हमरा दहिना कात आबह आ जे दुरमतियाक पच्छ मे छहक से बामाकात!

(एहिना होइ छै। दुरमतिया दिस मात्र रन्नू-भन्नू छै। देबहा दिस बेसी लोक छै।)

सरदार : की रे दुरमतिया। आब मोन मानलकौ!

दुरमतिया : हम तँ... माने सरदार!

सरदार : अच्छा छोड़। हमरा बाद देबहा तोरा सबहक सरदार भेलौ।

सब : हँ सरदार।

दुरमतिया : जाह सरदार। तों हमरा धोखा द' देलह!

(दुरमतिया कात भ'क' बैसि जाइए। देबहा केँ सरदार बनेबाक प्रक्रिया होइ छै। जय-जयकार होइ छै। दुरमतिया कात मे निःशब्द विलाप करैए)

सरदार : देबहा!

देबहा : सरदार!

सरदार : आब तों एकरा सबहक अगुआ भेलही। सबहक दुख केँ अप्पन दुख बुझिहें।

देबहा : सैह बुझबै सरदार।

सरदार : वैह करिहें जाहि मे सबहक हीत होउ।

देबहा : सैह करबै सरदार।

सरदार : चोरि अपन सबहक जीविका छियौ। जे भेटौ से सबहक बीच बँटिहें। बच्चा, बुढ़, बेमार आ बिधवा सबहक खियाल रखिहें।

देबहा : रखबै सरदार।

सरदार : जाहि गाम मे समाजक बेटी बियाहल हो ताहि गाम मे चोरि नइँ करिहें।

देबहा : नइँ करबै सरदार।

सरदार : चौरेस्सरी देवीक पूजा मे कोताही नइँ करिहें। महाजन धनभुख लालक तीन कोड़ी मुद्रा सधेबाक छै आर... *(खोंखी होब' लगै छै।)*

देबहा : कहक सरदार। बाजह। बाजह ने।

सब : बाजह ने सरदार। बाजह ने सरदार।

सरदार : कने पानि पिआ। *(देबहा पानि पिअबै छै।)* सुन। गयासुदीन तुगलक ओत' चोरि करिहें। हाजी मुहम्मद इलियासक ओत' चोरि करिहें। राजा भव सिंह ओत' लहि जाउ तँ चोरि कर' जइहें। मुदा गोनू झाक ओत' चोरि ने करिहें।

बुड़िराज : *(हड़बड़ाक' बीच मे आबि जाइए)* एहन बात नइँ कहक! तखन तँ जुलूम भ' जेतै। लैहेब भ' जेतै।

सब : के छी? के छी...

बुड़िराज : हौ हम हम... *(किछु ने फुरा रहल छै!)*

सरदार : के छियौ रे!

(बुड़िराज केँ सब पकड़ि क' सरदारक सोझाँ अनैए)

सरदार : रे तों के छें?

बुड़िराज : हम। हम। हम चोरिक चर-चीत...

सरदार : ओ ई तँ चर छियौ।

सब : राजाक भेदिया।

सरदार : देबहा। एकर व्यवस्था कर।

देबहा : सुमरित।

सुमरित : की कहै छ?

देबहा : एकरा गाछ लगा क' बान्ह आ एक घैल पानि ढारिक' देह पर घोरन छत्ता ध' दही।

बुड़िराज : एकरे कहै छै कलियुगक उपकार हत्या बराबरि। एकरा हम एक टा नीक घरक चर-चीत देब' एलियै आ ई... हौ हमर बात सुनह ने...

सुमरित : चल। एखने सतयुगक दरसन करबै छियौ। *(सब ओकरा बन्हैए)*

बुड़िराज : हौ एना नइँ करै जाइ जाह! हौ हमर बात तँ सुनह!

(एक टा चोर ओकर मुँह मे लस्सा साटि दै छै। बुड़िराज गोगिआइ लगैए)

देबहा : सरदार! कने मुँह नइँ ऐंठेबहक।

सरदार : की छौ?

सुमरित : पोठी माछ आ ताड़ी!

सरदार : हमरा तँ... तैयो चल! ई सब सरगो मे नइँ भेठै छै...

(सब सरदार केँ लादिक' ल' जाइए। बुड़िराज गोगिआइत-गोंगिआइत मुँह खोलि लैए। दुरमतियो अछताइत-पछताइत विदा होइए। तीनू भाँटक प्रवेश)

भाँट-2 : भाइ जी यौ भाइ जी!

भाँट-1 : की भेल?

भाँट-2 : देखियौ! पड़ल पदमीनी भाँड़ के पाला।

भाँट-1 : चोरबा सब केलकैए भाला।

भाँट-3 : मुँह पर देखियौ लगलै ताला।

भाँट-1 : बाँकी छै जुत्ता के माला।

भाँट-2 : पुछियौ जे मोन केहन लगै छै।

भाँट-3 : हमरा गाब'क मोन करै छै।

भाँट-1 : अपन कि फिल्मी स्टाइल।

भाँट-2 : जैह चलै छै आइ काइल।

(बुड़िराज विलाप करैए।)

बुड़िराज : आह! ओह! बाप रौ बाप। हो दादा हौ दादा। आ गे मइया।
आगे मइया।
आगे, हम ने जनलियै, चोरक बथान मे, घोरन कटतै-गे मइया।
हौ भाइ हौ भाइ।
ककरा कहबै, के पतिएतै
हम जे भोगै छी-हो भइया।
एखन आबिक' देखओ ने सुबेदरबा। हौ।
हमर एहन हालत भेल हो।

दुरमतिया : **(ताड़ी पीने तलमलाइत, प्रवेश करैत)**
बड़ा सुर मे डिरिआइ छ'। गाना-बजाना सेहो अबै छ' की?

बुड़िराज : *(गबैत)* हौ भैया हौ दुरमतिया।
बड़ गुन मानबह भैया,
जान बचाबह।
(गद्य) हौ सौंसे देह फगुआक पुआ जकाँ फुलि गेलए। हो जिनगी

भरिक गुलामी लिखि देबह हौ।

दुरमतिया : ठीक छै जान तँ हम बचा देबह। मुदा हमरा एक टा बात कह' पड़तह।

बुड़िराज : तों पुछने जाह, हम कहने जाइ छिअ।

दुरमतिया : गोनू झा द' पूछबह।

बुड़िराज : हमहू गोनूए झा द' कहबह। मुदा कने खोलि दैह।

दुरमतिया : नै, खोलबह तँ नइँ।

बुड़िराज : हौ सौंसे देह पिड़ाइए। हौ कोनो जड़ी-तड़ी नइँ छ' बुझल!

दुरमतिया : किऐ ने बुझल रहत?

बुड़िराज : तँ कने लगा ने दैह।

(दुरमतिया एक टा कोनो जड़ी ताकिक' ओकर रस बुड़िराजक देह मे लगबैए)

बुड़िराज : आब आराम भेल। युग-युग जीवह। चोरक सरदार बनह।

दुरमतिया : पहिने तो हमरा गोनू झा द' बताबह।

बुड़िराज : तों पुछने जाह। आ हम करने जाइ छिअ।

दुरमतिया : पहिने ई कहह। *(देबहा आ सुमरितक प्रवेश)*

देबहा : की रे दुरमतिया। एत' की करै छें?

दुरमतिया : एहि चर सँ कने बतिआइ छी।

देबहा : तोरा के कहलकौ बतिआइ ले।

दुरमतिया : हम बतिआएब। के रोकत हमरा।

देबहा : हम। तोहर सरदार।

दुरमतिया : सरदार। हुँह। ओ बुढ़वा तँ हमरा धोखा द' देलक नइँ तँ एखन हम सरदार रहितौं।

सुमरीत : जखन रहितें तखन। एखन तँ देबहा सरदार छै। तेँ ओकर बात तोरा मानए पड़तौ।

दुरमतिया : कोनो जबर्दस्ती छै।

सुमरीत : परम्परा छै।

दुरमतिया : एहन परम्परा केँ हम नइँ मानै छी।

सुमरीत : तों मानबीही किऐ ने?

दुरमतिया : सरदार बनबाक गुन हेतै तखने मानबै?

सुमरीत : माने?

दुरमतिया : जे किओ नइँ केलक से क'क देखाबओ तखन मानबै।

देबहा : की क'क देखबियौ।

दुरमतिया : बेसी किऐ? गोनूए झाक ओत' चोरी क'क देखाबह।

सुमरीत : गोनू झाक ओत'?

देबहा : ओत' चोरी नइँ कैल जेतै।

दुरमतिया : किऐ?

सुमरीत : बुढ़बा सरदार मना क' गेल छै?

दुरमतिया : किऐ मना केलकै से छ' बुझल?

सुमरीत : किऐ मना केलकै?

दुरमतिया : सैह बुझा दैह तँ मानि लेब।

देबहा : बुढ़बा सरदार सँ किऐ ने पुछलीही?

दुरमतिया : हमरा तँ धोखा द' देलक। तोंही किऐ ने पुछलहक?

देबहा : तों बलगेंग करै छें।

दुरमतिया : आब तों जे बुझहक।

बुड़िराज : *(स्वगत)* यैह अछि बजबाक असली समय। *(चोर सँ)* हौ सुनै जाइ जाह। एक टा काज करह। दुनू गोटे बाजी लगा लैह। जे गोनू झाक ओत' चोरी क' लेत सैह असली सरदार हैत। देखह। केहन बात कहलिय?

दुरमतिया : ठीके। ठीक कहलह!

बुड़िराज : तखन माटि दहक।

दुरमतिया : *(माटि उठाक')* हम तोरा माटि दै छियह।

देबहा : सब खोरफात के जड़ि इएह छी। रे तोरा के कहलकौ बीच मे टप-टप करए?

बुड़िराज : तोरा खराप लागि गेल'? लैह आब हम नइँ बाजब।

दुरमतिया : हम तोरा माटि दै छियह।

सुमरीत : माटि तँ लेबहि पड़त।

देबहा : ठीक छै ला माटि

(बाजी लगेबाक प्रक्रिया होइ छै। दोसर कात सँ दुनू चोर दू कात जाइ लगैए)

बुड़िराज : हौ। हमरा तँ खोलने जा। एक टा मालदार घरक सूचना देबह।

(दुनू दल अबैए)

दुनू दल : कह ने!

बुड़िराज : पहिने खोल ने *(बुड़िराज केँ खोलल जाइ छै।)*

दुनू दल : आब कह।

बुड़िराज : की कहिय?

दुनू दल : मालदार घर कोन छै।

बुड़िराज : गोनू झाक।

सब : धत तोरी के।

देबहा : तों के छह हौ।

बुड़िराज : हम बुड़िाज छी।

दुनू दल : ऐं *(पड़ाइए)*

बुड़िराज : एत' तँ लगैए यात्रा सुफल भेल। आब चली, तहसीलदारक आतिथ्य ग्रहण कएल जाए।

[दृश्यांतर]

दृश्य-एगारह

(तहसीलदारक दरबार। सेठ धनभुखल आ तहसीलदार मंच पर। बुड़िराजक प्रवेश।)

बुड़िराज : नमस्कार। सरकार!!

तहसीलदार : नमस्कार। स्वागत। आएल जाओ बुड़िराज मंत्री महोदय।

बुड़िराज : हद नइँ करू। रद्द भ' जैत।

तहसीलदार : हें। हें। ठट्ठा केलौं कने। अहाँ जे कहबै सैह कहब।

बुड़िराज : हमरा मंत्री महोदय कहू। बुड़िराज तँ हम छीहे।

सेठ : जै रामजी के मंत्री महोदय।

बुड़िराज : जय हो। की हालचाल सेठ धनभुखल लाल जी!

सेठ : दया छै मंत्री महोदय के।

तहसीलदार : कहल जाए समाचार।

बुड़िराज : बहुत बढ़िया।

तहसीलदार : गढ़ मे संवाद पठबा दिऐ?

बुड़िराज : आवश्यकता नइँ। प्रतिफलक संग हम स्वयं गढ़ मे प्रवेश करब।

तहसीलदार : मुदा केलियै की? से ने कहू...

बुड़िराज : एहन जोगाड़ धरा देलियैए जे सब राति गोनू झाक घर मे चोरि हेतै।

सेठ : वाह। वाह। एते माल छनि गोनू झाक घर मे।

बुड़िराज : छनि। मुदा आब नइँ रहतनि।

सेठ : *(तहसीलदार सँ)* हमरो खियाल रखबै सरकार!

तहसीलदार : खियाल अहाँ केँ रखबाक अछि धनभूखल लाल जी।

सेठ : से तँ जे आज्ञा सरकार!

बुड़िराज : तखन वस्तुक जे दाम लगाओल जाएत तकर आधा सुबेदारक कोष मे बाकी आधा मे सब गोटे बराबरि क'।

सेठ : जे आज्ञा।

बुड़िराज : तखन। लगान बला फरमान त...

तहसीलदार : जारी भ' गेल।

(एक टा रैयत केँ पकड़ने द्वारपालक प्रवेश।)

द्वारपाल : सरकार! ई ग्राम-प्रमुख किछु कहए चाहै छथि?

तहसीलदार : कह' दियनु *(प्रमुख केँ द्वारपाल छाड़ि दैए।)*

प्रमुख : सरकार! एक टा अर्जी छै

तहसीलदार : अर्ज करू

प्रमुख : सरकार। एहि बेर बड़ सहजोर बाढ़ि एलै।

तहसीलदार : ईश्वरक प्रकोप। के रोकत ओकरा। मुदा बाढ़ि तँ चल गेल।

प्रमुख : फसिल ल'क' गेल।

तहसीलदार : ईश्वरक प्रकोप। यज्ञ-जाप छोड़ि देने तँ एहिना हैत।

प्रमुख : जग-जाप तँ होइते रहै छै सरकार। तखन एहि बेर लगान जँ नइँ असुलितियै!

तहसीलदार : नइँ असुलब तँ की करब! हमर तँ काजे यैह अछि। असुलब नइँ तँ की करब?

प्रमुख : एहि बेर आराम करियौ ने सरकार!

तहसीलदार : से जँ छुट्टी दिया दी तँ जरूर आराम करब।

प्रमुख : हम केना छुट्टी दिया सकै छी सरकार।

तहसीलदार : सुबेदार महोदय सँ कहि क'!

प्रमुख : हमरा सब केँ ओत' पहुँच कत' सरकार। हम तँ अहीं के कहब। एहि बेर तँ सरकार मरकी-हैजा-जड़ैयाक सेहो चलती छै। लोक साफे जँता गेल अछि।

(बुड़िराज हँसैए। सेठ धोती मुँह पर रखैए)

तहसीलदार : ई सब टा अहाँ सुबेदार जी केँ कहबनि तँ बेसी लाभ हैत। हम तँ आदेशपालक। आ हमरा बढ़ाक' लगान असुलबाक आदेश भेटलए!

प्रमुख : ऐं!

तहसीलदार : हँ!

(प्रमुख बेहोश भ' जाइए।)

[दृश्यांतर]

दृश्य-बारह

(सिपाहीक संग ढोलहो दैत ढोलकियाक प्रवेश। लोक सभक आगमन)

सिपाही : रैयति सब केँ मालूम, जे एहि बेर नवका सरकार एलाहए। आ ई सरकार ओ सरकार नइँ छथि। सरकार बड़े कड़ा छथि, तेँ एहि बेर फी कट्ठा, पाँच दमड़ी बेसी लगान लागत। एकर अलावे, सरकारक बाबर्चीखानाक लेल, सब अपना-अपना घर सँ, दूध-दही-घी, दालि-तीमन-तरकारी, अरबा बासमती चाउर, छागर, खस्सी पहुँचाबए। जोलहा कपड़ा पहुँचाबए, चमार पनही आ चाबुक पहुँचाबए, तेली खांटी करू तेल पहुँचाबए, धानुक पानि भरए आ दुसाध सब बेगारी करए। जे हनछिन करत, तिरिंग मे भिरिंग करत, तकर इलाज हेतै एहि सँ।

(चाबुक फटकारैए। ढोलहो दैत प्रस्थान)।

(तहसीलदार आ ओकर दहिना बामा सेठ एवं बुड़िराजक प्रवेश : नेपथ्य सँ गीत)

(साँझ सनक समय। दोसर कात सँ गबैत भाँट सबहक प्रवेश)

जालिम तहसीलदार,
जालिम तहसीलदार!
जालिम तहसीलदार एलै-गाम मे।

(बुड़िराज रहि-रहिक' देह ऐंचैए। सेठ ओकरा देखैए। तीनू एक रिदम मे चलैए)

जालिम साहेब तहसीलदार
चलाक, घुसक ओ बेबहार
करैए लुटिक कारोबार
बनलए जन जीवन पर भार
लाधिक' आतंकक अन्हार
गोनूक गाम मे!

(गीतक क्रम मे तहसीलदारक घर अबै छै। बुड़ि आ सेठ चलि जाइए। भोर सनक दृश्य। मुँह धोबाक स्थान बनैए। भाँट सब एक कात मे गबैए। तहसीलदारक अनुरूप क्रिया करैए)

जालिम साहेब तहसीलदार,
जालिम साहेब तहसीलदार
दतमनि करए भोरे-भोर
लटकल ओकर निचला ठोर।

(गोनूक प्रवेश। पाछाँ सँ आरो लोक अबैए)

दाँत रगड़लक, मुँहो धोलक
दाढ़ी पड़लै पानि
पोछलक, एक टा दाढ़ी टुटलै,
गोनू पहुँचल फानि।

(गोनू झा फानिक' पहुँचैए आ दाढ़ीक केश ल'क' धोतीक खूट मे बन्हैए)

तहसीलदार : *(अकचकाइत)* ई की कैल गोनू झा?

गोनू : सरकार। अपनेक ई दाढ़ी। आहा, हा। पुण्यक महाअरण्य अछि। ताहि पर सँ एखनुका जे ग्रह दशा छै, से एकर महत्ता केँ कतेको गुणा बढ़ा देलकैक अछि।

तहसीलदार : अच्छा एहन बात औ,

गोनू : तँ आर की सरकार। पूजा पर बैसल छलौं, तँ आकाशवाणी भेल। दूरदर्शन मे देखलौं, जे समस्त रिद्धि-सिद्धि, भोग-रोग आ योगमाया विद्यमान छथि।

तहसीलदार : कतए विद्दमान छथि।

गोनू : अहाँक दाढ़ी मे।

तहसीलदार : हमरा दाढ़ी मे!

गोनू : हँ सरकार!

तहसीलदार : से किऐ औ?

गोनू : सैह तँ कहै छी सरकार।

तहसीलदार : कहू-कहू, जल्दी कहूँ।

गोनू : सरकार। आब अहाँक दाढ़ी सामान्य दाढ़ी नइँ रहल।

तहसीलदार : नइँ रहल?

गोनू : नइँ रहल।

तहसीलदार : तखन की भ' गेल?

गोनू : कल्प-दाढ़ी। एहि कालखण्ड मे अहाँक दाढ़ी सामान्य सँ बदलिक' कल्प-दाढ़ी भ' गेल।

तहसीलदार : कलप दाढ़ी। ई की भेलै यौ?

गोनू : सरकार! स्वर्ग मे एक टा वृक्ष होइ छै। कल्प-वृक्ष। ओहि गाछ तर जाक' जे मँगबै सैह भेटत।

तहसीलदार : अच्छा।

गोनू : तदनुरूपे सरकार, अहाँक दाढ़ी सँ, किछु क्रिया, कर्मक उपरान्त, जे माँगल जेतै सैह भेटतै।

तहसीलदार : से कोना।

गोनू : से एना सरकार, जँ किओ एहि मुहूर्त्त मे अहाँक दाढ़ीक एक टा केश ल'क', ओकर षोडषोपचार विधि सँ पूजा करत आ अन्हरिया राति मे, गामक बाहरक बूढ़बा बरक गाछ तर जाक' नेंगड़ा गदहा के खीर आ कनहा कूकूर केँ खाजा खुआ क' केश सँ जे माँगत सैह ओकरा भेटि जेतै।

तहसीलदार : तखन?

गोनू : तखन की? अपने जँ दाढ़ीक एक टाक' केश प्रजा मे बाँटि दिऐ तँ रामराज आबि जेतै।

तहसीलदार : नीक बुद्धि द' रहल छी। हम किऐ बाँटब औ?

गोनू : नइँ सब केँ। दूइयो चारि गोटे के तँ दिऔ।

कुंजन : सरकार, हमरा तँ एक टा दैबे करू।

तहसीलदार : चल भाग। हमरा तँ एक टा देबे करू! सरदार!

सरदार : हुकुम सरकार।

तहसीलदार : एक टा गमछा आन त। आइ सँ हम अपन दाढ़ी के झाँपिक' राखब।

झामलाल : *(गोनू सँ)* हमरा एक टा दिया दिअ ने।

गोनू : *(दावल स्वर मे)* आम खैब अपने आ लग्गी लगबै छी हम्मर। *(जोर सँ)* यौ गौंआ समाज सभ! सोचू! सरकारक दाढ़ी एहन महान तँ ओ अपने कते महान हेता! अरे। सरकार तँ सरकार छथि। धर्मराजक अवतार, जमराजक यार आ बुड़िराजक भजार छथि। कर्णक दोसर रूप छथि। दानवीर छथि, भूप छथि। बढ़ू। आगू बढ़ैत जाइ जाउ। एक टाक' केश माँगि लिअ।

कुंजन : *(बढ़ैत)* सरकार। एक टा केश। *(विराम)* अपनेक दाढ़ी सँ... सरकार।

तहसीलदार : चल भाग। अपन दाढ़ी नोंचिक' हिनकर तकदीर बनबिअनु। थरियाक पानि मे पहिने मुँह देखिक' आ।

भोनू : सरकार। एक्के टा। दिअ। हम आ कक्का आधा-आधी बाँटि लेब।

तहसीलदार : नइँ किन्नहु ने। *(मुँह दुसैत)* आधा-आधी बाँटि लेब। भगै छें की नइँ। कोनो खैरात छिऐ रे।

झामलाल : हजूर, एक टा दैए देब तँ की बिगड़त?

तहसीलदार : द' देबौ तँ की लाभ हैत?

कुंजन : बड़ गुन मानब सरकार।

तहसीलदार : कोनो जरूरत नइँ छै *(मुँह दुसैत)* बड़ गुन मानब! हिनकर गुन ल'क' हम ताबीज बनाए गर्दनि मे लटकाएब।

गोनू : *(लोक सब सँ)* एना करब तँ हैत? एमहर मुहूर्त बीतल जाइए *(तहसीलदार सँ)* ई सब थेथर अछि सरकार! दू-चारि टा केश तोड़िक' द' दिऔ।

तहसीलदार : से ओकरा सब केँ किऐ देबै? किन्नहु नइँ देबै।

गोनू : ई उचित विचार नइँ भेल?

तहसीलदार : से किऐ?

गोनू : दाढ़ीक जे ई खेती अछि से बिना लागत के अछि तेँ।

तहसीलदार : मुदा खेत तँ हमरे अछि ने।

गोनू : तैयो बाँटि दितियै त...

तहसीलदार : नइँ यौ हम अपने राखब।

गोनू : *(तहसीलदार सँ)* राखि सकी तँ राखि लिअ *(लोक सँ)* औ लोकनि तकै की छी। ई अवसर बेर-बेर नइँ अबै छै। बढ़ू आ नोचि लिअ। *(सब घुरैए। सेवक अबै छै ओ लोक केँ रोकए चाहैए, गोनू ओकरा फुसफुसाक कहैए। देबहा अबैए। ओहो सुनैए)* इह बुड़ि रे। जिनगी भरि एहिना रहब? हौ तोरा सब केँ अपना भाग्य सँ दुश्मनी छह की?... नइँ ने! लोक सब जे करै छै से कर' दहक। तोंहू दू टा केश नोचह आ भाग्य बनाबह। *(सेवक सेहो नोच लगैए। सब दाढ़ी नोचि रहलए। तहसीलदार केँ पड़ाइत बाट नइँ सूझै छै। ओ बेहोश भ'क' खसैए।)*

गोनू : थम्हू। थम्हैत जाइ जाउ। आब दाढ़ी नोचने कोनो लाभ नइँ। शुभ

मुहूर्त शेष भ' गेल। सरकारक दाढ़ी आब पुनः सामान्य दाढ़ी भ' गेलनि। आब सब गोटे अपन-अपन केश केँ नापिक' देखू जे एक ठुट्ठीक अछि की नइँ। *(सब नाप' लगैए। तहसीलदार केँ कने अवकाश भेटने जान मे जान अबै छै)*

तहसीलदार : ई सब टा खुराफात अहींक अछि गोनू झा।

गोनू : हम की कैल सरकार?

तहसीलदार : ई कलप दाढ़ी के हल्ला।

गोनू : एहि मे की झूठ अछि। शास्त्र मे लीखल छै।

तहसीलदार : कत' लिखल छै? देखाउ त।

गोनू : सरकार। अहाँ जे फी कट्ठा पाँच दमड़ी लगान बढ़ा देलियै से किऐ?

तहसीलदार : एहि बात सँ दाढ़ीक कोन सम्बन्ध?

गोनू : अन्योन्याश्रित सम्बन्ध छै।

तहसीलदार : से कोना?

गोनू : बनौला सँ। अहाँ कहू जे लगान किऐ बढ़ौलौं।

तहसीलदार : सरकारी हुकुम सँ।

गोनू : देखाउ तँ हुकुमनामा।

तहसीलदार : अहाँ केँ किऐ देखाउ हुकुमनामा।

गोनू : हमहू अहाँ केँ शास्त्र किऐ देखाउ?

तहसीलदार : हम अहाँक शिकायत करब?

गोनू : अवश्य कएल जाओ। तखने ने सब बात खुजतै जे अहाँ बिना आदेश केँ लगान बढ़ौलौं, आब' काल नजराना, जाए काल विदाइ आ जते दिन रहै छी, तते दिन दस्तुरी कहि क' प्रजा केँ लुटै छी आ राजा केँ धोखा दै छी।

लोक सब : अन्याय अछि। घोर अन्याय।

(देबहा केँ छोड़ि सबहक प्रस्थान, पहिने तहसीलदार जाइए)

(मंच पर मात्र देबहा रहि जाइए)

देबहा : भेटि गेल। हमरो एक टा केश भेटि गेल। हे केश। हे केश! हे तहसीलदारक कलप दाढ़ीक चमत्कारी केश। हम कहुना गोनू ओत' चोरी क' ली। सरदारीक लाज राखह हे केश।

(गबैत भाँट सबहक प्रवेश)

भाँट : भुइयाँ पड़ल केश दाढ़ी के देबहा के एक टा भेटि गेल।

खनहन भेलै मोन ओकर आ गोनू के घर देख गेल।
कृष्ण पक्ष के राति आखिरी क्षण मे घोर अन्हरिया भेल।
जखने आयल चोर गली मे तखने तँ ई हल्ला भेल
चोर-चोर-चोर!

[दृश्यांतर]

दृश्य-तेरह

(देबहा आ भाँट एक दोसरा केँ देखि चीत्कार क' क विपरीत दिशा मे भगैए, तुलसी चौरा मे नुकाइए। गोनूक प्रवेश। गोनू पान खा रहल छथि। चोर तुलसी चौरा मे नुकाइए। गोनू ओकरा देखै छथि। स्त्री घरक अन्य काज क' रहल छथि। गोनू इशारा सँ पत्नी केँ पूछै छथिन जे पान कत' फेकू। स्त्री झझकै छथिन। गोनू तुलसी चौरा दिस बढ़ै छथि।)

स्त्री : हाँ हाँ ओम्हर नइँ। *(गोनू तुलसी दिस पीक फेकै छथि।)* ई की कैलौं अहाँ?... जेना-जेना वयस बढ़ल जाइए तेना-तेना बुद्धि घटल जाइए। कह' ले महोपाध्याय आ तकर एहन किरदानी! देखि दाँते आँगुर काटय। जाहि ठाम हम साँझ देखबै छी ताहि तुलसी चौरा पर... *(गोनू फेर पीक फेकै छथि)*। फेरो। ई की करै छी अहाँ। एना किऐ करै छी। ई कोन साहि लागि गेल अहाँ केँ? *(गोनू बेर-बेर पीक फेकै छथि।)* बताह तँ ने भ' गेलौए'? कोनो हवा-बसात तँ ने लागि गेल। *(गोनू फेर पीक फेकैए।)* बजबियै भगता केँ? आश्चर्यक बात छै। एकाएक एना... *(गोनू फेर पीक फेकैए)* अहाँ नइँ मानव।... हएह हम लोक सब के सोर पारे छियै। ओ भोनू बौआ छी? भोनू बौआ।

भोनू : *(नेपथ्य सँ)* की कहै छी भौजी। किऐ गदह करै छी?

स्त्री : यौ देखिअनु तँ हिनका?

तेसर गौआँ : *(नेपथ्य सँ)* की भेलै भोनू?

भोनू : *(नेपथ्य सँ)* भौजी गदह करै छथि। आबह ने कने।

तेसर : *(नेपथ्य सँ)* अबै छी *(सोर करैत)* कुंजन छह? कुंजन छह हौ?

दोसर : की भेल? अबै छी

भोनू : *(हड़बड़ाए प्रवेश करैत)* की भेल भौजी।

(गौआँ सबहक प्रवेश)

स्त्री : कने देखिअनु हिनका

भोनू : की भेलनि हें।

स्त्री : थुकनी गोसांइ सवार भेलनिहें।

भोनू : कोनो नवका देवता उपर भेलखिन्हे ?

सब : ई कोन देवता भेलखिन्ह ?

स्त्री : एहि गोसांइ के प्रभाव सँ लोक तुलसी-चौंरा पर थूक फेकै छै।

(गोनू तुलसी पर थूक फेकैए।)

सब : एना किऐ करै छी ?

गोनू : सुनह ! हमरा आ बूढ़िक बीच एक टा बाजी लागि गेल।

स्त्री : सुनि, लिअ थुकनी गोसांइ झूठो बजबै छै।

सब : कथीक बाजी।

गोनू : तखन शुरूहे सँ कहै छियह।

स्त्री : शुरू सँ कहियौ की अंत सँ, मुदा असल बात कहियौ।

गोनू : असल मे बात ई छै जे हम ओ कमरू-कमख्या गेल रही ने, से ओत' मोन भेल जे कने-मने तंत्र-मंत्र सिखि ली। ब्राम्हण छी हे आ संस्कृत अबिते अछि। चलू कने भरिएतै।

भोनू : से तँ बुझलियै मुदा...

गोनू : सैह तँ कहै छियह। तकरे खिस्सा हिनका कहलियनि।

स्त्री : कहिया यौ ?

गोनू : कहने नइँ रही ?

स्त्री : पाँच बरख पछिलुका बात आइ किऐ मोन पाड़ि रहल छी।

गोनू : आइ ओकर संदर्भ लागि गेलैए तेँ ?

स्त्री : अच्छा से कोना ?

गोनू : हम हवा सँ मनुख बहार क' सकै छी ?

सब : हवा सँ ?

गोनू : हँ हौ। नरसिंह खम्भा फाड़ि क' बहरेला आ गोनू झा गामक शुद्ध हवा सँ मनुख बहार क' सकैत छथि। एही बात पर बुढ़ीक कहनाम जे हवा के तँ मारू गोली। अहाँ तुलसी चौराक दोग सँ मनुख बहार करू त ?

स्त्री : परंतु ई तँ तुलसी चौरा पर पीक फेकै छलाह।

भोनू : पीक किऐ फेकलियै।

गोनू : हौ। ई छै अघोर तंत्र। एहि मे पीक फेकब एक टा तांत्रिक क्रिया

छै, जे मनुख बहार करबाक हेतु आवश्यक छै। बुझलहक।

स्त्री : अच्छा! बुझि गेलियै।

गोनू : बुझि गेलियै तँ हाथ लगाउ।

(दुनू गोटे मिलि क' चोरक एक-एक टा कान पकड़ि क' उठबैए।)

भोनू : अरे! ई तँ देबहा छी।

गुंजन : चोर छी हौ! चोर हौ।

सब : मार चोरबा के! **(सब मार'-मार' ले' छूटै छै। गोनू रोकै छथि)**

गोनू : हाँ-हाँ मारबाक नइँ छै। मारबाक नइँ छै।

भोनू : मारबै ने किऐ? जरूर मारबै।

गोनू : अच्छा ई तँ कहह जे मारनाइ के कोन विद्या कहै छै?

सब : तेरहम विद्या।

गोनू : से जखन बारहो विद्या काज नइँ आओत, तखन ने तेरहमक उपयोग करब। *(सब गल-गुल करए लगैए)* एना कुच-कुच नइँ करह। सुनह। ई चोर अछि मुदा मनुख अछि। मनुख भ'क' ई चोर किऐ अछि? सोचबाक बात छै।

भोनू : चोरक लेल सोचबाक काज। अरे ओकरा तँ...
पीठ एड़ं माथ धौलं'
अर्द्ध चन्द्राय नमो नमः

गोनू : थम्हह। भाषाक टाँग नइँ तोड़ह। जैह अबै छ' ओहि भाषा मे बाजह। आब, एक टा कहह जे एकरा मारने की हेतै?

गुंजन : चोर मरत।

गोनू : चोरि नइँ ने मरत। दोसर चोर आओत।

भोनू : ओकरो मारबै।

गोनू : तेसर आओत।

झामलाल : तेसरो केँ मारबै।

गोनू : तखन चारिम आओत।

सब : सब केँ मारबै।

गोनू : असंभव। सब केँ किओ नइँ मारि सकैए।

भोनू : अहाँ की कह' चाहै छी भैया?

गोनू : चोर मरने चोरि खतम नइँ हैत। हँ, जँ चोरीक इच्छा समाप्त भ' जाए तखने चोरि नइँ हैत। आब एकरा पुछहक जे ई चोर किऐ

अछि? मनुख भ'क', चोरी सन घृणास्पद कर्म किऐ करैए? *(भाँट सबहक प्रवेश)*

भाँट-1 : एकरे कहल गेलै—गोनू झाक जादू।

भाँट-2 : माने चोरि केँ थुकथुकाइ

भाँट-3 : मुदा सत की झूठ, से तँ बुझाइ

भाँट-1 : एहि फेरी मे नइँ पड़ू।

भाँट-2 : गोली मारू-आगू बढ़ू।

भाँट-3 : कत' बढ़ू से ने कहू।

भाँट-1 : आइ चलू तहसीलदारक दरबार।

भाँट-2 : उत्तम विचार।

भाँट-3 : होउ तैयार।

तीनू भाँट : एहि पार सँ ओहि पार।

(तीनू नचैत प्रस्थान करैए)

[दृश्यांतर]

दृश्य-चौदह

(तहसीलदारक बैठक। ओत' तहसीलदार, बुड़िराज आ सेठ बैसल अछि। बुड़िराजक कोनो बात पर सब ठहाका मारैए।)

धन. : वाह। वाह। बुड़िराज। बहि गेलै... *(हँसैए)*।

बुड़िराज : हँ, हे, हे, बहलै?

तहसीलदार : गध-किच्चन भ' गेल। अहाँ तँ ठीके बुड़िराज छी।

बुड़िराज : हें हें अहाँ सबहक कृपा बनल रहओ सरकार! हम तँ गोनू के नूगो नै बना दी तँ हमरा जराड़िबू कहब। *(स्वगत)* जे ने कराबए ई नोकरी! झूठ बाजए लेल तँ नइँ कोनो बात। मुदा जँ गोनू सुनि लेलक? *(आतंकित होइए)*

तहसीलदार : बुड़िराज!

बुड़िराज : सरकार।

तहसीलदार : अहाँ खाली गोनू केँ पटकनियाँ द' दिय। बस।

बुड़िराज : हें हें से तँ सरकार हमरा दहिना-बामा हाथक खेल छै।

तहसीलदार : बहुत पाजी आदमी अछि गोनू झा।

धन. : पाजी अछि, पाजी सनक।

बुड़िराज : सियान पाजी अछि, सियान पाजी।

धन. : सरकार के दाढ़ी नोंचबा देलकनि।

तहसीलदार : एखनो दरद करैए। मुदा हम छोड़बै नइँ।

सरदार : *(प्रवेश)* सरकार!

तहसीलदार : बाजह सरदार!

सरदार : बहरी मे तीन गो मरदाना ठाढ़ हए।

तहसीलदार : के छी।

सरदार : कहै छै जे भाँट सब छै।

बुड़िराज : एह। असली मौका पर आयलए।

तहसीलदार : भेज भितरी।

(सरदारक प्रस्थान। भाँट सबहक प्रवेश। सब केँ अभिवादन करैए)

भाँट-1 : जय हो सरकार केँ।

तीनू भाँट : जय हो-जय हो।

दरबार बढ़े-परिवार बढ़े
सरकार के कारोबार बढ़े
घर मे धन गज-गज करे
सरकार के यश के पताका
आसमान मे उड़े।
जय हो। जय हो।

भाँट-1 : कहियौ सरकार। खेल देखबै की गीत सुनबै?

तहसीलदार : की बुड़िराज? की करब?

बुड़िराज : पहिने गीत सुनल जाए सरकार।

तहसीलदार : सुनाउ, पहिने गीते सुनाउ।

भाँट-1 : तँ सुनियौ सरकार। एक टा नवका बिरहा सुनबै छी।

तीनू : सुना, सुना।

(भाँट दू, माथ पर चद्दरि आँचर जकाँ ओढ़ि स्त्री बनैए। भाँट-तीन ढोलक बजब' लगैए। भाँट-एक आ भाँट-दू आमने-सामने होइए)

दुनू : रे रामजोरी रे... हो...

भाँट-एक : कथिए सँ सोभै परेमियाँ/धरती रे धरमुआँ लाल रे/धरती रे धरमुआँ
कि कथिए सँ सोभै असमान!
कथिए सँ सोभै परेमियाँ/गंगा माइ के गोदिया लाल रओ।

गंगा माइ के गोदिया कि/के-ए कहाबए बुधिमान।

भाँट-दू : रे रामजोरी रे....हो!
फूल-गुल सोभै परेमियाँ, धरती रे धरमुआँ लाल रओ।
धरती रे धरमुआँ कि, चौठी-चन्ना सोभै असमान।
जलचर सब सँ सोभै परेमियाँ गंगा माइ के गोदिया लाल रओ
गंगा माइ के गोदिया, कि गोनूए कहाबए बुधिमान।
रे रामजोरी रे...

बुड़िराज : *(फनकैत)* एइ। बंद कर! बंद कर। हिनके कहने गोनू बड़का बुधियार।

सेठ : बुड़िराज!

बुड़िराज : सेठ जी!

सेठ : गोनूक प्रशंसा करैए। सेहो अहाँक सोझहि मे

बुड़िराज : तँ की करियौ?

सेठ : सुबेदारक शर्त मोन अछि की नइँ?

(बुड़िराज फनकि क' ठाढ़ होइए)

बुड़िराज : कहलकै जे किदन मे किदन नइँ आ नौ सुगर के नोंत!

भाँट-1 : की भेल?

बुड़िराज : की भेल? रे हमरा अछैत गोनू कहियाक बुद्धिमान।

धन. : शांत होउ बुड़िराज। शांत होउ।

तहसीलदार : यौ कविराज सब! अपना गीत मे गोनूक बदला मे बुड़िराजक नाम जोड़ि दियौ।

भाँट-2 : जोड़ि तँ देबै सरकार मुदा तुक नइँ मिलतै।

तहसीलदार : नइँ मिलतै तँ नइँ मिलतै।

धन. : बुड़िराज लेल तुकक कोन आवश्यकता?

भाँट-3 : अर्थों नइँ बैसतै सरकार।

तहसीलदार : से किऐ?

भाँट-1 : ई तँ बुड़िराज छथि।

बुड़िराज : *(तामसे माहुर भेल)* तों नकडूबा छेँ। इह। पीनीक टांड़ी नहितन। रे जहिना पढ़ैत-पढ़ैत लोक बताह भ' जाइ छै, चरम पर जाक' साधक सिद्ध भ' जाइ छै, तहिना बुद्धिक की कहै छै अजीर्णता सँ बुड़िराज पदबी भेटै छै। हँ, की सरकार?

तहसीलदार : अबस्से-अबस्से!

भाँट-2 : कोदो द'क' पढ़ने छी की मड़ुआ द'क'?

भाँट-3 : से गोनू सँ पाला नइँ पड़ल हैत तेँ एना बजै छैथ।

बुड़िराज : देखबीही! बड़का बुधियारक भजार छेँ तँ कह तँ जे कै नमा दू-तीन पर चारि? *(भाँट सब अवाक अछि)* नइँ हेतौ। तोरा सब बूते नइँ हेतौ। आर एक टा सुनने जो, कै नमा बगुलबा टेढ़ *(भाँट सब सोचैए।)* अनेरे प्रयत्न करै छेँ। जो गोनू सँ पुछिक' आ। आब पड़ा एत' सँ सब। *(जोर सँ हुरपेटैत)* गोनूक प्रशंसा सेहो हमरे सोझाँ। एहन झटहा मारब जे टाँग खीरा जकाँ तीन फाँक भ' जैत।

धन. : शांत होउ। शांत होउ बुड़िराज। अरे ओकरा नइँ बुझल हेतै। अहाँ सोझाँ गोनू की अछि? जेना सूर्यक सोझाँ डिबिया।

बुड़िराज : सैह कहू।

धन. : तँ आर की? अहाँ तँ बड़का कलाकार छी। सब केँ एक्कहि मंतर मे खखड़ी जकाँ उड़िया देलियै।

बुड़िराज : हें हें हें...

धन. : आरो किछु अबैए की एतबे?

बुड़िराज : आहि से की कहलौं सेठ। हम एक टा बात पूछै छी, अहाँ तकर जवाब द' दी तँ बूझब।

धन. : पूछू।

बुड़िराज : अहाँ एकबेर मे दू टा काज करै छी। कहू तँ ओ कोन काज सब अछि?

धन. : ऐं यौ, हम काज करै छी?

बुड़िराज : हँ यौ।

धन. : कोन काज?

बुड़िराज : चल' काल मे पैर आगू-पाछू होइए की नइँ? खाए लगै छी तँ मुँह बबा जाइए। बाज' काल सुनाइए। सुतै छी तँ सोंसा चलैए।

तहसीलदार : *(हँसैए)* वाह! वाह! ई तँ बड़ बढियाँ। आब किछु देखाउ।

बुड़िराज : बेस देखबै छी। यौ सेठ। हम ठाढ़ करा देब तँ अहाँ केँ बैसल नइँ हैत।

धन. : केना? *(बुड़िराज सेठ केँ देबाल लगाक' ठाढ़ करबैए मंत्र पढ़ैए)*

बुड़िराज : आब देवाल सँ देह हटौने बिना झुकिक' देखाउ *(सेठ जोर लगबैए।)* लगाउ। लगाउ। आर जोर लगाउ। अरे अहाँ तँ अहीं छी। भीम बुते

नइँ हेतनि। महावीर हनुमान बुते नइँ हेतनि। *(सेठ जोर लगबैए आ धड़ाम सँ खसैए सरदार माने द्वार पालक प्रवेश।)*

द्वारपाल : सरकार।

तहसीलदार : की सरदार।

द्वारपाल : बहरी मे गोनू बाभन आएल छथि।

बुड़िराज : *(स्वगत)* ओकरो एखने एबाक छलै?

तहसीलदार : भेज भीतरी। बुड़िराज! इएह मौका अछि।

धन. : शिकार अपने जाल मे आबि गेल।

तहसीलदार : आब' दिअ। अहाँ सब तैयार रहू, *(गोनू झाक प्रवेश)* आउ-आउ गोनू झा। स्थान धरू हम अहाँ सँ बड़े खुश छी।

गोनू : लगान समय पर आबि जाइए ने।

तहसीलदार : एकदम समय पर अबैए। तेँ ने प्रसन्न छी। मर्द हो तँ गोनू झा सन। एक बेर कहलनि, लगान समय पर पहुँच जैत। सैह भेल। भरि गामक लगान समय पर आबि जाइए, रैयति हो तँ एहन। हँ तँ बुड़िराज! अरे दू-बिदबान, जमा भेल छी। किछु सासतरारथ करै जाइ जाउ।

बुड़िराज : *(स्वगत)* कहै छथि बुड़िराज आ करौता सासतरारथ। जेने कराबय नोकरी *(गोनू सँ)* औ गोनू झा। हमरा मोन होइए जे अहाँ संगे बाजी लगाबी।

गोनू : एहन मोन किऐ होइए?

बुड़िराज : ओहिना बूझू। बच्चा मे बाजी लगबियै तँ बड़ मोन लगै।

गोनू : आबहु लागत।

बुड़िराज : हँ यौ लागत। लगाउ ने।

सेठ : देखियौ ने लगा क'। एक बेर मे नइँ लगै छै।

गोनू : बेश लगबै छी। नियम कहियौ!

बुड़िराज : हमही कहियौ।

गोनू : सैह ठीक रहत।

बुड़िराज : तँ सुनू। एक गोटा कोनो गप्प कहतै। दोसर जँ ओकरा काटि देलकै तँ ठीक, आ जँ नइँ काटल भेलै? तँ एक शत स्वर्ण मुद्रा देबए पड़तै।

गोनू : नइँ-नइँ मुद्रा नइँ। एक सय बेर कान पकड़िक' उठ' बैस' पड़तै।

बुड़िराज : *(स्वगत)* फँसलहुँ। मुद्रा तँ राजकोष सँ जइतै, उठ' बैस' तँ हमरे पड़त। *(तहसीलदार सँ)* अहाँ सब की कहै छी।

गोनू : ई सब की कहता? उठ' बैस' पड़त अहाँ केँ, नइँ तँ हमरा। ई तँ दर्शक छथि। देखता। आनन्द लेताह।

बुड़िराज : हम तँ मुद्रा लाभ दुआरे ने कहलौं। उठा-बैसी? बेस, जैह अहाँक विचार।

तहसीलदार : हँ सैह राखू।

गोनू : पहिने के कहतै?

बुड़िराज : अहीं कहियौ?

गोनू : औ बुड़िराज। एक तँ अहाँ सरकारक दरबारी, दोसर, गप्पक बेपारी, तेसर, प्रस्तावो अहींक अछि। एहना मे हम कोना पहिने बाजि सकैत छी?

बुड़िराज : बेस। तँ हमहीं कहैत छी। सुनू। पछिला राति हम एक टा सपना देखलौं। देखलौं जे एक्के गोटा चल' जोगरक खूब उँचका धूर पर दक', हम आ गोनू झा जा रहल छी, जा रहल छी। धूरक दुनू कात भरि-भरि मर्दक खधिया। खधिया मे एक कात मधु भरल आ दोसर कात...*(घृणा सँ)* विष्ठा।

धन. : *(घृणा सँ)* ए. हे...हे...

तहसीलदार : तखन?

बुड़िराज : तखन, आगू-आगू गोनू झा आ पाछू-पाछू हम। एकाएक घुर पर, बिहरि सँ एक टा साँप बहराइए। गोनू झा चीत्कार क' क' हमरा देह पर खसि पड़इ छथि। बस। दुनू, दुनू कातक खधिया मे ओंघराइए—हम मधु बला खधिया मे आ गोनू झा...

धन. : राम-राम। छी...छी...छी...बिष्ठा मे...

तहसीलदार : लाहौल विला कूबत। तोबा-तोबा। एकर बाद की भेल?

बुड़िराज : हें-हें। एकर बाद तँ हमर नीन्ने टुटि गेल। आब कहू जे बिष्ठा मे डूबल गोनू झा की करैत हेता...

धन. : राम-राम। बिष्ठा मे हेलैत हेता।

तहसीलदार : की औ गोनू झा? की केलियै।

धन. : राम-राम। हेलैत-हेलैत मुँहो मे। *(विद्रूप हँसी)*

गोनू : भ' गेल। तँ सुनू! विचित्र संयोग छै! हमहू पछिला राति यैह सपना देखलहुँ।

बुड़िराज : ऐं।

सब : अच्छा!

गोनू : बुड़िराज केँ तँ नीन्न टूटि गेलनि। मुदा हम सपना देखितहि रहलौं। आगू कहू!

सब : हँ-हँ। कहियौ ने...

बुड़िराज : *(मन्हुआएल)* कहियौ ने।

गोनू : दुनू गोटे कहुनाक' धूर पर चढ़लौं। ठीके हम बिष्ठा मे लेभरल रही आ बुड़िराज मधु मे। आ हा-हा! खांटी मधु छल ओ। गम-गम करैत। हमरा रहल नइँ गेल। हम बुड़िराज केँ चाट लगलौं। आब की छल। हमरा देखाउसे बुड़िराज हमरा चाट' लगला।

(सब हँसैए। बुड़िराज बोकर' लगैए। भाँटक प्रवेश)

भाँट-3 : वाह, वाह, एकरे कहै छै—गोनू झाक सपना। (गाब' लगैए) गोनू झा के सपना, ई तँ गोनू झा के सपना, गोनू झा के...

[दृश्यांतर]

दृश्य-प्रद्रह

(राति होइ छै गोनूक घर। ठोर पर हाथ राखि चुप्प करबाक स्वर। ओत' रन्नू-भन्नू आ दुरमतियाक प्रवेश)

(दुरमतिया आगू, रन्नू-भन्नू पाछू अछि।)

रन्नू : बौआ भन्नू!

भन्नू : भैया रन्नू!

रन्नू : दुरमतिया मनुसुबाएल लगै छ।

भन्नू : हमरा तँ पगलायल लगै छ!

(दुरमतिया ठाढ़ भ'क' हियास' लगैए।)

रन्नू : बोआ भन्नू!

भन्नू : भैया रन्नू!

(दुनू दुरमतियाक पाछाँ ठाढ़ भ' जाइए।)

दुरमतिया : इएह छ गोनूक घर।

रन्नू : तखन कथीक डर।

भन्नू : चल भीतर-चोरी कर'।

दुरमतिया : पहिने सोन्हि कोड़' पड़त।

रन्नू : तोंही कोड़ह।

भन्नू : आर के कोड़त।

दुरमतिया : ठीक छै। हमहीं कोड़ै छी। मुदा तों दुनू कने चौकस रह।

(दुरमतिया आगू बढ़ैए। रन्नू-भन्नू ओकरा पकड़ि क' पूछै छै।)

रन्नू : कोड़' अबै छ ने?

भन्नू : कहियो कोड़ने छह की?

दुरमतिया : हँ हौ। कैक बेर।

रन्नू : तँ जाह। कोड़ह।

(रन्नू दुरमतिया केँ छोड़ि दैए। दुरमतिया आगू बढ़ैए। रन्नू-भन्नू ओकरा पकड़ैए।)

भन्नू : मुदा कते चाकर कोड़बहक।

रन्नू : नइँ बूझल हेत' तँ बुझा देबह।

भन्नू : व्यास आ त्रिज्या सुझा देबह।

दुरमतिया : चुप्प रहह। इएह सब हमरा लेल बाँचल छलाह। नाप-जोख करै छथि। जत्ते मे एक टा मनुख पैसत, तते चाकर कोड़ब।

रन्नू : मुदा कते मे मनुख पैसत?

भन्नू : से बुझल छह?

दुरमतिया : तोरा बुझल छह।

रन्नू : किऐ ने बुझल रहत?

दुरमतिया : कप्पार बुझल रहत। ओ तँ हमर विधाता बाम छल जे बुढ़बा हमरा धोखा देलक। नइँ तँ तोरा सन-सन संगतिया केँ ल'क' कतहु हम चली।

भन्नू : तोरा लेल इएह नीक भेलह।

रन्नू : जे हमरा सन-सन ज्ञानी आ कुलीनक संग भेलह।

दुरमतिया : ज्ञानी आ कुलीन!

भन्नू : सुनह। हम ब्राम्हण छी। एखन चोरक सटिया छी तेँ चोर भेलौं

रन्नू : मुदा तोरा सँ थोर भेलौं।

भन्नू : चौर्य कर्म मे ई जनेउ बड़ उपयोगी।

रन्नू : मानि लिअ जे साँप काटि लेलक।

भन्नू : कटलाहाक उपर जनेउ सँ बान्हि दिऔ।

रन्नू : विष चढ़नाइ बन्द भ' जैत।

भन्नू : घरबैया केँ खाम्ह लगाक' जनौ सँ बान्हि दियौ।

रन्नू : आ निःशंक भ'क' चोरि करू।

भन्नू : चोरीक माल बान्है ले डोरी नइँ भेटैए...

रन्नू : तँ जनौ सँ बान्हि दियौ।

भन्नू : एक टा खास बात तँ ई छै, जे एहि बाटे एक टा सौंसे मनुख बहरा सकैए।

दुनू : से सोन्हि के एतेक चाकर कोड़ह, एतेक चाकर कोड़ह जे आबए जाए मे कोनो बाधा नइँ।

(जनौ सँ सोन्हिक परिधि दुरमतिया केँ माथ सँ ल'क' पएर तक जनेउ घुमाक' देखबै छै)

एतेक चाकर कोरह।

(दुरमतिया अप्पन कपार ठोकिक' दुनू केँ दू कात ठाढ़ करैए)

(घर मे सुतल गोनूक नीन्न टूटै छै। ओ स्त्री केँ जगबैए। स्त्री नइँ उठै छथि। गोनू विठुआ कटैए)

स्त्री : इस्स! अहाँक चालि बड़ खराप अछि। कहू तँ केहन बढ़िया सपना देखै छलौं।

गोन्नू : हमहू तँ सपने देखै छलौं। केहन सपना छल?

स्त्री : अहाँ तँ तेहन जोर सँ ने बिठुआ कटलौं जे सभ टा सपना बिसरा गेल, मुदा छल धरि बड़ नीक सपना। अहाँ की देखै छलियै?

गोनू : हम देखलौं जे घर मे चोर पैसि गेलए!

(दुरमतिया आ रन्नू-भन्नू सिहरि उठैए)

स्त्री : तँ हमरा उठौने की हैत? लोक सभ केँ ने गदह करितियै।

गोनू : सपना मे गदह केलियै, मुदा कियो नइँ आएल।

स्त्री : तँ ओकर तामस हमरे पर उतारि लेलौं।

गोनू : से किऐ करब। मुदा चोरक अबरजात बहुत बढ़ि गेलए। तेँ कहै छी जे...

स्त्री : अहाँ की कहब? हम तँ कहैत-कहैत थाकि गेलौं। मुदा अहाँ लेखे धनसन।

गोनू : से की यै?

स्त्री : हमर कप्पार यै।

गोनू : अहाँ तँ खिसिया गेलौं।

स्त्री : कहू तँ भला। सुतली रातिक' बतोला करब तँ खिसिएब नइँ तँ की गोर लागब।

गोनू : हँ! गोर लागब तँ आशीर्वाद देब।

स्त्री : अहाँक आशीर्वाद ने शुभे ने अशुभे।

गोनू : एह से की कहै छी!

स्त्री : ठीक कहै छी।

गोनू : कहू, की ठीक कहै छी?

स्त्री : एते दिन कहलौं से सुनबे ने केलौं आ एखन एहि अधरतिया मे कहबाक हमरा कोनो बेगरता नइँ अछि।

गोनू : अहाँ पहिने कहिक' तँ देखू।

स्त्री : की कहब! चोरक अबरजात बढ़ि गेलैए। अपनो घर दिस एबे करत। तखन जे घर ढन-ढन भेटतै तँ केहन लागत?

गोनू : तँ की कहै छी?

स्त्री : कर्जो-बर्जो ल'क' घर मे किछु टाका राखि दियौ!

गोनू : यै। गोनू केँ अहाँ की बुझै छियनि?

स्त्री : हम की बुझबनि? सौंसे मिथिला बुझै छनि।

गोनू : तखन सुनू। अरे हम तँ अही चोरी-चकारी दुआरे कहियो धन संचयक प्रयास नइँ कैल। तखन हँ, किछु पैतृक असर्फी-जवाहरात सब अछि। तकरा तेहन ठाम ने नुकऔने छी, तेहन ठाम ने नुकऔने छी जे चोरक प्रपितामह उठि क' औथिन, तैयो ने हाथ लगतनि।

स्त्री : कत' यौ।

गोनू : चुप-चुप। रातिक' अन्हार केँ कान भ' जाइ छै।

स्त्री : आस्ते सँ कहि ने दियौ?

गोनू : नइँ, अहाँ ककरो कहि देबै? स्त्रीक पेट मे बात नइँ पचै छै।

स्त्री : अहाँ मोने हम फुहरि, नै?

गोनू : नइँ नइँ। अहाँ तँ बुधियारि छी।

स्त्री : *(ससरिक' हटैत)* ई लल्लो-चप्पो रहए दिय आ जे कह' लागल छलौं से कहू ने।

गोनू : एना नइँ कहब। पहिने हम्मर सप्पत खाउ जे ककरो नइँ कहबै। तखन कहब।

स्त्री : अइ ले अहाँक सप्पत की खाउ। अप्पन सप्पत खाइ छी।

गोनू : एक्के बात भेल। तँ सुनू। नइँ पहिने ई कहू जे दक्षिण मे जे ओ भाँगक जंगल अछि, तकरा किऐ ने जोतल-कोड़ल जाइ छै?

स्त्री : भाँग उपटि जैत तँ सब साँझ जे एक लोटाक' चढ़े छै, से कत सँ आओत?

गोनू : ताहि लेल दस कट्ठा खेत किऐ बझाएब ? अहाँक ऐंठारो पर जनमल भाँगक गाछ सँ काज चलि सकैए।

स्त्री : तखन ?

गोनू : हमर पिता, अपन समस्त पैतृक सम्पत्ति, असर्फी-जवाहरादि ओही खेत मे गाड़ि देने छथिन। बुझलियै। तेँ।

स्त्री : अच्छा! तेँ नइँ जोतल-कोड़ल जाइ छै। संपत्ति तँ सुरक्षिते अछि। सूदि मे भाँगक उपज। असल जगह अछि। ककरो संदेहो नइँ हेतै। मुदा घरो मे तँ किछु रहक चाही ने!

गोनू : से तँ ठीक कहै छी। बेस, भोरे मे हम किछु व्यवस्था धरबै छी।

स्त्री : आरो कोनो बात अछि ?

गोनू : नहि।

स्त्री : तखन निन्न मे बाधा किऐ ?

गोनू : कोनो बाधा नइँ

(गोनू आ स्त्री सूति रहए।)

दुरमतिया : वाह। वा! वाह। वा!

रन्नू : की भेल ?

दुरमतिया : धन भेटल *(दक्षिण दिस देखबैए)*
ओहि भाँगक खेत मे छै।

भन्नू : तखन तँ पड़ले भेटल।

रन्नू : उपरे मे छै की गाड़ल।

दुरमतिया : गाड़ल।

रन्नू : तखन उप्पर की तकै छह ?

भन्नू : नीच्चाँ ने ताक।

रन्नू : कोदारि लाब'।

भन्नू : खेत देखाब'।

[दृश्यांतर]

दृश्य-सौलह

(परातीक स्वर। चोर सब खेत तमैए। भोर होइ छै। लोटा नेने गोनूक प्रवेश)

गोनू : वाह। वाह। ई भेल' ने मनुख बला लक्षण। अरे हाथ पैरक बीच मे ने पेट छह ? तँ पेट भरक लेल काज कर'क चाही। अरे की

भेल' जे असर्फी नइँ भेटल'। अइ परती केँ कोड़ल। अइ मे अन्न उपजत। आ अन्नक आगू सब असर्फी-जवाहरादि नगण्य। बुझलहक। थम्हह। हम जल्दी सँ पनपिआइक व्यवस्था धरबै छिय'। जाए काल मे पा भरि बोनि बेसिए देबह। जल्दी-जल्दी हाथ चलाबह। वाह वाह! चोरि छोड़ह आ श्रम करह। करैत जाइ जाह। करैत जाइ जाइ...

(प्रस्थान)

(चोर सब अवाक भेल ठाढे रहि जाइए।)

(भाँट-एक के प्रवेश! चोर सब पड़ाइए आ भाँट सँ टकराए।)

भाँट-एक : *(चोर सब केँ देखि)* केना सिताहल नढ़िया जकाँ पड़ाएल जाइए। हँ, हँ, गोनू सँ पाला पड़ल छनि ने। जैह ने होनि सैह एक लाख, मुदा करता की, बाजी जे लागल छनि। सरदारी मुरेठाक लोभ मे, ओखली मे दिया सर तो चढ़ जा बेटा सूली पर आ बनि गेलै एक टा कहबी—गोनू झाक परती...आब, हे अवतारी दर्शक लोकनि। अहू सब नइँ घबराउ। नाटक तीन चौथाइ समाप्ते बुझू। आर अंतिम चौथाइ के पहिल दृश्य आरंभ भ' रहल अछि, तहसीलदारक बैठक मे।

[दृश्यांतर]

दृश्य-सतरह

(तहसलदारक दरबार। तहसीलदार, सेठ, आ बुड़िराज चिन्तित अछि।)

बुड़िराज : *(एकाएक)* ठेकि गेल यौ। ठेकि गेल।

तह.-धन. : *(चौंकैत)* की भेल?

बुड़िराज : कंठ तक ठेकि गेल।

धन. : के?

बुड़िराज : *(स्वगत)* इएह नोकरी!

तहसीलदार : के।

बुड़िराज : आर के? इएह गोनू झा।

धन. : हँ सरकार। एकर उपाय भेनाइ बड़ जरूरी अछि। हम तँ आब भूखे मरि जाएब।

बुड़िराज : हमहूँ।

धन. : तैयो अहाँ हमरा सँ कपरगर छी।

बुड़िराज : *(स्वगत)* से तँ हम अपने ने बूझै छी।

(द्वारपालक प्रवेश)

द्वारपाल : सरकार।

तहसीलदार : की सरदार।

द्वारपाल : बहरी मे चोरबा दुरमतिया ठाढ़ हए।

तहसीलदार : भेज भितरी।

बुड़िराज : *(स्वगत)* आब एकरे आशा अछि।

सेठ : *(स्वगत)* हँ। बड़ा बेर पर आएल अछि।

(दुरमतियाक प्रवेश। सब केँ झुकि क' प्रणाम करैए।)

तहसीलदार : की रे दुरमतिया। गाही सँ बेसी अन्हारी बाकी छौ। पठबै किऐ ने छें?

धन. : अहाँ देबक बात करै छी सरकार। ई तँ लेबहि ऐल हैत!

तहसीलदार : किऐ? चोरि नइँ करै जाइए।

धन. : गोनू झाक फेरी मे पड़ल अइ।

तहसीलदार : की रे? ई की सुनै छियौ?

दुरमतिया : की कहब सरकार, बुढ़बा मरैत काल हमरा धोखा देलकै। देबहा के सरदार बना देलकै। हम नइँ मानलियै तँ हमरा आ देबहा मे बाजी लगलै, जे गोनूक घर मे चोरीक' लेत सैह सरदार हैत।

बुड़िराज : तखन?

दुरमतिया : तखन की? सब राति गोनू छका दैए। ने हमरे हाथ लगैए ने देबहे के।

बुड़िराज : मरछाउर किऐ ने छीटै छें?

दुरमतिया : मरछाउर, सुतलाहा पर असरि करै छै सरकार। जगलाह पर नइँ।

धन. : गोनू भरि राति जगले रहै छथि की?

दुरमतिया : से केना कहू? मुदा जहाँ कि सेन्ह फूटै छै, कि जागि जाइ छै।

बुड़िराज : गोनू जखन गाम-गमाति जेता, तखन चोरि क' लिहें।

दुरमतिया : नइँ। से तँ गोनूक अछैते चोरि करबाक बाजी लागल छै।

घन. : ई तँ बड़का फेरी छौ।

दुरमतिया : अही खातिर हिनका आउरक शरण मे एलियैए।

बुड़िराज : हमहूँ सब चलियौ तोरा संगे?

दुरमतिया : *(जीह कुचि)* केहन बात करै छथिन सरकार। *(स्वगत)* हिनका

सब केँ जेबाक कोन जरूरी ?

तहसीलदार : तखन आब जोर-जबरदस्ती कर।

दुरमतिया : जबरदस्ती केना करबै ? चोर कतौ जोर अजमौलकैए।

धन. : नइँ अजमेबें तँ गोनू ओत' चोरि केना करबें ?

बुड़िराज : सरदार केना बनबें ?

दुरमतिया : नइँ यौ। समाज हमरा बारि देत।

धन. : हौ बुड़ि प्रचण्ड। सरदारी तोरा हाथ मे रहतौ तँ समाज तोरे हुकूम मानतौ। तों जे कहबही सैह हेतै। बुझलही।

तहसीलदार : बेसी अथ-उथ नइँ। जेना कहै छियौ तेना कर। तलवार आ भाला हमरा सँ ल' ले। लाठी आ खंती तँ अपने हेतौ।

बुड़िराज : से किऐ ने हेतै।

तहसीलदार : सरदार।

द्वारपाल : हुकुम सरकार

तहसीलदार : भीतर सँ एक टा भाला आ तलवार नेने आ।

दुरमतिया : हम कहियो तलवार हाथ मे नइँ लेने छी सरकार।

तहसीलदार : आइ ल'क' देखही। *(सरदार, तलवार आ भाला ल'क' अबैए)* ले दुरमतिया पकड़। **(दुरमतिया हिचकिचाइए। तीनू अपन रूखि कड़ा करैए आ दुरमतिया चाकभाउर के गोल-गोल घूमैए। दुरमतिया उनटा तलवार पकड़ैए)**

बुड़िराज : इह बुड़ि रे। तलवारो पकड़बाक लूड़ि नइँ छनि।

दुरमतिया : मुदा सरकार। ई हमरा कोनादन लगैए।

धन : सब ठीक भ' जेतौ।

दुरमतिया : नइँ सरकार। हमरा बूते नइँ हैत।

तहसीलदार : हेतौ-हेतौ।

दुरमतिया : नइँ सरकार। हमरा दोसरे कोनो उपाय बतबथुन।

तहसीलदार : नइँ हेतौ ?

दुरमतिया : नइँ सरकार।

धन : नइँ हेतौ ?

दुरमतिया : नइँ सरकार

बुड़िराज : नइँ हैतौ ?

दुरमतिया : नइँ सरकार

तहसीलदार : तखन हमर सब टा अन्हारी आ डाली जमा कर।

धन. : हमर अगाउ, सुदि-मूर संग वापस कर।

बुड़िराज : देबहा सँ जे बाजी लगेबाक बुद्धि देलियौ, तकर दक्षिणा ला।

दुरमतिया : दोहाइ सरकार।

(बेबस भ'क' थस ल' लैए।)

तहसीलदार : कोनो राइ-दोहाइ नइँ। राख एखन नइँ तँ खाल खिचिक' भुस्सा भरि देबौ।

दुरमतिया : गोहारि। गोहारि सरकार। ई सब जे कहथिन से करबनि।

धन. : आब एलें ने बाट पर।

बुड़िराज : अरे लातक देवता कतहु बात बुझए।

दुरमतिया : मुदा हमरा कने सिखा देथुन सरकार।

तहसीलदार : से सब भ' जेतौ। सरदार!

द्वारपाल : हुकुम सरकार।

तहसीलदार : एकरा सब टा सिखा दही। केना हथियार पकड़त। केना गोनू घर पैसत, केना समान छीनत आ जँ हल्ला करतै गोनुआ तँ केना दुनू बेकतीक हत्या करत।

(भाँट सबहक प्रवेश।)

भाँट-1 : एलै एहन बाट पर

भाँट-2 : टाँग दुनू छै टाट पर

भाँट-3 : बालु उड़ै छै घाट पर

भाँट-1 : नाह चलै छै हाट पर

तीनू भाँट : अफसर सब कंफ्रेंस केलक आ चोर लेलक तलवार
गोनू झा के संग छै लेकिन निज बुद्धिक हथियार।

(दुरमतिया तलवार-भाला ल'क' मंच पर दुलकी चालि चलैए।)

चल दुरमतिया-अरिया-अरिया
बाट छोड़िक' चल एकपेड़िया
कसि ले धरिया
भारे-भरिया
चल दुरमतिया
चल दुरमतिया

[दृश्यांतर]

दृश्य-अठारह

(गोनू झाक घर। राति। दुरमतिया आ रन्नू-भन्नूक प्रवेश। गोनू झा आ स्त्री सुतल अछि केबाड़ पीटबाक ध्वनि।)

गोनू : के छी? *(बेर-बेर केबाड़ पीटल जाइ छै।)* खोलै छी भाइ, खोलै छी। खोलै छी। बड़ अगुताएल छह हौ। केबाड़े तोड़ि देबहक की? अरे रे। के? के छह तों सब।

दुरमतिया : चुप्प। *(स्त्री हल्ला कर' लगै अछि। दुरमतिया हथियार उठबै अछि। स्त्रीक आवाज कंठ मे फँसि जाइ छै।)*

गोनू : हाँ-हाँ। स्त्री पर हाथ नइँ उठाबी।

दुरमतिया : जे छह घर मे, से बाहर करह।

गोनू : किऐ बहार करू? तों कोनो कर वसूली अधिकारी छ' की हमर महाजन।

दुरमतिया : जे कहै छी से करू?

गोनू : से किऐ करू? पहिने तों के छ' से ने कह'।

दुरमतिया : हम सब किओ छी ताहि सँ अहाँ केँ मतलब। मुदा आइ अहाँक चलाकी नइँ चलत।

गोनू : नइँ चलत तँ बड़ बेस। तखत हैत की?

दुरमतिया : चोरि हैत।

गोनू : के करत?

दुरमतिया : हम?

गोनू : अच्छा। तँ से ने कहू जे अहाँ चोर बाबू छी। बैसू। कत' सँ एलहुऐं। झाझी सँ? थाकि गेल हैब। बैसू। कने सुस्ता लिअ।

स्त्री : हौ लोक.. *(दुरमतिया हथियार उसाहैत। स्त्रीक आवाज फेर फँसै छै)*

गोनू : हाँ-हाँ। ई की करै छ:। यौ स्त्री केँ मारब तँ अस्सी योजनक महारौरब कुंभीपाक नर्क मे सबा लाख बरख तक काहि काटब।

भन्नू : शास्त्रक बचन।

रन्नू : सत्य बचन।

गोनू : सत की झूठ जे कहैए से शास्त्र कहैए *(स्त्री सँ)* अहाँ घबराउ जुनि। चोर बाबू सब छथि *(चोर सँ)* जल पीबै?

दुरमतिया : नइँ।

रन्नू : पिबि लैह। जल पीब' मे की हर्ज।

भन्नू : कंठ सुखाइत हेत'।

दुरमतिया : (दुनू सँ) चुप्प। गोनू झा अहाँ हमरा फँसेबाक चेष्टा जुनि करू? जे किछु अछि घर मे से जल्दी बहार करू।

गोनू : आइ तँ सरूपे बदलल छह हो। कोनो किरतनिआ जमाति सँ भेट भ' गेलह की?

दुरमतिया : हमरा अहाँ की बुझै छी? हमरा कोन मतलब अछि जमाति सँ?

गोनू : नइँ हौ। हम नइँ मानबह। जमातिए सँ सीखलह ई रंग-ढंग।

दुरमतिया : जमाति सँ नइँ सीखलौंए।

गोनू : तखन?

दुरमतिया : तहसीलदार सँ।

गोनू : बेस। *(बूझैत)* वाह-वाह! आर के सभ छलथुन?

दुरमतिया : सेठ भुख्खल लाल दास।

गोनू : आ बुड़िराज नइँ रहथि?

दुरमतिया : ओहो रहथि।

गोनू : भेलै ने। *(स्त्री सँ)* हम कहैत रही ने। चोरि होइए तँ प्रशासनेक सहयोग सँ?

स्त्री : तखन तँ बड़ जुलुम बीति रहलए।

दुरमतिया : एखन कहाँ भेलैए। आब जुलूम बीततै। निकालू जे किछु अछि घर मे।

गोनू : तँ नहिए मानबहक?

भन्नू : मानतै कोना?

रन्नू : सरदार बनबाक बात छै।

भन्नू : तेँ ने एते अपसियाँत छै।

गोनू : से की हौ?

रन्नू : बाजी लागल छै। दुरमतिया अहाँ ओत' चोरी क' लेतै...

भन्नू : तँ चोर सभक सरदार भ' जेतै।

गोनू : अच्छा। ई बात। तों हमरा पहिने किऐ ने कहलह। *(स्त्री सँ)* बुझलियै कि, हमरा ओत' जे चोरी क' लेतै से चोरक सरदार भ' जेतै। अपन सभक बजार भाव एते ऊँच अछि, से बुझिक' मोन केहन लगैए।

स्त्री : आर केहन लागत! खराप लगैए।

गोनू : से किऐ?

स्त्री : ओनाक' कहलौं, जे घर मे किछु सामानो राखि लिअ, से तँ अहाँ कान-बात नइँ देलहुँ। आब एकरा सब केँ किछु नइँ भेटतै तँ अहाँक मोन केहन लागत?

गोनू : से तँ हमरो खराप लागत। खैर देखै छियै *(चोर सँ)* अच्छा चोर बाबू! सुनह। करह चोरि आ बनि जाह सरदार। बड़ प्रसन्नताक विषय थिक ई।

स्त्री : परंतु कथीक प्रसन्नता? अहाँ घर सँ की भेटतै एकरा सब केँ, बंगौर?

गोनू : बंगौर? ठीक कहलहुँ। *(बंगौरक मोटरी उठा क')* ई तँ हम नइँ ल' जाए देबह।

स्त्री : यौ अहाँ केहन छी? जे एहि बंगौरे के पजियौने छी।

गोनू : अहाँ की जान गेलियै एकरा?

स्त्री : लिय। बंगौर केँ हम ने चीन्हबै। कहबीयो छै, बंगौर सती।

गोनू : सैह ने मुर्खता छै। ई बंगौर ने कर्पास बीज-बटी थिक। एहि सँ जे औषधि बनैत छैक, से रामोबाण सँ सटीक होइत छैक। एकर तेलक मालिस, सब तरहक दर्दक विनाश करै छै। भोनू आ झाम लालक पीठक दर्द कथी सँ छूटलनि। एकरे तेलक मालिस सँ ने।

स्त्री : सत्ते कहै छी?

गोनू : आर सुनू। एकरा खैरक सेवन सँ, कफ, पित्त-वायु संतुलन मे रहिक', यक्षमा, पीलिया, मधुमेह, चर्मरोग, नर्मरोग, गर्मरोग, यौन-रोग, तौन रोग, पुष्टरोग, कुष्ट-रोग पर्यन्त ठीक भ' जाइत छैक।

स्त्री : ऐं। एहन गुणी अछि ई बंगौर।

गोनू : जनै छी, एकर दाम की छै एखन।

स्त्री : की?

गोनू : चारि असर्फी मे एक भरी। जे दिन ने दस असर्फी के एक भरी बिकेतै।

(चोर सब बंगौर पर झपटैए, हल्ला होइ छै)

[दृश्यांतर]

दृश्य-उनैस

(स्थान-सड़क भारेक समय। ढालहो दै बला ढोलहो द'क' घोषणा करैए।)

ढोलहो : अवाल बृद्ध बनिता के, समाजक सकल समाँग के, अमरूख-

विदुआन के, देसक परजा के, हम जे कहैत छी से सुनैत जाउ! काल्हि राति गोनू झाक घर मे किछु चोर पकड़ल गेल। चोरक सटिया सब सेहो पकड़ल गेल। भरल सभा मे एकर न्याय हेतै। दूध केँ पानि सँ आ मोन सँ कानि केँ फराक कैल जेतै। एहि अवसर पर सर्व साधारण केँ कहल जाइत अछि, जे महराजाधिराजक न्यायप्रियता देख' दरबारे-आम मे अवश्य उपस्थित होथि।...

(ढोलहो दैत प्रस्थान)

[दृश्यांतर]

दृश्य-बीस

(राजाक दरबार बनैए। राजाक अतिरिक्त सब उपस्थित अछि)

चारण : सावधान! सावधान! आँखि माटि दिस आ देह टकुआतान *(मंच परहक लोक तदनुरूप क्रिया करैए)* सावधान। राजाधिराज। महाराजाधिराज। वीर मार्तंड। कामदेवोपम। प्रजापालक। भक्तवत्सल। राजराजेश्वर। अपन ऐश्वर्य लक्ष्मीक संग, *(राजा केँ अबैत देखि)* नइँ-नइँ एसगरे। राजसभा मे पधारबाक कृपा क' रहल छथि। सावधान! सावधान!

(ढोलक स्वर। राजाक प्रवेश)

समवेत : महाराजाधिराजक जय हो। जय हो।

महाराज : मंत्री गण एवं दरबारी। गोनू झा सँ घटनाक विवरण सुनल। गौआँ सबहक गवाही सुनल। चोर-सुबेदार-तहसीलदार-सेठ एवं बुड़िराजक स्पष्टीकरण सुनल। नैयायिक सबहक विचार सुनल। आब निर्णय सुनू।

समवेत : जय हो। न्यायप्रिय महाराजाधिराजक जय हो।

महाराज : ई पहिल बेर सुनल गेलए, जे चोर अस्त्र ल'क' घर पैसल। सेन्हक बदला केबाड़ फोलबाक' घर मे हुलल। एहन कुबुद्धिक प्रणेता अछि सुबेदार भुनभुनादेब, तहसीलदार तुरफैल, सेठ-धनभूखल एवं बुड़िराज जीवन्मयानन्द। एकरा सब केँ अपन पद सँ च्युत करैत समस्त संपत्ति एवं सामाजिक अधिकार सँ विरत कैल जाइत छैक। एवं एहि तीनू केँ पैर मे पैकड़ पहिरा, डाँढ़ मे रस्सा लगा, माथ पर जरैत दीप राखि, नगर आदि मे टहलेबाक आदेश देल जाइत अछि।

समवेत : जय हो न्यायमूर्ति महाराजाधिराजक जय हो।

महाराज : चोर सब केँ आगाँ चोरी नइँ करबाक सप्पत लेब' पड़तैक, एवं पाँच बरख तक सश्रम काराबास भोगए पड़तै।

समवेत : जय हो! न्यायावतार महाराजाधिराजक जय हो।।

महाराज : धुर्त शिरोमणि, महोपाध्याय पं. गोनू झाक बुद्धिमत्ता सँ हम अतिशय प्रसन्न छी। माँगू गोनू झा, की मँगैत छी?

(अपराधी सबके डाँड़ मे रस्सी, पैर मे पैकड़ पहिरा माथ पर जरैत दीप राखल जाइ छै।)

(अपराधी सब माथ पर दीप नेने घुमैए)

गोनू : सरकार। हमर नाम गोनू नइँ, ज्ञान अछि। हमरा ज्ञान झा कहल जाए।

महाराज : एवमस्तु, भेल। आइ सँ अहाँक नाम ज्ञान झा भेल। परंतु आइ हम अहाँ पर अतिशय प्रसन्न छी। अतएव माँगू गोनू झा, नइँ ज्ञान झा, आर किछु माँगू।

गोनू : जे आज्ञा सरकार। किछु मँगबाक इच्छा तँ नइँ अछि, परंतु राजाक आज्ञा टारब तँ वयस कत' जाक' गारब? तेँ सरकार मँगैत छी।

महाराज : माँगू गोनू झा, नइँ ज्ञान झा। माँगू।

गोनू : सरकार। अपनेक निर्णय तँ सबा सोलह आना उचित अछि। परंतु हमरा मोन मे एक टा शंका अछि।

महाराज : कोन शंका?

गोनू : सरकार। जहिना आयुर्वेद शरीरक रोगक निदान करैए, तहिना राजनीति केँ समाजक रोगक निदान कर'क चाही। एत' हम एहि चोर सब केँ रोगी बुझैत छी आ चोरि एक टा रोगे थिक। जहिना शरीरक दुर्बलता रोग केँ नौति अनै छै, तहिना आर्थिक कष्ट एवं राजनीतिक भ्रष्टाचरण, चोरिक जन्म दैए। अतएव हमर निवेदन अछि सरकार...

महाराज : निवेदन प्रकाश करू।

गोनू : सरकार। जँ एकरा सबहक जीविकाक समुचित साधन उपलब्ध भ' जाइक, तँ एकरा सब केँ चौर्यकर्म सँ विरत कैल जा सकैत छैक। अतएव सरकार हमर माँग ई अछि...।

महाराज : माँग स्पष्ट करू।

गोनू : चोरक जतेक बस्ती छैक, तकर बासी सबहक सटीक गणना क'क, समुचित आजीविका देल जाइक, एवं कम-सँ-कम पाँच बरख धरि, ओकरा सबहक जीवन-यापन पर प्रशासनक सतर्क दृष्टि राखल जाए।

समवेत : साधु। साधु।

महाराज : सभासद! उचित जीविकाक अधिकार, समाजक प्रत्येक व्यक्ति केँ, नैसर्गिक रूप सँ प्राप्त छैक। अतएव, हम गोनू झा नइँ ज्ञान झा सँ सहमत छी जे नैतिक अवसर मे अवरोध सँ, अनैतिक पथक संधान हेबे करत। एकर निदान राज्ये केँ करक चाही। धन्य गोनू झा नइँ ज्ञान झा धन्य! हम अहाँक विचार सँ सहमत छी एवं समुचित व्यवस्थाक बचन दैत छी। आब अहाँ अपना लेल किछु माँगू।

गोनू : हम तँ मँगलौं सरकार।

महाराज : चोर आ समाजक लेल मँगलों। आब अपना लेल माँगू।

गोनू : बेस? सैह विचार तँ एक ढाकी धाने द' दिय।

महाराज : अहाँक ढाकी सँ यौ?

गोनू : हँ हमरे ढाकी सँ। सरकार। आर ककरा ढाकी सँ?

महाराज : नइँ पार लागत। *(हँस लगैए। सब हँसैए)* नइँ पार लागत! अहाँ दस गाड़ी धान ल' लिअ। एक बखारी धान ल' लिअ। परंतु एक ढाकी धान, सेहो गोनू झाक ढाकी सँ, नइँ पार लागत। *(सब हँसैए। भाँट सबहक प्रवेश। तीनू आगू आबि जाइए।)*

भाँट-1 : हँ। दर्शक लोकनि। ओना तँ गोनू झाक खिस्सा कहैत जाउ-कहैत जाउ। कहियो ने सधत। से तँ भ' नइँ सकैए। प्रदर्शनक समय के विवशता छै। अतएव। एहि नाटक केँ एतहि शेष करबाक अनुमति दिअ आ... *(सभ भाँट सँ)* गमझा ओछाबह हौ। *(तेसर भाँट हँसैए)*

भाँट-1 : की भेल यौ। एना बताह जकाँ किऐ हँसै छी। जल्दी सँ गमछा ओछाउ।

भाँट-3 : एखन थम्हू भाइ जी। हम एक टा बात सोचै छी।

भाँट-2 : की सोचै छी।

भाँट-3 : मानि लिय जे गोनू झाक अपहरण क' लितनि दुरमतिया, तखन?

भाँट-2 : माने जेना एखन होइ छै?

भाँट-3 : अयँ। तखन की करितथि गोनू झा।

भाँट-2 : की करितथि?

भाँट-3 : सैह तँ पूछै छी।

भाँट-1 : एहि मे पुछनाइ की छै। चलू। फेर सँ ओहि दृश्य केँ करै छी।

भाँट-3 : माने?

भाँट-1 : माने गोनू झाक घर। गोनू झा आ गोनू झाक स्त्री निसभेर भेल सुतल

रहथि। दुरमतिया हुनकर अपहरण केलक एवं ल' गेल अपना बथान पर।

[दृश्यांतर]

दृश्य-एकइस

(गोनू झा आ स्त्री सुतल छथि। सपना मे काली माताक प्रवेश)

काली : हा। हा हा हा।

गोनू : आ हो। हो। हो। काली माता। प्रणाम जगदंबा।

काली : *(आर भयंकर बनए चाहैए)* हा। हा। हा। हा।

गोनू : *(हँसए लगैए)* आ ही ही ही...

काली : तोरा हमरा सँ डर नइँ भेलह गोनू।

गोनू : अहाँ सँ डर कथीक? अहाँ तँ माए छी।

काली : तखन हँसलह किएक वत्स?

गोनू : ओहि क्षणक अहाँक विवशता पर माता!

काली : विवशता! हम्मर विवशता!

गोनू : हँ माता!

काली : से कोना?

गोनू : से एना माता, जे जखन अहाँ केँ खाँसी उकासी होइत हैत तखन! *(हँस लगैए।)*

काली : तखन की?

गोनू : *(हँसनाइ रोकि।)* हे माता! ओना तँ अहाँ केँ दस टा हाथ अछि। परंतु सब हाथ केँ कोनो ने कोनो अस्त्र मे बझौने छी। हम सोचलहुँ जे जखन अहाँ केँ सर्दी लगैत हैत तँ नाक सँ पोटा सेहो बहैत हैत। तखन अहाँ नाक सँ पोटा कोना पोछैत हैब! से इएह सोचिक' हमरा हँसी लागि गेल हे माता। *(सब हँसैए)*

काली : *(हैसैत)* जो रे गोनू झा। तोरा सँ बुद्धि मे कियो ने जीतत।

(काली अतर्ध्यान होइत छथि। गोनू झा पुनः सुति रहैत छथि। केबाड़ खटखटाइत अछि। गोनू झा आ हुनक स्त्री उठि जाइत छथि)

स्त्री : के छी?

गोनू : हम देखैत छिऐक।

स्त्री : एते रातिक' के भ' सकैए। *(खटखटेबाक स्वर तेज भ' जाइए)* खोलै छी भाइ! खोलै छी!

(केबाड़ खोलैए। अस्त्र-शस्त्र सँ लैस चोरक प्रवेश)

चोर सब : खबरदार!

गोनू : ई की माता? अहाँ केँ रूप बदलबाक कोन आवश्यकता भ' गेल?

स्त्री : ई अहाँ की कहै छी!

गोनू : देखै नइँ छी! काली माता पुरुषक भेष मे आबि गेलीहए! *(रन्नू-भन्नू केँ देखि)* एहि नमूना सब केँ कत' सँ पकड़ि लेलियै माता?

दुरमतिया : खबरदार। एको शब्द नइँ बाजि सकै छी?

गोनू : ई तँ अहाँक घोर अन्याय अछि माता!

स्त्री : यौ। होश मे आउ। ई माता नइँ अछि।

गोनू : तँ पिता तँ हम नइँ कहबनि। हँ!

दुरमतिया : हम चोर छी!

स्त्री-गोनू : ऐं!

दुरमतिया : हँ। चुपचाप एत' ठाढ़ रहू। *(रन्नू-भन्नू सँ)* घर मे ढुकि क' देखही जे की सब छै। *(रन्नू-भन्नू तकैए।)*

स्त्री : हमरा जकर डर छल सैह भेल।

गोनू : की?

स्त्री : एकरा सब केँ घर मे किछु नइँ भेटतै।

गोनू : किऐ? *(बंगौरक मोटरी उठबैए)* ई कर्पास-बीज वटी! जे दिन ने दस अशर्फी मे एक भरी क' बिकेतै! एतबे मे एक तमघैल अशर्फी हैत।

(घरक तलासी ल'क' निराश रन्नू-भन्नू।)

रन्नू : खाली-खाली घर लगैए।

भन्नू : अगबे मूसरी दण्ड पेलैए।

रन्नू : की ल' जैब से नइँ सुझैए।

भन्नू : तोरा पर तँ दया अबैए!

दुरमतिया : चुप्प। घर मे किछु नइँ छै?

रन्नू-भन्नू : नइँ।

दुरमतिया : तँ गोनू आ गोनुआइन केँ बान्हि क' ल' चल।

गोनू : हौ। बरू ई कर्पास-बीज बटी ल' जाह। बेचबह तँ एक तमघैल रुपैया हेतह।

दुरमतिया : नइँ यौ। हम अहाँ केँ चिन्हि गेल छी। जकरा अहाँ कीदन कहै छिऐ से बंगौर अछि बंगौर *(रन्नू-भन्नू सँ)* मुँह की तकै छेँ। बान्ह दुनू केँ।

स्त्री : इहो लीखल छल कप्पाड़ मे।

गोनू : तखन दुख कथीक? तैयो एकबेर आर प्रयास करै छी। *(चोर सँ)* हौ चोर बाबू। एक बेर हमरा बात पर गौर करहक। ई अछि तँ बंगौर परंतु एकर औषधिय गुण एखन प्रत्यक्ष नइँ भेलैए। जहिया हेतै तहिया देखिहक। तेँ ई कर्पास बीज बटी ल' लैह आ हमरा सब केँ एना बेइज्जति नइँ करह।

रन्नू : एक बेर ल'क' देखहक ने।

भन्नू : नइँ बिकैल तँ बुझि जेबहक ने!

दुरमतिया : चुप्प। तो सब बान्ह!

गोनू : मुदा तों बाद मे जाक' पछतेब'। बुझि लैह।

स्त्री : एकरा पर अहाँक बातक कोनो असर होइ बला नइँ छै। बुझलियै!

गोनू : बुझाइए तँ तहिना।

(दुरमतिया रन्नू-भन्नू आ स्त्री केँ बान्हिक' विदा होइए)

[दृश्यांतर]

दृश्य-एकइस

(चोरक बथान। एक दिस सँ दुरमतिया रन्नू-भन्नू आ बन्हायल गोनू झा अबैए। दोसर कात सँ देबहा सुमरित प्रवेश)

दुरमतिया : ले रे देबहा। आँखिक बीझ मेटा ले।

रन्नू : कनिए मोन जुड़ा ले।

भन्नू : जल्दी माथ मुड़ा ले।

दुरमतिया : कहै केना छल जे गोनू झाक ओत' चोरिए ने भ' सकै छै।

देबहा : ई चोरी नइँ भेलौ।

दुरमतिया : भेलै। जरूर भेलै!

देबहा : केना भेलै।

दुरमतिया : भले भेलै। गोनू झाक चोरि भेलै।

देबहा : गोनू झाक घर सँ कोनो मूल्यवान वस्तुक चोरि कर'क छलै।

दुरमतिया : गोनू झाक घर मे गोनू सँ मूल्यवान किछु नइँ छै।

सुमरित : हौ। ई तँ हथियार ल'क' चोरि कर' गेल छल।

दुरमतिया : की फदर-फदर करै छेँ। लाब' सरदारी बला मुरेठा हमरा पहिराब।

देबहा : नइँ भेटतौ मुरेठा।

दुरमतिया : किए?

देबहा : तों रेवाज तोड़लें हें।

दुरमतिया : कोन रेवाज तोड़लौंए हम?

देबहा : चोर हथियार ल'क' नइँ चलै छै।

दुरमतिया : कोन शास्तर मे लीखल छै जे चोर हथियार नइँ उठाबय?

देबहा : ई बलगेंग भेलौ।

दुरमतिया : तों अपना बात पर सँ हटै छ।

देबहा : बात पर सँ तों हटलेहे।

दुरमतिया : जकर बातक नइँ ठीक तकर बापोक ने ठीक।

देबहा : खबरदार।

(दुरमतिया तलवार सँ देबहा पर प्रहार कर' लगै छै। देबहा हारि मानैए)

जो रे सुमरित। आनि दही मुरेठा।

गोनू : अच्छा। तँ तों सते कहने रहह हौ!

स्त्री : अहाँ केँ की भ' गेल?

गोनू : ठीके! एकरा सभ मे सरदारीक बाजी लागल छलै।

स्त्री : से तँ ओइ राति कहनहि रहए।

गोनू : हमरा विश्वास नइँ भेल छल *(मुरेठा नेने सुमरितक प्रवेश)* आब एकरो सब मे उपरोझ शुरू भ' गेलैए *(दुरमतिया मुरेठा पहिरए चाहैए।)*

गोनू : हाँ। हाँ। तोहर ई मुरेठा कोनो साधारण मुरेठा छ जे ओहिना पहिरै छ?

दुरमतिया : तखन।

गोनू : अरे ई तँ सरदारीक मुरेठा छ। राजमुकुट बला ओहदा छै एकर। नइँ यै।

स्त्री : हँ यौ।

रन्नू : राजा के मुकुट, सरदार के मुरेठा।

भन्नू : रहै छै ठाढ़े, कहबै छै बैठा।

दुरमतिया : ओहदा तँ बुझलौं? मुदा करू की?

गोनू : एकरा विधि-विधान सँ पहिर।

दुरमतिया : विधि विधान हम की जानी।

गोनू : हम छियह ने। तों कहह तँ हम करा देबह।

दुरमतिया : करा ने दिय

गोनू : कने खोलि ने दैह।

(दुरमतिया गोनू आ स्त्री केँ खोलैए। गोनू पूजाक विध-विधान करैए। स्त्री मंगल गीत गबै छथि। गोनू सरदारीक मुरेठा, दुरमतिया केँ पहिबैए। देबहा आ ओकर दल टुकुर-टुकुर तकै छै।)

गोनू : आब हमर दक्षिणा लाबह।

दुरमतिया : की दिअ दक्षिणा मे?

गोनू : जे तोहर श्रद्धा हुअ।

रन्नू : एक घोर केरा।

भन्नू : एक टा कटहर।

रन्नू : एक कात ओल।

भन्नू : दोसर कात बरहर।

गोनू : बस। बस! दू भार भ' गेलह।

दुरमतिया : रन्नू-भन्नू।

दुनू : सरदार।

दुरमतिया : भार ल'क' पंडितजी संगे चलि जो।

(गोनू, स्त्री आ भार नेने रन्नू-भन्नूक प्रस्थान। संगीत। भाँट सभक प्रवेश)

[दृश्यांतर]

समापन

भाँट-1 : तँ एकरे कहै छै गोनू झा। माने केहनो परिस्थिति हो, बुद्धिक उपयोग नइँ बिसरी। आ कि नइँ।

(भाँट-2 आ भाँट-3 अपन अन्य भूमिका सँ मुक्त होइत भाँट-1 लग अबैए)।

भाँट-2 : परंतु एहि तरहे तँ नाटकक अंत बदलि ने गेल भाइजी

भाँट-1 : नइँ यौ। अंत नइँ बदलल।

भाँट-2 : से कोना?

भाँट-1 : से एना जे गोनू झा चोरक अड्डा देखि लेलनि। तखन ओ गेलाह राजदरबार। राजा केँ सब बात सँ अवगत करौलनि। चोर पकड़ल गेल आ कारावासक दण्ड भेटलै। अशिक्षा आ गरीबी सँ उत्पन्न एहि सामाजिक व्याधि केँ दूर करबाक समुचित व्यवस्था भेलै।

भाँट-3 : आ मानि लिअ जे एना नइँ भेलै।

भाँट-2 : तँ केना भेलै?

भाँट-3 : चोरबा सब गोनू झा केँ नइँ छोड़लक।

भाँट-2 : यौ। आब आगू नइँ नमराउ। नाटकक अंत तँ करबै। आ की नइँ?

भाँट-3 : अंत करबै। मुदा...

भाँट-2 : कोनो मुदा-तुदा नइँ। ओ भाइजी छथि-भाइजी। बुझलौं। कोनो खिस्सा शुरू करब अंत ओहिनाक' देता।

भाँट-3 : तँ गमछा ओछाउ।

भाँट-2 : की भाइजी? ओछाउ गमछा?

भाँट-1 : अवश्य ओछाउ। किएक तँ पेट भरत तखने ने किछु करब। आ हमरा लोकनिक पेट तखने भरत जखन दर्शकगण कृपा करताह। अतएव। हे देवता स्वरूप दर्शक लोकनि! अपने लोकनिक मनोरंजनार्थ हमरा लोकनि गोनू झाक कौतुक देखौलहुँ। एहि गमछा मे जिनका जेहन श्रद्धा हो खसबैत जाउ। भूल-चूक केँ अनाड़ी जानि क्षमाक' देबै।

भाँट-2 : अधलाह लागल हो तँ अनका कहबै।

भाँट-1 : नीक लागल हो तँ हमरा सब केँ जरूर कहब।

भाँट-3 : अपन निन्दा अपना मुँह पर हम सब बर्दास्त नहिक' सकब।

(गमछा ल'क' नचैत)

समवेत : एक टा खिस्सा कहल आइ हम
अहाँ कहब तँ जानब अहाँक मरजी
साम की, दाम की
दण्ड की, भेद की
देवता हो की दानव

ककरो सँ नइँ कखनो डरी।
बुद्धि सँ नइँ पैघ कोनो बल होइ छै
अहाँ मानब तँ जानब अहाँक मरजी।
(गबैत, गबैत प्रस्थान। संगीत।)
(इति, नाटक चालीस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा)

नोट : एहि नाटक मे एक अभिनेता, एक सँ अधिक चरित्रक अभिनय करए से उचित।
एहि नाटकक तीन टा आर रूप छै, पैंतालिस मिनटक, साठि मिनटक आ एक घंटाक।
चारिम रूप, ध्वनि-नाट्य शृंखला छै जकर तेरह प्रकरण प्रसारित भेल।

—नाटककार

(भंगिमा, अंक-22, अगस्त, 1995)

बिदापत

[लोकनाट्य शिल्प-आधारित नाटिका]

नाटकक पहिल प्रदर्शन : 30 सितंबर, 2002 विद्यापति भवन, पटना।

पहिल प्रदर्शन मे शामिल प्रमुख कलाकार : रवीन्द्र बिहारी राजू, राधा मिश्रा, प्रकाश झा, प्रगति शेखर, रघुवीर मोची, ब्रह्मानंद झा, सुरुचि वर्मा रश्मि राज, शंभुनाथ झा, बेबी सपना सिंह आदि।

संगीत : मनोज मनहर, दिनेश झा

संगीत परामर्श : सीता राम सिंह।

पात्र परिचय

सूत्रधार
नटी
विपटा
विद्यापति
मंदाकिनी
कालिंदी
शिवसिंह
लखिमा
देवसिंह
बालिका
अमियकर
मसानी/चन्द्रकर/ग्रामीण-एक/भाँट
पंडित-एक/ग्रामीण-दू
पंडित-दू/सिपाही-दू/साँप
पंडित-तीन/ग्रामीण-तीन/बसहा
पमरिया/सिपाही-एक/पंडित-चारि/मयूर
उगना/महादेव
नटुआ/गौरा
समाजी
वादकगण
गायक/गायिका

पूर्वरंग

(सभ पात्र मंच पर। ध्वनि आरंभ। एक पंक्तिक उपरांत प्रकाश। सभ पात्र बंदनाक मुद्रा मे)

समवेत : हे शिव, अढरन-ढरन
हे भोले भण्डारी

हे आशुतोष, हे नटवर
हे डमरूधारी
से कर्णफूल जनिकर हिलैत अछि, से उमा-महेश
दृष्टि-पात एम्हर करथि, विघ्नक रहए ने लेश।

विपटा : आँग बान्हो-गांग बान्हो
दैबा क' डांग बान्हो।
जोगी के गियान, गुमानी के मान
डइनियाँ के बान बान्हो
आ सब सँ बढ़िक'
सोझाँ बैठल गिरहथ आउरक, धियान बान्हो।

सूत्रधार : से उमा, गौरा, पार्वतीक स्तुति, हे समाजी लोकनि, गबैत जाइ जाउ। गबैत जाइ जाउ...।

समवेत : जय-जय भैरवि, असुर भयाओनि, पशुपति भामिनि माया,
सहज-सुमति वर, दिय हे गोसाउनि, अनुगति-गति तुअ पाया
(लय मे वृद्धि)
वासर रैनि, शवासन शोभित, चरण-चन्द्रमणि चूड़ा
कतओक दैत्य, मारि मुख मेललि, कतओ उगिलि कैल कूड़ा।
(लय मे पुनः वृद्धि)
सामर वरन, नयन अनुरंजित, जलद योग फूलकोका
कट-कट विकट, ओठ फुट पाँड़रि, लिधुर फेन उठ फोका।
(घूँघरुक स्वर। भैरवीक नाच, समवेत नृत्यमूलक गतिचर्या। पदक विधिवत गायन)
घन-घन-घनन नूपूर कत बाजए, हन-हन कर तुअ काता
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक, पुत्र बिसरि जनु माता...

सूत्रधार : अलम्... *(समस्त कलाकार यथास्थान धर'क लेल प्रस्थान)*
बेसी आडंबर व्यर्थ। अभिनव जयदेव, मैथिल-कोकिल, महाकवि विद्यापतिक, पद सभक आधार पर, सद्यः रचित नाटिकाक प्रदर्शन, सुधी लोकनिक समझ करबाक कामना अछि।

विपटा : बाप रे बाप! कत्ते भरिअबै छी। सफा-सफी कहियौ ने जे बिदापत नाटक खलैब।

सूत्रधार : सत्य वचन। नाटकक शीर्षक अछि बिदापत।

विपटा : गड़ी आगाँ बढ़ाउ!

सूत्रधार : बेस! तखन प्रिया केँ बजबैत छी।

विपटा : बड़ बढ़ियाँ! एसगर अहाँ बूते कूच्छो नइँ हैत।

सूत्रधार : *(तमसाइत)* ई की बजैत छह!

विपटा : *(सम्हारैत)* नइँ, कहली जे एसगर विरपतियो झूठ।

सूत्रधार : बृहस्पति!

विपटा : हँ-हँ! उहे!

सूत्रधार : *(तामस पीबैत)* प्रिय भूवन मोहिनी!

नटी : *(अबैत)* यैह अबैत छी प्रिय! *(लग आबि)* कहू, की कहैत छी?

सूत्रधार : प्रिय! हम अहाँ केँ एक बेर आर कहैत छी।

नटी : हृदय केँ स्थिर करू प्रिय!

सूत्रधार : परंतु।

नटी : *(बात केँ लोकैत)* अहाँ यैह ने कह' चाहैत छी प्रिय जे महाकवि विद्यापतिक पद सभ सँ भिज्ञ, उहापोह विशारद, नागरिक दर्शक लोकनि सँ, ई सभा शोभित अछि।

सूत्रधार : सत्य वचन प्रिय!

नटी : एहना ठाम हमरा लोकनि अभिनय करब, तेँ सावधान रहब आवश्यक।

सूत्रधार : सत्य वचन प्रिय! परंतु अपना द' सोचैत छी तँ पबैत छी जे कलाहीन पुनि दोषाकर ओ अधिक विकास विहिन...

नटी : कोनो बात नइँ प्रिय! बाल-उदित इन्दु सम देखताह, सज्जन नाट्य-नवीन।

सूत्रधार : आहा! हा! तखन तँ नाटिका हमर नव्य, निश्चयतः बनत भव्य!

विपटा : बहुते उचिती भेल। आब गड़ी आगाँ बढ़ाउ।

सूत्रधार : सैह करैत, सूधीजन केँ माथ नबाए सुनबैत छियनि, हे-हे सभासद लोकनि! विद्यापतिक काल आ कविता केंद्रित, एहि नाटिकाक समय-सीमा अछि, इसबी चौदह सय सँ ल'क' चौदह सय पचास धरि।

नटी : एहि अवधि मे एक दिस अछि, चर्चित चरित्र संग महाकविक संबंध आ दोसर दिस अछि कविताक अभिव्यक्ति।

विपटा : बाप रे बाप! कते ओझरी लगबै छथ। सोझ-सोझ कहियौ ने भनहि बिदापत...

समाजी : भनहि विद्यापति गाओल रे, धैरज धर नारी
गोकूल होएत सोहाओन रे, फेरि मिलत मूरारी।

सूत्रधार : आ हा! हा! की आशा आ विश्वास!

विपटा : से बाबू! बिदापत तँ बिदापते छथ!

सूत्रधार : आह! लाहेब जुनि करह! विद्यापति, विद्यापति!

विपटा : हँ-हँ! उहे!

नटी : वस्तुतः विद्यापति तँ छथिहे, तोहर सरिस एक तोहे माधव!

विपटा : सैह बुझबियनु आ गड़ी आगाँ बढ़ाउ!

नटी : आशा, उत्कंठा, आवेग, विश्वास आ नवता!

विपटा : गड़ी आगाँ बढ़ाउ!

नटी : सभ किछु नूतन, नवल,

सूत्रधार : सत्य वचन प्रिय! नव पल्लव! नव मलयानिल,
नवल वसंत, नव वृन्दावन, नव-नव तरुगण...

नटी : विहरइ नवल किशोर।

(नटुआक संग सामूहिक नृत्य! सूत्रधार कृष्ण बनैए। नटी राधा। समाजीक गायन। रास नृत्य।)

समाजी : नव वृन्दावन, नव-नव तरुगण, नव-नव विकसित फूल
नवल वसन्त, नवल मलयानिल, मातल नव अलिकूल
विहरइ नवल किशोर। **(रास फेड आउट)**

सूत्रधार : आहा! हा! अपरूप!

विपटा : आपरूपी!

सूत्रधार : अपरूप। अपरूप!

विपटा : हँ-हँ! उहे!

नटी : प्रिय! नाटिका तँ उत्सव सँ ने आरंभ होइत अछि!

सूत्रधार : हँ प्रिय! आइ गजरथ मे आनंदक ओर-छोर नइँ। जेम्हरे ताकू, तेम्हरे उमंग, उत्साह आ हुलास। पुछू जे किएक?

नटी : किएक?

सूत्रधार : किएक तँ महाकविक जीवन आ कविता दुनू मे संलिप्त सखा, युवराज शिवसिंह, ओइनीक युद्ध जीतिक' राजधानी पधारलाह अछि। *(अकानैत)* सुनू ने! केहन उल्लासपूर्ण कलरव भ' रहल छै।

(नेपथ्य मे उल्लासमय स्वर)

नटी : तँ चलू ने प्रिय। हमरा लोकनि एहि समारोह मे मिझ्झर भ' जाइत छी।

सूत्रधार : चलू प्रिय!

(दुनू प्रस्थान कर' चाहैए। विपटा ओकरा पाछाँ चलैए। नटुआ अबैए। विपटा केँ जाइत देखि दौड़िक' पकड़ैए।)

नटुआ : अएँ हौ! तों ओम्हर कत' जाइ छल'?

विपटा : ओन्नी!

नटुआ : देखू एकर ताल! ओम्हर दरबार लागि गेलै ग' आ ई एन्नी-ओन्नी करैय।

विपटा : हमरा लागल हय।

नटुआ : छोड़'-छोड़', चलह जल्दी।

(नटुआ, विपटा मे त्वंचाहंच। विपटा गाबि क' नटुआ केँ बूझब' चाहैत अछि)

विपटा : जाय दे ने हमरा गुबगुब्बा लागल हय।

नटुआ : विपटइ नइँ छाँट बेसी, मोहफिल जमल हय!

(नचैत प्रस्थान)

पहिल दृश्य

(पहिल उत्सव)

(उत्सवक वातावरण। विभिन्न स्थल पर प्रदर्शन होइत, एक कात भाँटक प्रदर्शन। संगीत। राज्योचित व्यवस्था आ आसन। राजा युवराज, मंत्री सभक स्थान-ग्रहण)

भाँट : सकल विरुदावली महाराज के जय हो। शूरवीर पराक्रमी युवराज के जय हो। जय हो राज परिवार के। जय हो राज-दरबार के। आब, हे सभासद लोकनि! विजयी युवराजक यशोगाथा, सुनैत जाउ, सुनैत जाइ जाउ। आ...

हे ओइनी के रणभूमि मे सजलइ
दुन्नू दिस सेना घनघोर
क्षण मे मचलइ युद्ध भयंकर
मार-काट के उठलइ सोर।

(भाँटक गायन फेड आउट। पमरिया फेड इन।)

पमरिया : जय हो! जय हो! महाराज के जय हो! दुसमन के क्षय हो। युवराज के जय हो। बैरी के भय हो। आ हे...

हे दुरगा जी के हे नामे-है

काली मइया के हे नामे-है
भोला बबा के हे नामे-है
सब देबतन के हे नामे-है
खंडा नचाब' लगलइ जे सिवसिंह, दुसमन सब गेलइ डेराइ।
हे-बैरी मे लगलइ पड़ाहि हे-
नंगरी जे लेलकइ सुटकाइ हे-
पीठ देखाक' जे खेत छोड़ि भगलइ,
कोठी-दोग गेलइ नूकाइ-हे
दुरगा जी के हे नामे-हे
काली मैया के हे नामे...

(पमरिया फेड आउट। विपटाक संग नटुआक प्रवेश)

विपटा : सदा भवानी दाहिनी, सनमुख रहे गनेस
पंचदेव रछिया करे, बरहमा-बिसुन-महेस!
हे मालिक आउर! महाकवि बिदापत के पद छनि, हर गौरा बियाह के ध' क'।

(विपटा महादेव बन' लगैए)

नटुआ : हिमगिरि धिया, मनाइन दुलारी-गौरा। आ ताहि गौरा ले' व'र खोजल गेल, तँ से भोला, बौरहबा बुझाइए, आ...

विपटा : वरक बगय-बानि देखिक', सब झमान भ'क' खसैए।

(नटुआ केँ मनाइन बनैत देखिक' बात आगाँ बढ़बैए।)

मनाइन के दुखबा अपार हे मालिक। नैना भदबरिया मेघ बरिसैए।

(मनाइनक रूप मे नटुआ गबैए।)

नटुआ : नाँगट, जनम भिखारि, वर केकर एहन?
जकरो घर दुइ चारि कुमारि, सेहो वर करए विचारि!
एहन उमतवर के जोहि आयल, हम घर एक कुमारि।
भोजन भाँग, विभूति लगाबथि, परिजन भूत मसान,
जखन गौरी सँ भीखि मँगओताह, हरता धियाक गियान!
कुल परिवार एको नइँ थिकनि, घर-सम्पत्ति नइँ माय,
जखन गोरी मोर सासूर जैतिह, बैसती ककरा लग जाय!!

(नटुआक बिलाप। महादेव बनल विपटा रंग-ताल देखबैत रहैए। नटुआ फेड आउट। पंडित लोकनि एक कात मे गप्प करैत अछि।)

पं.-एक : शिव! शिव! ई कोकिल महाराज तँ अतनह करैत अछि। त्रिभुवन नाथ महादेवक लेल एहन उपमा। नाँगट, जनम-भिखारि। शिव! शिव!! शांतं पापं! शांतं पापं! एहन गीत सुननाइयो पाप थिक।

पं.-दू : एकरा अपने गीत कहै छी! ई तँ गीतक नाओं पर कलंक थिक, कलंक। असर्द्ध घृणित या अश्लील। ई कोकिलवा विद्यापति नंगटइ करैत अछि। एकरा तँ बनिसार द' देल जेबाक चाही। भकसी झोंका क' मारि देल जेबाक चाही।

पं.-एक : कम-सँ-कम राजसभा मे तँ विद्यापति आ विद्यापतिक गीतक स्थान नहिए भेटबाक चाहैत छल।

समाजी : *(ध्वनि)* भनहि विद्यापति गाओल रे। रस बुझ रसवंता।

समवेत : वाह! वाह!

पं.-दू : लोक सभ केँ ने देखू। केना लूबधल अछि।

पं.-एक : जेना गुड़ पर माँछी।

पं.-दू : नहि-नहि। जेना...ओइ पर माँछी *(दुनू हँसैए।)*

पं.-एक : अरे! लोकक की मोजर? ओ तँ कहू जे स्वयं युवराजक वरदहस्त छैक तेँ बमकल फिरैए ई कोकिलबा। नइँ तँ...

पं.-दू : सैह तँ! जखन महाराजो अपन प्रतापी पुत्रक सोझाँ विवश छथि तखन हमरा लोकनि की क' सकैत छी।

(सूत्रधार, नटीक प्रवेश। पंडित सभक बात केँ अकानैत)

पं.-एक : क' सकैत छी।

पं.-दू : क' सकैत छी! केना?

पं.-एक : जँ सभ गोटे मिलिक' एकर प्रतिकार करी तँ अवश्य क' सकैत छी।

पं.-दू : ताहि मे कोनो ने संदेह। एहि कवि-कोकिल केँ भुसाथरि बैसौनाइ, परमानिवार्य अछि।

पं.-एक : ई युवराजक बलेँ ने कूदैए।

पं.-दू : से कते दिन। एकर कोनो उपाय तँ धरबहि पड़त।

(बजैत प्रस्थान। सूत्रधार आ नटी दुनूक बात सुनैए।)

नटी : ई लोकनि महाकवि पर अरबधि क' खिसिआएल बुझाइत छथि, जेना विद्यापति हिनकर किछु ल' लेने होथिन।

सूत्रधार : विद्यापति की लेथिन ककरो आ किऐ लेथिन? हिनका सभक स्वभावे एहने छनि।

नटी : हँ। हमरो सैह लगैए। ओ विद्यापतिएक पद छैक ने, सुअण पसंसइ कब्ब मझु, दुज्जन बोलइ मंद।

(अमियकर, सभ टा सुनि रहल छल। पद केँ पूरा करैए।)

अमियकर : अवसओ विषहर, विष बमइ, अमिय बिमुक्कइ चंद।

सूत्र./नटी : वाह! कतेक नीक बात छैक।

अमियकर : मुदा महोपाध्याय लोकनिक लेल अधलाह छैक।

सूत्रधार : अपन-अपन स्वभाव!

अमियकर : ओना एक टा कारणो छैक।

नटी : कारण?!

अमियकर : हँ! विद्यापतिक पद, गाम-गाम, घर-घर मे व्याप्त भ' रहल छैक। विद्यावंत-कलावंत लोकनि अपना नाच मे विद्यापतिक गीत सभ केँ समाहित क' रहल छथि। अझुके उत्सव मे देखलहुँ ने...

सूत्रधार : हँ-हँ! हर-गौरी विवाहक अभिनय द' कहैत छी ने। आ हा हा! अपूर्व।

अमियकर : एतबे नइँ।

दुनू : तखन?

अमियकर : आब तँ लोक विद्यापतिक बानि पर, पद सेहो जोड़ि रहल अछि। भनिता मे विद्यापति आ कविता मे जनता!

सूत्रधार : अद्‌भुद!

नटी : आब की करताह महोपाध्याय लोकनि?

अमियकर : धुरखूर नोचताह

नटी : खौंझायल बिलाड़ि जकाँ।

(तीनू हँसैत अछि। अमियकरक प्रस्थान। नेपथ्य सँ समाजीक गायन। कोबर जाइत महादेव। सूत्रधार-नटीक नृत्यमूलक अभिनय)

समाजी : करए चलल महुअक हर हे, कोबर घर माइ हे, खीड़-खाँड़ नइँ खाथि, भाँग-भकोसल।

(ध्वनि फेड आउट)

सूत्रधार : उत्सव मे बड़ आनन्द भेटल। नइँ यै।

नटी : हँ। परंतु महाकवि केँ नइँ देखलियनि।

सूत्रधार : केना देखितियनि। ओ आइ कतेको दिवस सँ राज परिसर मे नइँ आबि रहल छथि।

नटी : उत्सव पर्यंत मे नइँ ऐलाह!

सूत्रधार : नहि!

नटी : कोनो अप्रिय बात की?

सूत्रधार : नहि-नहि! अप्रिय-अधलाह सन कोनो किछु नइँ।

नटी : तखन?

सूत्रधार : छैक एक टा रहस्य!

नटी : रहस्य! की रहस्य? *(आग्रह करैत)* कने कहू ने!

सूत्रधार : हम जे कहब से अपने आँखिए देखि ने लिअ'। रहस्य पर सँ आवरण हटि रहल अछि।

नटी : कत'?

सूत्रधार : *(देखबैत)* वैह! शिवसिंहक कक्ष मे।

(शिवसिंहक कक्ष फेड इन! सूत्रधार नटीक प्रस्थान)

(दृश्यांतर)

दोसर दृश्य

(शिवसिंहक कक्ष। विद्यापति प्रवेश करैत छथि। शिवसिंह आश्चर्य-मुद्रा मे उठिक' विद्यापतिक स्वागत करैत छथि।)

शिवसिंह : *(उठिक')* आबह कविजी! आबह! *(दुनू आलिंगनबद्ध होइत छथि)* भ' गेलह हमरा लेल फुरसति। *(विद्यापति केँ बैसबैत)* धन्य छह तों। बेस बाट तकओलह! *(अंत:पुर दिस देखैत)*सूनैत छी? यै कविजीक ठकुराइन!

लखिमा : *(प्रवेश करैत)* अहाँक की छी, से ने कहू!

शिवसिंह : ताहू लेल तँ विद्यापतिएक गीतक उपमा देब' पड़त।

"विद्यापति कवि गाओल रे, रस बुझ रसमंता
रूपनराएन नागर रे, लखिमा देविक सुकंता।"

लखिमा : ई तँ अहाँक लेल भेल। अहाँ रूपनराएन, अहाँ सुकंता! हम की?

शिवसिंह : अहाँ लखिमा देवी, तनिकर कंत, सुकंत!

लखिमा : रूपनराएन, नागर रसमंत?

शिवसिंह : *(हारल सन)* विद्यापति! आब?

विद्यापति : रसमंते ईहो रसभान

शिवसिंह : वाह!

लखिमा : आ राजा शिवसिंह ईहो रस जान!

शिवसिंह : कविजी! तोहर ठकुराइन तमसायल बुझाइ छथुन!

विद्यापति : भनइ विद्यापति, इह कलजुग रित, चिन्ता करह न कोइ। अपन करम-दोष, आपहिं भूंजइ, जे जन पर-बस होइ।

शिवसिंह : पर-बस? तों ककरा बस मे छह विद्यापति?

विद्यापति : तोरा दुनूक बस मे युवराज।

लखिमा : रह' दिअ! रह' दिअ! ई आ ककरो बस मे?

विद्यापति : असल मे ठकुराइन, एक टा महत्त्वपूर्ण काज ठानि लेने छलहुँ, तेँ...

लखिमा : हँ-हँ! अहाँ आ अहाँक काज? यैह टा तँ छैक। बाकी केँ के पूछैए?

शिवसिंह : अ-रे-रे! ठकुराइन तँ गंभीर छथुन्ह कवि जी।

विद्यापति : हमर अभाग हिनक नइँ दोस!

लखिमा : अपन दोष केँ भाग-अभाग मे नइँ ओझराउ।

शिवसिंह : ई तँ अपन कविताक पाँती दोहरौलनि अछि

लखिमा : अहाँ दही मे सही नइँ करू। अहाँ केँ किछु बुझलो अछि की अनठेकानिए हाँकि रहल छी।

शिवसिंह : से की?

लखिमा : ओम्हर अहाँ युद्धक तेल प्रस्थान कयलहुँ, एम्हर ई पतनुकान लेलनि!

शिवसिंह : अएँ! ई की कहैत छी?

लखिमा : कथी ले', सप्पतो खाइ लेल एम्हर क' मुँह करताह।

शिवसिंह : ई नइँ उचित विचार?

लखिमा : की? कवि कंठहार!

विद्यापति : किछु हमरो तँ सुनू...

शिवसिंह : तोहर की सुनबह! अएँ हौ! ओना भ'क' बुझाक' कहि गेलियह। कखनो मोनो नइँ पड़लह! युद्ध मे छलहुँ, अपना ठकुराइनक कोनो टा खोज खबरि नइँ लेलह।

विद्यापति : हम सभ टा समाचार सँ अवगत रहैत छलहुँ युवराज।

लखिमा : हँ! समादे दही जनमबैत छलहुँ।

शिवसिंह : सत्य वचन! युद्ध मे विजयश्री प्राप्त क'क' घुरलहुँ। एतेक टा उत्सव भेल।

लखिमा : हिनके नचारी-महेशवाणी केँ मिलाक' नवका नाचो भेल।

शिवसिंह : के-के ने आयल। संवर्द्धना कयलक। उपहार समर्पित कयलक।

लखिमा : हिनका ताहि सँ की?

विद्यापति : नहि ठकुराइन! से जुनि कहू! हम, अहाँ सभ सँ फराक नइँ छी।

अहीं दुनू परानी तँ हमरा जीवनक धूरी छी। हमर कल्पनाक यथार्थ छी। **(अपन वस्ता खोलैत छथि)** एहन कोनो पल नइँ अछि जखन अहाँ सभ हमरा हृदय मे नइँ होइ। **(ताम्रपत्रक एक टा पुलिंदा बहार क' क' दैत।)** एकरे पूर्ण कर' पर लागल रही। आइ ई हम तोरा समर्पित करैत छी युवराज!

शिवसिंह : की अछि ई?

लखिमा : स्पष्ट अछि, जे ई महाकविक नव-रचना थिक? मुदा एकर विषय की छैक?

शिवसिंह : जँ रचयिताक मुखारविंद सँ सूनल जाय तँ केहन रहतै?

लखिमा : अति उत्तम रहतै!

शिवसिंह : कविजी! की द' रहल छह हमरा?

विद्यापति : अवहट्टक एक टा खण्डकाव्य युवराज!

दुनू : खण्डकाव्य!

शिवसिंह : अवहट्ट मे!!

लखिमा : की विषय छैक एहि खण्डकाव्यक?

विद्यापति : विषय छथि युवराज शिवसिंह।

शिवसिंह : हम?

विद्यापति : हँ, तों! गौड़ेश यदुसेन केँ परास्त क' क' जे कीर्ति तों दिग-दिगंत मे पसारलह, सैह अछि, एहि खण्डकाव्यक विषय!

लखिमा : ओ! तँ यैह कारण छल।

विद्यापति : हँ ठकुराइन।

लखिमा : निस्संदेह महत्त्वपूर्ण काज अछि। विशेषत: अवहट्ट मे हेबाक दुआरे!

शिवसिंह : परंतु! तों तँ हमरा संग छलह नइँ, युद्ध देखलह नहि, तखन युद्धक वर्णन लिखलह केना?

लखिमा : से तँ सत्य! अहाँ केँ की दिव्य-दृष्टि प्राप्त भ' गेलए महाकवि।

विद्यापति : सैह बूझि लिअ ठकुराइन। हम युद्ध केँ हजार-हजार जनताक आँखि सँ देखलहुँ।

शिवसिंह : कविता करैत छह।

विद्यापति : सैह तँ करैत छी।

लखिमा : तैयो जनताक आँखि वला बातक भाषा-टीका करियौ!

विद्यापति : बड़क कहिनी, बड़ी दूर जाय ठकुराइन। युवराज युद्ध कयलनि।

लोक ओहि युद्ध केँ देखलक। अप्पन देखल ओ अनका सुनौलक। एहि तरहेँ पसरैत ओ हमरो लग आबि गेल।

लखिमा : मुदा केना?

विद्यापति : भाँट-चारणक फकड़ा सँ, पमरिया सभक पमारा सँ। चौपाड़ि परहक गप्प सँ। ललना सभक कंठ सँ बहराइत गीत सभ सँ।

लखिमा : अद्‌भुत लगैत छै।

शिवसिंह : *(विद्यापति दिस झुकैत मंद स्वर मे)* अद्‌भुतानंद जी! एहि मे साँच बात कतेक हेतह।

विद्यापति : जतेक तोरा प्रिय लगतह।

शिवसिंह : *(लखिमा सँ)* लियह। अहाँक महाकवि तँ हमरा बाजहि नइँ दैत छथि।

लखिमा : कवि केँ तँ एहन हेबाके ने चाही!

शिवसिंह : बाचाल?

लखिमा : नहि! उचितवक्ता!

शिवसिंह : बेस! बड़ बढ़ियाँ। अव्वल-दुव्वल पर सितुआ चोख! सैह ने कहैत छैक।

विद्यापति : कहैत छैक तँ सैह। मुदा एत' अव्वल-दुव्वल के? तों?

शिवसिंह : ठकुराइन तोरा पच्छ मे तँ हम अव्वल भेलहुँ की नइँ? मुदा ओहिठाम ई नइँ ने रहथुन। हमहूँ हस्तक्षेप नइँ करबह, से जानि लैह।

लखिमा : अहाँ कत'क बात क' रहल छी?

शिवसिंह : *(लखिमा सँ)* अहाँ तँ जनितहि छी। देवभाषाक संपोषक लोकनि, कविजी पर बेस अप्रसन्न छथिन्ह।

लखिमा : देसिल वयना केँ सबजन मिट्ठा कहैत छथि तेँ तँ ने?

शिवसिंह : से तँ सहजहि! टटका उदाहरण लियह। हमरो कीर्तिक बखान अवहट्ट मे कयलनि अछि। आब ओ लोकनि छोड़थिन्ह हिनका।

लखिमा : ताहि सँ महाकवि डेराइत छथि?

विद्यापति : नहि ठकुराइन! डेरायब तँ जायब कत'? कोनो नव बात सेहो नहिए अछि। पहिनो सँ कवि कोकिल कहितहि छथि।

शिवसिंह : *(हँसैत)* कोआ कह' चाहैत छथि, कोकिल कहैत छथि।

विद्यापति : सैह तँ! कवि-कोकिल हमर प्रसंशा मे नइँ कहल जाइत अछि।

लखिमा : मुदा अछि ई सोलहो आना अहाँक प्रसंशा। कोकिल तँ अहाँ छीहे महाकवि! राजभवन हो आकि आँगन-खेत, खरिहान। सभ ठाम कुहकै छी।

शिवसिंह : अहीं कहने। एते काल तँ भेल। कहाँ एक्को बेर सुनलियै।

लखिमा : की ?

शिवसिंह : कूहकब।

विद्यापति : एहि मे की छै। तोहर इच्छा होइत छह तँ सुनि लैह।

लखिमा : कने थम्हि जाउ महाकवि।

(लखिमा जल्दी-जल्दी पेय, ताम्बूलक व्यवस्था करैत छथि। शिवसिंह आ विद्यापति पान करैत छथि। लखिमा सुव्यवस्थित भ'क' बैसैत छथि।)

लखिमा : आब कुहकियौ।

विद्यापति : ठकुराइन। पछिला किछु दिन अहाँ आ युवराज फराक छलहुँ। से ओहि बीतलाहा समयक स्मरण मे, ई पद समर्पित अछि।

दुनू : *(एक-दोसरा केँ देखैत)* वाह!

विद्यापति : *(आवृत्ति करैत)* सरसिज बिनु सर, सर बिनु सरसिज की सरसिज बिनु सूरे।
जौबन बिनु तन, तन बिनु जौबन
की जौबन पिअ दूरे। सखि हे...

लखिमा : मोर बड़ दैब विरोधी

तीनू : सखि हे! मोर बड़ दैब विरोधी।

(फेड आउट। नटुआक नाच फेड इन।)

समाजी : मदन बेदन बड़, पिआ मोर बोलछड़ आबहु देह परबोधी।

समाजी : सखि हे मोर बड़ दैब विरोधी।

नटुआ : चौदिस भमर भम, कुसुम-कुसुम रम
नीरसि मांजरि पीबे।
मंद पवन बह, पिक कुहु-कुहु कह
सुनि विरहिनि कइसे जीबे।

समाजी : सखि हे! मोर बड़ दैब विरोधी।

(नटुआ फेड आउट)

समाजी : सखि हे! मोर बड़ दैब विरोधी।

(लखिमा, शिवसिंह, विद्यापति फेड-इन)

विद्यापति : भनइ विद्यापति।

शिवसिंह : अरे-रे कमलमुखि।

विद्यापति : गुनगाहक पिआ तोरा।

राजा शिवसिंह रूप नरायन
सहजे एको नइँ भौरा।

लखिमा : सखि हे!

विद्यापति : गुनगाहक पिआ तोरा

दुनू : वाह महाकवि! अद्‌भुद।

(सूत्रधार, नटी, विपटाक प्रवेश।)

(दृश्यांतर)

तेसर दृश्य

(सूत्रधार, नटी, विपटाक प्रवेश।)

सूत्रधार : प्रिय भूवन मोहिनी!

नटी : की कहैत छी प्रिय।

सूत्रधार : कहू तँ राजा कतेक प्रकारक होइत छल?

विपटा : दू परकारक।

सूत्रधार : कोन-कोन?

विपटा : अकर-सकर! *(नटी हँसैत अछि।)*

सूत्रधार : ई नइँ सूधरत। परंतु बाजल अछि ठीके।

नटी : अकर-सकर! फकड़ा जकाँ लगैत छै।

सूत्रधार : जे राजा ककरो अधीन नइँ, ककरो कर नइँ दैत छल, से अकर।

विपटा : जे कर देलक से सकर।

सूत्रधार : जेना तिरहुत राज!

नटी : तिरहुत राज ककर अधीन छल?

सूत्रधार : इब्राहिम शाह के। जौनपुर ओकर राजधानी छलैक। करक अतिरिक्त हाजरी, दस्तूरी, सलामी, परबी, जरिमाना प्रभृति सेहो देल जाइत छलै।

विपटा : असुलाइ छलै परजाक खाल खिचिक'।

नटी : जँ बादशाह केँ कर नइँ दितै तँ?

सूत्रधार : लश्कर चढ़ि अबैत छलै!

नटी : किएक तिरहुत राज केँ अपन सेना नइँ छलै?

विपटा : रहतै किएक ने! मुदा अबल-दुबल पर सितुआ चोख!

नटी : अर्थात्

सूत्रधार : सेना छलै परजा केँ सतेबाक लेल आ आपस मे युद्ध करबाक लेल।

(चीत्कारक स्वर। सभ ओम्हर तकैए। सूत्रधार-नटी विपटा फेड-आउट। कचहरीक दृश्य। तीन गोटे केँ यातना देल जाइत अछि। दू टा सिपाही आ अगल-बगल मे असहाय लोक सभ जे मात्र कन्नारोहटि क' रहल अछि।)

सिपाही-एक : हे चुप्प!

(सभ एकाएक चुप्प भ' जाइए आ दाबल स्वर मे हाकरोस करैए। सिपाही सभ लोक केँ बेंत सँ मारैए। मारि खाइत लोकक चीत्कार! विद्यापतिक प्रवेश। अवाक भ'क' दृश्य केँ देखैत छथि।)

विद्यापति : थम्हह! थम्हैत जाइ जाह!

(सिपाही सभ तमसा क' घूमैए। विद्यापति केँ देखि अवाक भ' जाइए। हड़बड़ाइत प्रणाम करैए।)

दुनू : गोर लगैत छी!

विद्यापति : आयुष्मान भव! परंतु एकरा सभ केँ यातना किएक देल जा रहल छै?

एक : कर अदायगी नइँ कयलक अछि महाकवि।

विद्यापति : कर अदायगीक लेल यातना! कतेक बरखक बकियौता छै?

दू : *(देखबैत)* एकर एक बरखक, ओकर दू बरखक आ ई...

(तेसर हाहाकर क' उठैए)

तेसर व्यक्ति : दोहाइ यौ बाबू! हमरा पर कोनो बाँकी-बकियौता नइँ छै यौ बाबू!

(परिजन सभ सेहो बाज' लगैत छै—बिना कसूर केँ मारि खा रहल अछि बेचारा)

एक : हे चुप्प! *(सभ स्तब्ध भ' जाइए)*

दू : ई, ओकरा पच्छ ल'क' बतकुट्टनि क' रहल छल।

एक : आदेश छै जे एहन लोकक जीह कतरि देल जाए।

विद्यापति : एहन अनुचित आदेश किनकर छनि?

दू : कर-संग्राहक महोदयक।

विद्यापति : अनर्थ अछि। कर-संगह मे बल-प्रयोग नइँ करबाक युवराजक स्पष्ट आदेशक अछैतो ई अन्याय?

दुनू : से हम सभ की जानी महाकवि।

विद्यापति : सभ केँ मुक्त करह।

(यातना-पीड़ित मुक्त होइए। परिजन सभ ओकरा ल' जाइ

छै। दृश्य फेड-आउट। समाजीक गायनक संग सूत्रधार-नटी आ विपटाक प्रवेश।)

समाजी : कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ!
दुखहि जनम भेल, दुखहि गमाओल
सुख सपनहु नइँ भेल, हे भोलानाथ!

(नृत्यमूलक गति-चर्याक संग सूत्रधार नटीक प्रवेश)

(पं.-एकक प्रवेश। गीत केँ अकानैए। तमसाइए।)

पं.-एक : ई के अलच्छ जकाँ रिरिआइए। हौ! माय-बाप मरि गेलह की? बंद करह ई दुद्दुर राग।

(गायन फेड-आउट। क्रमशः आरो पंडित सभ अबैत अछि।)

(सूत्रधार, नटी कात भ'क' पंडित सभक गप्प सूनैए!)

पं.-दू : भने चुप्प करौलहुँ नंगटबा केँ।

पं.-एक : अरे हमर बात रहय तँ हम एहन पद जोड़निहारेक ठोर सीबि दी।

पं.-तीन : कोकिलबा द' ने कहैत छी! ओकर यैह सजाए हेबाक चाही...।

पं.-चारि : सर्वथा उचित होइतै।

(मूक संभाषण करैत पंडित लोकनिक प्रस्थान)

नटी : ई लोकनि एकठाम?

सूत्रधार : लगैत अछि, कोनो अभियान पर छथि।

विपटा : तब तँ बुझि लू जे पकला जौ मे पाथर।

नटी : अर्थात्।

सूत्रधार : ई लोकनि निश्चिते एहन कुचक्र चलौताह जे सभकिछु उनटा-पुनटा भ' जैत।

(मंत्रण-स्थल पर सभ जमा होइत अछि। सभक मूक-संभाषण चलैत छै)

नटी : मुदा ई लोकनि एना करताह किएक?

सूत्रधार : कर-संग्रह मे शिवसिंह जे हस्तक्षेप क' देलथिन।

नटी : से ओ युवराज छथि। ओ जे चाहताह सैह ने हेतै।

सूत्रधार : नहि। ई लोकनि सुलतानक भय देखाक' जे चाहैत छथि, से करबैत छथि।

विपटा : आ भरि पोख चानी कटैत छथि। फुटानी करैत छथि।

(सूत्रधार-नटी-विपटा फेड आउट। मंत्रणा कक्ष मे चंद्रकरक अध्यक्षता मे सभ यथास्थान बैसल। चंद्रकर बाजि रहल छथि।)

चंद्रकर : भविष्यक चिंता-भावना, हमर दारूण क्लेशक काल अछि। तिरहुत राज पर दुर्दिनक घटाटोप स्पष्ट लक्षित अछि। युवराजक अनावश्यक हस्तक्षेप सँ कर-संग्रह क्षीणतर होइत गेलए। बादशाह केँ हाजरी-सलामीक तँ कथे नइँ, कर पर्यंत नइँ पठाओल जा सकल अछि। तगादा पर तगादा आबि रहल अछि। बेसी दिन नइँ जे लश्कर आओत आ सनातन सँ अर्जित मान-प्रतिष्ठा केँ लत-खुरदनि क'क' चलि जायत।

सभ : अनर्थ!

पं.-एक : घोर अनर्थ! महाराज केँ ई सभ ज्ञात छनि तँ?

चंद्रकर : निश्चयतः ज्ञात छनि।

सभ : तखन?

पं.-एक : जखन ओ की सोचैत छथि?

पं.-दू : ओ की सोचताह। सभ बात मे पुत्र दिस देखैत छथि।

पं.-तीन : आ पुत्र छथिन्ह जे अपना सोझाँ ककरो किछु गनिते नइँ छथि।

पं.-चारि : से नइँ कहियौक। कवि-कोकिल आ ओकर देसिल-वयना लेल तँ आफन तोड़ने रहैत छथि।

पं.-एक : तखन देखू तखन ई कवि-काठी हुनके लग रहैत अछि।

चंद्रकर : आर समस्त व्यवस्था केँ अस्तव्यस्त करबैत अछि। एक दिस तँ ओ गमार सभक बोली केँ माथ चढ़बाक' देवभाषाक अपमान करैत अछि। दोसर दिस एहन पाठ पढ़ौलकनि युवराज केँ जे तुरुकक हाथें हमरा लोकनिक इज्जति उतरत।

सभ : की?

पं.-एक : हमरा मस्तिष्क मे एक टा योजना अछि। जँ ओकर अनुपालन हो तँ हमरा विश्वास अछि जे युवराज केँ व्यावहारिकताक ज्ञान कराओल ज सकैत अछि।

चंद्रकर : योजनाक प्रकाश करू।

पं.-एक : लश्कर अबैत अछि तँ ओकरा आब' देल जाय। तखन दलपतिक कान मे ध' देल जाय जे नाफरमानी एकमात्र युवराज दुआरे भेल अछि।

सभ : हँ!

पं.-दू : *(हर्षित होइत)* अरे वाह-वाह! अद्भुद योजना अछि। लश्कर युवराज केँ पकड़ि क' ल' जायत। हमरा सभक इज्जति रहि जायत।

पं.-तीन : युवराज नइँ रहताह तँ कर-संचयक अवरोध हटि जायत।

पं.-चारि : कर-संचय हैत तँ बादशाह केँ सभकिछु अदाय क' देल जयतैक।

पं.-एक : कर-जरिमाना अदाय भ' जयतैक तँ उचिती-मिनती क'क' युवराजो केँ छोड़ा लेल जयतनि।

सभ : हँ!

पं.-दू : सर्वथा उचित योजना अछि। बादशाहक अप्रसन्नता टरि जायत आ ई युवराज जे हरदम फेंच कढ़ने रहैत छथि, ताहू सँ मुक्ति भेटत।

सभ : हँ!

चंद्रकर : हमहूँ स्वयं केँ एहि योजना सँ सहमत पबैत छी। परंतु सावधान! ककरहु कानो-कान ई वार्ता नइँ भेटए। सभ किछु अत्यंत गुप्त रहबाक चाही।

सभ : निश्चित!

पं.-दू : परंतु हम योजना मे एक टा संवर्द्धन कर' चाहैत छी।

सभ : संवर्धन!!

चंद्रकर : प्रकाश करू।

पं.-दू : हमर विचार, जे महाराज सँ कहिक', युवराज केँ मुक्त कराबक लेल कवि-कोकिल विद्यापति केँ पठाओल जाय।

सभ : हँ-हँ! *(हर्षित स्वर)* ई तँ घीओ सँ चिक्कन।

पं.-तीन : तखन ने कविजी केँ बुझेतनि जे...।

पं.-चारि : कत्ते धान मे कत्ते चाउर होइत छै।

पं.-एक : एक पंथ दू काज।

सभ : उत्तम-अति उत्तम!

चंद्रकर : एव मस्तु!

(सहगानक स्वर फेड इन।)

चारिम-दृश्य

(सहगानक स्वर फेड-इन। विद्यापतिक आँगन। लखिमा, कालिंदी, मंदाकिनी आ नटी गबैत छथि।)

समेवत : सुतल छलहुँ हम घरबा रे, गरबा मोतीहार
राति जखन भिनसरबा रे, पिया आयल हमार।

(उगना एम्हर-ओम्हर करैए। विद्यापतिक प्रवेश। विपटा, उगना हुनका रोकिक' चुपचाप सुनबाक इशारा करैए। चारुजनी गीत गबैत हँस' लगैत छथि।)

उगना : की गिरहथ! केहन लागल?

विद्यापति : की रे!

विपटा : आहि रे बा! गीत द' ने पूछैत छी!

विद्यापति : अपने गीत अछि। अपने लोक सभ मधुर स्वर मे गबैत छथि। बहुत नीक लागल।

मंदाकिनी : अहाँ चोरा क' गीत सुनैत छलहुँ।

विद्यापति : अहीं सभ कोनो चोरा क' गबैत रही जे हम चोरा क' सुनब।

उगना : एह! से तँ सौंसे गाम सुनैत अछि।

विद्यापति : आ महोपाध्याय लोकनि तकरा झोटैला पंचक झौहरि कहैत छथि।

कालिंदी : मुँहझौंस झोटैला पंच कहनिहार के!

उगना : चानि पर खापड़ि फोड़।

मंदाकिनी : हे! बेसी टभ-टभ नइँ कर। हँ!

विद्यापति : तँ आइ अहाँ लोकनिक गान-मंडली जमल अछि।

कालिंदी : ठकुराइनक फरमाइस छलनि।

विद्यापति : चारिम जनी अनभुआर लगैत छथि।

नटी : हमरा नइँ चीन्हलहुँ, हम नटी छी।

उगना : भन्ने भेंट भ' गेल। हम नटराज छी।

मंदाकिनी : एकर सपरतीव तँ देखू। रे सरधुआ...।

(उगना केँ मार' दौड़ैत छथि। उगना पड़ाइए आ बड़-बड़ाइए)

उगना : हे देखू ताल! हमरा कइ ले' खेहारै छी। हम ठीके ने कहली। नाच मे तँ हम महादेव बनिते छी। तँ नटराज भेली की नइँ। नइँ दौड़ू! कहै छी ने। थाकि ने जैब। गिरहतनी यै गिरहतनी...

(विद्यापति, लखिमा, कालिंदी, मंदाकिनी केँ रोक' चाहैत छथि। ओ नइँ मानैत छथि। बालिकाक प्रवेश)

बालिका : बाबूजी! बाबूजी!

विद्यापति : हँ बूच्ची!

बालिका : माय उगना केँ किएक खेहारैत छथिन?

विद्यापति : खेहारैत नइँ छथिन!

बालिका : तखन?

विद्यापति : खेलाइत छथिन।

बालिका : ई कोन खेल भेलै?

विद्यापति : नचारी।

बालिका : नचारी?

विद्यापति : हँ नचारी! नाचि-नाचिक' खेलाइ तँ नचारी।

बालिका : जँ बैसिक' खेलाइ तँ?

विद्यापति : बैसारी

(मंदाकिनी थाकिक' ठाढ़ भ' जाइत छथि।)

बालिका : माय! नचारी खेलायल भ' गेल?

मंदाकिनी : नचारी? के कहलक अहाँ केँ?

बालिका : बाबूजी।

(मंदाकिनी तमसा जाइ छथि।)

मंदाकिनी : हँ-हँ! किएक ने फुरेतनि। यैह तँ नचबा रहल छथि हमरा। हिनके स'ह पर तँ बहसल अछि ई सरधुआ। दिन-दिन उद्दंड भेल जाइत अछि। काज-धंधा किछु ने। बात बनब' मे ओस्ताद।

(सभ मनोरंजनक भाव सँ चुपचाप मंदाकिनीक भाषण सुनैत छथि।)

ओह थाकि गेलौं।

कालिंदी : पकड़हु ने देलकनि।

विद्यापति : कनेकाल आराम क' लिअ।

(मंदाकिनी वक्र दृष्टि सँ विद्यापति केँ देखैत छथि)

(हकमैत अमियकरक प्रवेश।)

अमियकर : विद्यापति! विद्यापति!

विद्यापति : की भेलह अमियकर? एना अस्त-व्यस्त किएक छह।

अमियकर : अनर्थ भ' गेलै विद्यापति। वज्रपात भ' गेलै।

लखिमा : भेलै की, से ने कहू।

अमियकर : केना कहू! जीह ऐंठि रहल अछि बजैत।

विद्यापति : अमियकर!

अमियकर : युवराज पकड़ल गेलाह विद्यापति!

लखिमा : अएँ!!

मंदा/कालि. : हे ईश्वर!

विद्यापति : ई तों की बजैत छह अमियकर!

अमियकर : बादशाहक सेना आयल छल। की भेलै, की ने, सोझे युवराजक कक्ष मे हुलि गेलै आ युवराज केँ बंदी बनाक' जौनपुर प्रस्थान क' गेलै।

(लखिमा केँ तराटक लागि जाइत छै। ओ एकटक विद्यापति

केँ देखैत छथि। विद्यापति लखिमा केँ देखैत छथि। सभ, दुनू केँ देखैत अछि। समाजीक गायन)

समाजी : बिरला के भल खिरहर सोम्पलह, रहल अछि डाढ़ी, दधि, दूध, घोर, घीउ सञे खएलक, सगरि रएनि सुखे काढ़ी अचेतन, आबहु चेतह अपाने...।

(फेड-आउट)

सूत्रधार : हाय रे तिरहुत राज! दुइए टा लोक, सोझ आ सही लोक देखाइए एहि सौंसे कालखण्ड मे। एक टा विद्यापति आ दोसर शिवसिंह।...

(समाजीक गायन। नटीक अभिनय।)

नटी : भनइ विद्यापति, राखब सील
जओं जग जिबिअ, नवओ निधि मील।

सूत्रधार : वाह! मारि-पिटि धोखा षड्यंत्र, येन-केन-प्रकारेण जत' धन-संचय टा प्रमुख प्रवृत्ति अछि, ओत' शील रखबाक बात करैत छथि।

(समाजीक गायन। नटीक अभिनय)

नटी : बड़ि बड़ाइ सबै नइँ पाबए, विधि निहारए जाहि।
अपन बचन जे परिपालए से बड़ सबू चाहि।
साजनि, सूजन संग सिनेह।

सूत्रधार : मुदा दूर्जन सभ सँ बेढ़ल, तिरहुत राजक युवराज, हुकुम-उदूलीक दंडस्वरूप, जहल मे बंद क' देल गेलाह। सामंत लोकनि स्वतंत्र भेलाह। आ जेना सामंत लोकनिक अभीष्ट छल, विद्यापति केँ जोनपुर जेबाक राजाज्ञा भेटल।

(समाजीक गायन। सूत्रधार-विपटा, उधो-चाकर जकाँ अभिनय करैए)

नटी : जाह-जाह तोहे उधव रे, तोहे मधुपुर जाहे
चंद्रवदनि नइँ जीउति रे, वध लागत काहे।

(उधो-चाकरक अभिनय भंग होइत अछि।)

सूत्रधार : विद्यापतिक लेल ई राजाज्ञा सँ बढ़िक' छल। विद्यापति गेलाह जौनपुर। इतिहास साक्षी अछि, शिवसिंह केँ जौनपुरक जहल सँ मुक्त करा क' अनलनि।

विपटा : गड़ी आगाँ बढ़ाउ।

नटी : सुनैत छिएक आ कतेको ठाम पढ़नो छी जे जौनपुरेक बाट मे उगना केँ अपन असली रूप मे आब' पड़लै।

विपटा : महादेव बनि गेलै सैह ने। से तँ हमहूँ नाच मे महादेव बनै छी।
सूत्रधार : शिवसिंहक मुक्ति, इतिहासे नइँ, किंवदंती सेहो अछि।
नटी : किंवदंती?
सूत्रधार : एकाधिक खिस्सा बनल, पद सभ जोड़ल गेल।
विपटा : गड़ी आगाँ बढ़ाउ।
सूत्रधार : तखन चलह ओहि चौपाड़ि पर।
नटी : ओत' की छै?
सूत्रधार : पमारा!
विपटा : ओ! पमरिया के पमारा! हे दुरगा जी के हे नामे-हे...

(चौपाड़ि! पमरियाक नाच। लोक सभ ध्यान सँ सुनैत।)

पमरिया : अब आगू के खिस्सा करइ छी बयान। हेइ, विद्यापत के बारे मे सुलतान सुनैए। रसे-रसे आगाँ-पिछाँ मोन मे बिचारैए। हेइ, तब जाके बतिया के जाँचै के निसचय करैए।

हेइ, आब होइए जाँच के बेबस्था। हेइ, काड़ी कपड़ा बिदापत के आँखी मे बन्हइय आ सूखला इंडा मे डाइल दइय।

हेइ, उपर मे एक टा जुआनी जनाना अबैए। जनानी फुके लगैए झुक के आगी। इंडा मे बिदापत लगैए गाबे।

हेइ, दुरगा जीके हे नामे-हेइ-नामे
काली मइया के हे नामे-हेइ
भोला बाबा के हे नामे-हेइ-नामे
लिहुरि फुकैए हो आगी-हेइ आगी
हेइ साजनि फुकैए हो आगी-हेइ आगी
हेइ सुनरी फुकैए हो आगी-हेइ आगी
हेइ देखली जे देहिया ओकर हम जइसे, मदन उठल हो जागी!
हेइ मदन उठल हो जागी।
हेइ दुरगा जी के हे नामे...

(फेड-आउट। विपटा फेड-इन)

(विपटा आ नटुआ। दुनू क्रमशः महादेव आ गौरा बनि जाइए।)

विपटा : शिवसिंह छुटला जहल से, तँ सौंसे तिरहुत के जनानी-जनाना, बचकानी आ मरदानी-मरदाना खुशी मे फैल' लगैए। एहना मे केकरा से रहल जेतइ। से गौरा के हिया मे डिबिया बरैए। महेस विदा होइ छथ झोरा-झपटा ल'क' भिखिआ मे, त' गौरा रोकइ छथ हुनकर बाट, ई कह के—

गौरा : हे-हो शिव!

शिव : की हे गौरा!

गौरा : हे-हो शिव!

शिव : एहे गउरा। हालीसन बोलहक ने, भिखिआ मे विलम्ब होइ छ।

गौरा : हे-हो शिव! देखहक ने! नैना पसारिक, अझुका सुदिनमा के। चर-अचर सम्भे नचइ छै। आ तों त' नटराजे कहबै छ।

शिव : एहे गउरी। काजक बेर पर केना नाच कर' कहइ छ?

गौरा : हे-हो शिव। तों काज की करइ छ। तों त' भिखिआ मँगइ छ।

शिव : एहे गउरी! भिखिए ने हमर काज लगइ छ।

गौरा : हँ-हे शिव! तों त' भिखारि भेल'! तों की नाच के जान' गेल'।

शिव : एहे गउरी! जगत भरिके हम्मे नटराज भेलिअ!

गौरा : हे-हो शिव! रह'दहक-रह'दहक!

शिव : एहे गउरी! हमरा बेसी नइँ उसकाबहक।

गौरा : जँ तों नटराज त' नाचि क' देखाबहक।

महादेव : आब तों कहइ छह हे गौरा त' से हम नाचि त' देबह। मुदा हमरा चारि टा सोच होइ छह।

(गौरा, गीत गाब' लगैत अछि। दुनूक नृत्यमूलक गतिचर्या।)

गौरा : आजु नाथ एक व्रत। महासुख लाबिअ हे।
तोहे शिव धरू नटवेश। की डमरू बजाबिअ हे!

महादेव : तों हे कहिअ गोरी नाचिअ, हमे कोना नाचब हे।
चारि सोच मोहि होए, कओन विधि बाँचब हे।

गौरा : शिव हे। नाच' कहलियअ त' सोच ध' लेलकह!

महादेव : एहे गौरी! सैहे न कहइ छियह!
अमिय चुबिअ खसत, बघम्बर छाएत हे
होएत बघम्बर बाघ बसहा पड़ाएत हे।

(बाघ, बसहा के खेहारैए। गौरा बाघ केँ पकड़ि लैए। बसहा महादेव लग चलि जाइए)

गौरा : शिव हे! बाघ-बसहाक चिंता नइँ करहक।

महादेव : एहे गउरी। दोसरो चिंता त सुनहक।
सिर सञो ससरत साँप, दहोदिस जाएत हे।

(साँप केँ मजूर (मयूर) खेहारैए। गौरा साँप केँ रोकैत छथि। साँप महादेव दिस जाइए। मयूर गौरी दिस रहैए।)

गौरा : शिव हे! सोच केँ बिसरि क' नचहक।
महादेव : एहे गउरी! तेसर जे सोच छह से ने सुनहक।
जटा सञो छिलकत धार, समेटि न पाएब हे।
होएत सहस मुख धार, भूमि भरि जाएत हे।
गौरा : शिव हे! भग्गल कथी लागी लधइ छहक?
महादेव : एहे गउरी! चारिमो सोच सुनिए लहक
रूण्डमाल टूटि खसत, मसानी जागत हे *(मसानीक प्रवेश)*
तोहे गउरी जएबह पड़ाए, नाच के देखत हे।
(नृत्यमूलक गतिचर्याक संग सूत्रधार आ नटीक प्रवेश।)
समाजी : विद्यापति कवि गाओल, गाबि सुनाओल हे
राखल गउरीक मान चारू बचाओल हे।
(दृश्यांतर)

पाँचम दृश्य

(विद्यापतिक आँगन। दुनू पत्नी, विपरीत भाग सँ किछु करबाक क्रम मे अबैत छथि। दुनू गुनगुनाइत छथि।)

मंदाकिनी : विद्यापति कवि गाओल...
कालिंदी : गाबि सुनाओल हे।
दुनू : आ रे, राखल गउरीक मान कि चारू बचाओल हे।
(दुनू गोटे स्वयं केँ एक्के गीत गबैत पाबि चौंकैत छथि आ हँस' लगैत छथि)
कालिंदी : वाह रे भनहि विद्यापति!
मंदाकिनी : ल' लेलियनि ने नाम!
कालिंदी : नाम कत' लेलियनि। भनिताक हम की करियउ?
(विद्यापतिक प्रवेश)
विद्यापति : किनक भनिता केँ क' रहल छियनि? **(दुनू चौंकैत छथि।)**
दुनू : गे मइयो!
मंदाकिनी : एते जल्दी?
कालिंदी : ने समाद ने बिरो **(दुनू मुँह दाबिक' हँसैत छथि)**
मंदाकिनी : उत्सव एते शीघ्र समाप्त भ' गेलै?
विद्यापति : नहि। उत्सव तँ चलि रहल अछि। हमहीं चलि अयलहुँ!
मंदाकिनी : फेरे कोनो विवाद तँ नइँ लाधि अयलहुँ अछि?

विद्यापति : निश्चिंत रहू। ओना हमर चलि आयब सँ जँ विवाद लाधल होइ तँ से हम नइँ जानी। हमरा तँ मोन मे आयल जे एत' सभ समतूल छै। यैह टा ओ समय अछि जे हम शांति सँ अपना घर मे रहि सकैत छी।

कालिंदी : हमरा सभक भाग!

विद्यापति : अद्‌भुद चंचल काल अछि। कखन की भ' जायत से ज्ञात नइँ।

मंदाकिनी : सभ दिन तँ एहिना देखलिऐक अछि।

कालिंदी : हम तँ सहजहि।

विद्यापति : *(स्वगत)* सुलतानक उग्र संवाद। अड़ोस-पड़ोस मे आतंक आ पीड़ा। एहना मे युवराज एक दिस। महराज दोसर दिस। तेसर छथि मंत्रीगण। तीनू के तीन बात। चारिम भेल प्रजा आ हम चारूक बीच घिरनी जकाँ नचैत पाँचम।

(दुनू एक-दोसरा केँ देखैत विद्यापतिक मनोभाव केँ बुझैत छथि। सहज कर'क प्रयास)

मंदाकिनी : ओ कओन कोण पर छथि? लखिमा देवी रमाने?

कालिंदी : भनहि विद्यापति भाने।

मंदाकिनी : *(नकली तामस)* हे! अहाँ तँ बेस ढीठ भेल जाइत छी। पुनः नाओ ल' लेलियनि।

कालिंदी : भनिता केँ हम की करियउ?

विद्यापति : ओना एक्कहि टा पर्याप्त। जँ एकाधिक भ' गेलीह तँ पुरुषक लेल योगी बनव अवश्यंभावी। सुआइत श्रीकृष्ण योगिराज कहबैत छथि।

(अमियकरक प्रवेश। ओ अपसियाँत अछि। ओना अपसियाँत रहब, अमियकरक स्वभाव छै।)

आबह अमियकर। तोरा बुझल छह। कृष्ण योगिराज किएक कहबैत छथि?

अमियकर : एक टा कविराजक पार लगितहि नइँ अछि, हम जाइत छी योगिराज केँ बुझ'।

मंदाकिनी : बेस अशांत बुझाइत छी। पहिने सुस्थिर भ' बैसू तँ।

अमियकर : *(बैसैत विद्यापति दिस देखबैत)* जे ने ई कराबए। भरि दिन एकरा पाछाँ बेहाल छी।

(कालिंदी अमियकर केँ जल दैत छथि। अमियकर जल पीबैत छथि)

अमियकर : कतहु स्थिर नइँ। महाराज सँ जनैत छी, कवि युवराज लग छथि। युवराज लग गेलहुँ तँ सुनल जे चलि गेलाह। सभ ठाम जोहि अयलहुँ।

मंदाकिनी : आबहु तँ शांत भ' जाउ। ठामे पर ने भेटलाह।

विद्यापति : तों तँ जनैत छह अमियकर। अपना ठाम पर हम कतेक काल रहि पबैत छी।

अमियकर : से उचित। परंतु उत्सव सँ उठि अओनाइ नइँ उचित।

मंदाकिनी : हमरो सभ केँ छगुंता लागि गेल।

अमियकर : कखनो क' ई ने! बड़ नेनमतिया वला काज क' बैसैत अछि।

कालिंदी : अहाँ आइ बुझलियै! *(मिष्ठान बाँटल जाइत छै)*

मंदाकिनी : लिअ। युवराज मुक्तिक आनंद केँ मुँह मीठ क' क' द्विगुनित करू।

(अमियकर प्रसन्न होइत अछि।)

अमियकर : वाह! सर्वथा उपयुक्त कथा कहलियै! हम सभ, सौंसे तिरहुत आइ आनंदित अछि। विद्यापति, युवराज केँ बाघक मुँह सँ छोड़ा क' अनलनि। एहि लेल तों अजस्र शुभकामनाक पात्र छह विद्यापति।

विद्यापति : हमरा जे काज देल गेल छल, हम तकरे पूर्ण कयलहुँ। शिवसिंह, तिरहुतक व्यथा आ आवश्यकता केँ जनैत छथि। वैह टा एहि पीड़ित जनपदक लेल चिंता करैत छथि। हुनकर मुक्ति हमरा जीवनक सर्वोत्कृष्ट क्षण मे सँ अछि। असल मे हम तेँ एत' आबि गेलहुँ अमियकर। अपन आनंद केँ हिनका सभ संगे अनुभव कर'क लेल।

अमियकर : वाह! हम सभ जनैत छी। युवराजो जनैत छथि आ प्रजा सेहो जनैत अछि।

विद्यापति : से हम नइँ जनैत छी।

अमियकर : नहि! तों जनैत छह। अथवा नइँ जान'क भग्गल करैत छह! मुदा तोरा जान' पड़तह!

मंदाकिनी : अहूँ हिनका संग कविता जोड़ि रहल छी।

अमियकर : *(मंदाकिनी सँ)* अहाँ जनैत छी जे विद्यापति, युवराज केँ केना मुक्त करौलनि?

मंदाकिनी : हँ! यैह तँ कहलनि।

अमियकर : ई तँ वैह कहने हेताह जे भेलै! सिफारिशी पत्र सभक जोगार, दरबार मे प्रवेश। हाजिरी। पद-सुनौनाइ। पैरवी सँ सुल्तान केँ प्रभावित केनाइ। अंततः सभ शर्त्त मानि युवराजक मुक्ति।

मंदाकिनी : हँ! संक्षेप मे सैह।

अमियकर : प्रजा एकरा केना बुझलक से बुझल अछि?

मंदाकिनी : नहि।

अमियकर : तँ अमियकर सँ सुनू।

कालिंदी : पहिने मिष्ठान केँ शेष करबाक कार्यक्रम होइ!

अमियकर : *(मिष्ठान खाइत)* भने मोन पाड़लहुँ। *(जल पीबि)* आब सुनू। *(स्वाँग कर'क लेल तैयार भ')* सुल्तान शिवसिंह केँ पकड़ि क' ल' गेल जौनपुर। बंद क' देलक जहल मे। विद्यापतिक लेल ई समाचार बनल बज्रक प्रहार।

विद्यापति : सत्य छैक! बज्रेक प्रहार बुझायल ओहि समाचार सँ।

अमियकर : *(स्वाभाविक रूप सँ)* मध्य मे व्यवधान जुनि करह। *(स्वाँग करैत)*... आतुर भ' उठलाह विद्यापति। लखिमाक विरह-वेदना बेढ़ल मुखमंडल, व्याकुलताक आगि मे घृत-ढार भ' गेल। एसगरे जुमि गेलाह जौनपुर। सुलतान केँ इतलाय भैलै। भेंट कर'क के तमन्ना रखने, मिथिला भाषा के कवी, हाजीर छथ। बिदापत कहबै छथ, अवतारी मानल जाइ छथ। बिना जानल के जनै छथ। बिना देखल के देखबै छथ।

विद्यापति : सीमांत भ' रहल छह अमियकर।

अमियकर : *(स्वाभाविक)* शीघ्रता जुनि करह। ई हमर कथन नइँ। प्रजाक मानल अछि। *(स्वाँग करैत)* सुलतान विस्मित। कवी के बोलाहट। जाँच के व्यवस्था निश्चित। विद्यापति के आँखि पर बेस मोट पट्टी बान्हि बैसा देलक। पीठ दिस एक टा कोठरी। कोठरी मे स्नान करैत तरुणी। फरमान एलै—एरशाद।

विद्यापतिक बोल फूटल—कामिनि करए सनाने।
हेरइत हृदय, हनए पंचबाने।

मंदाकिनी : घुर जाउ! ई कोना संभव छै।

अमियकर : *(स्वाभाविक रूप सँ)* विद्यापतिक पद नइँ बुझाइए?

कालिंदी : हँ से तँ बातो तेहने छै।

मंदाकिनी : से नइँ बुझलहुँ।

कालिंदी : *(लास्य भाव सँ)* हेरइत हिरदय, हनए पंचबाने।

मंदाकिनी : हँ यै, पंचबान तँ तैयारे रहैत छनि। *(दुनूक लज्जाक अभिनय)*

विद्यापति : आब स्नान करैत कामिनिक हेरबाक अवसर हो तँ आर दोसर की हेतै। परंतु ई हमर पद नइँ।

अमियकर : शांति स्थापित राखह। हमरा पूरा कर' दैह। *(स्वाँग करैत)* अदृश्य तरुणी, पद मे दृश्य भ' गेल। चमत्कार सँ सुल्तान महो-महो। गद-गद। बाजल—जे माँगता हय, माँगो। विद्यापति अपन मित्रक मुक्ति मँगलनि।

मंदाकिनी : शिवसिंह मुक्त भेलाह।

कालिंदी : जँ तिरहुतक राज माँगि लितथिन।

अमियकर : *(स्वाभाविक)* लोक तँ कहिते छै! तिरहुतक राज भेटि जयतनि।

विद्यापति : हमरा तँ सरिपहुँ राज भेटि गेल। परंतु तों जाहि राजक बात करैत छह अमियकर, से, जे एहन-एहन बात अड़ौलक अछि तकरा भेटक चाही। खाली गप्पे नइँ, एहन विलक्षण पद सेहो जोड़ि लेलक अछि।

मंदाकिनी : ई सत्ते अहाँक पद नइँ?

विद्यापति : नहि।

अमियकर : परंतु ई किछु नइँ क' सकैत छथि। पद जोड़ेबे करतै। लोकक कल्पना-शक्ति उत्प्रेरित भ' गेल अछि, ओ पद जोड़ि रहल अछि।

(उगनाक प्रवेश)

उगना : ई सत्ते कहलियै गिरहथ। पद तँ हमहू जोड़ै छिऐ।

मंदाकिनी : आउ-आउ! हम अहाँक मुँह झौंसैत छी।

विद्यापति : आ हा हा! ई की बजैत छी?

मंदाकिनी : मोन जरैत अछि तँ बजबो नइँ करू। काजक बेर मे हरदम निपत्ता रहैए।

विद्यापति : की उगना?

उगना : सुनि लू गिरहथ! एखनी हमरा लागल हय भूख। एखनी हमरा किच्छो नइँ सोहाइए।

कालिंदी : बिपटइ देखि लियौ।

अमियकर : अहाँ केँ नइँ ज्ञात की?

कालिंदी : की?

अमियकर : उगन बड़ रमनगर नाच करैत अछि।

विद्यापति : अच्छा!

उगना : आब देखू ताल! अहाँ नइँ जनै छी की? हमरा एकगो जमाति हय। दरबारो सँ बोलाहटि होइ-हय।

मंदाकिनी : *(कालिंदी सँ)* हम कहैत छलहुँ ने। ई साधारण नइँ।

(कालिंदी, उगना केँ जलपान दैए। उगना ओकरा उदरस्थ करैत अछि)

अमियकर : हमर एक टा विचार होइत अछि।

विद्यापति : की ?

अमियकर : हमरा लोकनिक खानगी उत्सव मे, उगना नाच प्रदर्शित करए।

विद्यापति : समुचित! हमहू देखबै जे केहन नाच करैत अछि। उगना!

उगना : गिरहथ!

विद्यापति : अमियकर जे कहलनि से सुनक योग्य भेल ?

उगना : हँ गिरहथ। हम तँ तैयारे छी। *(विपटा जकाँ बनि जाइत अछि)* तँ सुनियौ।

(मंदाकिनी आ कालिंदी सेहो यथास्थान बैसैत अछि।)

उगना : गोरा-महादेव के पलिवार के कथा छै। दिन बीतल, राति बीतल, दिवस-मास-बरख बीतल। गौरा के मनोरथ मोनहि रहल। शिव नइँ छोड़लक बानि। ठीके कहल मनाइन। *(आवृत्ति करैए।)*

(विद्यापतिक परिवार फेड-आउट नटुआक प्रवेश। महादेवक अभिनय)

समाजी : भकर-भकर जे भाँग-भकोसथि, छटर-पटर करू गाल
चानन सँ अनुराग न थिकड़न, भसम चढ़ाबथि भाल।

(गौराक प्रवेश। समाजीक गायन, गौराक अभिनय)

गौरा : कत जुग सहस्र बएस बहि गेला
उमत महादेव समत न भेला।

समाजी : उचित बात कहल नइँ जाइ,
उमत बुझायब कओने उपाइ।

गौरा : आब ने सहब शिव, तोर उमताइ।
हमे बएस गारब, नइहर जाइ।

(गौरा, कार्तिक-गणपति केँ ल'क' विदा होइत छथि।)

समाजी : रुसि चललि गौरी, तेजि महेस
कर धय कार्तिक, कोर गनेस।

महादेव : तोहें गउरी जनि नइहर जाह
त्रिशुल बघम्बर बेचि बरू खाह।

(गौरा, कार्तिक-गणपति केँ कात मे राखि जवाब दैत छथि)

गौरा : त्रिशूल बघम्बर रह बड़ पाय
हम दुख काटब, नइहर जाय।
शिव : देखि अएलहुँ गौरी, नइहर तोर
सबहुक पहिरन बाकल डोर।
गौरा : जनि उकटिअ शिव, नइहर मोर
नाँगट सँ भल बाकल डोर।

(विपटाक प्रवेश)

(विपटाक अभिनय। समाजीक गायन)

समाजी : भनहि विद्यापति, सुनिअ महेस
नीलकंठ भए, हरिअ कलेस।

(नृत्य-मूलक गतिचर्या संग सूत्रधार-नटीक प्रवेश।)

सूत्रधार : प्रिय भुवन मोहिनी!
नटी : की कहैत छी प्रिय!
सूत्रधार : जनैत छी सौंसे तिरहुत मे कथीक चर्च छै?
नटी : कथीक प्रिय!
सूत्रधार : शिवसिंह अकर हेबाक घोषणा कर' वला छथि।
नटी : स्वाभाविक छै प्रिय! जहल मे बंद भेला सँ शिवसिंहक स्वाभिमान आहत भेल अछि।

(शिवसिंहक स्वर अबैए। 'नहि बिसरि सकैत छी हम!'।

(दृश्यांतर)

छठम दृश्य

(शिवसिंहक कक्ष। शिवसिंह, अमियकर, विद्यापति, आ लखिमा। शिवसिंह क्रुद्ध भेल, बजैत घूर-बहुर क' रहल छथि।)

शिवसिंह : नहि बिसरि सकैत छी हम! जीवन पर्यन्त नइँ बिसरि सकैत छी। तों ठीके कहलह कविजी! 'अपन करम-दोष आपहि भूंजइ, जे जन पर-बस होइ।'
लखिमा : परबसता नि:संदेह अधलाह अछि। परंतु!
शिव : कोनो किंतु-परंतु नइँ। बात स्पष्ट अछि प्रिय! हम, कोनो राजक युवराज नइँ, कर असुल'वला कारिंदा मात्र छी। कर नइँ देलिऐक, दंड भोगलहुँ।
विद्यापति : ताहि सँ तों हतास छह मित्र?

शिव : हम आहत छी विद्यापति। एहि पीड़ा सँ हमर सम्पूर्ण अस्तित्व आक्रांत अछि।

लखिमा : एकर प्रतिकार?

शिव : संप्रभुता।

विद्यापति : संप्रभुता?

शिव : हँ संप्रभुता। शिवसिंह ककरहु अधीन नइँ रहताह।

लखिमा : परंतु ताहि लेल अपेक्षित सैन्य बल कत' अछि प्रिय।

विद्यापति : सीमाक सुरक्षा शून्य छह मित्र आ आंतरिक व्यवस्था केँ दुरावस्था कहल जा सकैत छै। आमूल परिवर्त्तन कर' पड़तह।

शिव : जे कर' पड़त से सभ करब कविजी। कहह! तों हमरा संग छह। बाजह। हँ की नइँ!

(अमियकर जे एखन तक चुप छल एकाएक बाजि उठैत अछि।)

अमियकर : हम सभ अपनेक संग छी युवराज! प्रजा अपनेक संग अछि।

विद्यापति : राजाक बल होइछ प्रजा। सुखी, निर्भय आ प्रसन्न प्रजा, राजाक श्री मे अभिवृद्धि करैत छैक। राजा प्रजा केँ सुरक्षित आ अनुशासित करैत अछि। प्रजा राजा केँ अपन तन-मन-धन-बल सँ, पृष्ठपोषण करैत अछि।

अमियकर : अभिभावक सन राजा केँ प्रजा सँ, संतान सन व्यवहार होइते टा छै।

शिव : तखन आबह! हमरा लोकनि अही आधार पर विमर्श करी।

सभ : एवमस्तु।

(सभ बात करैत अछि। समाजीक गायन आरंभ। सूत्रधार, नटी, विपटाक प्रवेश)

समाजी : साजनि, सूजन संग सिनेह
कि दिअ अजर कनक उपाभ
कि दिअ-पसान रेह!

(सूत्रधार, नटी आ विपटाक प्रवेश)

सूत्रधार : प्रिय भुवन मोहिनी!

विपटा : *(नकल करैत)*की कहैत छी प्रिय!

नटी : अएं हो छकौड़ी लाल! तोहर ई साधंस, जे हमरा संगे विपटइ करबह!

विपटा : गलती हो गेलइ। माफी दिऔ। मुदा अहीं जे बेर-बेर, की कहैत

छी प्रिय! की कहैत छी प्रिय! बजैत छी से सुनिक' मोन पिरोटन ने भ' गेल।

नटी : *(सूत्रधार केँ देखबैत)* ई जे डेगे-डेगे प्रिय भूवन मोहिनी भखैत छथुन्ह, से नइँ सुनाइत छह।

सूत्रधार : प्रिय भूवन मोहिनी! अहाँ हमरा पर किएक उनटि गेलहुँ।

(पं. एक, दू, शिवसिंहक बारे मे बजैत अबैत छथि। सूत्रधार-नटी-विपटा, अपन बतोला बिसरि पंडित सभ केँ देखैए। दुनू पंडित प्रतीक्षा करैत छथि। तीन आ चारिक प्रवेश। चारूक बजैत प्रस्थान।)

नटी : ई लोकनि फेर एकठाम?

सूत्रधार : आरि रे बा! गंभीर संकट ने आबि गेलैए प्रिय!

(दुनूक प्रस्थान)

विपटा : बुड़ल-बुड़ल महिसिया, पानी मे।

(अपना केँ एसगर पाबि हड़बड़ा क' पड़ाइए।)

(दृश्यांतर)

सातम दृश्य

(मंत्री लोकनि, मंत्रणा करैत। चंद्रकर बेस उद्वेलित।)

चंद्रकर : युवराजक योजना सँ अपने सभ गोटे अवगत छी। प्रतिफलक रूप मे एकर जे परिणाम होयत, तकर कल्पना सहज अछि। आ कि नइँ।

एक : निश्चित। सुल्तानक कान मे बात जयतै आ ओ काल जकाँ हुहुआ क' तिरहुत पर टुटि पड़त।

दू : बात जेतै की? कान मे बात चलि गेल हेतै। युवराजक हठधर्मिता आब आत्मघाती भ' रहल अछि।

एक : पहिने देवभाषाक स्थान पर अवहट्ट आ देसिल केँ स्थापित कर' लगलाह। आब सुल्तान सँ अराड़ि।

दू : देवभाषा तँ अमृत पान कयने अछि। ओकर युवराज किछु नइँ बिगाड़ि सकताह। परंतु अकर हेबाक ई घोषणा तँ राजा आ राज दुनूक लेल अशुभ अछि।

विद्यापति : परंतु युवराज कोनो घोषणा नइँ कयलनि अछि। ओ मात्र प्रजाक विचार पुछलथिन आ प्रजा प्रसन्न अछि।

चंद्रकर : परंतु कतेक दिन रहत ई प्रसन्नता। सुल्तानक सेनाक समक्ष कतेक क्षण टिकि सकताह युवराज।

एक : एतावता किं कर्त्तव्यं!

विद्यापति : युवराजक योजना मे समर्थन आ सहयोग करियनि। ओ स्वयंप्रभुताक आकांक्षी छथि। स्वतंत्रता निश्चयत: सभ केँ प्रिय हेबाक चाही। हमरा विश्वास अछि जे अपने लोकनि सेहो सहमत होयब।

चारि : हमरा लोकनि शांति-प्रिय छी। युद्ध कर'क लेल हमरा लोकनिक निर्माण नइँ भेल अछि। हम एहन कोनो योजनाक समर्थन नइँ करब जाहि मे युद्धक संभावना होइ।

विद्यापति : स्वतंत्रताक लेल कीट-पतंग पर्यंत संघर्ष करैत अछि।

तीन : ई अहाँक मत अछि। हम एकरा स्वतंत्रता-संग्राम नइँ मानैत छी।

विद्यापति : परंतु अपने केँ एना नइँ कर'क चाही।

एक : हमरा लोकनि की करी वा नइँ करी तकर चिंता अहाँ पर नइँ। अहाँ मात्र अपना द' कहि सकैत छी। हम बहुमतक संग छी आ बहुमत, युवराजक योजनाक विरुद्ध अछि।

दू : ई ने कहियौक जे मात्र विद्यापति योजनाक पक्षधर छथि।

विद्यापति : हम हरदम पक्षधर रहब आ अपनहुँ लोकनि केँ पुनर्विचार करबाक आग्रह करैत रहब।

चंद्रकर : पुनर्विचारक संभावना नइँ छैक विद्यापति। ई सभ टा युवराजक नेनमतिया अछि। तेँ हमर प्रस्ताव अछि जे युवराज अपन योजना, अपन घोषणा आपस लेथु। सुल्तान केँ नियत कर सँ किछु अतिरिक्त टंका समर्पित कयल जाय।

विद्यापति : एक तरहेँ तँ ई जरिमाना देब भेलै।

चंद्रकर : अपराध करब तँ जरिमाना देबहि ने पड़त।

विद्यापति : प्रजाक हित मे निर्णय करब अपराध तँ नइँ कहओतै।

चंद्रकर : राजा केँ सुल्तानक हित मे पहिने सोच' पड़तनि।

एक : परंतु युवराज केँ ई सभ के कहत। सेहो निश्चित भइए जाय।

चंद्रकर : हमर तँ कोनो टा कथा युवराज सुन' नइँ चाहैत छथि। हमर विचार जे विद्यापति ई काज करथु।

सभ : हँ! हँ!

दू : सर्वथा उचित प्रस्ताव अछि। युवराज हिनके टा बात मानैत छथि।

तीन : एकर अतिरिक्त राज आ राज परिवार पर आयल आसन्न संकटक निवारणक बात छै।

चारि : एहि लेल विद्यापति कखनहुँ पएर पाछू नइँ करताह।

विद्यापति : सत्य कहलियैक अपने! हम सरिपहुँ पएर पाछू नइँ करब। परंतु जाहि बात केँ हम स्वयं समर्थन करैत छी ओकर विपरीत परामर्श कोना द' सकैत छी। एकर अतिरिक्त अपने लोकनिक धारणा मिथ्या अछि जे युवराज हमरे टा बात मानैत छथि। कनेक जिद्दी अवश्य छथि युवराज, परंतु अपन विचारशील मस्तिष्क, विवेकशील हृदय छनि। लखिमा ठकुराइन सन विदुषी सहधर्मिणी छथिन। हुनक निर्णय किनकहु उकसौला पर नइँ, सोचि-विचारि क' होइत छनि।

(एक क्षण विराम। सभ बाज' लगैत अछि...)

(संगीत। नृत्यमूलक गतिचर्याक संग सूत्रधार नटीक प्रवेश प्रस्थान देवसिंहक कक्ष फेड-इन। देवसिंह चिंतित घूर-बहूर करैत। चंद्रकरक प्रवेश)

चंद्रकर : प्रणाम महाराज!

देव. : के? ओ चंद्रकर। आबि गेलहुँ अहाँ। स्थान ग्रहण करू। अहाँ सँ किछु आवश्यक वार्ता अछि।

चंद्रकर : महाराज! हम तँ क्षुब्ध छी जे एहन महत्त्वपूर्ण निर्णय लेल गेल आ हमरा सँ कोनो मंत्रणा नइँ।

देव. : हमरा पुछबे नइँ कयलनि आ अहाँ अपना लेल क्षुब्ध होइत छी।

चंद्रकर : ई अशुभ संकेत अछि महाराज।

देव. : निश्चित! अतएव सोचू जे एकर निदान केना कयल जाय।

चंद्रकर : निदान तँ एक्कहि टा अछि महाराज!

देव. : की?

चंद्रकर : करक मुद्राक संग यथेष्ट नजराना ल'क' अहाँ आ हम, सुल्तानक सेवा मे उपस्थित होइ।

देव. : हँ, उपाय सेहो यैह टा बुझाइत अछि। परंतु कोषक स्थिति की अछि?

चंद्रकर : युवराजक घोषणा सँ कर-संचय मंद अछि।

देव. : कर-संचय मंद अछि?

चंद्रकर : हँ महाराज! कर-संचयक लेल बल-प्रयोग युवराज केँ नइँ सोहाइत छनि।

देव. : ईहो घोषणा भेलैक अछि। हम तँ मात्र अ-कर हेबाक घोषणा सुनल।

चंद्रकर : कर-संचय मे बल-प्रयोग बारन कयल गेल। हम निवेदन कयल जे संचय नइँ हैत तँ सुल्तान केँ कर केना अदाय हेतै। तदुपरांत अ-कर हेबाक घोषणा क' बैसलाह।

देव. : हे भगवान! किऐ एहन मति भेलनि हिनकर! (**विद्यापतिक प्रवेश**)

विद्यापति : प्रणाम महाराज!

देव. : विद्यापति।

विद्यापति : आज्ञा महाराज!

देव. : अएँ यौ! हम ई की सुनैत छी?

विद्यापति : की महाराज?

देव. : ई अ-कर हेबाक प्रयास! जनैत छी अहाँ, जे एहि सँ की हैत?... सुल्तान क्रूद्ध भ' जयताह। हुनकर क्रोधक की परिणाम हैत? राज आ राजवंश माटि मे मिलि जायत। कोन धरानिए तँ एकबेर छोड़ा क' अहीं अनने छियनि, मोन अछि ने?

विद्यापति : हँ महाराज!

चंद्रकर : परंतु लोक मे पसारल गेल छैक जे किछु नइँ कर' पड़लनि। पद सुनौलथिन आ सुल्तान पाथर सँ मोम भ' गेलाह। झट द' युवराज केँ मुक्त क' देलथिन।

देव. : रह' दियौक ई असार-पसार। एखन जे शिव चालि ध' रहल छथि से अगवे संकट केँ न्योतब थिक। ताहि पर सोचू! हमरा ई साफे पसिन्न नइँ। विद्यापति। अहीं केँ कहैत छी।

विद्यापति : आज्ञा महाराज!

देव. : अहाँ अपना मित्र केँ बुझबियनु। ओ जानि-सुमानि क' किएक बाघक मुँह मे जाय चाहैत छथि।

विद्यापति : हम प्रयास करब महाराज। परंतु क्षमा-याचनाक संग निवेदन अछि जे हमरा लोकनि किछु बेसीए भयभीत भ' रहल छी।

चंद्रकर : सुनल जाओ महाराज। आइ-काल्हि यैह सभ कुतर्क चलि रहल अछि। हमरो पुत्र एहिना तर्क करैत छथि। ई युवा वर्गक अज्ञान आ उत्छृंखलता अछि।

देव. : रह' दिय' अहाँ लोकनि। ई सभ होइत रहतै। परंतु एखन वाद-विवाद जुनि करू। सुनू, हम अपना कोष सँ कर द' अबैत छिऐ। चंद्रकर हमरा संग चलताह। अपना जीबैत हम शिव केँ संकट मे नइँ पड़' देबनि। एहि लेल हमरा जे कर' पड़ए...

(संगीतक संग दृश्य फेड-आउट। सूत्रधार, नटी, विपटाक प्रवेश)

नटी : महाराज अपन खानगी खजाना सँ सुल्तानक हरजाना भरथिन।

विपटा : बेटा सँ चोरा क'।

नटी : विश्वास नइँ होइत अछि। युवराज मानथिन?

सूत्रधार : अहाँ मानक बात करैत छी। सुनियौक ने। *(शिवसिंहक स्वर सभ अकानैत)*

(शिवसिंहक गर्जन!... शिवसिंहक कक्ष। विद्यापति, शिव आ लखिमा)

शिवसिंह : एतेक टा प्रपंच। एहन छल। हमरा सूचना पर्यंत नइँ। राज केँ स्वयं धनक आवश्यकता छैक आ ताहि धन केँ इब्राहिम शाहक पयर पर उझिल' जाइत छलाह। के? तँ स्वयं तिरहुत नरेश। हमर पिता, महाराज देवसिंह। आ हमरा, युवराज शिवसिंह केँ खबरि पर्यंत नइँ!... सभ टा खेल मंत्रीवर चंद्रकरक छनि। नइँ जानि कोन वैमनस्य छनि राज-परिवार सँ जे हरदम सुल्तानक चरण-बंदना महाराज सँ करबाब' लेल बेहाल रहैत छथि।

लखिमा : ई मंत्रीवर कायर छथि तेँ हरदम भयभीत रहैत छथि।

शिवसिंह : तों बजैत किएक नइँ छह? विद्यापति! *(विद्यापति शिवसिंह दिस देखैत छथि)* पिता महाराज केँ हम राजधानी सँ बाहर नइँ जाय देलियनि। किऐ एहन काज कयलहुँ हम? तों पुछह हमरा सँ!...

विद्यापति : हम जनैत छी युवराज। ओ तोरा सँ नुका क' जा रहल छलाह।

शिवसिंह : एहन कोन प्रलय आबि गेल जे सुल्तानक पयर पर माथ रगड़' चलि पड़लाह। हमरा खबरिओ करब आवश्यक नइँ।

लखिमा : अहूँ तँ महाराजक आज्ञाक बिना निर्णय लेलियै।

शिवसिंह : नहि! हम मात्र विचार उपस्थित कयलहुँ। सेहो ई हमरा अधिकार क्षेत्र मे अछि। खाल खिचि क' कर असूली अहाँ केँ उचित बुझाइए।

लखिमा : कथमपि नइँ! परंतु सुल्तान केँ कर नइँ देबाक घोषणा।

शिवसिंह : ई घोषणा हम नइँ कयलहुँ। हम मात्र प्रजा पर अत्याचार केँ रोकलहुँ। परंतु मंत्रीगण एकरा दोसरे रंग द' देलनि।

विद्यापति : भेल तँ अछि सैह।

लखिमा : तखन?

शिवसिंह : हम आब घोषणा करैत छी जे आब कोनो सुल्तान-फुल्तान केँ कर

नइँ देल जेतै। कर-संचय, कर-अदायगीक लेल नइँ, राज-काज आ प्रजा-हित लेल हेतै।

विद्यापति : आह! जँ से भ' जाइक।

शिवसिंह : सैह हेतै मित्र!

लखिमा : परंतु आक्रमणक प्रबल संभावना उपस्थित होइत अछि।

शिवसिंह : हमहूँ तैयार छी! प्रण करैत छी, जहिना सुल्तान हमरा अपना जहल मे रखलनि, तहिना हम हुनका अपना जहल मे राखब।

(सूत्रधार-नटीक प्रवेश)

(दृश्यांतर)

आठम दृश्य

(सुल्तान पर विजय : तेसर उत्सव)

(भाँटक आवृत्ति एवं अभिनय फेड-इन)

भाँट : दूर दूग्गम दमसि भज्जेओ गाढ़गढ़ ढीय गज्जेओ
पातिसाह ससीम सीमा, समर दरसेओ रे।
ढोल तरल निशान संद्धहि, भेरि काहल संख नद्धहि
तीनि भुअन निकेत, केतकि सन भरिओ रे।
कोह नीर पयान चलियो, वायु मध्ये राय गरुओ।
तरणि तेअ तुलाधार, परताप गहिओ रे।
मेरू कनक सुमेरू कम्पिय, धरणि पूरिय गगन झम्पिय
हाति, तुरअ, पदाति, पयमर, कमन सहिओ रे।
तरल तर तलवारि रंगे, बिज्जदाम छटा तरंगे
घोर घन संघात, बारिस कालदरसेओ रे।
तुरअ कोटि चाप चूरिय, चारि दिस चौ बिदिस पूरिअ।
विषमसार आसार धारा घोरनी भरिओ रे।
अन्ध कूअ कबन्ध लाइअ, फेरबि फफ्फरिअ गाइअ
रूहिरमत्त परेत-भूत, बेतला बिछलियो रे।
पार भइ परिपन्थ गज्जिअ भुमि मंडल मुंड मंडिअ
चारूचन्द्र कलेब किति, सुकेतकी तुलिओ रे।
रामरूपे स्वधम्म रख्खिअ दान दघे दधीचि बख्खिअ
सुकवि नव जयदेव भनिओ रे।
देवसिंह नरेंद्र नंदन, शत्रु नरबइ कुल निकंदन
सिंह सन शिवसिंह राया सकल गुनक निधान गनिओ रे।

(संगीतक जोर। एक कात पमरिया, दोसर कात नटुआ नचैत। फेड-आउट। सूत्रधार उत्साहित आ प्रसन्न अछि। नटी ओकरा सँ जिज्ञासा करैत अछि।)

नटी : प्रिय! आइ तँ अहाँ बेस आनंदित बुझाइत छी।

सूत्रधार : हँ सुमुखि! हम मात्र आनंदित नइँ। गौरवान्वित सेहो छी।

नटी : हमर उत्सुकता बढ़ि रहल अछि। स्पष्ट करियौक ने।

सूत्रधार : प्रिय! अहाँ तँ जनिते छी जे देवसिंह स्वर्गीय भेलाह। शिवसिंहक राज्यारोहण भेल।

नटी : हँ प्रिय!

सूत्रधार : शिवसिंह गद्दी पर बैसिते संप्रभुताक घोषणा कयलनि।

नटी : हँ प्रिय!

सूत्रधार : सुल्तान सुनलक तँ पठौलक अपन सेना। शिवसिंह तकर मुँहतोड़ उतारा देलनि। सुल्तानक सेना देखौलक पीठ। सगरि तिरहुत मे सिंह सन शिवसिंह रायाक जयजयकार छै। चारू भर आनंदक फुहार छै। मेघ मल्हार छै।

नटी : हुलसल परिवार छै।

सूत्रधार : उत्तम विचार छै।

(संगीत। नृत्यमूलक गतिचर्याक संग सूत्रधार, नटीक प्रस्थान)

(विद्यापति आँगन फेड-इन। विद्यापति, मंदाकिनी आ कालिंदी एकठाम बैसल)

विद्यापति : कहू तँ। हमर मुट्ठि मे की अछि।

कालिंदी : गुआ।

विद्यापति : नहि भेल। अहाँ हारि गेलहुँ।

मंदाकिनी : किसमिस-छोहारा। *(विद्यापति मुट्ठी खेलैत छथि।)*

दुनू : सोनाक टंका। *(विद्यापति दुनू मे टंका बाँटि दैत छथि।)*

(टंका पर लीखल केँ पढ़ैत—महाराज श्री शिवसिंह देवस्य।)

विद्यापति : अर्थ लागल?

मंदाकिनी : लागल नइँ तँ की?

कालिंदी : युद्ध मे विजयक उपरांत, महाराजक आत्मविश्वास बढ़ि गेलनिहें।

मंदाकिनी : आब शिवसिंहक मुद्रा चलत।

विद्यापति : एतबे नहि। प्रजा सँ जे राजांश आओत से मिथिलाक विकासक निमित्त व्यय हैत।

कालिंदी : विकास?

विद्यापति : बाट-घाट बनत। विद्यालय-औषधालयक स्थापना हैत। धर्मशाला बनत। पोखरि-इनार खुनाओल जायत। चोरी-चकारी बंद कयल जायत...

मंदाकिनी : बड़ बढ़ियाँ! मिथिलाक विकास हेतै, तँ अपनो विकास देबे करत। ताबत दू टा क' टंका भेटिए गेलए। चलू। नचारी गबैत छी।

(उगनाक प्रवेश)

उगना : तखन तँ हमहू अबैत छी।

मंदाकिनी : पेट मे आगि लागल हैत।

उगना : हँ यै गिरहथनी। भूख लगइ हइ तँ पेट मे आगिए नाहित लागल बुझाइ हइ।

कालिंदी : हे ईश्वर!

मंदाकिनी : रे सरधुआ!

विद्यापति : हाँ-हाँ! ई कोन भाषा बजैत छी?

मंदाकिनी : देसिल बयना छियै। बुझलियै! अपने राज! आ राज मे बाझल रहू। एक टा चाकर रखने छी, से नाच करैत फिरैए।

उगना : एहने सन बात कहलखिन गौरा।

विद्यापति : ककरा?

उगना : महादेव सँ।

कालिंदी : ई ओत्तहि विराजमान रहथि!

उगना : हम तँ रहितहि छी।

विद्यापति : कत'? कैलास मे?

उगना : अहूँ ताल करइ छी गिरहथ। कैलास मे नइँ...

विद्यापति : तखन कत'?

उगना : नाच मे! से कहै छी जे गौरा रूसली तँ रूसले रहि गेली। महादेव पड़ला भारी फेर मे।

(गौराक प्रवेश। उगना महादेव बनि जाइए। विद्यापतिक परिवार फेड आउट)

महादेव : एहे गउरा। केहन मतिया तोहरो भेल हे। हम रहइ छी बेहाल, तोरे आउरक लेल हे आ तोंहें हमरा देखबै छहक रंग-ताल हे। ताहि पर सँ पुत्र लोकनि। राम कहू। हाथ सँ भेल बेहाथ हे।

गौरा : शिव हे! जुनि लगाबह दोख, पुत्र सबहक माथ हे।

महादेव : एहे गउरा! साँचे कहइ छी। ल' गेलहुँ गनेस के भिखिआ मे।

मुदा कथी ले कनिञो उसास करत-

(आवृति करैत)

नित मोयं जाओं भिखि आनओ माँगि
कतहु न गेल मोरा संगहु लागि
झोरिआहु लेबाक ने उसास
ई पोसि होएत परतरक आस

गौरा : शिव हे! गनेस भिखिआ नइँ करैत छथि, से उचिते।

महादेव : एहे गउरा। पुत्र के एना किऐ बहसबै छ?

गौरा : शिव हे! भिखिआ जुनि करह।

महादेव : एहे गउरा। भिखिआ छोड़ब त' भोजन केना चलत?

(गायन आ नृत्यमूलक अभिनय।)

गौरा : बेरि-बेरि अरे शिव, मोञे तोहि बोलञो

समाजी : किरिस करिअ मन लाए।

गौरा : बिनु सरमे रहिअ-भिखिए भए माँगिअ
गून-गउरब दूर जाय।
निरधन जन बोलि सब उपहासए।

(गौरी भावुक भ' जाइत छथि)

समाजी : गौरा तोर अँगना
संपतिक मध्य देखल भाँग-घोटना!

(गायन फेड-आउट)

गौरा : निरधन जन बोलि सब उपहासए
नहि आदर अनुकम्पा

(गौरी पुनः भावुक होइत छथि)

समाजी : धनिकक आदर सबठाँ होइ
निरधन जनके पूछए नइँ कोइ।

(गायन फेड-आउट)

गौरा : तोंहे शिव पाओल आक-धथूर फूल
हरि पाओल फूल-चम्पा।

महादेव : एहे गउरी! तब तोंहे की बोलइ छ। हम हरि सँ चम्पा फूल छिनि आनू?

गौरा : नहि हे भोलेनाथ।

महादेव : तखन की हे देवी?

गौरा : किरिस करिअ मन लाए।

महादेव : एहे गउरी। किरिस करब से हर नइँ ने अछि।

(गौराक अभिनय। समाजीक गायन।)

समाजी : खटङ काटि हर, हर बन्धाबिअ
तिसुल तोड़िअ करू फारे
बसह धुरन्धर लए हर जोतिअ
पटिआ सुरसरि धारे

महादेव : जानल, गौरा तोह विचारे

गौरा : शिव हे! करिअ उचित उपचारे।

(फेड-आउट। सूत्रधार- नटीक प्रवेश)

(दृश्यांतर)

नवम दृश्य

(शिवसिंह अलोपित)

सूत्रधार : प्रिय भुवन मोहिनी!

नटी : की कहैत छी प्रिय? *(विपटा मूक नकल करैत अछि)*

सूत्रधार : केहन बात कहलथिन्ह गौरा?

नटी : बहुत नीक बात कहलखिन गौरा। बिनु सरमे रहिअ, भिखिए मए माँगिअ, गुन गउरब दूर जाए।

सूत्रधार : निःसंदेह प्रिय! ई बात तँ एखनो ओहिना सत्य अछि। तखन ओ तँ एहन समय छल जे कोनो राजा पहिल बेर अपना केँ स्वयंप्रभू मानलक। फलतः प्रजा मे पुनर्निमाणक हुलास जागि रहल छलै। स्वाभिमानक अर्थ लागि रहल छलै। परंतु मंत्रीवर्ग आ सामंत लोकनिक जीवन-दर्शन छल, लात-जुत्ता खायब आ शान सँ रहब।

नटी : अर्थात् सभ सँ नीक गुलामी?

सूत्रधार : हँ! छोट-छोट राज आ तकर अपन-अपन राजा। आपस मे छत्तीस आ बहरियाक पयर पर नाक नगड़बा मे ओस्ताद। एहना मे शिवसिंहक फराक व्यक्तित्व बनैत छल।

नटी : तेँ ने प्रजा ई फकड़ा बनौलक।

(समाजीक गायन। सूत्रधार, नटी, विपटाक नृत्यमूलक अभिनय।)

समाजी : पोखरि रजोखरि, आर सब पोखरा

राजा तँ शिवसिंह, आर सब छोकड़ा

सूत्रधार : परंतु, सुल्तानक लेल से असह्य छलैक। एक बेरुक हारल, औ सम्हरिक' आक्रमण क' देलक। युद्ध-विरामक शर्त्त छलैक क्षमा-याचना सहित अधिनता-स्वीकार। मंत्रीगण-सामंत एहि लेल पहिने सँ रहथि तैयार। परंतु शिवसिंह युद्धक विकल्प केँ उचित मानलनि आ रणभेरी बाजि उठल।

(युद्धक ध्वनि)

नटी : युद्ध आरंभ भ' गेलै!

(हकमैत विपटाक प्रवेश)

विपटा : किछु बाकी नइँ छै। एत' ठाढ़ भ'क' हकबकाउ नइँ। भागू।

(हड़बड़ाल सभक प्रस्थान)

(लखिमा, विद्यापति आ अमियकर)

लखिमा : ई सभ टा अहींक मंत्रणाक सुफल थिक महाकवि!

विद्यापति : ठकुराइन!

लखिमा : हँ महाकवि! अहीं महाराजक चेतनाक आगि मे घी ढारैत रहलहुँ अछि। आब जखन ओकर प्रतिफल भेटि रहल अछि तँ अहाँ फराक भ' रहल छी। नइँ, हम अहाँ केँ नइँ छोड़ब महाकवि। जाबत धरि महाराज युद्धभूमि सँ नइँ घूरैत छथि, ताबत अहीं हमरा संग रहब। अहीं हमर मित्र, सखा, संरक्षक।

अमियकर : परंतु महारानी! व्यवस्था ई अछि जे सब रानी लोकनि अपना-अपना नैहरि जाथि आ अहाँ मंत्रीवर चंद्रकरक संरक्षण मे रही।

लखिमा : नहि! जे मंत्रीवर हरदम, महाराजक उन्नत मस्तक केँ सुल्तानक माथ पर झुकयबाक प्रयास करैत रहलाह, तनिकर संरक्षण मे लखिमा नइँ रहतीह।

अमियकर : परंतु महारानी! व्यवस्था!!

लखिमा : ई व्यवस्था नइँ! षड्यंत्र अछि अमियकर। मंत्री लोकनिक अशुभ योजना अछि।

अमियकर : षडयंत्र! अशुभ योजना!!

लखिमा : हँ अमियकर! ई लोकनि युद्ध केँ, महाराज-महारानी-महाकविक त्रिमूर्ति केँ खडित करबाक सुअवसर बुझि रहल छथि। एतबे नइँ। फुसिए महाराजक आज्ञा कहि ई लोकनि लखिमा-विद्यापतिक संबंध केँ अपमानित कर' चाहैत छथि। कलंकित कर' चाहैत छथि।

अमियकर : ओह! एतेक घृणित प्रपंच!!

लखिमा : परंतु हम! महारानी लखिमा हुनिका लोकनि केँ एहि मे सफल नइँ होब' देबनि! अहाँ जाउ अमियकर। महाराजक पीठ पर जाउ! *(भावुक होइत)* एहि दुर्भाग्यक अवसर पर विद्यापति टा एहन छथि जे हमर दुख केँ बाँटि सकताह। स्वयं मित्र वियोगक पीड़ा मेँ आक्रांत होइतो, यैह टा हमरा भरोस आ विश्वास दिआ क' जीवित राखि सकैत छथि।

विद्यापति : चलू महारानी! कत' चलब?

लखिमा : जत' अहाँ ल' चली।

(दुनूक प्रस्थान। अमियकर देखैए। सूत्रधार, नटी, विपटाक प्रवेश।)

सूत्रधार : प्रिय भुवन मोहिनी!

नटी : प्रिय! विद्यापति आ लखिमाक व्यथा सँ हृदय कचकैत अछि।

सूत्रधार : स्वाभाविक छै प्रिय। अपन लोक छूटल, ठाम छूटल। जेना आधा भ' गेल होइ।

विपटा : एहन विपत्ति ककरो जुनि होइक।

(विद्यापति आ लखिमा सोझाँ-सोझी बैसल)

लखिमा : कविशेखर। कोना काटब ई पहाड़ सन समय?

विद्यापति : इष्टक स्मरण करन ठकुराइन!

लखिमा : हमर इष्ट तँ महाराज छथि। हुनकर स्मरण सँ तँ व्यथा आरो बढ़ि जाइए महाकवि।

विद्यापति : मोन अछि, पहिने अहाँ कतेक रुसनी रही।

लखिमा : बौस'वला हो तँ रूस' मे आनंद छै महाकवि।

विद्यापति : मुदा हमरा ने पराभव भ' जाइत छल। महाराज व्याकुल भ' जाइत छलाह आ हमरा पद जोड़' पड़ैत छल।

(लखिमा भरल आँखि सँ एकबेर विद्यापति केँ देखि माथ झुका लैत छथि। विद्यापति जेना बीतलाहा समय केँ देखि रहल होथि। शिवसिंहक प्रवेश। जेना लखिमा केँ मना रहल हो)

समाजी : आरे-आरे भमरा, तोहे हित हमरा, बौंसि आनह गजगामिनि रे
आजुक रूसलि, काल्हि जौं बौंसब, तीत होएत मधुयामिनि रे...

(शिव सिंहक प्रस्थान) (हड़बड़ाल अमियकरक प्रवेश)

विद्यापति : के? अमियकर? एना अस्त-व्यस्त किएक छह?

अमियकर : युद्ध समाप्त भ' गेल विद्यापति।

लखिमा : महाराज कत' छथि।

(अमियकर चुप्प अछि)

लखिमा : अहाँ बजैत किएक नइँ छी।

विद्यापति : अमियकर? महाराजक कुशल किएक नइँ कहैत छह?

अमियकर : महाराज युद्ध क्षेत्र सँ अलोपित भ' गेलाह विद्यापति।

(लखिमा अवाक भ' जाइत छथि)

विद्यापति : ई तों की बजैत छह अमियकर?

अमियकर : युद्धक विपरीत-गति देखि महाराज रणभूमि सँ सकुशल बहरा तँ गेलाह। मुदा ओ कत' छथि से केओ नइँ जनैत अछि।

लखिमा : नहि! महाराज एना नइँ क' सकैत छथि। ओ औताह। सुनैत छी महाकवि। ओ औताह। हम हुनकर प्रतीक्षा करबनि महाकवि। ओ अबस्स औताह।

विद्यापति : हँ ठकुराइन!

लखिमा : मुदा एना किएक कयलनि। हम पुछबनि हुनका। जवाब देब' पड़तनि। जवाब देब' पड़तनि हुनका।

(निछोह कान' लगैत छथि। विद्यापति आ अमियकर लखिमा केँ सम्हारैत छथि)

(सूत्रधार, नटी, विपटाक प्रवेश)

समाजी : सखि हे! मंद पेम परिनामा।
बल कए जीवन, कएल पराधिन, नइँ उपचार एक ठामा।

(दृश्यांतर)

दसम दृश्य

(लखिमा आ विद्यापति अपना-अपना सोच मे। विद्यापति एक बेर लखिमा केँ देखैत छथि, चिंतित होइत छथि)

विद्यापति : एतेक समय भ' गेल!... तैयो लगैत अछि जे शिव केम्हरो सँ जे घड़ी ने आयल आ कहत, कहत जे... *(भावना केँ संयत करैत)* शिव, हमर शिव!...

(फेड-आउट। विद्यापति-लखिमा फेड-इन)

विद्यापति : निपत्ता भ' गेल। जे ओज आ स्वाभिमान सँ भरल छल से मुँह नुका क' कत' चलि गेल आ किएक चलि गेल? शिवसिंह! तों...

(लखिमा गाब' लगैत छथि। विद्यापति हुनका देखैत छथि)

लखिमा : माधव हमर रटल दूर देस
केओ नइँ कहए सखि, कुशल सनेस!

(फेड आउट, नटुआक प्रवेश)

समाजी : के पतिआ लए जाएत रे, मोर प्रियतम पास
हिअ नइँ सहए असह दुख रे, भेल साओन मास।

(फेड आउट)

(विद्यापति आ लखिमा फेड-इन)

विद्यापति : हँ। यैह बात हेतै। स्वतंत्रताक लेल उताहुल शिवसिंह केँ संभवत: पराजयक दंश वर्दास्त नइँ भेलै। आकि स्वयं पर विश्वास नइँ रहलै? नइँ।

लखिमा : सजनी!

विद्यापति : सजनी?

लखिमा : के कह आओब मधाइ।

दुनू : एखन-एखन कए दिवस गमाओल दिवस-दिवस कए मासे
मास-मास कए बरस गमाओल, छोड़ल जीवन आसे।

(हबोढ़कार भ'क' कान लगैत छथि। फेड-आउट)

(संगीत। सूत्रधार-नटीक प्रवेश। प्रस्थान। विद्यापति, उगना फेड-इन।)

विद्यापति : ओकरा स्मरण करैत हृदय फटैत अछि। मुदा तैयो। हम अपना केँ भाग्यशाली बुझैत छी जे ओहि अद्‌भुद लोक सभक संग रहलहुँ। अपूर्व जोड़ी छल। राधा-कृष्णक जोड़ी एहने रहल हेतै। अपरूप।

उगना : चांद सार लए मुख घटना करू, लोचन चकित चकोरे।

विद्यापति : सैह छलीह लखिमा।
अमिय धोए आँचर धनि पोछल, दह दिस भेल अंजोरे।

उगना : जुग-जुग के बिहि बूढ़ निरस उर कामिनि कौने गढ़ली।

विद्यापति : *(उगनाक बात नइँ सुनैत।)* अहाँ जनैत छी, हमर शिवसिंह की छलाह?

उगना : रूपनरायण।

विद्यापति : *(नहि सुनैत)* पराधीनता सँ घृणा करैत, स्वातंत्र्य चेतना सँ भरल, स्वाभिमानी छलाह। देसिलक प्रति चिंतित आ प्रयत्नशील राजा, जीवन मे हम पहिल बेर देखने छलहुँ। बाजल, राजधानी बदलब।

मंत्रीवर कहलथिन, राजधानी बदलब कोनो संगीत सभाक आगोजन नइँ थिक। तँ जनैत छी की बाजल?

उगना : *(सम्मोहित जकाँ।)* हम बाँस-काठ-जंगल आ खेतक राजा छी। हम पर्णकुटी मे रहब।

विद्यापति : ताहि शिवसिंहक अलोपित भेना, बत्तीस बरख भ' गेल।

समाजी : उगना रे मोर कतए गेलाह।

(विद्यापतिक पाछाँ शिवसिंह, लखिमा, मंदाकिनी, कालिंदी आ अमियकर आबि जाइत अछि। प्रकाश मे परिवर्त्तन।)

(उगना आगाँ बढ़ि अबैए।)

(दृश्यांतर)

समापन

उगना : हम सभ कृतज्ञ छी महाकवि। अहाँ, सभ दिन रहब। जाबत तक ई धरती रहत, अहाँ अपना पद मे जीवित रहब। आ ताबत तक अमर रहताह शिवसिंह, अमर रहतीह लखिमा आ अमर रहब हम, विपटा, नटुआ-उगना।

(सूत्रधार, नटी आगाँ आबि जाइए। सभ कलाकार मंच पर। प्रकाश परिवर्तन।)

समाजी : बड़ सुख-सार, पाओल तुअ तीरे छारइत निकट...

सूत्रधार : प्रिय भुवन मोहिनी!

नटी : की कहैत छी प्रिय!

सूत्रधार : आजुक कथा एत्तहि तक रह' देल जाय?

नटी : अवश्य प्रिय!

विपटा : हँ-हँ! आब भाभट समेटिए लू।

सूत्रधार : *(दर्शक सँ)* हे-हे सभासद लोकनि! कुणाल विरचित नाटिका 'बिदापत', एत्तहि शेष करबाक आज्ञा मँगैत कहैत छी।
महुअर बूझ्झहि कुसुम रस, कब्ब कला उछइल्ल।

नटी : सज्जन पर अउआर मन, दूज्जन नाम माइल्ल।

समवेत : बालचन्द विज्जावइ भाषा, दूज्ज न लग्गइ दूज्जन हासा
ओ परमेसर सेहर सोहइ, ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ।

(यवनिका)

(अंतिका, जनवरी-मार्च, 2003)

कुसमा-सलहेस

[महागाथा (राजा सलहेस) आ लोक-नाट्य
(सलहेस नाच) पर आधारित नाटक]

पहिल मंचन : 29-30 अप्रैल, 1997, विद्यापति भवन, पटना

पहिल मंचनक कास्ट

निरूपमा भारद्वाज, जे. ब्रह्मानंद, शारदा सिंह, उमाकान्त झा, अनिल दास, संगम कुमार ठाकुर, रश्मि मिश्र, पवन कुमार मिश्र, भवनाथ झा, मधुमालिनी, अरविन्द कुमार झा, रामेश्वर प्रसाद, शंभूनाथ झा, हेमंत कुमार, नीलम सिंह, एल.आर.एम. राजन, गोपालजी दास गोपेश, दुर्गानंद झा।

पहिल मंचनक क्रेडिट

वस्त्राभरण	: संचिता ठाकुर
मंच-सामग्री, शिरस्त्राण एवं आभूषण	: जे. ब्रह्मानंद
प्रकाश व्यवस्था एवं संचालन	: संजय इलेक्ट्रीकल्स
संगीत निर्देशन	: आशुतोष मिश्र
संगीत सहयोग	: शंभुनाथ झा
रूप सज्जा एवं ब्रोश्योर डिजाइन	: सुमिता झा
काष्ठ शिल्प	: मो. खालिद
प्रचार व्यवस्था	: प्रेमचंद मिश्र, अरविंद कुमार झा, रामेश्वर प्रसाद
प्रस्तुति सहयोग	: नीलिमा सिंह
आलेख और निर्देशन	: कुणाल

पात्र परिचय

हिरामन : सूग्गा।
विपटा : नाचक विदूषक।
कुसमा : मालिन, नायिका।
सलहेस : महिसौथाक राजा, नायक।
मोतीराम : सलहेसक माझिल भाइ।
बुधेसर : सलहेसक सभ सँ छोट, तेसर भाइ।
वनसप्ती : सलहेसक जेठ बहिन।
करिकनहा : सलहेसक भागिन, वनसप्तीक बेटा, बाघगढ़क राजा।
अन्हारमाठ : योद्धा, सलहेसक मित्र।
सामर : सलहेसक पत्नी।
कुनटा : वनचर, जंगलक प्रहरी, गुप्तचर।
ठनका : बाघ, सलहेसक सहचर।
बनका : भालु, सलहेसक सहचर।
मानचन्द्र : सलहेसक ससुर, मोरंगक राजा।
भानचन्द्र : सलहेसक सार, मोरंगक युवराज।
तरुमल्ल : समदागढ़क शासक, तस्कर।
चूहड़मल्ल : महामल्ल, पकड़ियाक सेनापति।
सूचोंग : भोटराज।
फूचोंग : भोट युवराज।
दुर्गा : देवी दुर्गा।
सैनिक, सखी-बहिनपा, ग्रामिण।

पूर्वरंग

(मंच पर अन्हार। समाजी द्वारा भगवती-वंदनाक वादन। वंदना समाप्त होइत-होइत मंच पर प्रकाश। 'हरे ओम् नमः शिवायः 'क धुन क्लेरिनेट द्वारा बजाओल जाइए। वादक द्वारा नृत्यमूलक गतिचर्या। 'सुमिरन 'क संग-संग सभ कलाकार मंच पर आबि जाइए।)

समवेत : सुमिरन, सुमिरन, सुमिरन करै छी
तीनू कोटि देवता के, सुमिरन करै छी न यौ।
पहिने सुमिरनमा करै छी, बाबा-डीहबार के
तखन सुमिरनमा करै छी गुरु जे गोसांइ के न यौ।
पुरुबे सुमिरनमा करै छी, उगला सुरुज के
पछिमे सुमिरनमा करै छी, मीरा सुलतान के न यौ।
दछिने सुमिरनमा करै छी, गंगा हो मइया के।
उतरे सुमिरनमा करै छी, गोरा पारबती के न यौ।
माझे मे सुमिरनमा करै छी, सकल समाज के
जन-गन-मन के हम, सुमिरन करै छी न यौ।

(गायनक क्रम मे विपटा आ हिरामन केँ छोड़ि सभ कलाकार मंच पर यथास्थान बैसि जाइए।)

विपटा : परिनाम, नमस्ते, आदाब, गुड इवनिंग, सलाम।
हिरामन : बाबा दंडवत, बच्चा जय सियाराम।
विपटा : भैया गोड़ लागी, बहिनी एमहर दियौ कान।
हिरामन : *(गायन)* तखन आब सुनियौ हे मालिक, हमरो कहनाम।
विपटा : *(गद्य)* अही मेदिनी पर
हिरामन : एक सँ एक राजा-महराजा एला।
विपटा : राज-पाट, ऐश-मौज केलनि आ चलि गेला।
हिरामन : एक सँ एक योद्धा आ वीर उपर भेला।
विपटा : लड़ला-भीड़ला मूइला की मारल गेला।
हिरामन : उपरा-उपरी क' विद्वान-बुद्धिमान सब अवतार लेलनि।
विपटा : अपन-अपन बुधियारी देखा-देखा, सरगोली-पेठियाक बाट धेलनि।
हिरामन : कह' जे से किऐ?
विपटा : *(दर्शक सँ)* कहू जे से किऐ?
हिरामन : प्रकृतिक नियम यैह छै तेँ।
विपटा : *(दर्शक सँ)* प्रकृतिक की नियम छै?
हिरामन : *(गायन)* आए हैं सो जाएँगे, राजा-रंग-फकीर।
विपटा : आ ओकरे नाम रहेगा बाकी, जे हरे जगत के पीर।
हिरामन : से एक समय के बात कहै छी, एहने दू जन धेलक शरीर।
विपटा : तकरे खिस्सा कहब हम सब, धरियौ हिरदय धीर।
हिरामन : *(गद्य)* तकर माने ई भेलै।
विपटा : जे आब शुरू होतै नाटक।

हिरामन : आ नाटक मे की होतै?
विपटा : नाटक मे खिस्सा होतै।
हिरामन : ककर-ककर खिस्सा होतै?
विपटा : परेमी सभक खिस्सा होतै।
हिरामन : कोन परेमी सभक खिस्सा होतै।
विपटा : तोरा आ हमरा सभक खिस्सा होतै।
हिरामन : चुप्प भरदुलही माउग। खिस्सा होतै राजा सलहेस आ कुसमा मालिनक।
विपटा : तों बनहक सलहेस, हम बनि जाइ छिऐ मालिन हे राजा।
हिरामन : से बनि जेबहक तैयो, खिस्सा ओकरे रहतै गे रानी।
विपटा : गहवर बला सलहेसक हे।
हिरामन : गोहारि बला सलहेसक गे।
विपटा : आब हम सब टा बुझि गेलिय'।
हिरामन : हमर जान बाँचल। शुरू करै छिय'।
विपटा : कर' ने! हम कहाँ कहियो रोकलिय'।
दुनू : *(गायन)* हो, दर्शक हो देवता
सुनियौ मे सुनियौ हो मालिक,
खिस्सा एक पिहनियाँ।
एक टा राजा सलहेस छलै, दोसर कुसमा मलिनियाँ हो।
हिरामन : *(गद्य)* से हे बाबू-भैया-मैया-बहिनियाँ!
विपटा : बूढ़ा-बूढ़ी, बर आ कनियाँ!
हिरामन : दसो ल'ह जोड़िक' अरज करै छी।
विपटा : अपन मगज अहीं सब ले' खरच करै छी।
हिरामन : गियान-धियान एमहर अपन कनेक लगबियौ।
विपटा : हमरा आउरक बात सुनिक' पाछू गुनियौ न हो।
दुनू : *(गायन)* से सूरमा मे राजाजी छै, ममता मे मलिनियाँ।
हिरदे हिरामन भावै ओकरे बचनियाँ न हो।
(गायनक संग विपटा एवं हिरामनक प्रस्थान।)

पहिल दृश्य

(पूर्वरंगक धुन बजैत रहैए। मंच पर फुलवारीक दृश्य। हाथ मे माला नेने कुसमाक प्रवेश। धुन समाप्त होइए।)

कुसमा : हे बाबू-भैया, मैया-बहिनियाँ। एइ नाटक मे हमहीं बनल छियै कुसमा मलिनियाँ।

(गायन) हमहीं जे नाम हो मालिक, कुसमा धरौलियै
राजा के बेटिया हमे, कहबी मलिनियाँ न हो।

(गद्य)

हमहीं भेलियै कुसमा मालिन। चारि मालिन-बहिनि सब मे सँ छोट। जेठकी तीनू हिरिया-जिरिया आ दोना बहिनदाइ सब एखन योगिनी बोनक गुफा मे निवास करै छथिन आ हम? हमरा तँ बोआइ-ए मे मोन लगै छे। से हम तँ...

(गायन)

रने-बने घूमि-घूमि, फूलवा लोढ़लियै
फूल-गूल गाँथि-गाँथि मलबा बनौलयै
सैहे माला ल'क' ककरो बटिया जोहलियै
एक निरमोहिया सँ हम, हियवा जोड़लियै न हो।
बारहे बरिस के बाला रहियै
तखने एक टा सपन देखलियै
दुरुगा माइ के वचन सुनलियै
ताही दिन सँ अँचरा बन्हलियै हो।
मरिच खोंटि एक-संझा केलियै
गेलियै जनकपुर सीता जी पूजलियै
धनुखा मे टूटल धनुष देखलियै
कमरू-कमछिया मे घियान सधलियै हो।
अहिला-थान मे भाँटा चढ़ौलियै
गेलियै विसुनपूर चूड़ी फोड़लियै
मठ-मंदिल मे माथा टेकलियै
सब देवी-देवता गोहरौलियै हो।
महल छोड़ि हम, जंगल धेलियै
सौंसे जग मे मालिन कहौलियै
कबुला-पाती सब किछु केलियै
कते गनिबय' की की केलियै हो।
तैयो ने निरदैया सैयाँ, हमरो बात बुझलकै
केहन निसोखिया सँ हम, हिया लगौलियै न हो।

(गायन समाप्त होइत-होइत उड़ैत सन हिरामनक प्रवेश।)

हिरामन : वाह-वाह! वाह-रे-वाह! बड़े चिक्कन गीत गबै छहक बहिनदाइ।

कुसमा : हिरामन! रे हिरामन रे हिरामन! बहुत दिन पर हम मोन पड़लियौ रे हिरामन!

हिरामन : अपने तँ नैहर दिस पठौने रहक ने हे वनदेवी।

कुसमा : तँ ओत' जाक' सुति किऐ रहलें रे कोढ़िया।

हिरामन : तमासा खतम होइतै तखने ने अबितिय' हे मालिन।

कुसमा : केना की भेलै रे? कह ने जल्दी सँ।

हिरामन : भूख लागल छ' हमरा, किछु खोआबहक। कंठ सुखाएल जाइ छ' हमर, किछु पिअबहक। मोन झमारल छै हिरामनक, दुलार करहक।

(कुसमा हिरामन केँ ललका मिरिचाइ खुआक' आसब पिअबै छै। दुलार करै छै।)

कुसमा : आब तँ भेलौ ने रे?

हिरामन : हँ हे वनदेवी! आब भेलह।

कुसमा : तखन कह ने रे।

हिरामन : सुनहक हे मालिन बहिन! राजा-रानी, माने तोहर बाप-माए, सब कुशले-कुशल छ'। अमला-परजा, सब हलसल-फुलसल छ'। सीमा छ' बान्हल-छेकल। योगिनी बहिनदाइ लोकनि अपना-अपना साधना मे लागल छथुन्ह।

कुसमा : मुदा ओ बात तँ कहबे ने केलें रे हिरामन।

हिरामन : कोन बात हे वनदेवी?

कुसमा : किरातराज सूचोंग जे अपन गढ़ तरेगना पर आक्रमण केने छलै, से रे हिरामन।

हिरामन : से हे बहिनदाइ, ओ निमूछिया-बिलड़िमुँहा सब पीठ देखबैत भोट दिस पड़ाएल।

कुसमा : बड़ नीक बात भेलै। मुदा से भेलै केना? कने विस्तार सँ कह ने रे लबड़ा।

हिरामन : *(रुसैत)* लबड़ा बोलबहक तखन तँ सुनिए लेलहक।

कुसमा : *(बौंसैत)* नइँ-नइँ! तों लबड़ा नइँ फचाँड़ि छें। नइँ-नइँ। बुधियार छें। बौआ छें। सुग्गा छें...

हिरामन : भ' गेल। कने खुश-फैल सँ बैसहक आ ध्यान लगाक' सब टा खेरहा सुनहक।

(कुसमा बैसैए। हिरामन कथा-गायनक मुद्रा धारण करैए। गायन)

हिरामन : किरात-राज के उमकी चढ़लै
चूहड़मल्ल सन संगी भेटलै
दुन्नू मिलि मनसूब्बा बन्हलक
अपना गढ़ पर धाबा केलक।

(गद्य)

से हे वनदेवी। गढ़-तरेगना मे तँ पहिने सब केँ लागि गेलै छगुन्ता। मुदा चोट्टे सहचेत भ' गेलखिन तोहर बाप, राजा महेसर भंडारी।

(गायन)

महिसौथा क' पतिया गेलै
अपनो सेना सज' लगलै
बूढ़हा बच्चा आ जूआन
सब अरोपलक अपन परान
लाठी-भाला, बल्लम-बरछा
ढेल-बाँस, गूलेती, तीर-कमान
दुनू दिस सँ बरिस' लगलै
साओन-भादव मेघ समान।

(गद्य)

से हे बहिना हे बहिना! सात दिन आ सात राति एहिना घमासान होइत रहलै। मुदा बैमनमा दुसमनमा सब कम हेबाक नामे नइँ लै। मारल जाइ आ कत्त'-कहाँ सँ चुट्टीधारी जकाँ ढँगरल अबै।

(गायन)

आस्ते-आस्ते आ गे बहिना
गढ़ होब' लगलै कमजोर
दुसमन तकरा जानि गेलै आ
केलकै ओ धाबा सहजोर।
अन्तिम युद्ध जानि क' गढ़ मे
राजा-सेना करए नियार
रानी संगहि जनि-जाति सब
महाचिता केलकै तैयार

गढ़ के फाटक खोलि सैन्य-दल
दुसमन पर हुलिए जैते
दासी बनि कासी जेबा के
बदला नारी जरि मरितै।

कुसमा : एहन पैघ अनर्थ भ' रहल छलै रे हिरामन।

हिरामन : हँ हे बहिना।

कुसमा : तखन की भेलै रे हिरामन?

(गायन)

हिरामन : तखने देखलक लोक दूर मे
उड़ैत गरदा के अम्बार
हर-हर महादेव के नारा
आ सलहेसक जय-जयकार
उत्तर मे छल वनचर सेना
दक्षिण सँ गज-सैन्य अपार
पच्छिम सँ सन-सन जुमि एलै
घोड़ा पर सलहेस सवार
तक्खन की कहियौ गे बहिना
जोश दुगून्ना गेलै आबि
दुसमन मे खलबली मचलै
तीनू दिस सँ देलकै दाबि।

कुसमा : आक्रांता संगे एहिना हेबाक चाही रे हिरामन।

हिरामन : हँ हे बहिनदाइ। एकर बाद तँ बुझहक जे दुसमनमाक सेना देखौलकै पीठ आ दड़बड़ मारैत धेलकै घरक लीख।

कुसमा : एकर बाद?

हिरामन : सूचोंग आ चूहड़मल्ल तँ पकड़ाइए जैतै हे वनदेवी। मुदा सलहेस कहलखिन जे हारिक' पड़ाइत सेना केँ खिहारनाइ अनुचित बात भेलै।

कुसमा : धन्य हे राजा। धन्य। सुआइत तोहर एहन सुनाम छह।

हिरामन : सुनाम तँ तोरो कम नइँ छह हे मालिन बहिना।

कुसमा : नइँ रे हिरामन। ओकरा सोझाँ हमर कोन गनती?

हिरामन : हमरा लेखे तँ दुनू अपरा-उपरी छ' हे वनदेवी।

कुसमा : नइँ रे हिरामन। ओ तँ किसुन गोसाँइ छिऐ।

हिरामन : आ तों छहक राधारानी।

कुसमा : राधारानी नइँ रे हिरामन। रधिया कहिन रधिया।

(गायन)

हम तँ भेलियै रधिया रे हिरामन
कानल फिरियै जमुनाक तीर रे की।
ककरो नामे अँचरा बान्हि हम
रने-वने घूमल करियै
नयना सँ बरिसै हमरो नीर रे की।

(गद्य)

हिरामन : तों एना किऐ बजै छहक बहिनदाइ। हमर तँ कान'-कान' सन मोन भेल जाइए।

कुसमा : चुप्प। हमरा संगे बेसी बात बनेबें?

हिरामन : नइँ हे बहिनी। सत्तम-सत्त कहै छियह।

कुसमा : तखन एक टा बात कह रे हिरामन।

हिरामन : तों पूछह हे बहिनदाइ।

कुसमा : सलहेस एखन कत्त' हेथुन।

हिरामन : अपना राज मे। आर कत्त'?

कुसमा : अपना राज मे कत्त' से ने कह रे।

हिरामन : से तँ हम ओना नइँ कहब'।

कुसमा : तखन कोना कहबें रे?

हिरामन : कहब' तँ हमरा की देब'?

(गायन)

कुसमा : सोना मढ़ेबौ तोहर लोल रे हिरामन
गरदनि मे देबौ हीराक हार रे
रूपा के बाटी मे हम दूध-भात खुएबौ तोरा
भरि-पोख करबौ दुलार रे।

(गद्य)

हिरामन : ई सब ल'क' हम की करब?

कुसमा : तखन अपने सँ कह जे तोरा की चाहियौ?

हिरामन : पहिने सत्त कर'।

कुसमा : एक सत्त, दू सत्त, ब्रम्हा-विसुन सत्त। आब भेलौ?

हिरामन : हँ! आब जेना-जेना कहै छियह, तेना-तेना करहक।

कुसमा : बेस। कह, की कहै छें?

हिरामन : अपन घर बहारि लैह।
कुसमा : *(ध्यानस्थ होइत)* बहारलौं रे हिरामन।
हिरामन : की बहरेलह?
कुसमा : इर्ष्या, घमंड, घृणा, लोभ आ मोह बहरेलै रे हिरामन।
हिरामन : आब घर केँ निपि लैह।
कुसमा : नीपलौं रे हिरामन।
हिरामन : कथी सँ नीपलह?
कुसमा : करुणाक जल सँ नीपलौं रे हिरामन।
हिरामन : आब एकरा सुगंधित करह।
कुसमा : सुगन्धित केलौं रे हिरामन।
हिरामन : कथी सँ सुगन्धित केलह?
कुसमा : सिनेहक चानन सँ सुगन्धित केलहुँ रे हिरामन।
हिरामन : तखन आब आँखि खोलहक आ हमर बात कनेक धियान सँ सुनहक हे वनदेवी!

(गायन)

तोहरो सँवरिया गे बहिना, सब दिन क' अबै छौ
रेवा जे द'ह मे नहाइ ले'।

कुसमा : तँ चलही मे चलही रे हिरामन, आगू-आगू चलही
एखने तों रेवा द'ह जाइ ले'।

(गायनक संग कुसमा आ हिरामनक प्रस्थान)।

दोसर दृश्य

(पहिल दृश्यक धुन समाप्त होइए। मंच पर रेवा-द'हक दृश्य। समाजी द्वारा गायन)

सुमिरन, सुमिरन, सुमिरन करै जाउ न हे
आ हे भैया सत राजा सलहेसक सुमिरन, सुमिरन करू हे आब परबेस, ओकरे होएत हे।
हे जाति मे दुसाधक बेटा, बेटा मोन सबहक भावै न हे
आ हे भैया गढ़ महिसौथा के ओ राजा, राजा जी कहाबय परबेस, ओकरे होएत हे!

(प्रवेश गीतक संग कुनटाक प्रवेश)

कुनटा : आब हम कहबनि तँ ई आउर कहथिन जे कुनटा की सब कहैय'।
मुदा हम तँ कहबे करबनि जे द'ह तँ बड़-बड़ छथिन एइ मेदिनी

पर। लेकिन द'ह मे द'ह छथिन तँ रेवा द'ह छथिन। आब ई आउर पुछथिन जे कैले तँ से अइले जे हमरो राजाजी केँ रेवा द'ह सँ बड़े परेम छथिन। बिना नागा के अही द'ह मे स्नान करै छथिन आ हमहू बिना नागा देख' अबै छियनि जे एइ जग सब किच्छो ठीक सँ छथिन की नइँ।

आब पुछथिन जे कैले तँ से अइले जे हमरा तँ काजे ने इहे भेटल छथिन। बोन-झाँखूर, जंगल-पहाड़क चौकीदारी हमहीं ने करै छियनि।

(गायन)

कुनटा छथिन नामे हम्मर, बनचर कहाबै छियनि
आ, जंगल पहाड़क, खेरहा, राजाजी केँ सुनाबै छियनि हो

(गायनक संग प्रस्थान। ठनका-बनकाक प्रवेश।)

ठनका : ठन-ठनाठन ठनकै छी हम, नाम हमर हइ ठनका।

बनका : हम बमकै छी हर-हर, बम-बम, आ कहबै छी बनका।

ठनका : हम रजबा के दहिन भाग मे सीना तानि चलै छी।

बनका : हम रहै छी बाम भाग मे, पापी पर गुम्हरै छी।

दुनू : रजबा जेम्हर-जेम्हर चलै, हमहू ओकरे ज'रे चलियै।
रजबा जेना-जेना कहै, हमहू तेना-तेना करियै।
आब' रजबा, आब'-आब', रेवा द'ह मे डूब लगाब'।
हमहू तखनी जल मे पैसबे, पानि-पीबि क' प्राण जूड़ेबै।

(गायनक संग अपना स्थान पर ठाढ़ भ' जाइए। हिरामन आ कुसमाक प्रवेश)

हिरामन : इहे भेलह आ हे बहिनी, द'ह मे द'ह रेवा द'ह।

कुसमा : बुझलियौ रे हिरामन। हम केम्हरो नुकाइ छी आ तों कदमक डारि पर बैसि रह।

(हिरामन आ कुसमा प्रच्छन होइए। सलहेसक प्रवेश)

सलहेस : सदा भवानी दाहिने, सम्मुख रहथु गणेश।
पंचदेव रक्षा करथु, ब्रम्हा-विष्णु महेश।

(सलहेस ठनका-बनकाक बीच मे आबि जाइए।)

रहबै सहाय समाजी, आब हम अबै छी
गोर लागि तोरा सबके हम सलहेस बनै छी न हो।

(गद्य)

आ-हा-हा! धन्य हे रेवा द'ह, धन्य! जखने तोहर जल अंग में लगै छै तँ तन-मन सब शीतल-शांति सँ भरि जाइ छै।

(नहएबाक उपक्रम करैए। कुसमा साँस छोड़ै छै। सलहेस सुँघबाक अभिनय करैए।)

सलहेस : आइ जेना सब किछु बदलल-बदलल सन लगै छै।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : बसात मे जेना कोनो अलौकिक सुगंधि भरल होइ।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : मोन तँ जेना अनेरे आनन्द सँ भरल जाइए।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : निश्चित! निश्चिते कोनो अनुपम शक्ति एत' उपस्थित छै।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : हे अदृश्य शक्ति। हे बसात मे एहन दिव्य सुगंधि भरनिहार, हे एतुका वातावरण केँ आनन्दमय आ हमरा मोन मे प्रफुल्लता भरनिहार। हम सलहेस, दसो न'ह जोड़िक' तोरा प्रणाम करै छी।

(सलहेस नहेबाक उपक्रम करैए।)

हिरामन : हे बहिनदाइ। उहे तँ भेल' तोहर सलहेस। जाह। भेंट क' आबह।

कुसमा : जाउ तँ केना क' जाउ रे हिरामन।

हिरामन : पएरे चलि क' जाह। निरमल मोन सँ जाह।

कुसमा : एकर मुँह केहन कमल सन लगै छे रे हिरामन।

हिरामन : तखन तों भमरा बनिक' जाह।

(कुसमा भमरा जकाँ अभिनय करैए, गायन)

भमरा बनि मलिनियाँ छौंड़ी, चकभाउर कटैए
गीत कोनो गबैए से, हवा गन-गनबैए न हो।

(सलहेस भमरा सँ तंग होइए।)

सलहेस : रे भमरा रे भमरा। तों हमरा चारू भ'र किऐ भनभनाइ छें। एत्तेक रास फूल फुलाएल छै से ओम्हर किऐ ने जाइ छें।

कुनटा : ई भमरा नइँ बुझाइ छथिन हे राजाजी। ई तँ भमरी लखाइ छथिन हमरा।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : भमरा रहओ की भमरी। हमरा तँ लगैए ई शैतान नमरी। अनेरे चकभाउर कटैए। हमरा मोन केँ माहुर-माहुर करैए।

कुनटा : हिनका सँ परेम करै छथिन।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : तखन हम हिनका परेमक पाठ पढ़ाइए दै छियनि।

(सलहेस हाथ झाड़ैत भमरा केँ भगेबाक अभिनय करैए। कुसमा तड़फड़ाक' खसैए)

कुसमा : रे हिरामन रे हिरामन।

हिरामन : भेंट तँ भेलह ने हे बहिन।

कुसमा : सब गूड़-गोबर भेलौ रे हिरामन।

हिरामन : चोट बेसी लागि गेलह की हे मालिन?

कुसमा : जड़ल पर नोन छिटबें रे दुसमन?

हिरामन : तों तँ बेकारे के हमरा पर खिसिआइ छ'। भेलह की से ने कह'।

कुसमा : जे अपने भमरा छै तकरा लग भमरा बनिक' जेबाक फल भटेल रे हिरामन।

हिरामन : आब की करबहक हे बहिनदाइ।

कुसमा : कमलक फूल बनि जाइ?

हिरामन : जँ सत्ते के फूल बुझि क' खोंटि लेलक' तखन?

कुसमा : सार्थक भ' जेतै हमरो मरण।

हिरामन : एकरे कहै छै परेम।

(कुसमा फूल बनबाक अभिनय करैए। सलहेस एना अभिनय करैए जेना ओकरा पएर मे किछु लटपटा रहल हो। समाजी द्वारा गायन।)

फूलबा लोढ़िते-लोढ़िते
पनियाँ बरिसि गेल
कि भिजि गेल 'पंचरंग' चोल रे।
भिजिते नहाइते मालिन
रेवा-द'ह पइसिली
कि भइए गेलै जोगिया सँ भेंट रे।

जोगियाक सूरतिया सँ
नयना जुड़ाए गेल
कान मे पड़ल अमरित बोल रे।

(सलहेस अकचकाइए)

सलहेस : अरे ? किच्छो हमरा देह मे लटपटा रहल छै। साँप ? नाहि! साँप नइँ छियै।

(कुसमाक मुँह देखि।)

ओ! ई तँ कमलक फूल छथि। आइ हिनका की भ' गेलनि।

(फूल बुझि कुसमाक मुँह केँ दुनू हाथ मे लैए।)

की हे कमलपुष्प ? की भेल ? आइ हमरा सँ एत्तेक सिनेह किऐ उमड़ि गेल ?

कुसमा : तोरा सँ तँ हमरा जनम-जनमांतरक सिनेह संबंध छै भेल ?

(सलहेस आश्चर्य मे पड़ि कुसमाक मुँह छोड़ि दैए।)

सलहेस : अरे कमलक फूल मनुक्खक बोली बजैए।

कुसमा : तोरा लेल फूल तँ फूले भेल, गाछ-बिरिछ, पशु-पक्षी, माटि-पानि, हवा-बसात सेहो मनुक्खक बोली बजतह।

सलहेस : नहि। ई किन्नहु कमलक फूल भ' नइँ सकैए। हमरा आब कोनो महान आत्माक एत' वास लगैए। वैह हमर कोनो परीक्षा ल' रहलैए।

(भाव परिवर्तन)

हे अदृश्य शक्ति। तोरा हमर जाँच करबाक छह तँ क' लैह। सोझाँ-सोझी आबह आ परीक्षा ल' लैह। घंट मे प्राण अछैत सलहेस अपन पीठ नइँ देखौतह। ई चोरा-नूक्की बेकारे केँ करै छह।

कुसमा : हम तँ छियह तोरहि भीर। चोरा-नूक्की केना कहलहक हे वीर।

सलहेस : वीर! धुर! हम वीर की रहबै हे देवी। साधारण योद्धा छियै हम। लड़ै मरै बला।

कुसमा : वाह! दृढ़ता संग विनय के बढ़ियाँ मिलान केलहक।

सलहेस : मुदा तों हमरा भारी भँगठान मे ध' देलहक। कने हमरा अपन परिचय दहक। तों के छहक ?

कुसमा : से तों अपनहि सँ बुझि ने लहक।

सलहेस : कोनो अगरजानी जनै छियै हम जे अपने से बुझि जेबै।

कुसमा : कोनो निरलज्ज छियै हम जे अपन परिचय अपने देबै।

सलहेस : तखन हम बुझबै कोना?

कुसमा : जेना हुअ' तेना। एना की ओना। आर कोना?

(सलहेस विस्मय सँ देखइए। द'ह सँ बहरा वस्त्र वगैरह धारण करैए। ठनका-बनका नचैए।)

दुनू : कहि देबै ना, आहो कहि देबै ना।
जाइते देरी महिसौथा सब केँ कहि देबै ना।

सलहेस : की कहि देबही?

दुनू : आइ तँ रेवा-द'ह मे भेलै बड़का भारी खेला।
इन्नर लोकक परीक फेर मे, राजाजी पड़ि गेला।
अपने आँखि देखलियै, सब टा कहि देबै ना,
जाइते देरी महिसौथा सब केँ कहि देबै ना।

सहलेस : इन्नर परी?

ठनका : तकरे फेरी।

बनका : बेरा-बेरी।

ठनका : नुक्का-चोरी।

बनका : रेवा-दह मे।

ठनका : तेरी-मेरी।

सलहेस : की अंट के संट बजै जाइ छें।

दुनू : अंट के संट? के बजलैए?

सलहेस : तों दुनू। कत' छै इन्नर-परी?

दुनू : जकरा सँ बतिआइ छलहक से के छलै?

सलहेस : ओ कमलक फूल छलै।

दुनू : उहे ने छलै परी।

सलहेस : कमल-फूलक सरूप ध'क'?

ठनका : हों...

बनका : गों...

(कुनटाक प्रवेश। गायन)

कुनटा : सुनथून मे सुनथून हे राजाजी, अचरज के बतिया,
अपने फुलबरिया मे, देखि जे एलियनि हो...।

(गद्य)

सलहेस : आइ सब टा अजगूते हेबाक दिन बुझाइए। ठनका-बनका इन्नरक परी केँ देखलक। आब तों कोन अचरज के बात देखि क' आबि रहल छें रे कुनटा?

कुनटा : बड़का भारी अचरज के बतिया हौ राजाजी।

सलहेस : एहन कोन बतिया भेलै रे कुनटा?

कुनटा : एक गो बड़े सून्नर जनियाँ आबिक' फुलबरिया मे बास केलखिन्हए हौ।

सलहेस : इएह अचरज के बतिया भेलै?

कुनटा : हमरा तँ तेहने लगलखिन हौ राजाजी। की कहियनु। परीब जकाँ लगै छथिन, परीब जकाँ। मुँह लह-लह आ रूप धह-धह। वयस मे छथिन भोर जकाँ आ नचै छथिन तँ बुझथुन जे मोर जकाँ। बजै छथिन तँ जेना सिंगरहार झहरै छथिन आ चलै छथिन तँ बुझथुन जे, बसात सिहकलखिन। जहाँ कि नैन फोललखिन तँ बुझि लेथुन जे इजोरिया छिटकलखिन।

सलहेस : अच्छा। ई दिव्य जनी-जाति के छथिन रे?

कुनटा : से हमहीं कहाँ बुझलियनि हौ राजाजी। नैना जुड़ाक' देखलियनि तँ हिनके सुनाब' दौड़ल एलियनि।

सलहेस : *(स्वगत)* मालिन बहिन सब मे सँ तँ ने कियो छियै? किरात आक्रमणक समय मे ओ सब कत्तहु निकसि गेल छलै, से हमरे फुलबरिया मे तँ ने डेरा देलकैए।

कुनटा : की बजलथिन? हमरा कान मे किछु नइँ पैसलखिन।

(गायन)

सलहेस : तँ सुनही मे सुनही रे कुनटा, हमरो बचनियाँ
कोनो असुविधा मे ने पड़ै ओहो सून्नर जनियाँ न रे।

कुनटा : हुनको जे असुविधा हो राजा, हम की जे करबनि,
सौंसे फुलबरिया हुनके कहल करै छनि हो...।
जरो-जनावर हो राजा, आगू-पाछू करै छनि।
गाछो-बिरिछिया जेना, बतिया अकानै छनि हो...।

(गद्य)

सलहेस : रे कुनटा रे कुनटा। तोहर ई खेरहा सब सुनिक' तँ हमरा उद्वेग लागि गेलौए।

(गायन)

तँ चलही मे चलही रे कुनटा, एखने फुलबरिया
देवी बुझाइ छौ रे हमरा, दरसन करबही न रे...।

(गद्य)

ठनका : एखन ओमहर केना जेबहक ?

बनका : महिसौथा मे जे दरबार बजौने छहक।

(गायन)

ठनका-बनका : एना किऐ अगुताइ छ' हौ राजाजी,
हिरदय थीर करहक।
अपना जे मोन केँ तों तँ
जुनि भंगठबहक न हो...।

कुनटा : आगू हम चललियनि हे राजाजी, पाछे इहो अबथुन,
आ, जल्दी महिसौथा दिस क' जतरा बनबथुन हो...।

(गायनक संग प्रस्थान)

तेसर दृश्य

(पहिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। मंच पर महिसौथाक दरबार। मंच पर सलहेस, मोतीराम, बुधेसर, अन्हारमाठ, कनिकनहा, कुनटा, ठनका आ बनका। गायन)

राज महिसौथा के मणिक, मंडप सिंहासन पर
जंगल आ पहाड़क प्रतापी, राजा सलहेस सोभै छै न हो।
हो अपन-अपन ठाम धोने छै, बुधेसर आ मोतीराम
करिकनहा-अन्हारमाठ, सेहो जुमि एलै न हो।
तरेगनाक सीमा पर बैरी, ललकारा देलकैए
थिर भेल पानि मे आइ, हिलकोर उठलै न हो!

सलहेस : बौआ बुधेसर!

बुधेसर : आज्ञा करहक राजा भैया।

सलहेस : विचारक विषय सभक सोझाँ रखहक बौआ।

बुधेसर : हौ राजा भैया, भैया मोतीराम, मीता भैया अन्हारमाठ आ भगिन करिकनहा!

(गायन)

सकल' हो दरबार...
हमरो जे कहनामा हो सकले, मोन द'क' सुनबै
कल जोड़ि एतबे हम, करै छी अरजिया न हो।

(गद्य)

अन्हारमाठ : हम सब तोरे दिस मोन भिड़ौने छियै बौआ। तों खाली खोंइचा

छोड़ाक' बजने जाहक जाइ सँ हमरो मोटका बुद्धि मे सब टा समा जाइ।

बुधेसर : हौ राजा भैयाक एकबाल, मोती भैया आ भागिन करिकनहाक बाहुबलक प्रताप आर बहिनदाइ बनसप्तीक रीति नीति कुशलताक प्रभाव छै जे महिसौथा आ बाघगढ़क कुशल-क्षेम मे कुसक कलेपो ने लगलैए आ ने लगतै। अमला सब मेहनती आ सदाचारी परजाक सुविधाक खियाल मे मगन रहै छै। भगवतीक कृपा सँ धरती मैया ही फोरिक' अन्न दै छै। चोर-डाकू आ अपकर्मी-कुकर्मी सभक नामक चेन्ह पर्यन्त मेटा गेलै। मुदा...

करिकनहा : आब ई मुदा की भेलै मामा?

बुधेसर : राजा भैया कहल करै छथिन जे अपन पेट तँ नान्हियो टा जीव भरिए लैए आ जीवन तँ ओकरे सार्थक होइ छै जकरा अड़ोस-पड़ोस पर्यंत मे सुख होइ, शान्ति होइ, आनन्द होइ।

(गायन)

से पकड़िया सँ तरेगना तक हो सकले अनेति भ' रहलैए
आ बड़-बड़ विपतिया उमड़िक' आबिए जे रहलैए न हो।

मोतीराम : एहन दुरमतिया हे बौआ, ककरा घेरलकै?

अन्हार : आब ओ जे हुअए तकरा कपार पर टिकटिकिया नचै छै न हो।

करिकनहा : जल्दी मे जल्दी आब तों नाम ओकरो खोलहक
ल'क' आज्ञा राजा मामा सँ, बध ओकर हम करबै न हो!

सलहेस : आ...
अनेति पर चलनाइ हो सकले, ककरो छजि ने सकतै
पापक फल तँ एक दिन, भेटबे जे करतै न हो

(ठनका-बनका सलहेसक स्वर मिलबैए। गद्य)

से तों सब किएक अगुताइ छहक। पहिने सब टा बात तँ सुनि लहक। बौआ!

(गायन)

बुधेसर : आ...
संकट चारू भर अभरल छै, मत्स्य-न्याय चलि रहलैए,
बड़का सब अपना-अपनीक', छोटका केँ दमसबैए।
धन-बल पाबि लोक निर्बल केँ, सता-सता सुख पबैए
आ जन-जीवन पर अपकर्मी सब, भय के जाल लगबैए न हो!

(गद्य)

ई सब छै समदागढ़क तरुमल्ल, पकड़ियाक चूहड़मल्ल आ मोरंगाक युवराज, माने तोहर सार भानचन्द्र। ई तीनू अपना-अपना राज मे परजा पर अत्याचार करै छै। जुआन पुरुष केँ गुलाम आ जुआन स्त्री केँ वेश्या बनबै छै। आर...

(गायन)

भोटराज सूचोंग संग तीनू, गँठजोड़बा केलकै
मिथिला विजय के आब ओ, सपना जे देखै छै न हो।
एतबे जे करनमा हो सकले, चढ़ै छै तरेगना पर
मालिन आ सलहेस के असली दुसमन ओ बुझै छै न हो?

मोतीराम : आ...

हो ताही लागि बेरि-बेरि हम, तोहरा कहलिय'
घरक-नाशी बनिक' ओ चूहड़ा, अगिया लगबै छ' न हो।
हो पछिला बेरक रण मे हो भइया, छोड़ि ओकरा देलहक
जान बकसि क' ओकर, भारी जुलूम केलहक न हो।
हो चोट खाएल नाग नाहित, फेंच रहि-रहि काढ़त
आ उनटा बान्ह-बन्हबै हम चूहड़ा के, आज्ञा हमरा दहक न हो।

सलहेस : आ...

हो मोतीराम बौरहबा...
हो सब टा खबरिया हो सकले, हमहू जे रखै छी
मुदा बिना बुझने गमने, हम किछु नइँ करै छी न हो।

(ठनका-बनका सलहेसक स्वर मे स्वर मिलबैए। गद्य)

मुदा आब। बौआ बुधेसरक बिचार आ तोरा सभक नियार सुनि हम निर्णय ल' लेलौं। माने, दुर्धर्ष योद्धा, मीता अन्हारमाठ के आर अरिबंड-बरिबंड चोरेश्वर भागिन करिकनहा के तरेगनाक सीमाक रक्षा कर'क लेल पठा रहल छी।

(गायन)

अन्हारमाठ : आ...

हमरा मोनक बात हो मीता, अपना मुँह सँ बाजिक'
अन्हारमाठक करेज तों सुप सनक केलहक न हो।
निश्चित मोने आब तों मीता, गोहरिक काज करहक
बैरी सभक दुरगतिया तों हमरा पर छोड़हक न हो।

(गद्य)

मोतीराम : एक बेर हमरो बात सुनि लहक हौ राजा भैया।

(गायन)

हमरो जे अरजिया हौ भैया, सुनियौ अरजिया ना
हो थाकि गेल हेतै जे भगिना दुलरूआ, तरेगना हमरे पठबियौ ना।

करिकनहा : आ...
हो मामा हो मोतीराम...
कथी लागी तोंही हौ मामा, पाप हमरा लगबै छ'
हमरा घर बैसाबक बतिया, केना तों सोचै छ' न हो।
हो हमरा अछैते जखन तों महिसौथा छोड़ि निकसब'।
ओइ दिन तँ एक चुरू पानि मे, हम डूबि मरब' न हो।

(गद्य)

ठनका : मामा हो तँ, मोतीराम सन।

बनका : भागिन हो तँ करिकनहा सन।

सलहेस : आब असली बात पर आबि जाह।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : तरेगनाक उत्तर आ पच्छिम दिस घनगर बोन आ पहाड़ छै। ओमहर सँ मीता अन्हारमाठ रण टेकतै। पूब आ दक्षिण दिस सबकास छै। ओम्हर सँ अपन गजसेनाक संग भागिन करिकनहा अड़तै। महिसौथाक भार छनि बौआ बुधेसर आ मोतीराम बौरहबा पर। आर हम सब ठाम, बेर पर, जूमि जेबाक लेल तैयार रहबै।

अन्हारमाठ : तोरा हमरे सपत छिय' जे तों हमरा अछैत रण मे उतरिह'। सलहेस आ अन्हारमाठ, एक्के क्षेत्र मे, एक्के शत्रुक विरुद्ध लड़ए से दुनूक लेल अपगरानिक बात छिऐ राजा। एहन एक टा तों छहक आ कि ओ वनदेवी मालिन सब छै जकरा सँ लोक जीवन मे इजोत छै राजा। तों अपन गोहारिक काज मे लागल रह', लोकक सुखक लेल विचरण करैत रह'।

(दुरगाक प्रवेश, गायन)

दुरगा : आ...
भले जे बेर पर आइ, हम, महिसौथा एलियै
अपन सभ पूत के हम, देखि जूड़ेलियै न हो

सब : गोर लगै छियह हे दुरगा माता।

दुरगा : खूब निके रहै जाइ जो।

सलहेस : आ...आ गे माता गे दुरूगा...
गे बड़ 'गून' मानबौ जोगिनियाँ, हम जीता-जिनगी
असली जे बेर पर आइ तों, दरसन देलही न गे।

दुरगा : कि-ए तोरा घटलौ रे बेटा,
अनधन लछमी कि, अनधन लछमी न रे
आ कि-ए तोरा पड़लौ विपतिया, विपतिया कओनो पड़लौ रे न रे।

सलहेस : नहि मोरा घटले गे मैया
अनधन लछमी कि अनधन लछमी न गे
आ गे तोरा पएरक परतापे गे मैया, विपत्ति पड़ाइ छै
मुदा एखन गुनगुध मे, गुनधुन मे पड़लै करेज न गे।

(गद्य)

दुरगा : रे बेटा! तो कथीक गुनधुन मे पड़ि गेलही?

बुधेसर : गे मैया। तरेगनाक सीमा केँ बान्ह ले' राजा-भैया, मीता भैया
अन्हारमाठ आ भागिन करिकनहा केँ पठा रहल छै।

दुरगा : ठीके तँ क' रहल छै।

बुधेसर : ओम्हरका भूगोल-प्रकृतिक रहस्य एक टा समस्या छै ने गे बुढ़िया।

दुरगा : तँ हमरा की कहै छें रे कोढ़िया।

बुधेसर : तों तँ अन्तरजामी छही। सब ठाँ अबै जाइ छही। तोरा तँ सब टा
बुझले-सुझले हेतौ।

दुरगा : बुझल-सुझल किऐ ने रहत। मुदा नइँ कहबौ।

सलहेस : एना किऐ बजै छे गे बुढ़िया। तोरा सँ झगड़ा करबौ।

ठनका : हों...

बनका : गों...

(गायन)

सलहेस : एहन जुलुम मे जोगिनियाँ, किऐ तोहूँ करै छें
बात छै जरूरी से तों, कथी ले' ने बुझे छें न गे...

दुरगा : आ...
सुनही मे सुनही रे बेटा। आब, हमरो बचनियाँ
सभ टा जानकारी रखै छै, कुसमा मलिनियाँ न रे।
आ तोहरे फुलबरिया रे बौआ, एखनी ओहो बसै छौ।
तोहरे परेमक खातिर सुतै आ जगै छौ न रे।

(गद्य)

तों ओकरा सँ भेंट कर। बात-विचार कर। नियार-जोगार कर। ओ छौ तोरा जोगर आ तोंही छही ओकरा जोगर।

सलहेस : गे मैया। देवी कुसमा तँ अइ बोन, पहाड़ आ समतल भूमिक लोक सबहक लेल, दुःखक अन्हार मे, आशाक दीप छिएक। ओकरा आगू मे हमर कोन गनती हेतै।

दुरगा : नइँ रे बेटा। तों दुनू उपरा-उपरी छही रे। कुसमा संग तोहर मिलन करुणा आ शौर्यक मिलन हेतै रे रजबा।

अन्हार : एकरे आशंका सँ किरातराज विकल भेल छै।

करिकनहा : आ तेँ तँ बेर-बेर मेघ जकाँ घुमड़ि आएल छै।

बुधेसर : किरातराज लेल मिथिला-विजयक बाट पर तीन टा बाधा छै।

ठनका : हों...

बनका : गों...

बुधेसर : पहिल भेलै तरेगनागढ़ आ मालिन सब। दोसर भेलै बाघगढ़ आ तेसर हमर भैया, राजा सलहेस।

(गायन)

दुरगा : आ...

से कुसमा आ सलहेसक मिलन सँ नबका बाट फुजतै।
बड़का लोक-शक्तिक रे बेटा, सिरजन भइए जेतै न रे।
आ लोक शक्तिक सोझाँ रे रजबा, सब उड़ि जाइ छै
यैह सब टा कह' ले आइ हम, महिसौथा एलियौ न रे।

(गद्य)

तों बलवान छें, शौर्यवान छें मुदा-बुड़िवान छें। तोरा अंतसक अन्हार केँ, कुसमाक सिनेह आ ज्ञानक इजोत चाहियौक रे बेटा।

(गायन)

मीलिक' जे कुसमा सँ आब तों जन-मन मे विचरण करही
मात्र लोकक सुख लेल जीवन अरपन करही-न-रे।

(गायनक संग प्रस्थान)

चारिम दृश्य

(तेसर दृश्यक धुन समाप्त होइए। मंच पर फुलवारी। फुलवारी मे माला बनबैत कुसमा। गायन)

कुसमा : जहिया सँ तोहरा सँ लगलै सिनेहिया

तहिया सँ सब बिसराएल हे, निरमोहिया हमर हे।
आँचर बन्हलियै हम, माला गँथलियै
हिया सुरतिया समाएल हे, निरमोहिया हमर हे।
पड़बा उड़ाक' हम, बटिया जोहलियै
राति-दिन सब ओझराएल हे, निरमोहिया हमर हे।

(गायनक संग नृत्य। सलहेस, ठनका-बनका आ कुनटाक प्रवेश। कुनटा बाँसुरी बजाब' लगैए। ठनका-बनका, ढोलक-झालि बजब' लगैए। सलहेस मंत्रमुग्ध।)

सलहेस : अरे! ई मनुख छियै की देवी?

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : उपरा-उपरी। रूप आ लय। भंगिमा, भाव आ मुद्रा। सब उपरा-उपरी।

ठनका : हों...

बनका : गों...

सलहेस : जत्तेक सुनने छलियै, ताहि सँ कत्तेको गुना बेसी क' देखलियै। आइ सनाथ भ' गेलियै। एकर तँ कतबो प्रसंशा कयल जा सकैए।

कुसमा : लगैए जे ककरो आगम भेलैए। ओ...। राजा सलहेस छथिन। वैह कांति, वैह प्रशस्त आनन, वैह टेढ़ी मुरेठा। हे ईश्वर! हे परमात्मा! आइ तों सनाथ क' देलहक एइ मलिनियाँ केँ। मोनक साध पूरन भेल। आँखिक बीझ मेटा गेल।

(दुनू एक दोसराक सोझाँ अबैए)

सलहेस : की? हमर अभ्यर्थना स्वीकार हेतै?

कुसमा : अहाँक स्वागत हैत हे सुपुरुख।

सलहेस : एत्तेक तेज। इजोरिया सनक। हे एहन शीतल आ फड़ीच्छ करैत इजोत कर'वाली? तों के छहक?

कुसमा : हम तँ कियो छीहे न हे सुपुरुख?

सलहेस : लगैए जे तोहर तेज सँ हमर आँखि चोन्हराइए जाएत।

कुसमा : सोझ उपाय छै। अपन आँखि मूनि लैह।

सलहेस : मुनाइयो नइँ रहल छै। देखहक ने, पटपटाइयो ने रहल छै।

कुसमा : *(आँखि मे देखैत)* से किऐ, हे सुपुरुख।

सलहेस : *(आश्चर्य सँ)* तो साधारण नइँ छहक हे। आब देखहक ने। जे

तोहर उपस्थिति मात्र सँ ई सड़ल सन फुलवारी स्वर्ग सन लगै छै।

कुसमा : से नइँ कहक। तोहर ई फुलवारी कोनो दुस'बला नइँ छ।

सलहेस : एह से की कहलहक। पकड़िया राजक चौदह कोसक ललन फुलवारीक सोझाँ एकरा ओहने बुझहक जेना सूर्यक सोझाँ मे डिबिया।

कुसमा : एकर माने जे तोरा होइ छ' ईर्ष्या।

सलहेस : ईर्ष्या। नइँ-नइँ इर्ष्या तँ किन्नहु नइँ होइए। मुदा तों हमरा बात मे फँसाक' किऐ भँगठबै छ'।

(गायन)

आ...

कथी लागी-आ हे दुलहिनियाँ हमरा भँगठबै छ'।

कत' रसल' कत' बसल', किऐ न कहै छ' न हे...।

(गद्य)

हे महिमामयी! हमरा तों अपन पड़िचय दहक। तों के छहक?

कुसमा : हे वीर! हम तँ एक टा सामान्य वनवासी स्त्री भेलिय'। हमर मोन गाम आ नगर मे नइँ रमै छै। से बोनक साग-पात खोंटै छियै। मुदा तों अपना द' की कहै छह। तों अपने के छहक से ने कह'?

सलहेस : हमरे कह' पड़तै?

कुसमा : सैह नीक रहितै।

सलहेस : आ...*(गायन)*

चास-बास महिसौथा छै हमरो, काज छै पहरूआ के

कुसमा : आ राजा तों लगै छहक, परजा दुलरूआ के न हो।

सलहेस : हमहूँ तँ अबिते मे, तोरा चिन्हलिय

छोटकी तों छहक हे देवी, मालिन बहिनी सबहक न हे।

(गद्य)

कुसमा : बेस आब तँ चिन्हा परिचय भइए गेल। कहक कथी ले' एम्हर पएर केलहक।

सलहेस : जाह! से तँ बिसरिए गेलियै।

कुसमा : हम मोन पाड़ि दिअ'?

सलहेस : तों केना मोन पाड़ि देब'।

कुसमा : तरेगनाक भूगोल आ प्रकृति द' ने पूछबहक हमरा सँ।

सलहेस : हँ। धन्य हे मालिन! हम, राजा सलहेस तोरा सँ हारि मानैत छी।

कुसमा : नीक करैत छह। प्रकृति सँ पुरुख तँ हारिते छै।

सलहेस : हँ, एखन तँ सैह भेलैए। मुदा जरूरी नइँ छै जे हरदम हारबे करतै।

कुसमा : जरूरी तँ छै हे राजाजी। जाबत तक जीवन छै, ताबत तक प्रकृति सँ पुरुख हारबे करतै। जहिया से नइँ हेतै, पुरुख सँ प्रकृति हारतै, तहिया पुरुख पुरुख नइँ रहतै हे राजा!

सलहेस : तोरा सनक गियान हम कत' पेबै हे मालिन! तेँ तोरा बातक मर्म हम नइँ बुझलियह।

कुसमा : हे राजा! प्रकृति होइ छै पुरुखक लेल। ओकर रूप, ओकर काया, ओकर अवदान, ओकर माया, सब टा होइ छै पुरुखक लेल। जीति क' ओ अर्पित भ' जाइए। जहिया पुरुख, प्रकृति केँ जीति क' अपनाब' चाहत...।

सलहेस : तहिया अनर्थ भ' जेतै वनदेवी। उनटन भ' जेतै। मनुख मनुख नइँ रहतै।

कुसमा : यैह तँ तोरा मे बात छ' हे राजा। ई मालिन ओहिना तोरा सँ जिया नइँ जोड़ि लेलकै।

सलहेस : कान केँ तोहर बखान सुन' ले' भेटैत रहलैए। मुदा आइ आँखि जे देखि रहलैए से तँ कानक सुनल केँ गुम्म केने छै।

कुसमा : किछु बेसी भ' रहल छ' हे राजा।

सलहेस : नइँ हे मालिन। तोरा अपना सोझाँ पाबि, तोहर दर्शन सँ, हम धन्य भ' रहल छी।

कुसमा : ने हे राजा। ककरो सोझाँ पाबिक' ककरो दर्शन सँ नइँ। जीवन तँ लोक-कल्याण मे अर्पित भ'क' धन्य होइ छै। लोकक दुख केँ पीबिक' ओकरा सुख मे मिज्झर भ'क' धन्य होइ छै।

सलहेस : हमरा तँ अपना सोझाँ स्वर्ग देखा रहल छ' हे मालिन। एहि तुच्छ प्राणीक एहि सँ पैघ सौभाग्य की हेतै?

(गायन)

कुसमा : एहन' बचनियाँ तों रहि-रहि, किऐ जे बोलै छ'
अनेरे के ककरो सँ, अपना के तौलै छ' न हो।

(गद्य) अच्छा! ई सब रह' दहक। आब'। एहि पथरचौकी पर बैसह। एक छाक आसव पीबिक' एहि मालिन केँ एक हाथ बेना डोलेबाक अवसर दहक।

(गायन) बड़-बड़ बतोला हो राजाजी, आइ बतिएबै

आ जेना-जेना मोन हेतै, तेना-तेना करबै न हो!

(गायनक संग प्रस्थान)

पाँचम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। मंच पर महिसौथाक दरबार।

मौंछ सटैत विपटाक प्रवेश ओकर मोंछ उनटा छै। नेपथ्य सँ हँसी। विपटा अपन मोंछ पिजबैए। पुनः हँसी। गड़बड़ी बुझैए। मोंछ ठीक क'क' कुनटा बनैत प्रस्थान। मंच पर मोतीराम आ बुधेसर)

मोतीराम : हौ बौआ, हौ बुधेसर...
हौ एक पनरहिया बीतलै, भइया के गेना,
कोनो उदेसिया आइ तक नहिए, जे पओलिअइ...न हो...।

(गद्य)

हौ बौआ बुधेसर। एखन तक भैयाक कोनो उदेस नइँ पौलौंए। कत' छथि, केना छथि, की क' रहल छथि। किछु नइँ जानि रहलौंए। हौ बौआ।

बुधेसार : की कहै छहक भैया?

मोतीराम : हौ। हमर मोन तँ अहुछिया कटै छै। तोंहू तँ किछु नइँ कहै छ'।

बुधेसर : तों हमरा पूछबे ने करै छ' तँ केना कहितिअ?

मोतीराम : हँ। तों तँ बिना पुछने किछु कहब' नइँ।

(गायन)

आ...
आब हम पुछै छी हौ बौआ कहियौ मे कहियौ
कुशल समाचार भैया के हमरो, बतबियौ ने हो।

बुधेसर : तँ सुनियौ मे सुनियौ हे भैया, राजा-भैयाक हाल सुरतिया।
एखन तँ ओ बसै छथिन, अपने फुलबरिया न हो।
आ मालिन के संगे होइ छै, बात-विचार
संगे करै छथिन पीड़ित लोकक गोहरिया न हो।

(गद्य)

मोतीराम : ऐं हौ बौआ?

बुधेसर : की कहै छहक भैया?

मोतीराम : एते दिन सँ राजा भैया आ मालिनक विचारे भ' रहल छै?

बुधेसर : विचारक संग गोहारि सेहो भ' रहलैए भैया।

मोतीराम : ई केहन विचार भ' रहलैए जे खतम हेबाक नामे नइँ लै छै?

बुधेसर : से तँ जाबत तक दैन्य छै, विपदा छै, अनेति छै ताबत तक गोहारि चलबे ने करतै भैया।

मोतीराम : मुदा हमर गोहारि के करतै?

(समाजी द्वारा गायन)

हे तीनू भाइक जेठ बहिन, बहिन वनसप्ती न हे
आ हे सेहो बहिनी धेलखिन नइहरक बाट
कि राज महिसौथा एलखिन हे।

वनसप्ती : (प्रवेश करैत) तोर कथीक गोहारि चाही बौरहबा?

(दुनू भाइ, वनसप्ती केँ प्रणाम करैए)

मोतीराम : बड़ भाग हम्मर गे बहिनदाइ। आइ कोना-कोना एम्हरका बाट बिसरि गेलहि गे?

वनसप्ती : बाट तँ तों सब बिसरि बैसल छें रे बौरहबा। रे स्त्री अपना नैहरक बाट कखनो ने बिसरि सकैए। मुदा से तों सब नइँ ने बुझबिही। अपना बहिन केँ तँ तों सब बिसरिए ने गेल छें रे बैमनमा सब।

बुधेसर : तोहर पएर छुबि क' गे बहिनदाइ, बड़-शान्ति भेटै छै मोन केँ।

वनसप्ती : रह' दे, रह' दे। ई छक्का-पंजा हमरा नइँ देखबही बौआ।

बुधेसर : तोरा संगे ककर छक्का-पंजा छजतइ बहिनदाइ।

वनसप्ती : तोरा सभक तँ छजिए ने रहल छौ। मासक धक लगलै। एक टा कारो-कौआ केँ पठौलें तों बाघगढ़। कहाँदन हमर पएर छुबि क' हिनका बड़ शान्ति भेटै छनि! हमरा परतारै छें रे बैमनमा सब?

बुधेसर : हमर बात कने सुनही ने बहिनदाइ तखन खिसिअइयही। गे राजा भैया...।

वनसप्ती : हँ! तोहर राजा भैया कत' छथुन एखन। हुनकर तँ चरण-कमल धरती पर पड़िते नइँ छनि। लोक सब राजाजी राजाजी कह' लगलनि तँ फुलिक' ढाबुस भेल छथि। छथुन कत' राजा सलहेस?

बुधेसर : राजा भैया एखन, अपने फुलबरिया मे छथुन गे बहिनदाइ।

वनसप्ती : फुलबारिया मे की करै छथुन। गाछ-पातक गोहारि भ' रहलैए की? रने-बने बौआ रहलाहए। राह-बाटक गरदा फाँकि रहलाहए। राज-काज देख' ले' हम, मोती आ बौआ तँ छनिहें।

बुधेसर : कने थीर भ'क' बैसही ने बहिनदाइ। झमारल आएल छही। हमरा, अपन पएर पखार' ने दही।

वनसप्ती : नइँ। पहिने हमरा ई कह जे सलहेस एत्ते दिन सँ फुलवरिया मे क' की रहल छै?

मोतीराम : गे बहिनदाइ, बात मे बात ई छै जे एखन कुसमा-मालिन सेहो फुलवारिए मे बसै छथि। से दुनू मे एखन विचार-सिचार आ भास-निआर भ' रहलैए।

वनसप्ती : तोरा बात सँ हमरा केहनदन अर्थ लागि रहल छौ बौरहबा।

बुधेसर : सपनो मे केहनदन अर्थ नइँ लगबही बहिनदाइ।

(गायन)

आ...
तरेगनाक सीमा पर गे बहिनदाइ बैरी ठनक' लगलैए
तकरे साधक नियार-विचार सब, कुसमा संगे होइ छै न गे!

(गद्य)

वनसप्ती : बुझलियौ रे बौआ। तों दुनू भाइ, दू रंगक बात बाजि क' हमरा ओझराहटि मे देने जाइ छें।

बुधेसर : गे बहिनदाइ। एक्के बातक' दुनू पीठ बुझिक' सोचहि ने।

मोतीराम : अएँ गे बहिनदाइ। बात की कोनो असरफी छियै जे दुनू पीठ पर दू रंगक चेन्ह रहतै।

वनसप्ती : तों दुनू चुप रह। आब हम कुनटा सँ सब बातक निस्तूकी पता लगाबै छी।

(कुनटाक प्रवेश, गायन)

कुनटा : आ हे दसो ल'ह जोड़िक' हे बहिनदाइ, हम' दौड़ल एलियनि आसिरवाद देथुन हमरा, गोर हिनकर लगै छियनि हे...।

(प्रणाम करैए। गद्य)

वनसप्ती : रे कुनटा! तोहर राजा सलहेस एखन कत' बसै छथुन ? ककरा संगे रसै छथुन?

कुनटा : हमरो तँ राजाजी हे बहिनदाइ, फुलवारिए मे बसै छथिन। आ संग मे छथिन वनदेवी...

वनसप्ती : वनदेवी। ई कोन देवी उपर भेलैए रे मुँहझौंसा?

कुनटा : ठीक्के कहलखिन हे बहिनदाइ। उपरे भेलखिन हे। की कहियनु हिनका। परीब लगै छथिन, परीब हे बहिनदाइ।

वनसप्ती : बेसी कविलती नइँ छाँट रे कुनटा। सोझ-सोझ कह ने जे मलिनियाँ छियौ।

कुनटा : हँ, हे बहिनदाइ! राजा भैया सैहे कहै छथि। वनदेवी, कुसमा-मालिन!

वनसप्ती : लगैए तोरो नोन चटा देलकौए ओ डइनियाँ। जाक' कहि अबही अपन ओइ वनदेवी सँ। मलिनपन आ बोन-झाँखूरक अपन काँच-पाकल गियान पर बेसी नइँ नितराय। हमरा अछैत छज' बला नइँ छै, बुझलें किने। हम अपने जाबत तक सात टा बोन नइँ धाँगि आबी ताबत तक पेटक पानि नइँ पचय। ओइ समय मे ओ डेगा-डेगी दैत रहल हेती। जाक' कहि अबही। सब टा तंतर-मंतर हमरो बुझल छै रे कुनटा। अपन डइनपन सँ ओ सूद्धा सलहेस केँ भेंड़ा बनाब' चाहै छथि से किन्नहु होब'बला नइँ छै। हम वनसप्ती, सलहेसक बहिन एखन जीवै छी।

बुधेसर : हम बिना पुछनहियो कहै छियौ बहिनदाइ, मालिन सभक लेल अशुभ बात सोचनाइयो अनर्गल छै। ओ तँ शान्ति, प्रेम, करुणा आ आनंदक प्रचारिका छथिन गे।

कुनटा : बौआ ठीक कहलखिन हें बहिनदाइ।

वनसप्ती : तों दही मे सही नइँ कर कुनटा। हमरा कने ठीक सँ सोच' दे।

मोतीराम : सैह सोचही ने बहिनदाइ। राजा भैया महिसौथा मे नइँ छथिन तँ रण मे रहितथि। रणो मे नइँ छथिन तँ अहेर मे रहितथि। अहेरो मे नइँ छथिन तँ गोहारि मे रहितथि। से की तँ गोहारियो मे नइँ छथिन। छथिन मे छथिन कत' तँ फुलवारिया मे, मालिन संगे नोन-लस्सा भेल।

वनसप्ती : हमरा सब टा लस्सा छोड़ब' अबैए रे बौरहबा। मालिनिएक हम सब टा रासलीला घोसारि देबनि।

(गायन)

बुधेसर : आ...
कथी लागी आगे बहिनदाइ, तोहू खिसिआइ छें
आ तामस मे मालिन के तों, की कहाँ कहले न गे।
गे मालिन तँ राजाजी के, बजा नइँ पठौलकै
अपने स्वार्थ राजा भैया, ओकरा सँ मेल केलकै न गे।

कुनटा : आ जोड़ी दुनू केँ गे बहिनदाइ, बड़े दीव लगै छथिन
होइ छथिन जे देखिते मे देखिते रहियनि न हे...।

(गद्य)

वनसप्ती : से सामर आ सलहेसक जोड़ी सेहो रति-कामदेव सन छै रे कुनटा। हमरा आब बात केँ बुझ' मे भाँगठ नइँ रहलै। रे केहनो वीर-धीर किऐ ने होअए सलहेस। छै तँ पुरुषे ने। से पुरुष के स्त्रीक कोमल स्पर्श, मधुर वचन आ सुवासित स्वासक प्रयोजन तँ होइते छै। बेचारा सलहेस। सौंसे दुनियाक चिन्ता केने घुरैए। ओकर चिन्ता केनिहार केओ नइँ। हमहू तँ अपना स्वार्थ मे ओकरे पर खिसियाएल छलियौ। बौआ मोतीराम!

मोतीराम : आज्ञा करही बहिनदाइ।

वनसप्ती : आब सालहेसक दुरागमन मे देरी नइँ हेबाक चाही रे!

बुधेसर : से तँ तोरा आदेश सँ नौआ केँ पठौले गेलैए बहिनदाइ

(गायन)

मोतीराम : आ सब बेर ओ मोरंगबला सब, दिन घुरा देलकै।
दुरागमनक दिन के ओ, मानबे ने केलकैए गे।
गे हर जोति मोरंग राज पर, चोकी आब हम चलेबै
मानचंद्रक घरारी पर हम, भाँटा रोपबै न गे।

(गद्य)

नौआ घुरि-घुरि अबै छै आ हमर खून खौलै छै बहिनदाइ मुदा हम करू तँ की करू। हमर खुट्टी तँ महिसौथा मे ठोकि देल गेल छै।

वनसप्ती : तों तँ बेर-बेर अनेरे केँ खिसिया उठै छें। रे नौआ के पठौने जँ मोरंगवला दिन मानि लितौ तँ तोंही नइँ कहितिही जे बेटी बलाय भेल छलै तेँ...

(गायन)

बौआ बुधेसर के बौरहबा, मोरंग तों पठबही
दिन मानि जेतौं ओ सब, बात हमर मानही न रे।

(गद्य)

भाउजक मुँह देख' लेल हमरो आब हलदिली पैसि गेलैए। ओकर अबिते महिसौथा राजमहलक श्री बढ़तै आ सलहेसक पएर मे जे घुरघुरा बान्हल छै से खूजिक' पड़ा जेतै।

(गायन)

बुधेसर-मोतीराम : फड़िछा क' सब टा कहियौ हे बहिनदाइ, हमरो करतेबता।
भैया के दुरागमन जल्दी मे जल्दी करबियौ न गे।

भउजी केँ देखि हमरो, नैना जुड़ेतै बहिनी
लाले-लाल महाफा मे जखन ओ, महिसौथा औतै न गे...।
(गायनक संग प्रकाश फेड आउट)

छठम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। मोरंगक दरबार। समाजी द्वारा गायन)

मोरंग दिस जतरा बौआ बुधेसर बनौलकै-2
ओहि मोरंग मे मचल घमसान हो।
आ देखियौ जे दुरमतिया बेटा बापे पर बमकै छै
बोली बोलै अगिन समान हो।-3

(गद्य)

मानचन्द्र : रे बेटा भान! ई कोनो नीक चालि नइँ भेलउ रे! नइँ जानि जे केहन कहाँक जरे उठै-बैठै छें जे सब टा कुचालिए धराइ छउ। रे अभगला! बियाहलि बेटी केँ पाहुन बुझल जाइ छै। ओकरा कत्ते दिन घेरिक' रखबिही रे परचट्टा। ओकर दुरागमन तों कइले रोकै छही?

भानचंद्र : दुरागमन? हौ, हम बियाह केँ मानिते ने छियै आ तों दुरागमनक बात करै छ'।

(गायन)

मानचंद्र : रे भनुआ रे दुरमतिया...
सुनही मे सुनही रे भनुआँ, हुकूम तों हमार
अइ बेर जँ अऔतै सगुनमा तँ दिनमा मान' जे पड़तौ न रे!

भानचंद्र : आज्ञा तोहरो अनुचित हो बाबू साफे जे हमरा लगै छ'
हौ सलहेस सन टूटपूजिया जरे बहिनी हम्मर नहिए बसतै हो।

(गद्य)

हौ हमर बाबू। तों सठिया गेल छहक। तोहर अकिल काज नइँ करै छह। बड़े डील-डौल सँ हमरा बहिनक बियाह हेतै। बड़का टा राजक युवरानी बनतै हमर बहिन, युवरानी।

मानचंद्र : युवरानी! बड़का राज! तों की अलाय-बलाय बजै छें कुलांगार?

(गायन)

हमरा तँ गियान मे रे परबुधिया, सलहेस सँ बढ़िक'
सौंसे जग मे दोसर कोनो, नहिए जे अबै छै न रे।

हमरो बेटी सामर जे बनतै, पटरानी महिसौथा के
राजा सलहेसे हमरो जमाइ लगै छै न हो...।*(गद्य)*
एतबे नइँ! सामर आ सलहेसक विवाहक लेल हम सलहेसक सरगवासी पिताक संग वचन मे बन्हाएल छी।

भानचंद्र : बन्हायल छहक तँ बन्हायल रहक! हमरा ताहि सँ की? तोरा वचनक लेल हम किऐ अपन मगज आँट करू?

(गायन)

अपने हाथे पएर पर अपन, कुड़हरि हम नइँ मारबै
तोरा वचनक खातिर किऐ हम, अपन जीवन आँट करबै न हो...।

(गद्य)

आब तों अपन फटर-फटर बंद करहक आ हमर निरलय सुनिक' राखि लहक। सामरक बियाह, भोट सम्राट सूचोंगक पुत्र युवराज फूचोंग ज'रए हेतै। तखन...किरात-प्रदेश भ' जेतै हमर हीत-कुटुम। फेर हम दुनू मीलिक' सलहेसबा केँ चुटकी मे पिसिए देबै न हौ...।

मानचंद्र : इह! कहलकै जे। एक टा मच्छड़ मारल त, पार लगबै ने करै छनि आ...बुझल जानल ढोंढ़क मंत्र नइँ आ देब जाइए, दराधक माथा-हाथ...

(गायन)

रे भनुआँ रे भनुआँ...
केना जे बैमनमा रे तोरा, एना भाखि भेलउ
अपना बहिनोइ सँ तोहर, कानि कोन जगलउ न रे...।

भानचंद्र : छोटका जातिक जनमल भ'क' ओ सरबा
राजा कहबौने फिरैए।
ताइ पर सँ हम्मर बहिनोइयो कहाओत से
हमरा नहिए, अरघइए हो...।

(गद्य)

लिलसा लगले रहि जेतै। ओकरा हम अपन बहिनोइ नइँ बन' देबै, नइँ बन' देबै।

मानचंद्र : एकबेर सामर सँ सेहो पुछि लही रे कुलांगार। जँ ओ स्वयं सलहेस संगे बस' चाहतै तखन?

भानचंद्र : से किन्नहु ने भ' सकैए। सामर हम्मर बहिन छै। ओ हमरे हँ मे हँ मिलौतै।

मानचंद्र : तखन हम एखने ओकरा बजबै छियै। मुदा सुनि ले! ओकर जे निरलय हेतै से हम तँ मानबे करबै, तोरा सेहो मान' पड़तौ!

(समाजी द्वारा गायन)

समवेत : सामर सतबंती आब, परबेस करै छै
इसथिर हिया कै केने, नहुएँ डेग धरै छै न हो...।
अबिते बाप भाइ केँ, परिनाम करै छै
तखनी जाक' ओ करनमा, बोलब' के पुछै छै न हो...।

सामर : हौ बाबू। हमरा कथी लागी बोलौलहक?

मानचंद्र : बेटी सामर! तोहर भराता-सिरी केँ तोरा सँ किच्छो पुछ' के छनि!

सामर : बोलहक भैया। कथी लागी बोलौलहक?

भानचंद्र : गे बहिनी सामर! तोरा बुझल छौ कि नइँ जे सलहेस राजा तँ कहबैए, मुदा शूद्र छै सरबा।

सामर : राजा...शूद्र...ई तों की बोलै छहक भैया?

भानचंद्र : सामर, गे हमरो बहिनियाँ...*(गायन)*
हमरो जे बतिया के बहिनियाँ, मानि आब तों बुझहीन
राजकुमारि छहिन तों तँ रानी नाहित रहबिहिन गे...।

(गद्य)

मुदा, ओ सरबा सलहेस। ओकरा संगे तोरा नौड़ी जकाँ रह' पड़तौ न गे...।

सामर : रानी, नौड़ी...ई तों कोन उलटबाँसी मारि रहल छहक भैया?

भानचंद्र : गे हमर दुलरूआ बहिन राजकुमारी सामर! सलहेसबाक सभ टा ढौआ कौड़ी नहरि-छहरि, रस्ता-बान्ह, पोखरि इनार के बनाब'-सोनाब' उड़ाह'-पुराह' मे स्वाह भ' रहल छै। से आब ओ साफे खगल लोक भ' गेलौउए।

सामर : दसक काज केनिहार कतहु खगल लोक भेलैए भैया।

भानचंद्र : भेलैए, खूब भेलैए। बिना ढौआक मरद के तों बुझि ले जे कोल्हू के बरद। एहन लोक तोरा तँ नौड़ीए जकाँ ने रखतौ गे।

सामर : जहिना रखतै तहिना रहि लेबै।

भानचंद्र : रहि लेबें?

(गायन)

तों तँ रहि लेबही गे बहिनी, हम कोना रहबै
तोरा नौड़ी नाहित देखि केँ, हमर कोढ़ फटतै न गे?

सामर : सबके भोग' पड़ै छै हौ भैया, माथक लिखलाहा के
अपन मोन एहिलागी, छोट नहिए करियौ न हे।

(गद्य)

भानचंद्र : तों तँ भोंदू जकाँ बात करै छही सामर। हमरा अछैत तों नौड़ीक जीवन जीबही। से तँ कखनो नइँ भ' सकै छै। तों कहि दही जे सलहेसक ज'रए तोहर दुरागमन नइँ हेतौ।

सामर : से केना कहबैं हौ भैया?

भानचंद्र : हम कहै छियौ तेँ। हम तोहर जेठ भैया। मोरंग राजक युवराज! भविष्यक महराज कहै छियौ। तोहर दुरागमन सलहेसवा ज'रए नइँ हेतौ। नइँ हेतौ! नइँ हेतौ!

सामर : से केना नइँ हेतै हौ भैया। तों कहबहक जे सुरूज पच्छिम भर सँ उगै छै तँ हम केना मानि लेबह। हम की हौ। एहन बात तँ कियो नइँ मानतह।

भानचंद्र : ई तों नइँ! तोहर नेनमतिया बजै छउ सामर!

सामर : से कोना कहलहक हौ भैया?

भानचंद्र : गे, राजा कत्तहुँ सामान्य लोकक ज'रए सामान्य लोक नाहित रहय। अनटोटल भेलै ने?...

सामर : अनटोटल केना कहलहक हौ भैया! राजा केँ अपना परजा संगे, अपना परजा जकाँ ने रहक चाटी। जे एना करै छथि से एकदम ठीक करै छथि हौ भैया।

(गायन)

आ...
सुनियौ मे सुनियौ हौ भैया, हमरो जे मिनतिया
हमरो कहनाम हौ भैया आब अहूँ सुनियौ
राजा सलहेस छै हमरो, वर जे बियहुती न हो।
से ओकरा जरे सुख मे की दुख मे, छाँह नाहित रहबै
जेहे निम्मन लगतै ओकरा उहे हम करबै न हो।

भानचंद्र : एकर माने *(गद्य)* माने तोहूँ आब बाबूएक सुर मे गाब' लगलही।

सामर : सुर तँ सुरे जरे ने मिलतै हौ भैया। असुर ज'रए केना मिलतै?

भानचंद्र : तों नइँ जनै छही सामर। दुनियाक बेसी राजा सलहेस केँ अधम क'क' बुझै छै।

सामर : तोहर दुनिए कते टा छह हौ भैया। किरात, पकड़िया आ समदागढ़।

एक टा राज्यक लोभी, दोसर राजक सेनापति चोर आ तेसर सिंहासन पर बैसल छै तस्कर। एकरा सभक लेल तँ सलहेस अधलाहे ने बुझेतै हौ। परजाक खून चूस'बलाक लेल तँ सलहेस मरखाह बुझेबे करतै।

भानचंद्र : बेस! तोरे बात। सलहेस बड़ बढ़ियाँ। मुदा अपनो राज दिस तँ देखहिन। हमरा तँ एकर हित-अहित ने सोच' पड़ैए।

सामर : आब तों राजोक चिन्ता करै छहक भैया?

भानचंद्र : राजक चिन्ता हम नइँ करबै तँ के करतै। बाबूक अमलदारी मे तँ राजक शक्ति घटबै केलैए। तेँ ने हमर मोन होइए जे किरात राज सँ संबंध जोड़ा जाए। आ जँ से भ' गेलउ तँ बुझि लही जे मोरंग सेहो एक टा शक्ति कहओतै।

सामर : हौ भैया। राज तँ जनताक मेहनति आ राजाक सदाचार सँ शक्तिधर होइ छै। संबंधक उधारी सँ नइँ हौ भैया।

भानचंद्र : ई सब राजनीतिक बात छै। तों नइँ बुझि सकबिहिन सामर।

सामर : तखन तँ तोहूँ जननीतिक बात नइँ बुझबहक।

भानचंद्र : तों अपना जेठ भाइए नइँ युवराज सँ मुँह लगबै छें सामर।

सामर : एकतरफा फैसला करबहक तँ हम चुप्प केना रहबह भैया। ताहि पर सँ हम तँ आस्ते-आस्ते सब टा बात कहलियह। तों अपने बाबू सँ कोना बात करै छहक? कने मोन ने पाड़हक।

मानचंद्र : बस। आब बस। केओ किछु नइँ बजतै। हमर ई अंतिम फैसिला छियै जे हमरा सूचनाक हिसाबे कुमार बुधेसर अबै छै दुरागमनक दिन मनाब'क लेल। जे दिन ओ कहतै, से मानि लेबाक छै। बस।

भानचंद्र : तखन हमरो फैसिला सुनिए लहक। हमर मित्र सभक लेल सलहेसबा शत्रु छिऐ तखन ओ हमरो शत्रु भेलै।

सामर : अएँ हौ भैया। अपना बहिनोइक लेल एहन बात किऐ बजै छहक?

भानचंद्र : आइ दिन सँ हमर किओ बहिन नइँ तखन बहिनोइ ककर?

सामर : हे ईश्वर! हे परमात्मा। हमरा भैया केँ कनियो बुद्धि नइँ देबहक?

भानचंद्र : ई सुनिक' राखि ले सामर जे सलहेसबा हमरे हाथे मारल जेतौ। अही हाथ सँ हम ओकर प्राण हरबै।

मानचंद्र : हे भगवान! हे भगवान! ई कुलांगार केँ हमरे लेल बनौने छलहक।

भानचंद्र : तों दुनू बाप-बेटी, घरनाशीक बीया बाओग क' रहल छहक। हमरा सँ कोनो जनमक कानि सधबै छहक तों सब। बेटी बसत'

सासूर, अपने सेबबह सरगोली पेठिया। सब टा झूर झमेला हमरे सह' पड़तै। अपन एहन अनर्थ हम अपना आँखिए नइँ देखि सकबै।

मानचंद्र : नइँ देखि सकबें तँ नइँ देख। आ एत' रहिए क' की करबें। जो रे कुलांगार। भोटराज मे जाक' रहि ने जो।

भानचंद्र : एइ फेरी मे रहबहक तँ खत्ता खेबहक। बुझलहक किने। हम तँ खाली समइया ने देखि रहलियैए।

मानचंद्र : हँ-हँ! हमरा जीता जिनगी खूब ऐश-मौज, फूर्र फें क'क' गदहा जिनगी तारि ले। बाद मे तँ...

भानचंद्र : बादे मे ठीक रहतै हौ। बादे मे ठीक रहतै। तों मरहक तँ पहिने...

(प्रस्थान)

सामर : भैया सँ तों कथी लागी मुँह लगाबै छहक। अनेरे किने...आ...

(गायन)

मानचंद्र : आगे सामर गे हमरो बेटिया
गे कोन अपराध हमरा बुते कत्तउ भेलै।
ककरा जोड़ला खढ़ पर हम, पएर रखलियै न गे।
गे हमरहि कुल मे किए नाग जनम लेलकै
पुत्र, कुपुत्र भेलै, हिरदय फाट' लगलै न गे।
हे उनटे जे चलै, दूसमन, सोझ डारि नइँ बुझै छै।
कोन तप चुकलियै जे एहन दुख भेटलै न गे।

(गायनक संग प्रस्थान)

सातम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइत-होइत मंच पर भुटानक दरबार लगैए। समाजी द्वारा गायन)

चलै छै ओ भनुआ छौंड़ा, धरती दमसबै छै
आ कुल के कलंकी बेटा, मानचंद के लगै छै न हो...।
दिन-राति कलह क'क' घर घिनबै छै
आ दुश्मन सँ मिलिक' कुलक नाक कटबै छै न हो...।

(गायनक समाप्तिक संग विपटाक प्रवेश)

विपटा : एक टा कहबी छै यौ समाजी आउर जे हदमद्दी सँ रद्दे नीक आ भानचन सन पुत सँ बरदे नीक। देखियौ-देखियौ। हे देखियौ ने

एमहर। केना घरमुँहा बरद जकाँ, दुलकी मारने, भुटिया दरबार दिस भागल जाइए। जेना बहु मरि गेल होइ।

(हफसैत भानचन्द्रक प्रवेश आ दोसर कात सँ प्रस्थान। मंच पर सूचोंग आ फूचोंग)

फूचोंग : बाबू हौ बाबू...

(गायन)

हमरो जे बचनियाँ हौ बाबू, कान द'क' सुनियौ
रण ठनबाक बात, आब नहिए जे करियौ न हो...।

(गद्य)

हे हम्मर बाबू! बतिया मनियौ हम्मर! राज के बढ़ेबाक लोभ नइँ करियौ। लड़ाइ-भिड़ाइ के फेरी मे अपने राजक वेवस्था ढनमनाएल जाइय।

सूचोंग : हौ युवराज बेटबा...

(गायन)

हौ राजक वेवस्था ले' अहाँ, फिकिर नहिए करियौ
मौज-मस्ती करैत रहियौ हमर कमाल देखियौ न हो...।

(गद्य)

हे हमर बेटा। भोट राजक युवराज आ भावी सम्राट फूचोंग। अहाँ हीया केँ नइँ हारियौ। खइयौ-पीबियौ, हरदम मस्त रहियौ। राजाक बेटा छियै। हिम्मत करियौ, हिम्मत रखियौ।

फूचोंग : हिम्मत द' तँ ठीके कहलियै हौ बाबू। अपना राज द' सेहो कने सोचियौ। अहाँ सब टा धन के लड़ाइ मे झोकने जाइ छियै...

सूचोंग : धन! हा! हा! हा! हा! धन... *(गायन)*

धन तँ एत्ते अऔतै हे बेटा, राखक जग्गह नइँ भेटतै
अमारी पर अमारी धनक, लागिए तँ जेतै न हो...।

(गद्य)

अहाँ सब काज छोड़िक' धन रखबाक लेल जगह ठेकनाबियौ आ बनबियौ।

फूचोंग : से रण मे जीतबै तखन ने हे बाबू।

सूचोंग : अबस्स जीतबै युवराज। अबस्स जीतबै।

फूचोंग : सलहेसक संगे तँ गाछ-बिरिछ, बाघ-भालु लड़ै छै हौ बाबू। जनता सलहेसक संगे लड़ै छै। तखन अहाँ केना जीतबै?

सूचोंग : जनता केँ मुँह मारियौ युवराज! जनता केँ तँ भेंडी-बकरी बूझियौ।
जेम्हर क' हँकबै, ओम्हर क' ढेंगरतै। आ अइ बेर तँ... *(गायन)*
अइ बेर तँ हमरा हाथ मे, नाड़ी पकड़ेलैए
सलहेसक सार भानचंद, हमरा सँ मिलिए गेलैए न हो...।
अपन पूतोहु बनाक' हम सामर केँ, अपना राज अनबै।
आ सलहेसबा के मुँह पर हम, कारी-चून लेपबै न हो।

फूचोंग : अनका धन पर नजरिया लगाक' हौ बाबू, नीक नइँ के केलियै
आ हमरो एइ मे सानि-बटिक', पाप चढ़ौलियै न हो...।

(गद्य)

हौ हम्मर बाबू। हम्मर बचन मानियौ। सलहेस सँ झग्गड़ नइँ करियौ। अपना राज पर धियान दियौ। *(चूहड़मल्लक प्रवेश। गायन)*

चूहड़मल्ल : हो...एक तरहत्थी पर एक जोड़ी पहलवान खेलबै छी
आ सौंसे गंगाक जलकर पर हम, अपन राज चलबै छी न हो...।
हौ ताल जे ठोंकै छी तँ हरहरी वज्र लगै छै
आ हमर नाम सुनिते लोकक पेटक पानि डोलै छै न हो...।

(गद्य)

आर, हमही भेलियै राज पकड़ियाक महासेनापति।
एक धेला दारू पीबिक' होस मे रहै छियै,
चोरविदया मे पारंगत छियै हम, मोनक तरूआरि भँजै छियै। अपना सोझाँ कहियो, ककरो किछु नइँ बुझलियै!

(गायन)

हो, गजभरिक मोंछ बला हम, चूहड़मल्ल कहाबै छी
केहनो केहनो कहबैका के, कनगुरिए पर खेलाबै छी न हो...।

(तरुमल्लक प्रवेश। गायन)

तरुमल्ल : समदागढ़क समूच्चे राज परिवार केँ यमपुर क' पठओने छी।
ककरो नइँ कल्ला अलगै छै, नचनी नाच, नचओने छी न हो।
चूहड़मल्ल के मीता लगै छी, तरुमल्ल कहाबै छी।
समदागढ़क सिंहासन पर हमही विराजै छी न हो...।

(गद्य)

मुदा हे दोस हमर। चारू भर नजरि खिराबै छी तँ हमरा आउरक एके टा दुसमन देखाइ छै।

सूचोंग : से ओही दुसमन के ने अन्हरजाल मे ओझराबक छै यौ दोस। मुदा खाली सलहेसे नइँ, हमरा तँ उ चारू बहिनी मालिन सब सेहो ने चाहियै।

चूहड़ : मालिनो सब चाही? की समराट? एहू उमेर मे रंगबाजी?

सूचोंग : कनी देखियो-मालिक बजियौ दोस चूहड़। जूआन समरथ बेटा सोझहाँ मे ठाढ़ छथिन।

चूहड़ : आ धुर मरदे। युवराज सँ की सरमाइ छियै। ओ पंडितबा सब कहै छै ने जे समरथ बेटा केँ दोस बुझक चाहियै।

सूचोंग : नइँ यौ। से बात नइँ कहलउ।

तरुमल्ल : तखन कोन बात कहलियै।

चूहड़ : उठाबियौ परदा आ करियौ ने खुलासा। तरुमल्ल कै मोन-बेकल छै? फड़िच्छा केँ बजियौ ने यौ।

सूचोंग : तखन यौ दोस सब। सुनिए लियौ। ओ मलिनियाँ सब इतिहास-भूगोल, गियान-बिगियानक खान कहबै जाइ छथिन। आ जँ ओ सब सलहेसबा सँ मिलि गेलखिन तँ बुझि लियौ जे अपना सभक मनसूब्बा घोड़ीक घास छील' चलि जेतै। मालिन आ सलहेस दुनू मे सँ एक्को टा छुट्टा बाँचल रहतै तँ राज सम्हारब मोसकिल केने रहतै।

तरुमल्ल : आब पूरा-पूरी बुझि गेलियै।

चूहड़ : मालिन सब पकड़ैतै तँ एक बेर क' अंक तँ लगेबे करबै (सबहक हँसी। हहायल भानचंद्रक प्रवेश) अबथुन-अबधुन हमर भागिनक सार।

भानचन्द्र : जड़ल पर नोन छीटै छहक मामा चूहड़मल्ल!

चूहड़ : ले लोट्टा! एना कइले छिड़िया गेलियै युवराज।

तरुमल्ल : की भेल युवराज भानचंद्र? बड़े परेशान बुझाइ छियै।

सूचोंग : बजियौ युवराज। ओकरा बतिबयौ जे अहाँक मोन केँ मथने जाइत बुझाइए?

भानचंद्र : आइ फेनो बाबू सँ एक पकड़ भ' गेलै।

चूहड़ : भ' गेलै। नीक भेलै। मुदा केना भेलै?

भानचन्द्र : सलहेसबाक भाइ अबै छै दिन मनब' ले। आ हमर बाबू अइबेर दिन मानि लेबा पर वीर्त छै।

तरुमल्ल : कोन भाइ अबै छै? मोतीराम की बुधेसर?

भानचंद्र : बुधेसर।

तरुमल्ल : बौआ बुधेसर अबै छथि दिन मनाब'?

भानचंद्र : हँ।

चूहड़ : आबथु! आबथु! भले बेर पर अबै छथि। ई त खुशखबरी भेलै समराट। खुशखबरी। युवराज तँ अनेरे के मोन-मलिन करै छथिन। युवराज भानचंद्र, खुश भ' जइयौ।

भानचंद्र : कथी ल'क' खुश भ' जइयौ?

चूहड़ : भागिन सलहेस केँ पकड़बाक बात केँ ल'क'।

भानचंद्र : से केना हौ मामा?

तरुमल्ल : से केना हौ दोस?

सूचोंग : कनी फड़िछा क' बजियौ दोस चूहड़। कवि नइँ करियौ।

चूहड़ : ले लोट्टा! ककरो मगज मे बात नइँ अभरलै। तखन तँ खोंइचा छोड़ाक' कह' पड़तै।

(गायन)

बौआ बुधेसर अऔते दिन मनाब' लै।
सामर के सखी बनिक' कुटनी सब सँ घेरेतै न हो...।
मिरचाइ के बुकनी सँ ओकर आँखि अन्हरेतै
तखन हमर चोर सब ओकरा, उनटा बान्ह बन्हतै न हो...।

सूचोंग : अरे वाह-वा!
बुधेसर केँ छोड़ाब'क नाम पर, सलहेसबा केँ एसगरे बजेबै ना
नहिए जँ एलै सलहेसबा बुधेसरा के सूली चढ़ेबै ना।

तरुमल्ल : बड़का भारी काजक जिमेवारी भानचंद्र, अहाँ पर पड़लै
अइ बेरका बाजी तँ हम सब मारिए जे लेबै न हो...।

भानचंद्र : आ...
आ रे बड़ रे सगुनियाँ आइ हम, जतरा बनौलियै
दुसमन के चित्त कर' के, बड़का अवसर भेटलइ न हो...।
हो जहिना-जहिना मामा कहलकै, तहिना तहिना करबै।
आ बान्हि क' बुधेसरा के, भोट-राज अनबै न हो...।

(गायनक संग प्रस्थान)

(गद्य)

चूहड़ : हे समराट सूचोंग।

सूचोंग : बजियौ महामल्ल।

चूहड़मल्ल : ले लोट्टा! एहन भारी सुभ-समेचार सुनिक' अहीठाम बैठल रहबै?

(गायन)

चलियौ मे चलियौ समराट, दारु पिलाबियौ
आ बजबियौ पतुरिया के हमरा, नाचो देखबियौ न हो...।

आठम-दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। मंच पर रास्ताक दृश्य। हिरामन आ विपटा अबैए।)

हिरामन : सुनै जाउ। सुनै जाउ। सुनै जाइ जाउ।

विपटा : सुनै जाइ जाउ।

हिरामन : राजा सलहेसक एकबाल आ वनदेवी कुसमाक करुणा के हिरदय मे राखि लिअ'।

विपटा : कान दाबिक' मुँह बाबि लिअ'।

हिरामन : फेर लबड़पनी।

विपटा : माने मुँह दाबिक' कान बाबि लिअ'।

हिरामन : बाढ़ि सँ चंपा केँ।

विपटा : बचेबाक लेल।

हिरामन : छजना सँ सूखाड़ केँ।

विपटा : मेटेबाक लेल

हिरामन : राजा सलहेसक निआर सुनियौ।

विपटा : कुसमा मलिनियाँक विचार सुनियौ।

हिरामन : चकरा नद पर बान्ह बन्हेतै।

विपटा : नंगटाक पएर मे छान लगेतै

(गायन)

तँ सुनियौ मे सुनियौ हे गामक सकल' समाज...

हिरामन : चकरा द'ह रहि-रहि उमरै छै,
जान-माल पर खतरा दैइ छै।

विपटा : राजा सलहेस आ मालिन कुसमा भेलै तैयार...

हिरामन : छहरि बनेतै, नहरि बनेतै।
बाट-घाट, सभतरि बनेतै।

(गद्य)

आ तखन? सब दिस सँ लोक सब

विपटा : सब दिस क' जेतै।
हिरामन : से ई सब टा तँ दसक सहयोग बिना किन्नहु नइँ हेतै।
विपटा : माने अहुँ आउर देह डोलबियो।
हिरामन : फाँड़ बान्हिक' हाथ लगबियौ।

(गायन)

मन मे निआरि ले, फाँड़ा सम्हारि ले
छिट्टा-कोदारि ले, चल-चल-चल।

(गायनक संग ठनका-बनकाक प्रवेश।)

मजदूर-किसान भाइ, अमरूख, सगियान भाइ
छिट्टा-कोदारि ले, चल-चल चल।
कोड़बै नहरि हम, छहरि बनेबै
चम्पा आ चकरा के दूरी मेटबै
बाढ़ि के शंका तँ सपनो ने आतै
मेटते सुखाड़ भाइ, चल, चल चल।
मन मे...।

(विपटा चीत्कार क'क' खसैए)

ठनका : एना किऐ डिरिएलहक?
बनका : आकी किच्छो आँखि देखलहक?
विपटा : साँप काटि लेलकै हमरा *(साँपक गरदनि पकड़ि डोलबैए)*
ठनका : आब ई बलिगोबिना नइँ बाँचतै हो दोस।
बनका : जुआएल गहुँमन कटलकै हो दोस।
विपटा : आब हम चलै छियह हे हिरामन...।
हिरामन : एना कथी लागी बोलै, छहक हे गोपीचन...।

(सलहेस आ कुसमाक प्रवेश)

कुसमा : अइ साँपक घेंट कथी ले' मचोड़ै छहक?
विपटा : हमरा हबकि क' जहर चढ़ा देलकैए हे मालिन...।
कुसमा : एकरा मारने तोहर जहर नइँ उतरतह। एकरा पहिने छोड़ह। पानि मे फेकह एकरा।
विपटा : *(साँप केँ फेकैत)* तखन हमरो अपन परान छोड़' दिय'...।
सलहेस : वनदेवीक अछैत एना निभरोस नइँ होइ हे...
ठनका : ई तँ बेहोस भ' गेलै हौ दोस।
बनका : जीवन सँ निभरोस भ' गेलै हो दोस।

विपटा : हमरा चल-चलन्ती के बेरिया आबि गेलै हो राजाजी...

सलहेस : *(व्याकुल होइत)* एकर कोनो उपचार देखहक ने हे मालिन।

कुसमा : *(किछु पात केँ मचोड़ैत)* तोंहू बड़ जल्दी घबड़ा जाइ छहक हौ राजाजी।

(कुसमा हाथक पात केँ थुरिक' ओकर रस विपटा केँ पिअबैए आ काटल स्थान पर लगबैए। विपटा उठिक बैसि जाइए।)

विपटा : हम तँ ठीक भ' गेलियै। अहाँ आउर एइ जग कइले भीड़ लगौने छी। चलै चलू ने बान्ह बनाब'।

(हिरामन आ विपटाक प्रस्थान)

सलहेस : चमत्कार! धन्य वनदेवी, धन्य! तोरा संग मे तँ हमरा, रहि-रहिक' नवका-नवका बात सब सँ भेंट भेल जाइए। ई कोन जड़ी भेलै हे मालिन?

कुसमा : हे राजाजी। ई विखहरी बटी कहबै छै।

सलहेस : एकदम ठीक नाम भेलै एकर। रामबाण जकाँ असरि केलकैए।

कुसमा : जाइ-जाइ स्थल पर विखधर सभक आवास होइ छै ने हे राजा, ओत-ओत तोरा ई जड़ी अबस्से भेटत'।

सलहेस : तों तँ एइ जतराक सब टा ताप हरि लेलहक हे मालिन। अही अजोघ नाग सबहक डरे लोक सब एम्हरक मुँह नइँ करै छलै।

कुसमा : ई तँ करुणामयी प्रकृतिक महिमा छियै हे राजा। जत' अधलाह छै ओत्तहि नीक सेहो छै। जत' दुख छै, ओत्तहि आनंदोक वास होइ छै। बस! आवश्यकता छै ओकरा तकबाक। हेरबाक-परेखबाक। अनुभव आ उपयोग करबाक।

(गायनक संग दुरगाक प्रवेश। कुनटा बनल विपटा आ हिरामन ओकरा पाछाँ-पाछाँ अबैए।)

दुरगा : कत' गेलें, किऐ रे भेलें, रजबा रे बैमनमा
होब' जाइ छै बड़का अनियाय रे...।

ठनका-बनका : किऐ भेल' तोरा हे माता, कइले अगुतेल'
कओने तोरा पड़ल' फेरी आइ गे...।

हिरामन : कओने रतन-धन गे मइया, तोहरो हेरलौ
कथी लागी तोहूँ डिरिआइ गे...।

कुनटा : रतन-धन हेरेलखिन तँ हमरा सब टा खेरहा कहथुन
ताकि देबनि हम' ओहो माइ गे...।

सलहेस : आ...
आगे मइया गे दुरूगा...
गे गोर' लगै छी हम तोहर, केना-केना एलही
आ गे बहुते दिवस पर हमरा, भेंट आइ तों देलही न गे...।

दुरगा : आ रे बैमनमा...
रे सुतल छें की जागल रे रजबा, हमरा बतबही
राखि क' करेजा पर हाथ रे...।

(गद्य)

सलहेस : गे बुढ़िया, हम तोरा सुतल बुझाइ छियौ।

कुसमा : हे माता दुरगा! तोरा सँ कथी छपित छै। लोकक गोहारिक सोझाँ मे राजा सलहेस, अपन देह-नेहक चिन्ता कखन केलकैए।

दुरगा : तों दही मे सही केनाइ बंद कर आ एकरा सँ पुछही गे मलिनियाँ।

कुसमा : की पुछियौ गे मइया?

दुरगा : पुछही जे बौआ बुधेसर एखन कत्त' छै?

सलहेस : कत्त' छै गे बुढ़िया?

दुरगा : देखलही गे मलिनियाँ। एकरा किच्छो नइँ बुझल छै।

(गायन)

बौआ बुधेसर, रे बेटा, तोहर भाइ दुलरूआ।
बनिक' जे बंदी बसउ जेल रे...।
पीठ मे जे खुखरी रे बेटा, तोहर सार भोंकलकौ
दुसमन सँ क' के जे मेल रे...।

(सलहेस केँ प्रचंड तामस होइ छै।)

सलहेस : आ...मति दुरमतिया भेलै, भानचंद्र सरबा के
मटि मे जे मिला क' ओकरा, आब हम छोड़बै न गे...।
हो जड़ि उकन्नन करबै आब मोरंग राज के हम
आ बौआ केँ पकड़ि क' सरबा, काल के नोतलकै न गे...।

कुसमा : आ...
कथी लागी आ हो राजा जी, अगुता क' तों बजलहक
आ ककरा पर एना भ'क', खिसिया जे गेलहक न हो...।

(गद्य)

हे राजाजी! तों एना कथी लागी अगुताइ छहक? वीर-पुरुष के हाली सन नइँ खिसिएबाक चाही। उपर कने ईहो ने सोचहक जे

मोरंग तोहर सासुरो छियह हे राजा!

(गायन)

सलहेस : हमरो बुधेसर दुलरूआ के, हाथ जे लगौलकै
तकरा हम हीत हे मालिन, केना क'क' बुझबै न हे...।
एखनतिए मोरंग राज पर, काल बनि हम चढ़बै
जेहे सोझाँ अड़तै तकरा, माटि मे मिलेबै न हे...।

दुरगा : आ...
मोरंग राज पर चढ़ने रे बेटा, कोनो फल ने भेटतौ
भोट-राज सूचोंग सँ तोरा, भेंट करहि पड़तौ न रे...।
ओकरे जे किला मे छै बंदी, बुधेसर दुलरूआ
तोरे पकड़क खातिर ओ सब, जाल ई बुनलकउ न रे...।
आ तीन दिन भीतरे ओत' तों एसगरे जँ नइँ गेलही।
तँ चारिम दिनमा बौआ के सूली चढ़ौतौ न रे।
एतबा अनर्थक सूचना, हम देब' एलियौ
आब, जेहन तोहर चालि जे हेतौ, तेहने फल' भेटतौ न रे...।

(गायनक संग प्रस्थान। गद्य)

सलहेस : हम एखने भोट राजक जतरा बनबै छी हे मालिन।

ठनका-बनका : हमहू तोरे संगे जेबै।

कुनटा : हमहू हिनका संग मे जेबनि।

सलहेस : से एसगरे जेबाक बात छै ने रे। तों सब जेबें तँ देखिते देरी बौआ केँ...

ठन.-बन.-कुन. : नइँ...!

कुसमा : अशुभ बात नइँ सोचहक हे राजा। सुन्दर आ शुभ बात सब सोचहक। तों निरमल मोन सँ किरात प्रदेश दिस जतरा बनबहक नि:शंक भेल जाह आ सफल भेल आबह। तोहर पराभव कखनो ने भ' सकै छे हे राजा।

(गायन)

तोहर बाट शुभ हो हे राजा, जतरा बनबहक
निरमल मोन सँ काज अपन तों करैत जाहक न हो...।
भय आ अदिनताक पहरा, तोरे हाथे हटतइ
एहि मलिनियाँ के अपना, पाछू मे जनहक न हो...।

(गायनक संग प्रस्थान)

नवम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। विपटा आ हिरामनक प्रवेश)

(गायन)

हिरामन : जहिना कहलकै चूहड़ा।

विपटा : तहिना भानचन केलकै हो जान!

दुनू : जान अपना लेखे बड़का तीर मारलकै हो जान!

(गद्य)

विपटा : ऐ हइ?

हिरामन : की गे?

विपटा : सूचोंगवा तँ फुलि क' ढबुसा भेल हेतै?

हिरामन : सूचोंगवा के छोड़ही बुधेसर द सोचही ने गे।

(गायन)

हिरामन : गेलै दुरागमन करब'।

विपटा : पड़लै जहल मे हो जान।

दुनू : जान एसगर बैसल जहल मे की सब सोचै छै हो जान।

(गायनक संग प्रस्थान)

बुधेसर : सोचै छियै जे हमरा मति केँ की भ' गेल छलै। मोरंगक ढेकहा च'र मे जखने ओ स्त्रीगण सब हमरा घेरि लेलकै तखने हमरा षड्यंत्रक गंध किऐ नइँ लगलै?

(गायन)

आ...

की-ए भेलै हमरा जग मे, गियानी कहा क'

भारी जे अमरूख नाहित, काज हमरो भेलै न हो...।

हमरा पकड़िक' सूचोंगवा, अपन काज सुतारलकै

हमर लाथ लगाक' भैया केँ, पकड़' चाहलकै हो...।

(गद्य)

हे इश्वर! हे परमात्मा! भरिया सभक द्वारा भैया लग सूचोंगबाक समाद नइँ पहुँचल होइ। दू दिन तँ बीतिए गेलैए। आइए छियै तेसर दिन।

(गायन)

उगला हो सूरज...

दसो लह जोड़ि हौ उगलाहा, मिनती करै छी
हाली सानी अस्त अहाँ, भइए जइयौ न हो...।
(गद्य)
सूरज अस्त हेतै। हम सूली पर चढ़बै आ राजा भैया, मलहेस आ
बान्हि क' तराइ सँ ल'क' गंगाधर तक राज करबाक मनोरथक
सपना पड़ले रहि जेतै।
(गायनक संग भानचंद्रक प्रवेश)

भानचंद्र : आ...
आब कने कहियौ हे पाहुन, केहन मोन लगैए
सूली पर चढ़' के समइया, दौड़ल-दौड़ल अबैए न यौ...
लेकिन पहिने चलियौ तँ अहाँ भोट दरबार मे
सब बैठल-बैठल ओइ जग, बटिया जोहइए न यौ...।
(भानचंद्र बुधेसर केँ ल'जेबाक उपक्रम कर'लगैए। भोटक'
दरबार मे सूचोंग, फूचोंग, चूहड़ आ तरुमल्ल)
(गायन)

चूहड़ : हो...
आधा दिन बीतिए गेलै भागिन सलहेसबा नइँ एलैए
डरे लगैए छौंडा घर मे नुकेलैए न हो
(गद्य)
तइयो कोनो बात नइँ समराट। बौआ बुधेसरे केँ सूली पर चढ़ाक'
अपना मोनक दाह केँ मेटबै। मुदा...*(गायन)*
मुदा एइ सँ पहिने ओकरा बानर सन नचेबै
बड़े आइन छँटै छल बुधेसरा, सब टा घोंसारबै न हो...

तरुमल्ल : हमरो जे मोनक कसमस्सी, आब दूर करबै
पहिने बुधेसरा केँ हाथ-पैर तोड़बै न हो...।
(भानचन्द्रक संग बान्हल बुधेसरक प्रवेश)

सूचोंग : आ...अबियौ-अबियौ बौआ बुधेसर। कहियौ मोन लगैए की नइँ?

तरुमल्ल : एह! से किऐ ने लगतनि। आ नइँ लगैत हेतनि तँ लगा देबनि।
की यौ कुमार लगाउ?

चूहड़मल्ल : की हौ भागिन। बौआ बुधेसर? एना धोध किऐ फुलौने छहक।
सुआगत-सतकार मे कोताही भ' रहल छह की, जे लोटकी जकाँ
थुथुन लटकल छह?

सूचोंग : की बात बजलियै महामल्ल। अपन भरि तँ हम आदि सँ अंत

धरिक बेवस्था केने छियनि।

बुधेसर : अहाँ अनेरे केँ भ्रम पोसिक' किऐ बैसि गेल छी सम्राट। आदि अंत मनुष्यक हाथ मे नइँ रहै छै?

चूहड़मल्ल : अरे वाह! बोली तँ बड़ टनगर बहरेलै। जेना मोरंगक जनानी सभक टुनटुनिया टनटनेलइ।

तरुमल्ल : दुखेला पर एहिना होइ छै।

भानचंद्र : की हौ मेहमान दुखाइ छ'?

सूचोंग : आ...*(गायन)* भैया अबिते हेता यौ बौआ, अहाँ केँ छोड़ाब'

भानचंद्र : ताबत तों मोने-मोन, देवता-पितर गोहरबहक न हो...

बुधेसर : मति-गति बिसरिक' अहाँ सब एना किऐ करै छी
ध' क' कुचालि, मानव-जीवन गमबै छी न यौ...
सलहेसक जीवन छै अरपन, लोकक गोहारि मे
तकरा सँ अनेरे अहाँ सब, राड़ि किऐ ठनै छी न यौ...

फूचोंग : आ...
एखनो समय छै यौ बाबू, बुधेसर केँ छोड़ियौ
कलेमचे राजा सलहेस सँ सुलह अहाँ करियौ न यौ...।

भानचंद्र : केहन तोहरो मतिया हे मीता, दिन-दिन भेल जाइ छ'
हाथ आएल दुश्मन केँ, छोड़' केना कहै छ न हो...

फूचोंग : अहाँ केँ तँ आब मीता कह' मे, हमर मोन अँटकैए
अपना बहिनोइ के जे दुसमन कहैए,
हमर ओ नइँ भ' सकैए न हो...

तरुमल्ल : ई तँ घूमा-फिरा क' हमरा सबहक अपमान केलकै
एना मे तँ समराट हमरा सबके सोच' पड़तै न हो...।

फूचोंग : *(गद्य)* नइँ। हम किनकउ अपमान नइँ क' रहल छियनि। हम तँ अपना बाबू सँ परारथना केलौंउ। हे हम्मर बाबू! बतिया बुझियौ। सलहेस सन उपकारी राजा सँ राड़ि नइँ ठनियौ। राज हड़ोपबाक लोभ नइँ करियौ। अनका बल पर गूमान नइँ पोसियौ।

बुधेसर : जीबू युवराज। जीबू। अहाँ तँ लंका मे विभीषण लगै छी।

चूहड़मल्ल : सावधान समराट। अपना बेटाक मुँह पर ताला लगाउ। नइँ तँ हमर तामस केँ सम्हार' लेल तैयार भ' जाउ।

(गायन)

बीत भारि के छौंड़ा फूचोंगवा, बड़का-बड़का बात बजलै।

दोसर कियो रहितै तँ ओकरो, मूंड उड़ि गेल रहितै न हो...।
चूहड़ पर आँगुर उठाब' बला, एइ मेदिनी सँ उठि जाइ छै।
खीरा जकाँ देह ओकर खंड-खंड होइ छै न हो...।

सूचोंग : *(गद्य)* क्षमा करियौ मीता! माफी दियौ। अपने सखा-संतान, बुझिक' फूचोंगक अपराध पर छाउर ध' दियौ।

चूहड़मल्ल : से केना हेतै दोस। हमर मोन महुरा गेलैए। अपन तामस तँ हमरा उतार' पड़बे करतै।

सूचोंग : अन्याय भ' जेतै दोस! हमर एक्के टा बेटा छियै ई । एकर नेनमतिया के माफी दियौ दोस।

चूहड़मल्ल : बेस। तखन एकरा एक सय बेर कान पकड़ि क' उठ'-बैस' कहियौ। आर...

सूचोंग : आर की दोस!

(गायन)

चूहड़मल्ल : अपना मोनक माहूर आब हम, बुधेसर पर उतारबै।
सपनौर जकाँ आब एइ, साँप संग खेलेबै न हो...।

(चूहड़ बुधेसर केँ सताब' लगैए। फूचोंग उठक-बैठक करैए। भानचंद्र गनती करैए। तरुमल्ल चूहड़ के सहयोग दै छै। सलहेसक प्रवेश)

सलहेस : सावधान! मामा चूहड़। खूब मल्ल कहबै छह तों। बान्हल-छेकल लोक पर जोर देखबै छहक।

बुधेसर : राजा भैया!

चूहड़मल्ल : अच्छा! भागिन सलहेस! आबि गेलहक। आब हमर दाह मेटा गेल। तोरे दर्शन कर'क लेल तँ ई सब भ' रहल छलै।

सूचोंग : राजा सलहेस। अहाँ भले बेर पर एलियै यौ।

सलहेस : अपना बेटा सँ एना किएक करबा रहल छियै सम्राट। असमय कसरत नोकसान करै छै।

(फूचोंग कसरत बंद करैए। भानचंद्र सकपकाइए।)

अहाँक आदेशानुसार हम उपस्थित छी सम्राट। आब अपना वचनक पालन करू सम्राट। बुधेसर केँ छोड़ि दियनु। हम स्वयं बंदी बन'क लेल प्रस्तुत छी।

बुधेसर : हौ राजा भैया, हौ राजा भैया। *(गायन)*
हौ राजा हौ भैया...

एत' आबिक हौ भैया, जुलूम बड़का केलहक
पापी सबहक हाथ मे किऐ प्राण अपन देलहक न हो...।
तोहर बाँचल रहब हो भैया, लोकक लेल जरूरी छै
हमरा सन हजारो बुधेसर, तोरा पर निहुछल जेतै हौ...।
(गद्य) हौ राजा भैया! हम तँ ओइ बैमनमा भरिया सबके मना केने रहियै। ई पापी-अपकर्मी सब बड़का षडयंत्र रचने छ हौ। तों एखने एइठाम सँ चलि जाहक भैया। तोरा हम्मर सप्पत छियह। तोरा अपन परजाक सप्पत छियह भैया। हौ तोरा एत' छोड़ि कोन मुँह ल'क' महिसौथा जबै हौ।

(सलहेस बुधेसर केँ छाती सँ लगबैए)

चूहड़मल्ल : वाह-वाह! केहन चिक्कन सप्पत-सपतान भ' रहलैए, तरेता मे राम-भरत-मिलन एहना भेल छल हेतै।

तरुमल्ल : हमरा तँ आँखि मे लोर आएल जाइ छै।

सूचोंग : यौ दोस। दुन्नू भैयारी मे बड़े परेम बुझाइ छै यौ। राज हंसक जोड़ लगै छै यौ।

भानचंद्र : तखन जोड़ा केँ कैले तोड़बहक समराट। दुनू केँ राखि लहक। रंगीला गढ़क काल-कोठरी मे घेंट मे घेंट जोड़िक' विहार करतै।

चूहड़मल्ल : जीवह हमर भागिनक सार! युवराज भानचंद्र! हमरा जरे रहिक' तोहर गियान तरक्की पर छह। बान्हि लैह दुनू भाइ केँ।

(भानचन्द्र आ तरुमल्ल सलहेस केँ बनहैए)

भानचंद्र : राजा सलहेस? आब कहक मोन केहन लगैए?

सलहेस : सारक हँसी-ठट्ठा मे जेहन लगै छै, तेहने लगैए।

भानचंद्र : *(थापर उसाहैत)* चूप्प। बेहूद्दा नहितन।

सलहेस : तोरा खानदान मे पाहुन-परक केँ गारिए-मारि सँ स्वागत होइ छै?

भानचंद्र : की होइ छै से तँ आगू-आगू बुझबहक! *(गायन)*
जखन मारि चटकन के तोहर मुँह लाल करब'
मारि बैत सँ पोन तोहर, दू-दालि क' फोड़ब न हो...।
(गद्य) मुँह देखै जाहक। चलल छलै दुरागमन कराब'।

सलहेस : बहिनक दुरागमन सत्ते के नइँ होब' देबहक?

भानचंद्र : सत्ते-झुट्ठे की? दुरागमनक तँ सपनो नइँ देख।

सलहेस : बड़ बढ़ियाँ। नइँ कराब' दुरागमन। घरक चीज छ', घरे मे रहि जेत'। अपनहु तँ कुमारे छ'।

एत' आबिक हौ भैया, जुलूम बड़का केलहक
पापी सबहक हाथ मे किऐ प्राण अपन देलहक न हो...।
तोहर बाँचल रहब हो भैया, लोकक लेल जरूरी छै
हमरा सन हजारो बुधेसर, तोरा पर निहुछल जेतै हौ...।
(गद्य) हौ राजा भैया! हम तँ ओइ बैमनमा भरिया सबके मना केने रहियै। ई पापी-अपकर्मी सब बड़का षडयंत्र रचने छ हौ। तों एखने एइठाम सँ चलि जाहक भैया। तोरा हम्मर सप्पत छियह। तोरा अपन परजाक सप्पत छियह भैया। हौ तोरा एत' छोड़ि कोन मुँह ल'क' महिसौथा जबै हौ।

(सलहेस बुधेसर केँ छाती सँ लगबैए)

चूहड़मल्ल : वाह-वाह! केहन चिक्कन सप्पत-सपतान भ' रहलैए, तरेता मे राम-भरत-मिलन एहना भेल छल हेतै।

तरुमल्ल : हमरा तँ आँखि मे लोर आएल जाइ छै।

सूचोंग : यौ दोस। दुन्नू भैयारी मे बड़े परेम बुझाइ छै यौ। राज हंसक जोड़ लगै छै यौ।

भानचंद्र : तखन जोड़ा केँ कैले तोड़बहक समराट। दुनू केँ राखि लहक। रंगीला गढ़क काल-कोठरी मे घेंट मे घेंट जोड़िक' विहार करतै।

चूहड़मल्ल : जीवह हमर भागिनक सार! युवराज भानचंद्र! हमरा जरे रहिक' तोहर गियान तरक्की पर छह। बान्हि लैह दुनू भाइ केँ।

(भानचन्द्र आ तरुमल्ल सलहेस केँ बनहैए)

भानचंद्र : राजा सलहेस? आब कहक मोन केहन लगैए?

सलहेस : सारक हँसी-ठट्ठा मे जेहन लगै छै, तेहने लगैए।

भानचंद्र : *(थापर उसाहैत)* चूप्प। बेहूद्दा नहितन।

सलहेस : तोरा खानदान मे पाहुन-परक केँ गारिए-मारि सँ स्वागत होइ छै?

भानचंद्र : की होइ छै से तँ आगू-आगू बुझबहक! *(गायन)*
जखन मारि चटकन के तोहर मुँह लाल करब'
मारि बैत सँ पोन तोहर, दू-दालि क' फोड़ब न हो...।
(गद्य) मुँह देखै जाहक। चलल छलै दुरागमन कराब'।

सलहेस : बहिनक दुरागमन सत्ते के नइँ होब' देबहक?

भानचंद्र : सत्ते-झूट्ठे की? दुरागमनक तँ सपनो नइँ देख।

सलहेस : बड़ बढ़ियाँ। नइँ कराब' दुरागमन। घरक चीज छ', घरे मे रहि जेत'। अपनहु तँ कुमारे छ'।

भानचंद्र : छाउर लगा क' सट्ट द' जीह खिचि लेब सार।

सूचोंग : आ-हा-हा। युवराज भानचंद्र। एहन जुलूम नइँ करियौ।

चूहड़मल्ल : एक तँ बहिनोइ!

तरुमल्ल : उपर सँ राजा!

चूहड़मल्ल : तइ पर सँ बंदी!

सूचोंग : तकरा संगे गारि-गराउज!

तरुमल्ल : हमरा तँ दया आबि रहलैए!

चूहड़मल्ल : अहा हा! बेचारा...

सूचोंग : यौ दोस सब। हमर तँ मोन होइ छै जे जान बकसि दियै।

(सलहेस मुस्कुराइए)

एना मुस्की नइँ मारियौ राजा सलहेस। अहाँ हमर शर्त मानि लियौ तखन देखियौ जे हम बकसै छी की नइँ।

सलहेस : अहाँ पहिने, अपन वचनक पालन करियौ सम्राट। बौआ बुधेसर के मुक्त करियौ तखन आगाँ बात करब?

सूचोंग : अहाँ अही ले तमसा गेलियै। नइँ तसइयौ। बुधेसर एखने मुक्त होइ छथि।

(तरुमल्ल बुधेसर केँ मुक्त करैए। बुधेसर सलहेसक पएर छुबैए)

बुधेसर : तों ई की केलहक भैया। हमर करेज तँ खंड-खंड भेल जाइ छै। आब हम कोन मुँह ल'क' महिसौथा जेबै हौ।

(गायन)

बहिन वनसप्ती आ मोती भैया केँ, कीए हम कहबै
परजा जे अकुलेतै से, केना क' बुझबै न हो...।

सलहेस : तोरा आँखि नोर देखि हे बउआ, हमरा अचरज लगलै
तोरा सन गियानी के कानब, सोभा नहिए दै छै न हो।

(गद्य)

आब तों महिसौथा जाहक बौआ। भगवती त्रिशूला तोरा अंतस मे आत्मविश्वास बनि दिप्तिमान रहथुन। ई निश्चित जानहक जे अंत मे सब शुभ हेतै।

(बुधेसर प्रस्थानोद्यत, गायन)

सूचोंग : कुमार बुधेसर!
हमरो जे समदिया जाक' कहबै मालिन चारू बहिनी के,

हमरा ल'ग समर्पण करै, ओ सात दिनक भीतरे न हो...।
से जँ नइँ भेलै तँ आठमे जे दिनमा, सलहेस केँ सूली चढ़ेबै
नइँ जँ समादिया कहबै अहाँ तँ, भाइ सँ हाथ धोइए लेबै न हो...।

सलहेस : सुनि ले बुधेसर, एहन सड़ल बतिया, मालिन केँ किन्नहुँ नइँ कहिहै।
किछु नइँ बिगाड़ि सकतै कियो सलहेसक, जानि तों सब निश्चिंत रहिए'
एहन कायर नइँ छै सलहेस...
एहन कायर नइँ छै सलहेस जे मालिन के लाथे प्राण बचौतै
मोका जँ पड़लै तँ हँसि क' ओ अपने, सूली पर चढ़ि जेतै न हो...

(गायनक संग सभक प्रस्थान)

दसम-दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। मंच पर हिरामन आ विपटा। गायन)

हिरामन : सुनिक' सूचोंगक समदिया।
विपटा : बुधेसर चलिए गेलै।
हिरामन : आ चलैत काल मोन जे ओकर
विपटा : लोथे सनक भारी भेलै न हो...
हिरामन : एक मोन होइ छै जे सबटा
विपटा : मालिन केँ कहतै।
हिरामन : फेर ओकरा राजा-भैयाक बतिया
विपटा : मोन पड़िए जाइ छै न हो...

(गायनक संग विपटा-हिरामनक प्रस्थान आ बुधेसरक प्रवेश)

बुधेसर : आ... *(गायन)*
भारी जे जाँच मे आइ पड़लें तों बुधेसरा
दूध-माछ दुनू बाँतर, भेलौ आइ तोरा
मालिन के समदिया जँ कहबें, अपनो मोन धिक्कारे छौ
नइँ जँ कहले तँ भारी अनर्थ आगम जोर मारै छौ।
हे ईश्वर! हे देवता-पितर!
हे बाबा डिहबार, हे परमात्मा!
एहि अबग्रहक फेरी सँ बँचबाक कोनो बाट देखाबह

अन्हार पसरल छै आगाँ मे, इजोतक उपाय बताबह
आ...
मालिनक समर्पण तँ असंभव छै
सोझाँ-सोंझी आक्रमण सँ भैयाक प्राण पर संकट छै।
की करियै? की नइँ करियै।
आ...
जाइ हम मालिन के सब टा खेरहा सुनेबै
जहिना जे ओ कहतै आब हम, तहिना-तहिना करबै न हो।
(गायनक संग प्रस्थान। हिरामन आ विपटाक प्रवेश। मंच पर रंगीला गढ़क कारागार बनैए। जाइ मे बंदी सलहेस।)

हिरामन : फुलबरिया दिस क' बौआ बुधेसर।

विपटा : जतरा बनेलकै।

हिरामन : कुसमा मालिन सँ आब ओ।

विपटा : राय-विचार करतै न हो...।

हिरामन : *(गद्य)* आब तों की करबें?

विपटा : तोहर की बिचार होइ छ'?

हिरामन : तों अपन विचार ने कह। स्त्रीगण केँ सेहो अपन बात कहबाक अधिकार छै।

विपटा : हूँ। कहलिय जे शिलानाथक मेला मे लहठी कीनि देब' ले' से कीनिए नइँ देलह आ...।

हिरामन : लिअ', पुछलियै विचार तँ मँगैए लहठी। बेस। चलह रंगीलागढ़।

विपटा : ओत' की छै हे?

हिरामन : ओत' राजा सलहेस लोहाक लहठी पहिरने जहल केँ महल बुझिक' पड़ल छै। *(गायन)*

विपटा : तँ चलियौ मे चलियौ सजना, रंगीलागढ़ दिस चलियौ।

हिरामन : राजा सलहेस केँ देख', जतरा बनबियौ न हे...।

(गायनक संग प्रस्थान। रंगीलागढ़क कारागार मे एसगर सलहेस)

सलहेस : (स्वगत) सम्राट सूचोंगक बात बुझ' मे अबैए। ओ राज्य-लोलुप, सत्ता-लोलुप, सैन्य-बलक घमंड मे मातल लोक छै। ओकरा अपना राज केँ बढ़ेबाक नशा चढ़ल छै। तरुमल्लक बात सेहो बुझै छिएइ। ओकर जीवने हेरा-फेरी आ अपकर्म मे बीतलैए। मुदा

मामा चूहड़मल्ल एना किऐ करै छै। कथीक कमी छै ओकरा। सती मामी, रेशमा सनक पत्नी छै। गुम्हड़ सन होनहार पुत्र छै। राज पकड़िया सन समृद्ध राजक महासेनापति भ'क' एहन छेछड़पनी किऐ करै छै?...खैर! जेहन करनी, तेहन भरनी।...नइँ जानि महिसौथा मे एखन की होइत हेतै। चकरा परहक बान्ह केँ सेहो बीच्चे मे छोड़िक' आब' पड़लै हमरा...धुर...हम तँ अनेरे के सोचनामा मे पड़ि गेलियै। मोतीराम सन वीरक बलिष्ठ बाहिक सुरक्षा मे छै महिसौथा आ चकराक बान्हक लेल तँ मालिन कुसमा छैहे... मालिन कुसमा...

(गायन)

कतेक आकर्षण भरल छै, तीन आखरक नाम मे
सिनेह आ करुणाक जेना, अवतार लगै छै न हो...।

(गद्य)

आ...हा...हा! केहन अलौकिक व्यक्तित्व छै मालिन सबहक...केहन उच्चकोटिक जीवन जीबै छै योगिनी सब।...हमर तँ वाके्-हरण भ' जाइए।...मनुक्खो एत्तेक महान भ' सकैए...!

(सूचोंगक प्रवेश)

सूचोंग : बैसल-बैसल की सब सोचै छियै राजा सलहेस।

सलहेस : अबियौ सम्राट सूचोंग। मोन प्रसन्न रहइए कि ने?

सूचोंग : प्रसन्ने-प्रसन्न रहैए राजा। प्रसन्ने-प्रसन्ने रहैए। आबहि तँ हमर प्रसन्नताक समय एलैए यौ। अहाँ कहियौ। मालिन सब मोन पड़ै छथि की ने?

सलहेस : आह सम्राट! ओइ दिव्य आत्मा सब केँ की बिसरल जा सकैए। ओ सब तँ शान्ति, करुणा, सिनेह आ आनंदक प्रतिमूर्ति सब छथि।

(गायन)

सूचोंग : भूक्खल मे कोबरा के खीर, जेना मोन पड़ै छै
अहाँक बात हमरो तँ ओहने सन लगै छै न यौ...।

सलहेस : निनानबे के फेरी मे पड़ल छी, अहाँ नहिए बुझबै
आन्हर लोकक लेल जेना, शीशा लगै छै न यौ...।

(गद्य)

सूचोंग : बाजि लियौ, बाजि लियौ। मुदा कने सोचियौ। आइ पाँच दिन बीतल। मुदा मालिन सबहक के कहय जे ओकर पठाओल कार कौओ नइँ आएल यौ।

(गायन)

ओ सब जँ आबिक' समर्पण केने रहितए तँ एखन अहाँ महिसौथा मे मौज करैत रहितौ ने यौ।

(गद्य)

एहने अकृतज्ञ प्रेमिका सब। परोक्ष होइते आँखि फेरि लेलक।

सलहेस : एहन, अकृतज्ञ ललना सबहक लेल अहीं किऐ उताहुल भेल छियै सम्राट!

सूचोंग : हमरा अहाँ जकाँ परेम नइँ करबाक छै राजा। हम तँ ओकरा सबहक ज्ञान आ, अनुभवक उपयोग गंगाधर धरि अपन राज-विस्तारक लेल करबै। किएक त...

(गायन) कुसमा सँ फराक होइते, अहाँक शक्ति अधिएतै तखन हमर सब सँ बड़का अड़चन हटिए जेतै न हो।

(गद्य) अहाँक बाद आर के? चूहड़मल्ल हमरे छै, तरुमल्ल आ भानचंद्र हमरे हँ मे हँ मिलबै छै। तखन

(गायन) विराटनगर, मोरंग आ पकड़िया-फकड़िया के की हम मोजर देबै।

सौंसे मिथिला हमहीं, एकक्षत्र राज करबै न यौ...।

सलहेस : आ...

अनेरे मृगतृष्णा के पाछाँ, हिरणा जकाँ दौड़ै छी
छल-बल सँ मालिन के बस मे कहियो क' ने सकै छी न यौ...।

(गद्य)

हे सम्राट! मालिन सबहक, उद्देश्य बड़ पैघ छै। ओ लोकनि उच्च कोटिक जीवन जीवैत, लोक-कल्याणक लेल विचरण करै छै। अहाँ केँ भारी जन-विद्रोहक सामना कर' पड़त सम्राट। ई हम अहाँ क' बता नइँ रहल छी। हम अहाँ केँ चेता रहल छी सम्राट सूचोंग।

सूचोंग : जकर प्राण हमरा मुट्ठी मे बंद होइ, से चेताबओ की बताबओ। विलाड़िक पाद! ने शुभे ने अशुभे।

सलहेस : हमर प्राण अहाँक मुट्ठी मे भ' सकैए सम्राट। मुदा हमर विचार आ भावना केँ बान्हल नइँ जा सकैए। नइँ रहता सलहेस मुदा भयमुक्त जीवनक मंत्र सँ भरल जनता रहतै। अहाँक लोभ आ घमंडक आगू पहाड़ जकाँ अड़ल रहत सम्राट। पहाड़ जकाँ अड़ल रहत से अहाँ जानि लिअ'।

सूचोंग : हा...हा...हा...यौ राजा सलहेस! तखन अहूँ एक टा बात जानिए लियौ। *(गायन)*

आइए भोरे मालिन कुसमा, अपना केँ सौंपि देलकै
काल्हि तक बाकी तीनू बहिनी, सेहो आबि जेतै न यौ...
पाँचम दिन हम मोरंग पर चढ़ि बैसबै
बूढ़बा केँ मारिक' भानचंद्र केँ राजा बनेबै न यौ! तखन?
तखन मोरंग राज मे जलसा करबै
अहाँक बियहुती केँ अपन पूतोहु बनेबै
चारु मालिनियाँ सँ नाच करेबै।
अहाँक मुँह पर कारी चून लेपबै।
माथ-मूड़िक' ओइ पर चौमुख दीप जरेबै न यौ...
आर तखन...

(गद्य)

तखन अहाँ केँ हम छोड़ि देब। अहाँक प्रतिष्ठा आ शक्ति केँ माटि मे मिलाक' पराजयक दाह आ अपमानक दंश ल'क' जीबाक लेल छोड़ि देब यौ...।

सलहेस : आ... *(गायन)*

हमरा लेल किऐ यौ सम्राट, घृणा एतेक पोसने छी
अहाँक जोड़ला खढ़ पर कहियो, पएर हम ने देने छी न यौ!

(गद्य)

अपना जनैत हम ककरो अहित नइँ केने छी। हम तँ समाज आ मातृभूमि लेल सन्नद्ध रहलौंए। अही दुआरे अहाँ हमरा पराजित आ अपमानित करबाक सपना देखै छी। बेस! बड़ बेस!

(गायन)

ठाढ़े ठाढ़ सपना देखै छी तँ देखियौ।
भरमे मे सुख पबै छी तँ पबियौ।
मुदा एक टा बात हमरो, गिरह बान्हि राखियौ,
जैह रोपबै ने अहाँ सैहे तँ कटबै ने यौ...

(गद्य)

अहाँ सलहेसक मनोबल केँ कहियो नइँ तोड़ि सकब सम्राट।

(गायन)

हेयौ...

केहनो-केहनो आपद-विपद केँ सलहेस ने लगबै छै,
आगू जे हेतै से हेतै करतब अपन करै छै ने यौ...
(व्यंग्यात्मक भाव सँ सूचोंगक प्रस्थान)

एगारहम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन बजैत रहैए। क्रमशः राति। डाँड पर कलश, हाथ मे थार नेने कुसमाक प्रवेश। थार मे बाटी-कटोरा सब आ एक टा दीप जरैत। एक कात एक टा पहरू औंघाइत। कुसमा कलश आ थार रखैए। थार मे सँ एक टा बाटी बहार क 'क' पहरू केँ दैए।)

कुसमा : *(दाबल स्वर मे गायन)* खीर तोरा लेल हम अनलियौ रे मनटून, हाली सन तों चाटि लें...

(समाजी द्वारा वाद्य-वादन। पहरू खीर चाट' लगैए। सलहेस आश्चर्य सँ देखैए। पहरू खाली बाटी देब' लगैए आ बेहोश भ' जाइए।)

सलहेस : देरी बड़ आइ भेलै हे नौड़िया,

कुसमा : हूँ...

(थार मे सँ बाटी, कटोरा सब सलहेसक आगाँ मे रखने जाइए...)

सलहेस : कोनो पाबनि छलै की न हे...

कुसमा : हूँ...

सलहेस : खैक तँ आइ बड़ सनगर लगै छै।

कुसमा : हूँ...

सलहेस : पानि सेहो मह-मह करै हे...

कुसमा : हूँ...

सलहेस : खैक सँ आइ बड़ अद्‌भुत गमक बहरा रहलैए।

कुसमा : हूँ...

(कुसमा एक टा बाटी मे अपना डँड़कसक घूँघरू सँ कोनो रसायन निकालिक' मिझरबैए।)

सलहेस : लगैए जे आइ कोनो खास दिन छलैए न हे...।

कुसमा : हूँ...

(रसायन बला द्रव केँ सलहेसक बंधन मे औंसेए)

सलहेस : आ...कथी लागी तोंहू हे नौड़िया, हमरा ओझरबै छ'
हमर सब बतिया पर तों, खाली हूँ, हूँ करै छ' न हे...।

कुसमा : आ...जनम जनम के भेलियै हम' तोहरो नौड़िया,
अपना मुँह सँ कहिक' हमरो, मोन भरि देलहक न हो।
हो अझुका तँ जे भेलै हो राजाजी अभिसारक रतिया
देवता दहिन भेलै जे ई अवसर भेटलै न हो...।

(गद्य)

सलहेस : वनदेवी मालिन कुसमा!

कुसमा : हँ हे जयवद्धर्न सलहेस!

(गायन)

सलहेस : केहन तोहर मति-गति भेल हे मालिन जे तों सूचोंग लग समर्पण केल'
आ फेर तों जहल मे भेष बदलिक' केना-केना एलहक न हे।

(गद्य)

हे मालिन। तों हमरा बताब' जे सूचोंगवा लग समर्पण कइले केलहक।

कुसमा : हे राजा! जे तोरा लग समर्पण क' देलकैए से दोसर ठाम की समर्पण करतै। से हम बड़ दिन तकाक' एत' एलियै। राजा सूचोंग गेलैए मोरंग पर चढ़ाइ कर'। बाकी लोक सब एक-एक घैल ताड़ी आगू मे रखने ढारि रहलैए। घैल सब मे तेहन ने रसायन मिझरौलियैए जे, जे घड़ी ने सब नीन्न गाब' लगतै।

सलहेस : मुदा तोहर ई भेष?

कुसमा : एक टा दासी सँ बदला-बदली केलियै। ओ पड़ल छै कुसमा बनिक' आ हम बनि गेलिय' तोहरो नौड़िया हो राजा जी। *(गायन)*
अपना हाथ-पएरक सिकुड़ि के हौ राजाजी, झिट्टी आब तों मारहक।

(सलहेस झिट्टी मारैए। सिक्कड़ि सब टूटि जाइए)

सलहेस : ओहन मोटका सिक्कुड़ि टूटलै, जादू कोन केलहक न हे।

कुसमा : एखने की देखलहक हे राजा, आगू-आगू देखहक
एहि बट्टाक आसव छाकिक' तखन बतबहक न हो।

(सलहेस आसव-पान कर' लगैए। सहसा किछु लोकक आगमनक आभास। सलहेस बेहोश भेल पहरूक भाला ल'क' लड़' लेल तैयार होइए।)

कुसमा : शांत राजा, शांत! हम कहलिय' ने जे आगू-आगू देखहक न हौ-

(अन्हारमाठ, करिकनहा, बुधेसर, कुनटा, ठनका, बनका आ फूचोंगक प्रवेश)

अन्हारमाठ : धन्न छहक हौ मीता! धन्न छहक! एहन-एहन करतब क' बैसे छहक जे अकिले गूम्म भ' जाइ छै।

करिकनहा : एहन-एहन गरू मे फँसनाइ तँ हमरा राजा मामाक मनपसंद खेल छियै। आफद केँ नोतनाइ तँ कियो हमरा मामा सँ सीखओ।

(गायन)

बुधेसर : हौ मीता भैया, हौ भागिन करिकनहा
हौ हमरे जे करणमा हौ सकले, जुलूम आइ अबितै
ने हम पकड़ैतियै ने, राजा भैया फँसिते न हो...

(गद्य)

कुसमा : हम तँ सुनने छलियै जे कुमार बुधेसर बिना पुछने बजिते ने छै। एखन बिना पुछने केना बाजि देलहक कुमार।

बुधेसर : ई हम नइँ, हमर अतमा बजलैए वनदेवी...

करिकनहा : अतमा तँ हम्मर धिक्कर द' रहलैए बौआ मामा। धिक्कार हमरा जे हम अरिबंड-बरिबंड कहबै छी! धिक्कार हमरा जे चोरेस्सरक जयकारा मोन केँ मतबै छी। धिक्कार हमरा जे अपर भीम कहा क' गुमानी भेल फिरै छी। *(गायन)*
हो जकरे बाढ़ि रोक' हमरा, मामा पठौलकै
तकरे चर-चीत लेब' मे, हम चुकि गेलियै न हो।

(गद्य)

अन्हारमाठ : जे बीति गेलै से बीति गेलै। जे भ' गेलै तकरा बिसरि जाहक भागिन, राजा करिकनहा। आगूक सुधि लेब' लेल तैयार भ' जाहक। उठबहक खंडा आ चलहक हमरा संगे। धरती परहक भार बढ़ि गेलैए हौ। *(गायन)*
हौ, अन्हर जकाँ हुहुएबै आब, बाढ़ि जकाँ तोपबै
हरहरी बज्र जकाँ हम, दुश्मनमा पर खसबै न हो।

करिकनहा : हौ एको टा बैमनमा आब एइ, मेदनि पर नइँ रहतै
छोपि-छोपि सबहक मूंड के, ढेरी हम बनेबै न हो...।

(गद्य)

फूचोंग : दोहाइ राजा सलहेस, दोहाइ। हमर गोहारि करियौ हे जयवर्द्धन।

बुधेसर : हे राजा भैया। वनदेवी कुसमाक योजनाक सफलता जे तों देखि रहल छहक ताइ मे युवराज फूचोंगक बड़ बेसी हाथ छै हौ।

(गायन)

हिरयण्कश्यपक घर मे प्रहलाद, बुझहक, कि रावणक विभीषण
हिनकर तँ मति-गति हमरा, लोक-हित दिस लगै छै न हो...

कुसमा : पुण्यक परतापे ककरो एहन पुत्र होइ छै
सूचोंगक तँ सद्गति हमरा हिनके हाथे लगै छै न हो...।

(गद्य)

फूचोंग : हे राजा सलहेस! हे वनदेवी कुसमा। हे उद्भट् वीर लोकनि। हमरा नीक जकाँ बुझल छै जे पिता सँ विमुख भ'क' हम बड़का पापक भागी भ' रहलियौए।

बुधेसर : अहाँक साधन पवित्र छै, अहाँक साध्य पवित्र छै। तखन अहाँ पापक भागी किन्नहु ने कहेबै युवराज।

कुसमा : कुमार बुधेसर ठीके कहलनि युवराज। अहाँ अनेरे अपना आत्मा केँ कष्ट द' रहल छियै।

फूचोंग : हे वनदेवी! हे जयवद्धर्न! हम जनै छियै जे हमर पिता अधलाह बाट ध' लेलखिन्हए यौ। मुदा।

(गायन) हमरो जे पिताजी यौ राजा, अधलाह बाट धेलखिन
लेकिन एक ने एक दिन ओहो, अपन गलती बुझथिन न यौ...।
तेँ, दसो ल'ह जोड़ि केँ यौ राजा, अभयदान मँगै छी
अपन पिताक प्राणक भीख ले' झोरी पसारै छी यौ...।

कुसमा : आ...
प्राणक दान ककरो कियो दइए ने सकैए
जीवन के लेन-देन तँ इश्वरे करै छै न हे...।

सलहेस : आ...
अही लागी हम तँ अनेरे, हथियार ने उठबै छी
आ बिना जरूरी के हम, रण सेहो नइँ टेकै छी न हे...।

(गद्य)

हे युवराज! अहाँ अधीर नइँ होइयौ। जाबत तक अत्यन्त आवश्यक नइँ भ' जाइ, ताबत तक हमर सेना अस्त्रक प्रयोग नइँ करैए आ ने करत।

फूचोंग : अहाँ धन्य छियै यौ राजा। अहाँ महान छियै।

कुसमा : हृदय केँ उदार आ मस्तिष्क के मुक्त क'क' देखियौ ने युवराज। मोनक दुआरि खोलिक' देखियौ। अहाँक अपना सोझाँ प्रेम आ आनन्दक साम्राज्य भेटत। जकरा स्वर्ग कहल जाइ छै, से भेटि जाएत युवराज। *(गायन)*

ठनका : हो भाइ बनका।

बनका : की भाइ ठनका

ठनका : देखहक, एक्खन केहन लगै छै।

बनका : जइ सँ खनहन भ' ने सकैए।

ठनका : रजबा ज'रए रमन-चमन छै।

बनका : हमरा नाचक मोन करैए।

ठनका : आगू-पाछू जोति जरैए।

बनका : हल्लूक-हल्लूक मोन लगैए।

(कुनटाक प्रवेश)

कुनटा : भगिना बाबू के चोरक दल हे राजाजी, गढ़ मे हेलि एलखिन गढ़ के फाटक मुँह बाबिक', रस्ता देने छथिन हो...।

(गद्य)

सलहेस : शाबास भागिन करिकनहा! शाब्बास।

करिकनहा : हौ मामा! तोरा एकबाल सँ हमर वीरभद्र चोरक दल मरक मरि जेतै मुदा कखनो पीठ नइँ देखौतइ न हो...।

सलहेस : बौआ बुधेसर।

बुधेसर : आज्ञा करहक राजा भैया।

सलहेस : सूचोंगक तीनू रानी आ महामंत्री केँ राजकीय आदरक संग बंदी बनाक' मोरंग नेने आबह। भागिन करिकनहा।

करिकनहा : आदेश दहक राजा मामा।

सलहेस : एइ रंगीलागढ़ पर महिसौथाक त्रिशूल ध्वज, मालिनक कमल ध्वज, आ बाघगढ़क बाघध्वज फहरा दहक। गढ़ पर अपन पहरा लगा दहक। आर तखन तों अपने पहुँचि जाहक मोरंगक रण पर।

अन्हारमाठ : हमरा की कहै छहक मीता?

सलहेस : तोहर नेतृत्व मे सब टा सेना मोरंगक रण पर एखने जतरा बनौतह। संग मे रहतह कुनटा। पीठे पर जुमतह भागिन कनिकनहा आ हम सलहेस...

अन्हारमाठ : तों नइँ हौ राजा। तों रण मे नइँ जेबहक। तों हम्मर सप्पत केँ कखनो

नहीं बिसरबहक।

सलहेस : तखन तोहू हम्मर बात नहि बिसरिहिक मीता।

अन्हारमाठ : सब टा मोन छै मीता!

सब : हर हर महादेव!

बुधेसर : जय मालिन कुसमा!

सब : जय मालिन कुसमा!

करिकनहा : जय राजा सलहेस!

सब : जय राजा सलहेस!

(सभक प्रस्थान। रणडंक वादन शुरू।)

बारहम दृश्य

(पछिला दृश्यक रण-डंक तेज लय मे बज' लगैए। युद्ध करैत जोड़ा सबहक प्रवेश। संवादक क्रम मे संगीत मिद्धम होयत। सभ सँ पहिने कुनटा आ भानचंद्रक लड़ैत प्रवेश।)

कुनटा : इहे भेलखिन राजाजी के सार।

भानचंद्र : खबरदार।

कुनटा : हाय रे कुलक नाक कटौनिहार।

भानचंद्र : जीह खिचि लेबौ बनचरबा चूहार।

कुनटा : बढ़िक' अबथुन परचट्टा कहौनिहार।

भानचंद्र : सब टा फूरफूरी एखने करबौ बहार।

कुनटा : बड़ चिक्कन, तखन सम्हारथुन हमर प्रहार।

(लड़ैत-लड़ैत प्रस्थान। लड़ैत करिकनहा आ चूहड़मल्लक प्रवेश।)

चूहड़ : आबि जो रे भगिना के भगिना।

करिकनहा : आबि गेलियै हौ मामा के मामा।

चूहड़ : देखियौ जे कथी पर तों अरिबंड-बरिबंड कहबै छें...

कनिकनहा : हमहू तँ महामल्लक, दम-गूर्दा देखबै न हो...।

चूहड़ : बात गढ़ब ककरा सँ सिखलें सलहेस की मलिनियाँ सँ...

कनिकनहा : तों केना बाजी जीतलहक कंस आ शकुनियाँ सँ न हो...।

चूहड़ : आइ हमरे हाथे चोरेसरा, यमपूर तों सिधारबें...

करिकनहा : हम तँ उनटा बान्हिक' तोरा, मेह लगा बन्हब' न हो...।

(लड़ैत प्रस्थान। सूचोंग आ अन्हारमाठक लड़ैत प्रवेश।)

सूचोंग : अहीं अन्हारमाठ कहबै छियौ यौ ?

अन्हारमाठ : अपन काल बुझहक हमरा।

सूचोंग : माने अहुँक माथ पर लागि गेल आदिनताक पहरा।

अन्हारमाठ : एखने बनेब' तों सरगोली पेठिया दिस जतरा।

सूचोंग : हमरा सँ पहिने ओत' अही ने जेबै यौ।

अन्हारमाठ : पहिने हमर हमला सँ तों बचिक' देखबै न रे...।

(लड़ैत प्रस्थान। तरुमल्ल केँ लोढ़िऔने ठनका-बनकाक प्रवेश। ओकरा पाछाँ भानचंद्र तथा कनिकनहा-चूहड़क लड़ैत प्रवेश)

ठनका : गाल नछोड़ भाइ, नाक नछोड़।

बनका : पेट भम्होर भाइ, पीठ भम्होड़।

तरुमल्ल : छोड़! रे हमरा छोड़।

ठनका : छिटकी मार, दही धोबिया-पछार।

बनका : टाँग तोड़ि दे, बाँहि उपारि ले।

तरुमल्ल : बचाबह इयार हौ, दौड़ह भजार।

ठनका : बाप नइँ औतौ तों अपने कर जोर।

बनका : आर केओ छौ तँ तकरो कर सोर।

तरुमल्ल : छोड़, हमरा छोड़!

ठनका-बनका : कान उपाड़ भाइ, आँखि एकर फोड़,
घेंट मचोड़ भाइ छाती केँ तोड़...

(तरुमल्लक मरणांतक चीत्कार। चूहड़मल्ल पराजित भ'क' कनिकनहा द्वारा हूमेचल जाइत। सूचोंग के घेंट काटक लेल अन्हारमाठ तरुआरि उसाहने, भानचंद्र केँ कुनटा बाँहि मचोड़ने)

करिकनहा : नइँ मीता मामा। नइँ। राजा मामाक इच्छा केँ तों मोन आब पारहक।
जिबिते पकड़हक सब केँ, जान नइँ मारहक न हौ।

(बंदी सब केँ बान्हिक' ल' गेल जाइए। गायनक संग हिरामनक प्रवेश।)

हिरामन : आ...
सीध बान्हिक' ढुसि जे लड़ए, फेर एक बेर हारलै।
झूठक छाती पर तँ आइ साँच चढ़ि बैसलै न हो...।
जेना-जेना भेलै एखन, होइत रहओ सदिखन

अही कामना सँ हिरदे-हिरामनक भरलै न हो...।
हे...यौ...
यौ चलियौ मे चलियौ महाजन, बरियाती चलियौ
सामर सतबंतीक दुरागमन कराब' मोरंग राज चलियौ न यौ।
(गायनक संग मोरंग राजक दरबार बनाओल जाइए।)

तेरहम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुनक संग मोरंगक राजदरबार लगैए। मानचंद्र, सलहेस, कुसमा, अन्हारमाठ, बुधेसर, करिकनहा, चूहड़मल्ल, भानचंद्र, सूचोंग, आ फूचोंग यथास्थान। गायनक समाप्तिक संग हिरामनक प्रस्थान।)

मानचंद्र : आ... *(गायन)*
धन भाग हमरो जे सुदिन एहन देखलौ
धन भाग हमरो जे सलहेस जमाय पओलौं
धन भाग हमरो जे मालिनक पएर एत' पड़लै
धन भाग मोरंगक जे एत' सूचोंगक मति फिड़लै न हो...।
जीबू राजा सलहेस अहाँ, जूग-जूग जीबू
दिन दुन्ना, राति चौगुन्ना, अहाँक एकबाल बढ़तै न हो...।

फूचोंग : हे मालिन आ राजा...
अहाँक उपकार हम जीता जिनगी नइँ बिसरबै
वैह सब हम करबै जे अहाँ सँ सीखलियै
आब तँ हम मानव जीवनक मोल बुझि गेलियै न हो...।

कुसमा-सलहेस : आ...
परजा के पुत बुझिबै, सेबक बनि रहबै
जड़-चेतन सब पर युवराज करुणा जे करबै।

सलहेस : जीवन सँ खेल खेलाइ केँ कोशिसो ने करबै।

कुसमा : हिरदय मे प्रेम खाली, प्रेमे टा रखबै

कुसमा-सलहेस : लोकक गोहारि मे अप्पन, जीवन लगेबै न हो...।

(गद्य)

सलहेस : हे सम्राट सूचोंग। अहाँक कृपा सँ बेस नाटकीय आ रक्तिम दुरागमन रहलै हम्मर।

सूचोंग : हम लज्जित छियै यौ राजा। अपगरानि सँ हमर करेज दरकल जा

रहल छै यौ। हमर अतमा हमरा हुथिक' बकानि पिअओने जा रहल छै यौ।

राजा जी यौ रा...रा...यौ...

अहाँक सार के हम, उनटा पाठ पढ़ौलियै

कुमार बुधेसर केँ सूली पर चढ़बै छलियै यौ...।

अहाँ सन देवता केँ बान्हिक' गारियो-गुपुत केलौंउ

मालिन सन देवी केँ हम कुटनी बनब' चाहलौह न यौ...।

मुदा... *(गद्य)*

मुदा अहाँ हमर सब अपराध बिसरि गेलियै यौ। राजा जकाँ सम्मान देलियै। जीतल राज आपस घूरेलियै। अहाँ हमरा डाँटियौ, फटकारियौ, दंड जरिमाना करियौ, हमरा जूत्ता सँ मारियौ, हमरा सँ नेराओल थूक चटबबियौ।

कुसमा : जे दंड एखन अहाँ भोगि रहल छियै सम्राट वैह सभ सँ पैघ दंड छियै। जाहि दंडक अहाँ याचना क' रहल छियै से मात्र ओकरे लेल छै जे स्वभाव सँ अपराधी हो।

सलहेस : तैयो जँ अहाँ दंडक लेल ब्याकुल होइ छी तँ बेस। अहाँ केँ दंड भेंटत। की वनदेवी।

सलहेस : अहाँक भोट प्रदेश, अलभ्य जड़ी-बूटी सभक खान छियै। से हमर इच्छा छै जे अहाँक क्षेत्र, योगिनी, वनदेवी-मालिन सभक लेल विचरण, अन्वेषण आ औषधि संकलनक वास्ते उन्मुक्त रहनि।

कुसमा : आर...

(गायन)

गोहारिक काज लेल' केन्द्र सब बनबियौ

समस्या निवारण के सब, बेबस्था धरबियौ

गहवर कहेतइ ओहो राजाजी के नाम सँ

सब राजक लोक केँ ओ आपस मे जोड़तै न हे...।

सूचोंग-फूचोंग : जहिना अहाँ कहलियै अइ मालिन, तहिना हम सब करबै

लोके ले' जीबै हम सब, लोके ले' मरबै ने यइ...।

(गद्य)

बुधेसर : धन्य वनदेवी मालिन। तों धन्य छहक। बाते-बात मे तों तँ अनमोल बात कहि देलहक। लोक-शक्तिक सिरजनक तों बाट खोलि देलहक हे योगिनी। लोक सँ लोक जुटतै। दुखक निदान करतै।

सुख केँ मिलि-बाँटि क' भोगतै। प्रेम आ आनन्दक बरखा हेतै हे देवी।

मानचंद्र : तखन पहिल गहवर मोरंग मे बनतै। सलहेसक धूजाक नीचाँ सब एक भ' जेतै।

समाजी : आ...*(गायन के संग हिरामनक प्रवेश)*

हिरामन : एलिय' मे एलिय' हे मालिन बहिनी हमहू एलिय'
आ दसो लह जोड़िक' जे परिनाम सब केँ केलिय' न हे।

(गद्य)

कुसमा : रे हिरामन, रे हिरामन। कत'-कत' सँ घुमि एलही रे हिरामन!

हिरामन : हम तँ कत'-कत' ने गेलिय' *(गायन)*
जाक' पकड़िया कूल्हेसर सँ मिललौं
चूहड़ा के कुकर्म ओकरा सुनेलौं
समदागढ़ मे खबरि खिरेलौं
तरुमल्ल मरलै सेहो बतेलौं
बाघगढ़ मे बहिन वनसप्ती सँ मिललौं
गोड़ लागि हुनकर महिसौथा गेलौं
मोतीराम बौरहबा एक टा पतिया लिखलकै
सैहे पतिया देब' मालिन, मोरंग हम एलौ न हे...।

कुसमा : सुनियौ मे सुनियौ राजाजी, आ सकल हे दरबार
पतिया मे मोतीराम बौरहबा, कहैए राजा कुल्हेसरक विचार न हे...।

(गद्य)

हे राजा! पकड़िया नरेश कुल्हेसरक आग्रह जे हुनकर महासेनापति चूहड़मल्ल के नइँ छोड़ल जाइन। ओ, हिनका, अपने सँ सजाए देब' चाहै छथि।

चूहड़ : रे के की मइया बाघ बियानी। कुल्हेसर के एत्ते दम कत' सँ एलै जे ओ हमरा सजाए देतै। हमर एक नजरि पर ओकर उपरका साँस उपर आ निचकाँ हवा निच्चे रहि जाइ छै।

सलहेस : मामा चूहड़मल्ल।

चूहड़ : आज्ञा भागिन।

सलहेस : तोरा पर राजद्रोहक आरोप छ'।

चूहड़ : हौ भागिन। तों हमरा सूचोंगवा सन पिद्दी नइँ बुझहक जे एक्के फूक मे खखड़ी जकाँ उड़ि जेबै आ कान' कलप' लगबै। तों अनेरे

भरम मे पड़ै छ'। हमर मोने हमर कानून छै। हम कोनो दरोह-फरोह नइँ बुझै छियै।

अन्हारमाठ : सूचोंगक सहयोग जे केलहक से अपना राजा सँ अनुमति नेने छलहक।

चूहड़ : हम ओकर अनुमति की लेबै। वैह हमरा अनुमति सँ पकड़िया राज चलबै छै।

सलहेस : तोरा पर दास-दासीक व्यापार आ तस्करी-चोरीक आरोप सेहो छ' मामा।

चूहड़ : एहन-एहन बात सब पर कान देनाइ हम अपन अपमान बुझै छियै भागिन।

सलहेस : बेस! ई सब टा बात तों अपना राजाक सोझाँ करिह' मामा। एखन तों मोरंग-राज मे बंदी रहबह।

मानचंद्र : आब हमरो कुलांगारक विचार भ' जइतै।

भानचंद्र : हम अपन गलती मानै छी। हमरा माफी दहक पाहुन।

करिकनहा : वाह रे वाह। हारि गेलह तँ पाहुन...

भानचंद्र : हम कोनो दंड भोगबाक लेल तैयार छी पाहुन...

सलहेस : नइँ भानचंद्र। कानह नइँ। वीर बनह। कननाइ, वीर केँ शोभा नइँ दै छै।

भानचंद्र : तों अपना पएर तर शरण दहक पाहुन...

सलहेस : पएर तर किऐ। तोहर स्थान तँ हमरा हृदय मे छ' हौ...।

अन्हारमाठ : हँ-हँ। किएक ने। सार ने भेलखुन तोहर...।

(सब हँसैए। कुसमा आ हिरामन सामर केँ अनैए।)

कुसमा : अपन-अपन नजरि एमहर क' खिरबै जइयौ।

(सब देखैए। सामर आ सलहेस सोझाँ सोझी। मानचंद्र बेटी केँ, कुसमा सलहेस केँ ल'क' आगू बढ़ैए। भानचंद्र गेंठ जोड़बा करै छै। समाजी द्वारा गायन।)

समाजी : राज जे दुलारी बेटी सासुर बसती कि सासुर बसती
बाबाक आँगन छूटल जाए...।

(गायनक संग सबहक प्रस्थान)

चौदहम दृश्य

(पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइत-होइत मंच पर फुलवारी बनैए। फुलवारी मे सलहेस, बुधेसर, कुसमा, सामर, ठनका-

बनका, हिरामन, कुनटा, अन्हारमाठ आ करिकनहा। पछिला दृश्यक धुन समाप्त होइए। गायन)

सामर : आ...
नामे टा सुनै छलियै, हमे मालिन बहिना के
बड़ भाग हमर जे ओकरे, संग-साथ भेटलै न हो...।
तोहर मुँह देखिक' गे बहिना, आब दिन कटबै
आ तोहर हाथ हम आब, कहियो ने छोड़बै हे...।

कुसमा : हमर-तोहर संग हे रानी, मोने बसल रहतै
देहक-संग ले' ने भोगह पीर हे।
आहे हमहू तँ भेलिय' हे रानी, गोकुला के रधिया
भरमल करियै जमुनाक तीर हे।

(गद्य)

हे रानी। शुभ-शुभ क' महिसौथा क' जतरा बनबहक। ओकर खाली पड़ल पटरानीरक सिंहासन पर श्री चढ़बहक।

बुधेसर : ईश्वर साक्षी रहता। ई प्रकृति साक्षी रहती। धरती, पवन आ गगन साक्षी रहए। आइ तक हम ककरो सँ किछु ने मँगलौं। कहियो तकर आवश्यकतो नइँ पड़ल, मुदा आइ...। आइ हम तोरा सँ मँगइ छिय' हे वनदेवी। हे अनंग, कुसमा... *(गायन)*
आ...
हमरो जे अरजिया हे मालिन, सुनियौ मिनतिया न हे...
हमरो जे मिनतिया हे देवी, आइ अहाँ मानियौ।
आब महिसौथे मे जे अहूँ वास करियौ न हे...।
अहाँक छाँह रहने हे मालिन, सब सुख भेटतै
एतबे अरजिया हमरो, आइ मानि जइयौ न हे...

(गद्य)

सामर : हे मालिन बहिना। अहाँ आब बोने-बोने नइँ भरमबै। अहाँ आब हमरा एसगर नइँ छोड़बै। अहाँ आब हमरा संगे रहबै। सबहक संगे महिसौथा चलबै।

ठनका : हों...

बनका : गों...

कुनटा : कथी ले सोचै छथिन?

कुसमा : बड़ सुख लगैए तोरा सभक प्रेम सँ। संसार मे प्रेम सत्य छी। प्रेमे

सौरभ छी। प्रेम नइँ तँ किछु नइँ। एकरा बिना तँ मानव-जीवन केँ कोकिनल कोढ़िला बुझहक हे रानी।

(गायन)

समाजी : प्रेम सत्य छै, प्रेम छै सौरभ, प्रेमक भाव चिरंतन,
बिनु मकरंदक कुसुम हो तहिना, प्रेम बिना की जीवन।

कुसमा : कालक स्त्रोत पर भासैत जखन ने हम रहब, ने सलहेस रहता। तखनो रहतै ई प्रेम। कुसमा-सलहेसक संदेश। ओकर काज हरदम रहतै हे रानी।

सलहेस : तोरा बिना हम की, हमर प्रेम की, हमर संदेश की आ हमर काज की। तों हमर हाथ पकड़ि क' जे करबै छ' हम सैह ने करै छी हे मालिन।

कुसमा : हे राजा! भाव-शरीर सँ हम हरदम तोरे संग रहै छी आ तों हरदम हमरा संग रहै छ'। तखन मोन मलिन किऐ करै छहक? जाहक। हे राजा-रानी जाह। भगवती तोरा सब केँ भोग देथुन...

(विदा लेबाक क्षण। केओ फराक नइँ होब' चाहैए। कुसमा सामर, ठनका-बनका, कुनटा, बुधेसर केँ दुलार मलार करैए। दुरगा आबि क' कुसमा केँ एक कात आ बाकी के दोसर कात करैए। समाजी द्वारा सुमिरनक धुन। हिरामन आगाँ आबि जाइए।)

हिरामन : हे बाबू भैया, मैया बहिनियाँ लोकनि। कुणाल विरचित भंगिमाक ई नाटक, कुसमा-सलहेस एत्तहि शेष होइए।

(सब पात्र आबि जाइए। दर्शक केँ नमस्कार करैए। समवेत गायन एवं नृत्य।)

प्रेम सत्य छै, प्रेम छै सौरभ, प्रेमक भाव चिरंतन,
बिनु मकरन्दक कुसुम हो तहिना, प्रेम बिना की जीवन।

(अंतिका, अप्रैल-सितंबर, 2006)

प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!

पात्र परिचय

स्थान : वन-प्रदेश।

मंच : त्रिस्तरीय। स्तरक उपयोग कखनो प्लेटफार्म, कखनो सीढ़ी जकाँ।

भूमिका : अभिनेता-दू टा

भारद्वाज-एक-दू

पुरुष

इंद्र

वृद्ध

वशिष्ठ

अभिनेत्री-दू टा!

श्रुवावती

सखी

स्त्री

(पुरुष-स्त्री दू कात सँ, एक्के संगे प्रवेश करैए।)

दुनू : नमस्कार!

पुरुष : हे सुधिजन, सज्जनवृन्द!

स्त्री : कथाक नायिका छथि श्रुवावती।

पुरुष : नायिका की, सब किछु छथि श्रुवावती।

दुनू : आह! श्रुवावती

(अभिनेता एक, भारद्वाज...दू, इंद्र बनैए। अभिनेत्री एक, श्रुवावती आ दू, सखी बन' लगैए।)

पुरुष : श्रुवावती। ऋषि कन्या। शीलवती। सुन्नरि। युवा।

स्त्री : पिता, महर्षि भारद्वाजक आब एकहि टा चिंता।

पुरुष : श्रुवावतीक विवाह!

स्त्री : सुन्दर, सौम्य, प्रसन्नमुख।

पुरुष : आश्रम मे सबहक प्रिय।

स्त्री : निष्कपट, विनयशील आ दृढ़।

पुरुष : महर्षि भारद्वाजक सब सँ पैघ चिंताक कारण छल।

(प्रकाश भारद्वाज पर।)

भारद्वाज : हमर हृदय शांत नइँ अछि। ई निश्चित नइँ भ' रहल अछि जे की हैत। हम, तपस्या मे लीन हेबाक लेल व्याकुल छी। परंतु श्रुवावती। आह! हमर पुत्री। प्रकृतिक सौंदर्यक मूर्तिरूप! हमर सौम्य सुशील कन्या। कोनो पुण्यक फल थिकीह श्रुवा! आइ हुनके ल' क' मोन अशांत अछि।...

हम हिमालय प्रस्थान करब। श्रुवा केँ पतिक संरक्षण भेटनि। श्रुवावती विवाह योग्य छथि। विवाह करथु।...

परंतु श्रुवावती किछु कहैत नइँ छथि। ओ किछु कहतीह नइँ, अपन सहमति देतीह नइँ। ताबत हम की क' सकैत छी।...आह! मातृहीना हमर पुत्री।...प्राय: सब संभावित योग्य ऋषि-पुत्रक प्रस्ताव हम देलहुँ। परंतु श्रुवावती किछु बजैत किऐ नइँ छथि?

(प्रकाश मे परिवर्तन। संध्या सन प्रभाव।)

पुरुष : *(उद्घोषक जकाँ)* दिन ढरि रहल छल। सूर्य अपना गति सँ अस्ताचलगामी भ' रहल छलाह। क्षितिजक कोर सँ उभरैत लालिमा पहिने सुंदर भ' गेल आ तखने बिलाए लागल अन्हार मे। पक्षीक झुंड घर घुर' लागल। सूर्यक किरिन आगाँक सरिता मे डूबि गेल। तरेगन उग' लगला।

(भारद्वाज केँ संध्या आ अंधकारक अनुभव होइत छै।)

भारद्वाज : ओह! संध्या भ' गेल। अन्हार किएक बेसी लगैत अछि। ओ! आश्रम मे दीप नइँ बरल। आश्चर्य! आइ तक मोन नइँ जे ओ कोनो काज मे विलम्ब केने हो!

(भारद्वाज, श्रुवावती केँ तकैत छथि।)

श्रुवावती! श्रुवावती!

(भारद्वाज व्यग्र आ चिंतित। आवेश मे अबै छथि।)

श्रुवावती! श्रुवावती!

(श्रुवावतीक प्रवेश)

ओह श्रुवावती! एतेक विलम्ब किऐ भेल। हमर तँ हृदय अस्थिर भ' उठल छल।

श्रुवावती : क्षमा करब बाबूजी। संभवत: अपने केँ ज्ञात नइँ।

भारद्वाज : ज्ञात नइँ! की ज्ञात नइँ हमरा!

श्रुवावती : अनुश्रीक माता!

भारद्वाज : माता...

श्रुवावती : ज्वर पीड़िता...

भारद्वाज : हँ...नइँ...की भेलनि हुनका?

श्रुवावती : ज्वर बढ़ि गेलिन। लेप बनाबक लेल औषधि ताक' गेल रही। लौट' मे विलम्ब भेल।

भारद्वाज : कोनो बात नइँ। नीक उद्देश्य सँ नीक काजक लेल गेल रही। उचित केलहुँ। औषधिक ज्ञान तँ अछिए अहाँ केँ।

श्रुवावती : जे ज्ञान अहाँ देलहुँ, से ज्ञान अछि।

भारद्वाज : तँ हमर ज्ञानी पुत्री, एतनी टा बात किऐ नइँ बूझैत छथि?

श्रुवावती : ओह बाबूजी! पुनः वैह वार्ता!

भारद्वाज : नइँ पुत्री!

श्रुवावती : अच्छा सुनू! अहाँक मोन हिमालयक प्रस्थान कर'क लेल उताहुल अछि।

भारद्वाज : सत्य वचन!

श्रुवावती : तँ प्रस्थान करू बाबूजी!

भारद्वाज : परंतु अहाँ!

श्रुवावती : हमरा अहाँ स्वतंत्र आ स्वावलंबी व्यक्ति बनौलहुँ बाबू जी! अहाँ हमर रचयिता। हे ब्रह्मा! अहाँ हमरा ज्ञान देलहुँ। विश्वास करू हमरा पर।

भारद्वाज : विश्वास अछि। अपनहुँ सँ बेसी विश्वास अछि। मुदा स्त्री केँ भाइ, पिता वा पतिएक संग रहबाक चाही।

श्रुवावती : किऐ? हम अपन रक्षा आ देखभाल स्वयं नइँ क' सकैत छी बाबू जी!

भारद्वाज : क' सकैत छी पुत्री! किंतु!

श्रुवावती : नइँ! कोनहु किंतु-परंतु नइँ पिता!

भारद्वाज : परंतु पुत्री! परंपरा आ विधान।

श्रुवावती : अहीं कहने छी, अपवादो सँ नियमक पुष्टि होइत छै। हमरा अहाँ अपवाद बन' दिअ' बाबूजी! अहाँ हिमालय प्रस्थान करू! हम एत्त' रहब! सबहक संगे। आनन्द सँ रहब।

भारद्वाज : हम बुझ' मे असमर्थ छी। एक युवतीक कामना स्वस्थ, सुंदर, संपन्न, शौर्यवान युवके ने हेतै।

श्रुवावती : जकरा सँ प्रेम हो! हृदय मे प्रेम नइँ तँ विवाह संभव केना? हमरा तँ आइ तक एहन युवक सँ भेट नइँ भेल!

भारद्वाज : स्वाभाविके! अहाँ आश्रम वासिनी। एहन युवक तपोवन मे नइँ, राजधानी बसैत छै। अहाँ लेल राजकुलक सुशील कुमारक चयन करब! ओ अहाँ केँ जीवनक सब सुख आनंद देत। पुत्री! विवाहयोग्य कन्याक विवाहे उचित!

श्रुवावती : क्षमा करब बाबूजी। एहि विषय पर हम ठीक सँ सोचि नइँ पौलहुँ अछि। परंतु एहि समस्या मे अहाँ नइँ ओझराउ। अहाँ अपन योजनाक कार्यान्वयन करू बाबूजी!

भारद्वाज : अहाँ, विवाह-योग्य कन्या भ'क' विवाह सँ अस्वीकार करैत छी?

श्रुवावती : नइँ बाबूजी, हम अस्वीकार नइँ करैत छी।

भारद्वाज : तखन?

श्रुवावती : विवाह जीवन भरिक संबंध छै ने बाबूजी।

भारद्वाज : निःसंदेह।

श्रुवावती : एक-दोसराक लेल अर्थवान भेनाइ सेहो निस्संदेह।

भारद्वाज : अर्थवान! हँ-हँ! निस्संदेह!

श्रुवावती : जखने किओ हमरा लेल अर्थवान भ' जैत, हम विवाह क' लेब!

भारद्वाज : श्रुवावती।

श्रुवावती : बाबूजी!

भारद्वाज : हे परमेश्वर! सभ टा जिद हिनके द' देलियनि? बेस! देलियनि तँ साक्षी रहब। हिनकर रक्षा करबनि। हमरा कन्यादानक कर्तव्य सँ बिना मुक्त केनहि पठा रहलि छथि श्रुवावती। *(भावुक होइत)* हमरा अपन फूलसन श्रुवावतीक चिंता नइँ छोड़ैए!

श्रुवावती : अहाँ चिंताक त्याग करू बाबूजी! हम सक्षम छी। हमरा पर विश्वास करू!

भारद्वाज : विश्वासे विश्वास अछि। परंतु मोन नइँ मानैत अछि। ऋषिक मोन एक आ पिताक मोन दोसर होइ छै। बेस! जे अहाँक इच्छा पुत्री! हम हिमालय दिस प्रस्थान करैत छी। हे आश्रमवासी! जलज-वनज। श्रुवावती आब अहाँक पुत्री!

श्रुवावती : हमरा आशीर्वाद दिअ बाबूजी।

भारद्वाज : हम आशीर्वाद देब पुत्री! सुखी रही। गृहिणी जकाँ की तपस्विनी जकाँ।

अहाँ सुखी रहू। प्रसन्न रहू।

(क्रमशः भारद्वाजक प्रस्थान! श्रुवावती नेपथ्य मे। शीर्ष सतह पर पुरुष!)

पुरुष : महर्षि भारद्वाज हिमालयक जतरा बनाइए लेलनि। वैह टा कने नव, बाकी ओहिनाक ओहिना। ओहिना राति, ओहिना भोर!

(परातीक स्वर। एक कात श्रुवावती अबैए आ अनुश्री सँ भेंट होइ छै। फूल लोढ़बाक कार्य व्यापार चलि रहल छै। एकाएक एक विशिष्ट ध्वनि। करुण पुकार सन...)

अनुश्री : श्रुवा!

श्रुवा. : हँ अनु!

अनु. : अहाँ अकानलहुँ।

श्रुवा. : की?

अनु. : एखने जे ध्वनि छलै?

श्रुवा. : एक पक्षीक ध्वनि।

(ध्वनि फेर होइत छै।)

अनु. : यैह ध्वनि।

श्रुवा. : नव पक्षी बुझाइए।

अनु. : नव पक्षी! कोनो प्रेमी तँ ने पक्षी रूप धारण केलनि।

श्रुवा. : ओहो अनु! अहाँ बात केँ तीड़ैत किऐ छी? नव पक्षी तेँ की ओ प्रेमीक अवतार?

अनु. : किऐ? अहाँ केँ से नइँ लगैए?

श्रुवा. : नइँ लगैए।

अनु. : अहाँ मिथ्या तँ नइँ बजैत छी!

श्रुवा. : नइँ!

अनु. : तखन अहाँ की करैत छी!

श्रुवा. : एखन तँ फूल लोढ़ैत छी। अहाँ डाली राखि जलपात्र ल'क' हमरे आश्रम आउ ने!

अनु. : हँ! हम अबैत छी!

(दुनू सखी, दुनू कात जाइए। उपरका शीर्ष-सतह पर पुरुष।)

पुरुष : कखनो क' एना हैत, ओना ई होइतो छै कखनो क'। कखनो क' हैत, क्षणांशक लेल हैत। मुदा संपूर्ण जीवनक लेल निर्णायक भ' जायत।

(प्रकाश परिवर्तन। श्रुवावती घैलक संग प्रवेश। साँझक आगमन भ' रहल छलै। श्रुवावती पानि लेब' सरिता तट जाइत छथि। आब पानि भर' लगैत छथि। थम्हि जाइ छथि। पानि केँ थम्ह' दैत छथि। ओत' एक प्रतिरूप छै। एक सुदर्शन युवकक प्रतिरूप!)

(पानि भरैत श्रुवावती आ पाछाँ मे ठाढ़ इंद्र फ्रीज भेल अछि।)

(श्रुवावती घुमिक' पाछू देखैए। इन्द्र अंतर्धान भ' जाइत छथि।)

(श्रुवावतीक गति असामान्य भ' जाइत छनि।)

(आ बिना पानि भरनहि, खाली घट नेने वापस अबैत छथि। बुझ' मे अबैत छनि, घुरिक' पानि भर' लगैत छथि। उनटा घैल लगबैत छथि। घैल छिटकि जाइत छै। फुटबाक स्वर अबै छै।)

पुरुष : श्रुवावतीक जीवन दलमलित भ' गेल। किछु-किछु नव-नव!

(अनुश्रीक प्रवेश!)

अनु. : श्रुवा! श्रुवा! ओह श्रुवा! की भ' गेलए अहाँ केँ। अहाँ हमरा कहू श्रुवावती। अहाँ कत' हेरायल रहैत छी। देखू तँ कत्ते दुबरा गेल छी अहाँ?

श्रुवावती : *(चौंकैत सन)* ओह! अनुश्री! केहन दीब तँ छी हम! अहाँ अपने एते दिन कत' रही!

अनु. : एते दिन। काल्हिए भेट भेल छल आ आइ एत्ते दिन...!

श्रुवावती : जनैत छी अनुश्री। अहाँ ठीके कहने रही जे कोनो नव पक्षी एलैए। हमरो लगैए जेना हमरा आस-पास केओ अछि। सन्नद्ध, सतर्क।

अनु. : के अछि ओ?

श्रुवावती : ओ? हृदय मे अंकित अछि। मुदा व्यक्त केना करू!

अनु. : कोशिश तँ करू! कने हमहूँ तँ बूझिऐ! के छलाह ओ?

(इन्द्रक प्रवेश!)

इन्द्र : ओ हम छलहुँ ऋषि-कन्या!

(श्रुवावती आ अनुश्री चौंकि उठैए।)

ओहि दिन भ्रमण समय अहाँ केँ देखल। आह! आँखि अँटकि गेल। आ आब!

श्रुवावती : आब?

इन्द्र : हृदय-पटल पर ओकर चित्र अंकित भ' गेल अछि!

श्रुवावती : ई वैह छथि। वैह। एनमेन!

इन्द्र : हँ, ऋषि-कन्या। हम वैह छी।

श्रुवावती : आह! हमर हृदय-रत्न!

इन्द्र : बाजू ऋषि-कन्या। जे अहाँक मोन मे अछि से बाजू।

श्रुवावती : हम अहाँ सँ प्रेम करैत छी अनाम कुमार।

इन्द्र : नइँ, ऋषि कन्या। ने हम अनाम छी आ ने कुमार। अपितु हम तँ बहु-विवाहित छी। हम इन्द्र कहबैत छी।

श्रुवा+अनु : इन्द्र! देवराज इन्द्र!

इन्द्र : हँ, देवराज इन्द्र। स्वर्गाधिपति। बाजू ऋषि-कन्या। अहाँ आबहु हमरा सँ प्रेम करैत छी।

श्रुवा. : निश्चिते हे पुरुष।

इन्द्र : हम पुरुष नइँ छी।

श्रुवावती : ऐं।

इन्द्र : हम देवता छी। स्वर्गक वासी। अहाँ मनुख। धराक प्राणी। देवता आ मनुख मे रागात्मक संबंध संभव नइँ।

श्रुवावती : ई नइँ सत्य।

इन्द्र : ई सत्य। ध्रुव सत्य। अटल सत्य। हँ...एक टा उपाय अछि। हमरा अहाँक मिलन भ' सकैए। बात मानी तँ कही।

श्रुवावती : पहिने सुनब। मान'बला हैत तखन मानब।

इन्द्र : सुनू ऋषि-कन्या। अपन मनुख योनि मे अहाँ एक सुयोग्य युवा ऋषि जेना वशिष्ठ सँ विवाह करू। धर्मयुक्त जीवनक आनन्द लिअ'। मरणोपरांत स्वर्ग लोक आउ। हमर-अहाँक मिलन सुनिश्चित।

श्रुवावती : नइँ। मरणोपरांत नइँ। एहि जीवन मे।

इन्द्र : एहि जीवन मे तँ संभव नइँ।

श्रुवा. : संभव-असंभव अहाँ बुझू। अहाँ केँ हमरा सँ प्रेम नइँ। कोनो बात नइँ। मुक्त छी अहाँ। जाउ। जत' जायब जाउ। अहाँ इन्द्र छी कि जे छी, ताहि सँ हमरा कोनो मतलब नइँ। हम अहाँ केँ अप्पन मानलहुँ। ई हम्मर स्वभाव आ इच्छाक बात अछि। अहाँ स्वतंत्र छी।

(श्रुवावती चुप भ' जाइए। इन्द्र किछु क्षण देखैत प्रस्थान करैए। अनुश्री, श्रुवावतीक लग अबैत अछि। उपरका सतह पर पुरुष। श्रुवावतीक दिनचर्या।)

पुरुष : अपना धुन मे श्रुवावती। मगन-मोन, किछु मधुर-मधुर इंद्रक हृदय मे

होइत रहल एहि सब ल'क' खुटुर-खुटुर। इन्द्र, वृद्धक रूप धारण करैए। देख' ओकर हालचाल, बनि वृद्ध इन्द्र चलि आयल, श्रुवावती के आश्रम मे, बात किछु एना भेल।

(माला गँथैत श्रुवावती आ बूढ़ बनल इन्द्र।)

वृद्ध : पुत्री

श्रुवावती : प्रणाम आचार्य।

वृद्ध : पुत्री ई माला किऐ गँथैत छी?

श्रुवावती : देवता केँ पहिराब'क लेल।

वृद्ध : स्वर्गक देवता?

श्रुवावती : नइँ आचार्य! मोनक देवता!

वृद्ध : मोनक देवता! ओ! पतिदेव! परंतु अहाँ तँ विवाहित नइँ लगैत छी।

श्रुवावती : अहाँ केँ की लगैत अछि आ की नइँ लगैत अछि से हम केना कहू आचार्य। हम तँ जखने हृदय मे स्थान देलहुँ तखने विवाहित भ' गेलहुँ।

(तामस मे इन्द्र, वृद्धक वेश सँ बाहर आबि जाइए।)

इन्द्र : अहाँक एसगरे मानने की हैत। हम मानब तखन ने! आ हम मानबे नइँ करब!

श्रुवावती : तखन अहाँ बेर-बेर एत' किऐ अबैत छी। की देख' अबैत छी? ककरा देख' अबैत छी। बाजू? हमरा, अपना हाल पर छोड़ि किऐ नइँ दैत छी?

इन्द्र : अहाँ हमरा विचलित क' रहल छी। बहुत बुझेबाक चेष्टा केलहुँ। आब हम अहाँ केँ आदेश दैत छी। अहाँ हमरा बिसरि जाउ। कोनो मनुख पर लगन लगाउ।

श्रुवावती : हे! हैब अहाँ स्वर्गक राजा। आ कि आर किछु। कोनो स्थिति मे अहाँ हमरा आदेश नइँ द' सकैत छी। अहाँक आदेश व्यर्थ अछि।

(इन्द्र किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति मे प्रस्थान करैत...)

इन्द्र : आह! नइँ जानि कोन एहन अनजान धातुक बनल छी अहाँ। कोनो टा बात नइँ बूझैत छी। अपने बात पर अड़ल छी। केहन सोझ बात छै, तकरा ओझरा रहल छी। करू, जे मोन हुअय। हमरा की...

(इन्द्रक प्रस्थान! संगीत।)

(श्रुवावतीक दिनचर्या। शीर्ष सतह पर स्त्री।)

स्त्री : श्रुवावती अपना धुन मे मगन। मुदा इन्द्रदेव लेखे सब टा सपन, विमर्श-

मंत्रणा तँ कात करू। सुतनाइ-पड़नाइ तक सपन। मोन रमइ ने भोग मे, ने मनोरंजन मे। इन्द्र के हृदय मे अद्‌भुत विचलन।

(बेचैन इन्द्र किछु विचारैए।)

स्त्री : इन्द्र उचारैत अछि नवका युक्ति। ध' लैए युवा ऋषि वशिष्ठक रूप।

(इन्द्र वशिष्ठ बनिक' श्रुवावतीक आँगन अबैए।)

वशिष्ठ : देवी श्रुवावती!

श्रुवावती : स्वागत हे सुपुरुष! प्रणाम स्वीकार हो!

वशिष्ठ : हमरो प्रणय-निवेदन स्वीकार करू देवी।

श्रुवावती : नइँ भगवन नइँ! अनकर स्त्रीक कामना नइँ करू। ई पाप थिक!

वशिष्ठ : अनकर स्त्री? अहाँ अविवाहित छी। ककरहु स्त्री नइँ छी।

श्रुवावती : नइँ भगवन! हम हृदय सँ किनकहु भ' चुकल छी।

वशिष्ठ : किनकहु भ' चुकल छी? की देवराज इन्द्रक तँ ने?

श्रुवावती : से हमरा ज्ञात नइँ!

वशिष्ठ : एतेक घृष्ठता! हम अहाँ केँ श्राप दैत छी।

श्रुवावती : आह भगवन!

(वशिष्ठ बनल इन्द्र केँ करुणा अबैत छै!)

वशिष्ठ : *(स्वगत)* आह! हम की करू! ई निरीह सुन्दरी! हमर मानसिक संतुलन केँ गड़बड़ा देलक अछि! ई अपराधी अछि। एकरा दंड भेटक चाहिऐ। मुदा जखने ई अपन निर्मल नेत्र हमरा दिस घुमबैए हम विवश होब' लगैत छी। ओह! हम की करू?

श्रुवावती : अहाँ शांत होउ भगवन!

वशिष्ठ : (एक टा फल श्रुवावती केँ दैत अछि) ई लिअ'!

(श्रुवावती फल लैत अछि।)

सुनू श्रुवावती। अहाँ एहि फल केँ उसिनू। जँ सूर्यास्त सँ पहिने ई फल सिद्ध भ' जैत तँ इन्द्र अहाँक। नइँ, तँ इन्द्रक स्मरण अहाँक मानस पटल सँ मेटा जायत!

(विराम!)

अहाँ फल केँ सिद्ध करू। हम स्नान केने अबैत छी।

(वशिष्ठक प्रस्थान। श्रुवावती फल केँ सिद्ध करबाक इंतजाम करैए। उपरी सतह पर स्त्री!)

स्त्री : विचित्र फल छल। पहिने कहियो ने एहन देखल। गोल-चकमक, बज्र

सन कठोर। चूल्हि पर चढ़ल।

बासन मे पड़ल।

एक आँच लागल ओहिना! दोसरो आँच लागल ओहिना। आँच दैत दिन ढरि गेल। फल जेना पाथर बनि गेल।

श्रुवावती निश्चित करैत अछि।

श्रुवावती : ई फल नइँ थिक। ई सिद्ध नइँ हैत। तखन ऋषिक श्राप अवश्यंभावी! इन्द्रक स्मरण मेटा जायत हिया सँ। जाहि मोन मे प्रियक स्मरण नइँ से मोन ल'क' की? एहन मोन जाहि देह मे, से देह ल' क' की? हँ...एहन देह ल' क' की! प्रियक स्मरण करैत हम अग्नि-प्रवेश करब।

(श्रुवावती आश्रम केँ तोड़ि-ताड़ि चिता बनबैत अछि। उपरी सतह पर स्त्री-पुरुष।)

दुनू : तोड़ि कूटी केँ टाटी-फरकी। खुट्टा, चार, पाढ़ि, बरेड़ी। ढेरी क' क' चिता बनौलक

माला ल' क' हाथ श्रुवावती

अपने हाथे, अपन चिता मे आगि लगौलक।

(श्रुवावती चिता मे प्रवेश कर' लगैए। इन्द्र दौड़ैत अबैत छै।)

इन्द्र : नइँ! थम्हि जाउ श्रुवावती। आगू जुनि बढ़ू। ओत्तहि ठमकि जाउ। हम अहाँ केँ स्वीकार करैत छी।

श्रुवावती : *(स्वगत)* की हमर मृत्यु तँ ने भ' गेल। हम देवराजक लोक मे तँ ने आबि गेलहुँ।

इन्द्र : नइँ श्रुवावती। अहाँ मुइल नइँ छी। अहाँ जीवित छी। पृथ्वी पर छी। अपना आश्रम मे छी। आर हम, देवराज इन्द्र, अहाँ केँ स्वीकार करैत छी।

(अनुश्री आ ऋषिक रूप मे अभिनेताक प्रवेश।)

इन्द्र : अहाँ विजयी भेलहुँ श्रुवावती।

(वेदध्वनि होब' लगैत छै।)

हम समस्त चर, गोचर, अगोचर केँ साक्षी मानि अहाँ केँ अपन अर्द्धांगिनी मानैत छी। अहाँ केँ स्वीकार अछि?

श्रुवावती : हमरा तँ हरदम स्वीकार छल प्रिय! अहाँ अपने कहू!

इन्द्र : हमरा स्वीकार अछि!

(फ्रीज। प्रकाश मे परिवर्तन। स्त्री-पुरुष।)

दुनू : वैह साँझक समय। डूबैत सूर्यक लालिमा सँ आरो सोहनगर भेल आकाश। खोंता दिस घुरैत पक्षीगणक कलरव। आश्रम मे स्नेहक शीतल अनुभव। श्रुवावती आ इन्द्र। इन्द्र आ श्रुवावती।

स्त्री : इन्द्रक स्वीकार।

पुरुष : श्रुवावतीक कामनाक पूर्ति!

स्त्री : ओकर अप्पन आत्मबलक प्रभाव सँ।

पुरुष : आत्मबल, मनुष्यक सब सँ पैघ संपति अछि।

स्त्री : जाग्रत आत्मबलक समक्ष, सब किछु तुच्छ!

पुरुष : ओ एक टा शेर छै ने, कौन कहता है कि आसमाँ मे सुराख हो नहीं सकता। एक पत्थर तो तबीअत से उछालो यारो।

स्त्री : एहि सत्यवचनक संग नाटक शेष।

पुरुष : अतएब हे सुखी-सुजान, दर्शक लोकनि!

दुनू : आज्ञा दिऔ। नमस्कार!

(संगीत)

(अंतिका, अप्रैल-जून, 2013)

विश्वासक शक्ति उर्फ
सुकन्याक विवाह

स्थान : वन-पद्रेश

भूमिका : सूत्रधार
सुकन्या
च्यवन
राजा
रानी

कोरस : दू टा दरबारी
दू अश्विनी कुमार
दू सखी
दू सैनिक
दू अमला

(अन्हार मंच। ओम्क गूँजैत स्वर। क्रमशः प्रकाश। वन-प्रदेश। एक कात तपस्या करैत ऋषि। लोक सब अबैए। पैर बारने। ऋषि केँ प्रणाम करैए। क्रमशः बरखा, बिहाड़ि...सब सँ ऋषिक चारू भर एक टा ढेरी जकाँ बनि जाइए। ओम्क स्वर अबैत रहैत छै।)

(सूत्रधारक प्रवेश!)

सूत्रधार : नमस्कार। एहि सुरम्य वन-प्रदेश मे अपने लोकनिक स्वागत अछि। सुधीजन, ई सुरम्य, मनोहारी आ शांत वनस्थली एक विशिष्ट तपोभूमि अछि। एत' तपस्या क' रहल छथि महर्षि...

(नेपथ्य सँ चुप करेबाक स्वर)

नेपथ्य : शः... शांति! संपूर्ण शांति! रहब सावधान। करब ने व्यवधान। महर्षि च्यवन। तपस्या मे मगन। युग-युग सँ अविराम। साधना महान। क' रहल छथि च्यवन! सावधान! हो ने व्यवधान! शः ...शांति! संपूर्ण शांति!

सूत्रधार : तँ ई अछि महर्षि च्यवनक तपोवन! की कहल...च्यवनप्राश वला। ...हँ...नइँ...मानि लिअ' ...सैह। च्यवनप्राश वला च्यवन तपस्या आरंभ केलनि तँ किशोरावस्था केँ पार क' रहल छलाह। तपस्या करैत युग बीतल। समाधि लीन भ' गेलाह। मौसम पर मौसम बीतल। हुनका चारू भर दीबड़ा भीड़ बनि गेल।

(ॐक निरंतर स्वर। प्रकाश सँ दीबड़ा भीड़ केँ प्रमुखता। लोक सबहक आगमन। सब पैर बारने भीड़ लग सँ प्रणाम करैत चलैए।)

नेपथ्य : शः शांति... संपूर्ण शांति। रहब सावधान! हो ने व्यवधान! शांति...संपूर्ण शांति!

सूत्रधार : ऋषि च्यवनक तपस्या अविराम अछि। प्रकृतिक परिवर्तनशीलता सेहो अविराम अछि। एक ऋतु बीतैए, दोसर अबैए। जाड़ गेल। बसंत आयल।

(पक्षीक चहकब, भौंराक गुन-गुन वगैरह सँ संगीत आरंभ होइत छै। सूत्रधार नाच'-गाब' लगैए।)

(विद्यापतिक कविताक अंश)

आयल रितुपति राज बसंत
धाओल अलिकुल माधवि पंथ।
दिनकर किरिण भेल पौगंड
केसर कुसुम धयल हेमदंड।

(सदल-बल राजा-रानीक प्रवेश। सब वन मे वसंतोत्सव मनाब' आयल अछि। अतएव उचित वातावरण मे उन्मुक्त आ प्रसन्न अछि। विशेष क' सुकन्या आ सखी लोकनि।)

नृप आसन न पीठल-पाठ
कांचन-कुसुम छत्र धरू माथ।

(रानी, राजाक माथ पर आम्र-मंजरक मुकुट पहिरबैत छथि। राजा, रानी के केश-शृंगार, मज्जर सँ करैत छथि। वृक्षक डारि पर बैसैत छथि। दरबारी सब चतुर्दिक साकांक्ष रहैत अछि। सब प्रसन्न अछि। सखी संग सुकन्या क्रीड़ा-मग्न छथि।)

मौलि-रसाल, मुकुल भेल ताप
समुखहि कोकिल पंचम गाय।

(सूत्रधारक गबैत प्रस्थान। सुकन्याक क्रीड़ा-कलरव तेज भ' जाइत अछि। राजा प्रसन्न, रानी चिंतित छथि।)

रानी : *(मना करैत)* सुकन्या! सुकन्या!

राजा : *(रानी केँ बुझबैत)* आह प्रिय। जुनि टोकियौ। नइँ लगबियौ बंधन। देखू। नयन जुड़ाउ। प्रफुल्लित सुकन्या केँ देखि-देखि हम हुलसित छी। अहूँ आनन्दक अनुभव करू प्रिय।

(रानीक मुद्रा पर असहमति। राजा मुग्ध-भाव सँ सुकन्या केँ देखैत। सूत्रधारक आगमन।)

सूत्रधार : ई भेलाह राजा शर्याति। रानी, राजपुत्री सुकन्या आ दरबारीक संग आयल छथि तपोवन मे, वसंतोत्सव मनाबक लेल।

(सुकन्या, सखीक संग अबैत छथि आ सूत्रधार केँ ठेलिक' ढनमना दैत छथि। सूत्रधार अवाक्, तड़फड़ाइत मंच सँ बाहर होइत अछि। सुकन्या आ सखी खिलखिलाइत अछि।)

राजा : आह! हमर सुकन्या! कुसुम सन सुंदर, कोमल, सुरभित। चिड़ै सन—उल्लसित, उन्मुक्त, निर्मल। पवन सन चंचल। आह! अनुपम छथि हमर सुकन्या। अपरूपा!

रानी : सत्य वचन राजन! परंतु अपन अपरूपा सुकन्या आब बालिका नइँ छथि। किशोरी सेहो नइँ रहलीह। वयस भेलनि हिनकर। आब उचित नइँ ई उन्मुक्त व्यवहार। मर्यादा आ शीलक अनुकूल आचरण करब हेतनि उचित। कने विचारू प्रिय। सुकन्या विवाह-योग्य छथि।

राजा : ओह! आह रानी! प्रिय! अहाँ व्यर्थ चिंतित होइत छी। सब ठीक हेतै। समय पर सभ टा हेतै। एखन एहि क्षणक आनन्द लिअ'। देखियनु सुकन्या केँ। ...केहन अबोध लगैत छथि। निर्झरिणीक निर्मल जल सन। जीवनक मलिन आ दुखदायी पक्ष सँ सुकन्या केँ कखनो भेट नइँ हेतनि। ई अहाँ निश्चित मानू रानी। आउ! हम सब आशीर्वाद दियनि! सब दिन एहिना रहथु सुकन्या। उत्साह आ आनन्द सँ परिपूर्ण।

रानी : *(हाथ जोड़ैत अदृश्य ईश्वर दिस)* सैह होइ! परंतु राजन्! ओहि वृक्ष केँ देखैत छी!

राजा : देखैत छी रानी।

रानी : जँ अहाँ आँखि मुनि ली तँ ओ वृक्ष अहाँ केँ नइँ देखायत।

राजा : आँखि मूनब तँ वृक्षे किऐ, अहूँ नइँ देखायब। किछु ने देखायत।

रानी : परंतु सब किछु उपस्थित अछि। वृक्ष, हम, सब किछु।

राजा : वाह! अहाँ दार्शनिक भ' रहल छी रानी! आब तात्पर्य कहियौक।

रानी : तात्पर्य ई प्रिय, जे वास्तविकता सँ आँखि फेरब उचित नहि। सुकन्या विवाह योग्य भ' गेलीह अछि। हिनका लेल उचित वरक संधान होयब आवश्यक!

(जेना भविष्य-गमन क' रहल हो)

सुकन्या पतिगृह जेतीह। हमहू अहिना आयल रही। सुकन्या केँ जाय पड़तनि। हमरा लोकनि हृदय पर पाथर राखि हिनका विदा करब।

राजा : आह रानी! केहन दुखद प्रसंग अछि ई!

रानी : यथार्थ कने कठोर होइते छै प्रिय! एकरा लेल तैयारे रहब आवश्यक। मुदा सुकन्याक समय खेलकूद मे नष्ट भ' रहल छनि।

राजा : आह! प्रियतमे! अहाँ कल्पना क' रहल छी। देखू! नेना छथि सुकन्या! समय पर सब ठीके हेतै प्रिय! विश्वास राखू!

रानी : विश्वास तँ राख' चाहैत छी प्रिय। परंतु चिंता संग नहि छोड़ैत अछि। समयक संग परिस्थिति जटिलतर होइत अछि। सुकन्या केँ उचित बाट देखौनाइ हमरा अहाँक कर्तव्य अछि प्रिय!

राजा : *(गंभीर होइत)* रानी! एकमात्र संतान छथि हमर-सुकन्या। हम! *(जा शर्याति) (ठाढ़ भ' जाइत अछि।)* चर-गोचर, अगोचर केँ साक्षी मानि, लैत छी शपथ। सुकन्याक विवाह, पृथ्वी परक सब सँ सुन्दर, सब सँ शीलवंत, सब सँ शौर्यवान आ सब सँ संपन्न राजकुमार सँ कराएब। हम ई प्रण करैत छी।

रानी : *(अदृश्य ईश्वर केँ प्रणाम करैत)* सैह होइक। हमरा लोकनिक तँ यैह आकांक्षा। आब जे नियति।

राजा : ककर नियति?

रानी : सुकन्याक नियति!

राजा : *(उत्तेजित भ' क')* हम छिऐक सुकन्याक नियति रानी! हम राजा शर्याति। *(विराम)* आब एहि विषय पर कोनो वार्ता नहि! *(मृदु होइत)* आह! प्रिय! वसंतोत्सव छै।

(नेपथ्य सँ संगीत)

प्रकृतिक छटा केँ निरेखू। आनन्द लिअ'!
संगीतक लय पर लोक सब नचैए। चलू, कने लग सँ देखी...
(राजा-रानीक प्रस्थान। सूत्रधारक प्रवेश।)

सूत्र. : वसन्तक उत्सव छलै। राग-रंग छलै। उमंग छलै। नाच-गान छलै। खान-पान छलै।

(सुकन्या आ सखी सबहक किलकारी। सूत्रधार चौंकिक' चारू भर देखैए। सदल-बल सुकन्याक प्रवेश। सूत्रधार ओकर सबहक खेल मे ओझरा जाइए। मुक्त होइए। सुकन्या आ सखी सब खिलखिलाइए। हँसी सँ बेसम्हार सुकन्या च्यवन—ढीमकी सँ टकरा जाइए।)

सुकन्या : ई की?

सखी-1 : की सखी?

सुकन्या : ई ढीमकी कथीक! एहन सुन्दर वातावरण मे ई ढीमकी!

सखी-2 : दीबड़ा भीड़ छै सखी!

सुकन्या : दीबड़ा भीड़ माने

सखी-1 : चुट्टी के घर!

सुकन्या : चुट्टी के घर एहन! **(लग सँ अहिअबैए। ओम्क ध्वनि...)** एहि मे किहु छै!

सखी-2 : चुट्टी-पिपड़ी हेतै।

सखी-1 : ओकरे तँ घर छिऐक!

सुकन्या : नहि सखी! अकानियौ तँ कने!

(तीनू शांत भ'क' अकानैए।
ओम्क ध्वनि तेज होइत छै।
सखी सब केँ मोन पड़ि जाइत छै।)

कोरस : *(नेपथ्य सँ)* श:...शांति! संपूर्ण शांति। महाऋषि च्यवन, समाधि मे लीन। तपस्या मे मगन। कहिया कत' सँ। व्यवधान नहि! शान्ति! सम्पूर्ण शांति!

सखी-1 : चलू सखी एत' सँ चलैत छी।

सखी-2 : गुमार लगैए। जल-क्रीड़ा करैत छी।

सखी-1 : अहाँ तँ जलपड़ी जकाँ हेलैत छी!

सखी-2 : बेर भेलै। स्नान क' लैत छी!

सुकन्या : *(मोहाविष्ट सन)* हम जनैत छी।

दुनू : अहाँ की जनैत छी?

सुकन्या : एहि मे किछु छै।

सखी-1 : चुट्टी-पिपड़ी छै!

सखी-2 : ओकरे तँ घर छै। स्नान सँ पहिने चलू कुसुम लोढ़ैत छी!

सखी-1 : ठीक कहल बहिना! कुसुम लोढ़ैत छी।

(दुनू सुकन्या केँ च्यवन-ढीमकी सँ फराक कर' चाहैत छथि। सुकन्या दुनू सँ अपना केँ छोड़बैत छथि।)

सुकन्या : जाइ जाउ अहाँ सब! लोढ़ू ग' कुसुम। करू ग' स्नान आ जल-क्रीड़ा। हम तँ आब जानिक' रहब जे एहि ढीमकी मे की छै।

दुनू : से केना!

सुकन्या : ढाहि क'।

(च्यवन-ढीमकी केँ ढाह' लगैए। दुनू सखी मना करैत छै।)

दुनू : नहि सखि, नहि सखि! जुनि करू एना! ढाह-ढूह वैह करए जे रहए नेना।

सखी-1 : सुनू-सुनू सखिया

सखी-2 : मानू मोरा बतिया

दुनू : मोरी प्यारी सखिया, राज दुलरिया
छोड़ि दियौ एकरा ईहो भीड़ दीबड़ा!

सुकन्या : छोड़ू पढ़ब फकड़ा। ढाहू भीड़ दीबड़ा!

दुनू : प्यारी मोरी सखिया, छोड़ू भीड़ दीबड़ा!

(दुनू, सुकन्या केँ फराक ल' जाए चाहैए। पकड़ा-पकड़ी सन होइत छै। एही मे अवसर पाबि सुकन्या च्यवन-ढीमकी केँ खोंचारि दैत छै। ओम्क ध्वनि बंद। सुकन्या आ सखी ठाढ़ अछि। भीड़ मे सँ दू टा प्रकाश बहराइ छै। दुनू चीत्कर क' उठैए। सुकन्या प्रसन्नता सँ थपड़ी पीटैए!)

दुनू : गे माए गे माए!

सुकन्या : *(थपड़ी पीटैत)* हमर बात साँच भेल! हमर बात साँच भेल।

दुनू : हँ साँच भेल तँ भेल। आबहु तँ चलू!

सुकन्या : नहि! ई देख' दिय' जे ई प्रकाश कत' सँ आबि रहल छै!

(सुकन्या जत' सँ प्रकाश अबैत छै ओत' आँखि सटबैए। किछु नहि देखाइत अछि। किछु सोचैत अछि।)

दुनू : छोड़ू! नहि किछु हेतै।

(दुनू सखी फेर सुकन्या केँ हटाब' चाहै छै। मुदा सुकन्या एक टा लकड़ी सँ प्रकाश वला स्थान केँ खोचारि दैत छै। तीव्र पीड़ा-जन्य चीत्कार। प्रकाश बंद। तीनू कन्या भय सँ एक दोसरा पर खसैत हतप्रभ। च्यवन, ढीमकी केँ तोड़ैत, पीड़ा सँ छटपटाइत, तलमलाइत, आँखि पर हाथ रखने ठाढ़ होइत छथि। एक कात आँखि सँ रक्तक टघार।)

कोरस : **(नेपथ्य सँ)** कहिया कत' सँ, तपस्या मे लीन, महाऋषि च्यवन। आघात सँ आहत च्यवन। भंग समाधि सँ बाहर च्यवन। महाऋषि च्यवन।

(सूत्रधारक प्रवेश)

सूत्र. : पता नहि समाधि मे छलाह कि कोन लोक मे विचरणक करैत छलाह। आघात सँ इहलोक मे आपस भेलाह।

प्रहार सँ व्यवधान भेल तँ टूटल समाधि। खूजल नेत्र, बहराएल प्रकाश। देखल सोंझा मे अपरूपा सुकन्या केँ। सुतल यौवन जागल अकचका क'। हठात्! ई घातक प्रहार। मर्मांतक पीड़ा। एखने देखल अपरूप, एखने सब कज्जल-कूप।

च्यवन पीड़ा सँ चकभाउर दैत चीत्कार करैत छथि।

(सूत्रधारक प्रस्थान।)

च्यवन : आह! हमर नेत्र! आह! ई पीड़ा। हमरा पर ई प्रहार किऐ! के केलक ई दुष्कर्म? किऐ केलक एना? ककरो अहित हम कैल नहि। तखन के केलक अकारणे प्रहार? के अछि ओ पामर-गमार?

(पीड़ा मे तड़फड़ाइए।)

केकर सन्तान एहन? ओ केहन माता-पिता? देलक नहि संतान मे संस्कार। नहि सीखौलक शिष्टाचार।

(क्रमशः पीड़ा पर काबू करैए।)

केहन ओ माता-पिता? देखल, जखन तोड़लक समाधि केँ, सौंदर्यक प्रतिमूर्ति। रूपक प्रतिमान। तकर एहन ज्ञान? सुधाघट मे विषक बिन्दु समान।

(पीड़ाक स्थान पर क्रोध।)

रूप मे शीलक समावेश नहि केलक। उचित-अनुचित संतान केँ

नहि सीखौलक। एहन माता-पिता! मूर्ख! अविवेकी! मोचंड ओ पशु समान। एकरा लेल भेटतै दंड। ओहो करओ पीड़ाक अनुभव!

(च्यवन स्थिर भ' क' शाप देबाक प्रक्रिया पूरा करैत छथि। राजाक दलक सब सदस्य-सुकन्या केँ छोड़ि भयंकर पीड़ा सँ छटपटाए लगैए। सूत्रधारक प्रवेश।)

सूत्र. : पट-पट पड़ल बेमार, सब केँ लगलै जर बोखार। एखने गर्मी, एखने जाड़, तड़-तड़ तड़कै सबहक हाड़। सब तलफैत, सब लाचार! कक्कर के करत उपचार!

(सुकन्या दौड़ि-दौड़ि सबहक लग जाइए आ बेहाल अछि।)

सुकन्या : सखी सरूपा, सखी अरूपा

दुनू : आह सखी, ओह सखी...

सुकन्या : पिताश्री, मातेश्वरी

रानी : आह पुत्री! अहाँ केहन छी...

राजा : अहाँ ठीक छी ने पुत्री!

सुकन्या : हँ पिताश्री। हमरा कोनो पीड़ा नहि अछि। परंतु आश्चर्य...

रानी : धन्य हे इश्वर! आह! सुकन्या एहि पीड़ा सँ बाँचल छथि...

सुकन्या : परंतु आश्चर्य! हमरे टा कोनो पीड़ा नहि। किएक? एना किएक पिताश्री?

राजा : कारण की कहू? अहाँ नीके नाँ छी। बस! आह! मर्मांतक पीड़ा। हृदय अकुलाइत अछि। आह...

रानी : ओह!...ई केहन ज्वर अछि। आइ...सब एकाएक एक्कहि ज्वर सँ पीड़ित अछि...ओह...

सुकन्या : परंतु एकर कारण?

राजा : हम की कहू पुत्री? हम की कहू?

रानी : ई कोनो दीव्य शक्तिक प्रकोप तँ नहि?

राजा : दीव्य शक्तिक प्रकोप!

कोरस : **(नेपथ्य सँ)** महा-ऋषि च्यवन! युगोक समाधि टूटल। एक अज्ञानीक आघात सँ।

(सब एहि आकाशवाणी केँ सुनैए।)

रानी : समाधि टूटल!

राजा : रानी!

रानी : राजन!

राजा : अही वन मे महर्षि च्यवनक समाधिक अछि। निश्चित हुनके समाधि पर भेल आघात। भंग समाधि। कुपित च्यवन!

रानी : हुनिके क्रोधक प्रतिफल तँ ने!?

राजा : निश्चित!

रानी : हा दैव! केहन अनर्थ!!

राजा : के केलक ई जघन्य कर्म? के अछि ओ पतित? बाजओ! सोझाँ आबओ ओ अविलम्ब!

(राजा, पीड़ा सँ पस्त भ' जाइत अछि। सुकन्या केँ अपना खेलक प्रतिफल बुझ' मे अबैत छै। ओ अपराधी जकाँ पिताक सोझाँ अबैत अछि।)

सुकन्या : तँ की ओ दीबड़ा-भीड़ महर्षि च्यवनक देह पर छल?

राजा : निश्चित! महाऋषिक काया पर। एक युग सँ जमा भेल माटि। जनमल घास-पात! लगैत छल दीबड़ा भीड़ जकाँ!

सुकन्या : तकरा हम खोंचारल। पिताश्री! हम हतभाग्य। हमरे सँ भेल ई अपराध! हम ई नहि जनैत छलहुँ पिताश्री।

राजा : पुत्री!! ई की बजलहुँ अहाँ? अहाँ सुकन्या! अहाँ महर्षि च्यवनक समाधि भंग केलहुँ। पीड़ित केलहुँ महर्षि केँ!

रानी : हम जनैत छलहुँ। एक दिन एना हैत। अहाँ हमरा बात पर कान नहि देलहुँ। देखू प्रिय! देखू! परिणाम सोझहि अछि।

राजा : आह! हमर ओ प्रमाद! सुकन्या नहि, हम छी अपराधी!

रानी : आह प्रिय! समय पश्चातापक नहि, विषादक नहि। विचारू! आसन्न संकटक निवारण के उपाय विचारू!

सुकन्या : अनचोकहि, हम अनर्गल क' बैसलहुँ। हम अपराधी छी पिताश्री! हम कठोरतम दंडक भागी छी।

(राजा-रानी, लोक सब अचंभित अछि।)

(सूत्रधारक प्रवेश)

सूत्र. : चंचल-उच्छृंखल बालिका सन लगैत छलीह ने सुकन्या! हठात परिवर्तन भेल। ओ ऊर्जा परिपूरित अबोध उत्साह बिला गेल। सुकन्या भ' गेलीह सियान। राजा थर-थर काँपि रहल छथि क'क' ऋषिक श्रापक अनुमान।

(बजैत प्रस्थान)

राजा : सुकन्या! आह! पुत्री! अहींक प्रहार सँ...

कोरस : **(नेपथ्य सँ)** महा-ऋषि च्यवन। प्रहार सँ आहत। पीड़ा सँ व्याकुल। नेत्रहीन भ' गेलाह ऋषि।

सुकन्या : नेत्रहीन?

राजा : निश्चित! यैह बात अछि!

रानी : की प्रिय!?

राजा : हुनके कोप केर ताप, कारण अछि सबहक यंत्रणा के। भस्म भ' सकैए समस्त राज्य हमर। राज परिवार, दरबार...सेना-अमला...केओ नहि बाँचत।

रानी : किंतु प्रिय! ऋषि होइत छथि दयालु...

सुकन्या : *(कनैत)* हम नहि जनलहुँ। क्रीड़ा मे पीड़ा द' बैसलहुँ। मुदा जानि-सुमानि क' नहि...

राजा : नहि पुत्री! आब अहाँ नहि छी बाला। ताहि पर सँ अहाँ राजपुत्री छी। राजकुमारीक एहन अमर्यादित कृत्य। *(रानी सँ)* अहाँ सत्य कहैत छलहुँ प्रिय! हमहीं हतभाग्य! अहाँक बात पर कान नइँ देलहुँ...

रानी : नहि प्रिय! ई समय एकर नहि!

कोरस : **(नेपथ्य आ मंच)** पीड़ा आंगहि-आंग। त्राहिमाम्! त्राहिमाम्!

सूत्र. : **(प्रवेश करैत)** परिजन के पीड़ा सँ व्यथित अछि सुकन्या। प्रायश्चित टा निदान छै, से जनैत अछि सुकन्या। मोनहि-मोन स्थिर करैत अछि सुकन्या। प्रायश्चित करत, से कहैत अछि सुकन्या।

(बजैत प्रस्थान।)

सुकन्या : हमर अछि अपराध, हम करब परिमार्जन। नत-मस्तक हैब ऋषिक समक्ष। करब क्षमा-प्रार्थना। हम अपराधी, तँ दंड आन ककरो किऐ? हमरा भेटओ दंड। हम छी दंडक भागी...

राजा : नहि पुत्री! अहाँ नहि, हम! हम छी जनक। हमर अछि कर्तव्य। हम नहि चैतौलहुँ अहाँ केँ, हमर अछि अपराध। तें हम जायब ऋषिक समक्ष। पखारब अश्रु सँ हुनक चरण।

कोरस : **(नेपथ्य आ मंच)** त्राहिमाम्-त्राहिमाम्। रक्षा करू-रक्षा करू! शारणागतम्। त्राहिमाम्-त्राहिमाम्!

(राजा, सदल-बल ऋषिक समाधि-स्थल दिस प्रस्थान करैए। सूत्रधारक प्रवेश।)

सूत्र. : राजा, रानी, सुकन्या आ सखी सब! अमला-फैला, दरबारी आ सेवक सब। जे छल से सब पीड़ा सँ कूहरैत, लटैत-बूड़ैत, खसैत-पड़ैत। जूमल ऋषि के पास। एकमात्र छल आस, ऋषि सँ क्षमा-याचना...

(सूत्रधारक प्रस्थान। सब त्राहिमाम् कहैत ऋषिक सोझाँ दंडवत भ' जाइए। तलमलाइत ठाढ़ च्यवन, पीड़ा केँ जँतबाक प्रयास करैत छथि।)

कोरस : **(नेपथ्य आ मंच)** त्राहिमाम्! भगवन्! त्राहिमाम्!

राजा : क्षमा महर्षि। क्षमा। अबोध बालिकाक। अनजान मे भेल अपराध केँ क्षमा। क्षमा भगवन्! अपनेक चरण मे हमर प्राण। हमर राज्य अपनेक चरण पर। करुणा भगवन्! क्षमा!...

च्यवन : *(पीड़ा आ क्रोध)* नहि राजन्! राज्य नहि। प्राण नहि। तपस्वी केँ अहाँ लोलुप बुझैत छी।

कोरस : क्षमा भगवन्!

राजा : त्राहिमाम् महर्षि! *(राजा नतमस्तक होइत छथि।)*

च्यवन : उठू राजन्! स्वस्थ होउ। हमहुँ स्वस्थ होइत छी।

(सब एकाएक स्वस्थ भ' जाइत अछि ताहि सँ सब अचंभित।)

कोरस : धन्य महाऋषि च्यवन, शत-शत नमन्!

राजा : अपनेक दया सँ हम धन्य भेलहुँ। एहि अकिंचन केँ सेवाक अवसर देल जाओ!

च्यवन : हम, आब गार्हस्थ्य जीवन मे प्रवेश करब।

राजा : *(हकबकाइत)* तात्पर्य?...नहि बुझि सकल...

च्यवन : हम विवाह करब।

कोरस : की?

(सब चित्रलिखित भ' जाइत अछि। किछु क्षणक विराम।)

कोरस : *(गायन)* जुग-जुग केँ ई बूढ़ च्यवन रिसि चलला कर' बियाह, गे माइ। मुँह ने दाँत, पेट आँतो नइँ, हेतनि केना निमाह, गे माइ।

राजा : उत्तम महर्षि। आब यैह उचित हैत। हम तत्क्षण अपनेक योग्य कन्याक संधान आरंभ करैत छी।

च्यवन : नहि राजन्! कोनो आन कन्याक संधान नहि।

राजा : आन कन्या नहि? तखन?

च्यवन : सुकन्या!

राजा : सुकन्या?

च्यवन : हम सुकन्या सँ विवाह करब।

कोरस : **(नेपथ्य)** सब भेल झूर झमान।
गे माइ, सोरह बरिसक अलकेसरि धीआ, च्यवनक वयस हजार।
गे माइ, एहन मेल केना क' हेतै, सब भेल झूर झमान, गे माइ!

राजा : सुकन्या? नहि छथि। अपनेक योग्य-महर्षि। नहि छथि। हिनका ज्ञान नहि। अबोध छथि, शरणागत छथि, अपराधिनी...

च्यवन : धन्य राजन्! अहाँ हमरा लेल चिन्तित छी। सुकन्याक प्रति चिन्तित छी।

राजा : हमरा लोकनि अपनेक सान्निध्य सँ कृतार्थ छी।

च्यवन : तखन चिन्ता नहि राजन! हम अहाँ केँ आश्वस्त करैत छी। हम सक्षम छी ओहि युवा जकाँ, जे समाधि आरंभ केने छल। अपन मर्यादाक संग निर्वाह कर' मे हम पूर्णतः सक्षम छी।

राजा : निःसंदेह महर्षि। अपने निःसंदेह सक्षम छी। परंतु सुकन्या नहि छथि निर्वाह कर' मे सक्षम। सौभाग्यक बात हेतै महर्षिक पत्नी भेनाइ। परंतु सुकन्या एकर अधिकारिणी नहि छथि प्रभो!

च्यवन : अपनेक भ्रम अछि राजन्! सुकन्या सर्वथा योग्य छथि, अधिकारिणी छथि! आवश्यकता अपनेक स्वस्तिक छै।

कोरस : **(गायन)** ऋषि केँ अस्वीकार करत से, ककरो नहि साधंस, गे माइ। कोकनल जाठि सँ केना करओ केओ, कनकलता केँ संग। केह कानि सधौलक विधना रचलक केहन बिधान, गे माइ। कामिनि बनती बूढ़क भामिनि, थिर नहि ककरो गेयान।

च्यवन : आब आग्रह जे विवाह संस्कार अविलम्ब हो!

कोरस : अविलम्ब!

च्यवन : हमरा सपत्नीक आश्रम स्थापित करबाक अछि। तें अविलम्ब!

राजा-रानी : अविलम्ब, माने...एखनहि!?

राजा : अपने तँ विवाहोपरांत पुनः समाधि मे लीन भ' जायब!

च्यवन : निश्चित! पूजा, तपस्या, चिंतन...यैह तँ छै ऋषिक जीवन! आब

सुकन्या हमर एहि जीवनक संगिनी हेतीह।

राजा-रानी : *(मुर्छित होइत)* आह...

च्यवन : अविलम्ब सँ तात्पर्य जे विवाह काल्हि हो—उषाकाल मे। ओरिआओन यज्ञ आ पूजन सामग्रीक। पुष्प-माल्य बनाओल जाय। भौतिक संपदाक आवश्यकता नहि।

(सब निरुपाय अछि। सूत्रधारक प्रवेश।)

सूत्र. : अनचोके मे बज्रपात सन, भेलै कुलिश प्रहार।
रानी होस गमौलनि, राजा ठोकलनि अपन कपार।
दुख मे भासल अमला-फैला, कलपै सभक परान।
विधना, तोर नहि नीक विधान।

(सब प्रस्थान करैए। सुकन्या आ सखी।)

दुनू सखी : विधना, केहन तोहर विचार।
कोमल तन-मन, सखि सुकुमारी, तनिका देल बनिसार।
राजकुमरि तापस संग जोड़लह, केहन तोहर उपचार।
विधना अजब तोहर बेवहार।

(सुकन्या, सखी सबके परबोधए।)

सुकन्या : सखि हे! करू जुनि हृदय मलान।
जनिकर हम व्यवधान केलहुँ, केलहुँ निर्मम घात।
दंड देबा के बदला से ऋषि, केलनि मोरा सनाथ।
सखि हे! बड़भागी हम आज।

सखी-1 : सुकन्या! आह! सखी सुकन्या!

सखी-2 : अहाँ केँ रह' पड़त अरण्य मे। महल नहि अरण्य पर्णकूटी मे।

सखी-1 : वस्त्र के नाम पर वल्कल। आह सखी!

दुनू सखी : विधना! रचलह केहन विधान...

सुकन्या : शांत सखी! शांत! अरण्य सन शांत आ रमणीक स्थल मे महल नहि, पर्णकुटी, शोभैत छै। ताहि पर सँ महर्षिक सान्निध्य! एकर उपमा कत्तहु नहि भेटत। तखन रहल वस्त्र। तँ वस्त्रक काज की। शरीर पर आवरण देनाइ। तखन रेशमी हो कि बल्कल। काज तँ वैह छै, आवरण।

सखी-1 : अहाँ प्रसन्न रहि सकब सखी?

सखी-2 : अहाँ केँ हमरा सभक आवश्यकता हैत। हम रहब अहाँक संग।

सखी-1 : हमहूँ रहब!

सुकन्या : नहि सखी। नहि! हमर-अहाँक संग एतहि तक। मोन राखब, बिसरि नहि जैब!

दुनू सखी : मोन रहब सखी! सब दिन मोन रहब! प्रतिपल मोन रहब!

सखी-1 : अहूँ मोन राखब

सखी-2 : बूढ़ाक सिनेह मे ओझराएले नहि रहब!

(तीनू एक-दोसरा केँ घेंट मे घेंट मिलबैए। विवाहक संगीत। कार्य-व्यापार। आ वेदध्वनि! विवाहक बीध।)

कोरस : **(नेपथ्य गायन)**

राजकुमारि सुकुमारि धीआ के, वर भेल तापस भिखारि-गे माइ।
काँच वयस के राजकुमारी, ऋषि के अब तब प्राण-गे माइ।
कोन परि धीआ विपति ई सहती, सोचि-सोचि हिया हलकान।
दुख केर नाम ने सुनलनि तनिका, वनवासक उपहार-गे माइ...
सुख-वैभव ऐश्वर्य पाछु भेल, आगू दैन्य अपार।

(दूर्वाक्षतक मंत्र। दूर्वाक्षत दैत सूत्रधारक प्रवेश। ऋषि-सुकन्या आश्रम दिस। राजाक दल राजधानी दिस आपस।)

सूत्र. : कथा मे मोड़ आबि गेल। वसंतोत्सव मनाबय आयल राजाक दल, सुकन्याक विवाह करा, हारल सेना जकाँ आपस भेल। दीबड़ा भीड़ छल जकरा देह पर, से च्यवन, सुकन्या संग आश्रमवासी भ'गेलाह। सुकन्याक लेल छूटल महल, सखी सब छूटल, पर्णकूटी भेल वास। काल्हि छल आन, आइ किछु आने, नवजीवन, नव भास।

(ऋषि आ सुकन्याक दिनचार्य। नेपथ्य सँ गायन। गीतक संग सूत्रधारक प्रस्थान।)

कोरस : *(नेपथ्य)* नव-नव जीवन, नव-नव यौवन राग-अनुराग विवेक, स्नेह समर्पण, सब सुख संपन्न जीवन न'व उन्मेष!

(सुकन्या घैल ल'क' जल आन' विदा होइए। गीतक क्रम मे एक्के रंगक मास्क लगौने दू व्यक्ति सुकन्या केँ देखैत अछि। घैल ल'क' बाहर जाइत देखि दुनू, आगाँ जाक' सुकन्या केँ घेरैत अछि। दुनू व्यक्ति मे सँ एक टा अछि अग्रज आ दोसर अनुज।)

अग्र. : अनुज!

अनु. : अग्रज!

अग्र. : हम-अहाँ देखलौ

अनु. : अहा अग्रज! अपरूब रूप समणिञा।

अग्र. : मृगनयनी, गजराज गमनिञा।

अनु. : फटकी सँ अप्सराक दर्शन अछि

अग्र. : तेहने सन, तेहने सन

अनु. : चाँद सार लए मुख केर घटना

अग्र. : केश अषाढ़क मेघ।

अनु. : तेहन रूप के ई परिवेश!

अग्र. : धिक्कार अछि!

अनु. : रुच्छ केश आ वल्कल वेश!

अग्र. : धिक्कार अछि!

(सुकन्या केँ आगू सँ घेरि लैत अछि।)

दुनू : नमस्कार अछि।

सुकन्या : एहन नमस्कार केनिहार, के छी अहाँ सब?

दुनू : अश्विनी कुमार

अनु. : *(अग्रज केँ देखबैत)* अग्रज!

अग्र. : *(अनुज केँ देखबैत)* अनुज!

दुनू : अर्द्धदेव छी हमरा लोकनि

अग्र. : *(सुकन्याक परिचय देब' सँ रोकैत)* हम जनैत छी जे अहाँ के छी?

अनु. : अहाँ छी राजकुमारी सुकन्या!
राजा शर्याति केर कन्या।

सुकन्या : हम, जनिक तेज सँ दिग्-दिगंत दीप्तिमान अछि ताहि महर्षि च्यवनक अर्धांगिनी छी अश्विनी कुमार।

दुनू : च्चः च्चः

अग्र. : ई अपरूप, ई यौवन अलौकिक

अनु. : इन्द्राणी रति सँ तुलनीय

अग्र. : तनिकर जीवनक कष्ट अकथनीय

दुनू : हा हंत! हा हंत!

सुकन्या : *(मुस्कुराइत)* अहाँ लोकनि देव सभा मे नाच-तमासा करैत छी?

(दुनू ठहाका मारि हँसैत अछि।)

अग्र. : देह पर वल्कल, डाँड़ पर घैल

अनु. : पएर ने पनही, माथ नहि तेल।

अग्र. : देह ने आभूषण, पेट नहि अन्न।

अनु. : धन्न हे सुमुखि! धन्न! धन्न! धन्न!

अग्र. : हम अहाँक त्याग सँ भेलहुँ प्रसन्न।

अनु. : करैत छी अहाँक प्रति,

दुनू : प्रेमक निवेदन।

सुकन्या : *(तामस मे)* धृष्ट! वाचाल। सुनू हे, अहाँ जे छी। हमरा नहि जनाउ जे महल, आभूषण आ रेशमी बस्त्र केहन होइत छै। जेहन वस्त्र अहाँ केने छी सगर्व धारण, तेहन सँ हमहू करैत छलहुँ पद-प्रक्षालन। राजपुत्री छलहुँ, राजपुत्री जकाँ जीलहुँ। *(गर्व सँ)* तपस्विनी छी, तपस्विनी जकाँ जीबैत छी। प्रसन्न तखनहुँ छलहुँ, प्रसन्न एखनहुँ छी। सावधान करैत छी। स्वयं केँ सुधारू। हमर बाट छोड़ू। **(दुनू बाट तँ छोड़ैए मुदा पाछाँ नइँ छोड़ैए।)**

अग्र. : अनुज!

अनु. : अग्रज!

अग्र. : हम तँ छगुन्ता मे पड़ि गेलहुँ औ।

अनु. : हमहू ओही हाल मे छी अग्रज!

अग्र. : नारी होइतो वस्त्राभूषणक आकर्षण नहि।

अनु. : शृंगार मे रुचि नहि।

अग्र. : तखन तँ अनुराग सँ विकर्षण हेतनि।

अनु. : तखन तँ प्रेमक दान-प्रतिदान सँ अरुचि हेतनि।

दुनू : ई तँ रूप-यौवन के जिआन करब भेल।

(सुकन्या तामस मे पलटि क' देखैए। दुनू केँ भय जकाँ होइत छै। पाछाँ हटि जाइए।)

सुकन्या : अहाँ दुनू केँ ज्ञानक भू-स्पर्श नहि। देव केना भ' गेलहुँ?

दुनू : अर्द्ध देव!

सुकन्या : मूढ़! मंदमति! शठ।

अग्र. : तखन कने ज्ञान दिय' ने!

अनु. : कहू ने। अहाँक मोन मे कखनो नहि आयल?

अग्र. : जे अहाँक पति युवा आ रूपवान होइतथि।

अनु. : हमरा लोकनि सन।

अग्र. : जे अहाँ सन रमणीक सर्वथा योग्य छी।

सुकन्या : सर्वथा अयोग्य छी।

दुनू : अयोग्य?

अग्र. : अर्द्धदेव छी।

अनु. : स्वर्ग मे बसैत छी।

अग्र. : अप्सरा लोकनिक ससंर्ग मे रहैत छी।

सुकन्या : तखन हमरा पाछाँ किएक पड़ैत छी?

अग्र. : अहाँक समक्ष अप्सरा लोकनि बेस झूस लगैत छथि।

अनु. : मनहूस लगैत छथि।

अग्र. : हे सुन्दरी! हमर प्रणय-निवेदन स्वीकार करू।

अनु. : स्वर्गिक सुख के अंगीकार करू।

अग्र. : मनुष्यक लेल जकर कल्पनो दुर्निवार छै।

सुकन्या : हँ! मनुष्य नहि सोचि सकैत अछि जे स्वर्ग मे बसनिहार, लोभी, लंपट, कामी, पामर होइत अछि।

दुनू : लोभी, लंपट, कामी, पापर...

सुकन्या : अहाँ देह टा देखैत छी। देह टा बुझैत छी। अनुराग, प्रेम...हृदय सँ उत्पन्न होइत छै। अहाँ लोकनि तँ हृदय रखैत नहि छी।

दुनू : अच्छा!

सुकन्या : दुष्ट, पतित। अहाँ केँ ऋषिक श्रापक भय नहि?

दुनू : श्रापक भय?

सुकन्या : अहाँ सबहक लेल ऋषि किऐ, हमहीं किछु करैत छी।

दुनू : हँ-हँ। करू-करू !!

सुकन्या : बेस! तखन अहाँ दुनू केँ अर्द्ध-मानव बना दैत छी।

दुनू : *(कने भय)* अर्द्ध मानव?

सुकन्या : हँ। आगाँ सँ मनुष्य, पाछाँ सँ बकरी।

(दुनू अवाक। पहिने सुकन्या केँ आ तखन एक-दोसरा केँ देखैत पड़ाइए। सुकन्या मुस्कुराइत आश्रम अबैत छथि। जलपात्र राखि ध्यानस्थ च्यवनक लग जाइत छथि। च्यवन सुकन्या दिस ताकि मुस्किआइत छथि। उठिक' ठाढ़ होइत छथि। दुनू एक-दोसराक संग मंच सँ बहराइत छथि।)

(सूत्रधारक प्रवेश)

सूत्र. : च्यवन मुस्किआ उठलाह। सुकन्या मुस्किया उठली। वायु मे घन भेल स्नेहक सुगंधि। एत' अप्रिय-अधलाहक गुंजाइश कहाँ। स्नेह-पूरित संसार। एहना मे किऐ रहओ मोन, कोनो अर्द्धदेव, कोनो अश्विनी कुमार!

(दोसर कात सँ काम-पीड़ा सँ व्याकुल अश्विनी कुमारक प्रवेश।)

मुदा केना बिसरओ अश्विनी कुमार। बहसल मोन, अस्वीकार सँ आहत। काम-पीड़ाक नइँ पारावार। जल सँ बाहर मीनवत, छटपट दुनू कुमार।

अग्र. : नश्वर मानव! प्रस्ताव नहि मानलक।

अनु. : श्राप के धमकी तक देलक।

अग्र. : देवताक तिरस्कार।

अनु. : दंडनीय व्यवहार।

अग्र. : सुनू हमर विचार।

(दुनू कनफुसकी करैए। सूत्रधार अकानैए।)

अनु. : *(प्रसन्न होइत)* उत्तम योजना अछि अग्रज!

अग्र. : तखन योजना पर कार्यारंभ करू अनुज!

(दुनूक प्रस्थान)

सूत्र. : अजीब बात छनि, बात की ? अजगुत स्वभाव छनि देवता लोकनिक। परकीयाक आकर्षण। हासिल कर 'क लेल हरदम धपाएल। परकीया केँ लुझि लेब 'क लेल आकुल-व्याकुल।

(सूत्रधारक प्रस्थान।)

(सुकन्या आश्रमक काज मे तल्लीन। गंभीर मुद्रा मे अश्विनी कुमारक प्रवेश।)

दुनू : अभिवादन करैत छी देवी।

(सुकन्या चौंकि जाइ छथि। अश्विनी कुमार केँ देखि तामस होइत छनि।)

सुकन्या : फेर आबि गेलहुँ अहाँ दुनू! अच्छा! तँ नहिए मानबै ? बनबे करबै आधा मनुख, आधा बकरी।

अग्र. : नहि राजकुमारी नहि।

अनु. : क्रोधित जुनि होउ।

सुकन्या : हम आब राजकुमारी नहि। महर्षि च्यवनक अर्द्धांगिनी छी।

अग्र. : हँ! हम, महर्षि च्यवनक अर्द्धांगिनीक समक्ष क्षमा प्रार्थी छी।

अनु. : अपना व्यवहार सँ लज्जित छी

दुनू : पश्चाताप सँ दग्ध छी।

सुकन्या : जाउ हे, अर्द्धदेवगण! हम अहाँ केँ क्षमा करैत छी। पुनः एहन दुःसाहस नहि करब!

दुनू : नहि करब, सपनहुँ मे नहि करब।

सुकन्या : जाउ।

दुनू : अशेष धन्यवाद देवी।

सुकन्या : प्रयोजन नहि।

अग्र. : अहाँ केँ प्रयोजन नहि। हमरा आत्मा केँ शांति भेटत

अनु. : हृदयक दाह कने कम हैत।

सुकन्या : अर्थात्।

अग्र. : एक टा आग्रह अछि।

अनु. : हमरा दुनूक।

सुकन्या : आग्रह।

अग्र. : हमर जे ज्ञान अछि, ताहि सँ अहाँक लेल किछु कर' चाहैत छी।

अनु. : जँ अहाँक अनुमति हो देवी।

सुकन्या : एहन किछु नहि अछि, जे अहाँ क' सकी हमरा लेल।

अग्र. : एक टा काज तँ निःस्संदेह अछि।

सुकन्या : कोन काज?

अनु. : महर्षिक देह केँ युवा बना सकैत छी। युवा महर्षि च्यवन।

सुकन्या : अच्छा!

अग्र. : हँ देवी!

अनु. : चमत्कार नहि। औषधिक प्रयोग सँ

अग्र. : यैह तँ हमर ज्ञान अछि।

सुकन्या : परंतु एकर उत्तर स्वयं महर्षि द' सकैत छथि। हम नहि!

(च्यवनक प्रवेश)

च्यवन : *(प्रवेश करैत)* एहन कोन बात छै सुकन्ये!

दुनू : प्रणाम महर्षि!

च्यवन : प्रणाम अश्विनी कुमार।

सुकन्या : स्वामी! सुनल हिनक प्रस्ताव?

(च्यवन, आश्वस्त करैत, सुकन्या केँ पाँजर सँ सटा, माथ सोहरबैत छथि।)

च्यवन : अच्छा! अश्विनी कुमारक प्रस्ताव की छनि?

अग्र. : महर्षि! हमर दुनू गोटेक कामना जे औषधि-प्रयोग सँ, अपनेक ओ रूप दी जे समाधि सँ पूर्व छल।

च्यवन : एहि आकस्मिक कृपाक कारण?

अनु. : महर्षि! पुरुष, सुन्दरी आ युवा पत्नीक कामना करैत अछि।

च्यवन : सत्य वचन। हमहू सैह केलहुँ।

अग्र : तखन महर्षि! स्त्री केँ सेहो सुन्दर आ युवा पतिक कामना हेतै।

च्यवन : स्वाभाविक।

सुकन्या : स्वामी! अहाँ केँ कखनो लागल जे अहाँक रूप आ वयस हमरा प्रेम आ समर्पण मे कखनो बाधक रहल अछि?

च्यवन : नहि सुकन्या! अहाँक प्रेम आ समर्पण तँ हमरो तपस्या सँ पैघ अछि। एखन हमरा अपन कर्तव्य निश्चित करबाक अछि।

सुकन्या : केहन कर्तव्य स्वामी?

च्यवन : प्रिय! एखन हमारा समक्ष एक टा अवसर अछि। वयस आ रूप मे अहाँक समकक्ष हेबाक। हम, एहि अवसरक उपयोग कर' चाहैत छी।

सुकन्या : स्वामी!

अग्र. : हमरा छल विश्वास। महर्षि हमर बात केँ बुझलनि।

च्यवन : हमहू अहाँक बात बुझैत छी अश्विनी कुमार।

अनु. : ऐं! हमर...बात!

अग्र. : की आज्ञा होइत छै महर्षि?

च्यवन : हमरा, अहाँक प्रस्ताव, स्वीकार अछि। परंतु एक टा शर्त अछि।

दुनू : शर्त?

च्यवन : अहाँ लोकनि, औषधि-प्रयोग करब। प्रतिदान मे हमहू किछु अहाँक प्रिय करब।

अग्र. : की करब?

अनु. : पूर्ण देव बना देब।

दुनू : सोमरस पानक अधिकार दिआ देब?

सुकन्या : सुनैत छी स्वामी। ई लालसा। ई स्वार्थ! हिनका लोकनिक हृदय स्वच्छ नहि। स्वर मे दुर्गंध छै। अभिघातक प्रयास छै।

च्यवन : *(सुकन्याक माथ पर हाथ फेरैत।)* नहि प्रिय! हमर अभिघात नहि क' सकताह। की? आगाँ सँ मनुख, पाछाँ सँ बकरी बनताह!

(सुकन्या आ च्यवनक हँसी।)

दुनू : नहि! किन्नहु नहि।

च्यवन : बेस! हे अश्विनी कुमार! आरंभ करू अपन औषधि प्रयोग।

दुनू : प्रथमतः स्नान। तेँ चलू। तीनू गोटे पहिने सरिताक पवित्र जल मे स्नान करैत छी।

च्यवन : *(सुकन्या सँ)* हम अबैत छी प्रिय!

सुकन्या : आउ स्वामी!

(तीनूक प्रस्थान। एक सरि सुकन्या विचार करैत।)

कोरस : **(नेपथ्य)** दिनक उतरार्द्ध छल। सूर्य पश्चिम दिस बढ़ल जाइत। दिन छल ढरल जाइत। आश्रम मे एकसरि, सोच मे सुकन्या। दुष्ट अछि जौंआ। दुष्टता सँ फराक नहि भ' सकत। किंतु ओ की क' सकत, महर्षिक तेजक समक्ष। कत्तेक क्षण टीकत! नहि। ओ किछु नहि क' सकत। तखन व्यर्थ मे ई चिन्ता कथीक? हे हिया! थिर रहू। थिर रहू। चित्त, चंचलता त्यागू। हे बुद्धि! सक्रिय रहू। हे हिया! थिर रहू। थिर रहू।

(एक्कहि वेश मे तीन गोटेक प्रवेश। सुकन्या केँ आश्चर्य होइ छै। तुरंत ओ स्वयं केँ संयत करैए।)

सुकन्या : ई की?

तीनू : औषधिक चमत्कार।

कोरस : **(नेपथ्य सँ)** भेष एक। रूपो एक्कहि। देह-दशा एक। सोचल-बूझल चालि, चललक दुनू अर्ध-देव।

तीनू : सुकन्या! हमरा तीनू मे सँ एक छथि च्यवन। अहाँक स्वामी। आउ। आगाँ बढ़ू। हाथ पकड़ि क' ल' जाउ अपना पति केँ।

सुकन्या : *(स्वगत)* तीनूक तीनू एक्कहि रंग, रूप, भाषा, सरूप। तीनूक तीनू! अश्विनी कुमार रचलक खेल। संग द' रहल छथि महर्षि।

(सुकन्या आँखि मुनैत अछि।)

कोरस : ताकि क' सूत्र। तोड़'क छै माया। देख'क छै हृदय केँ। मुँह सँ बजैत अछि काया। हृदयक बात आँखि सँ झलकै छै। मुखरित होइए चक्षु सँ अंतस के राग। प्रवाहित होइए आँखिक कोर सँ।

(सुकन्या , करैत छथि निश्चय। आब ओ की करतीह! देह नहि। काया नहि। रूप नहि देखतीह। देखतीह ओ नेत्र। सुकन्या आगाँ बढ़ैए। एक गोटेक आँखि मे देखैए।)

सुकन्या : गौरव आर घमंड, एहि आँखि सँ झलकैए। नहि। ई नहि ओ। ई तँ जौंआ मे सँ एक।

कोरस : **(नेपथ्य)** ई नहि हुनकर आँखि।

(सुकन्या, दोसरक आँखि मे देखैए।)

सुकन्या : लिप्सा, कुत्सा, लोभ, एहि आँखि सँ हुलकैए। नहि। ई नहि ओ। ई तँ जौआक दोसर।

कोरस : ई नहि हुनकर आँखि।

(सुकन्या, तेसरक आँखि देखैए। दुनूक आँखि मिलैत छै।)

कोरस : स्नेह, मात्सर्य, करुणा। एहि आँखि मे हिलकोरैए। आवेग, ममता, आनन्द। एहि आँखि मे बसैए।

सुकन्या : स्वामी!

च्यवन : *(अपन मास्क उतारैत। युवा आनन)* प्रिय!

(दुनू, एक दोसराक हाथ पकड़ि अश्विनी कुमारक समक्ष रूढ़ होइए।)

कोरस : *(नेपथ्य)* अश्विनी कुमार। बड़का वैद। देवताक वैद। अर्द्ध देव। असफल अपना चालि मे। फसल अपने जाल। भय सँ भेल बेहाल। डरे जुलहाल।

दुनू : *(हाथ जोड़ि कँपैत क्षमा महर्षि!)* क्षमा देवी!

सुकन्या : की बुझलहुँ? अपन कुत्सित कर्म मे सफल भ' जैब!

दुनू : भयानक भूल भेल। क्षमा देवी! क्षमा महर्षि!

सुकन्या : नहि, अहाँ क्षमाक पात्र नहि। अहाँ केँ वैह बना देब उचित छै।

(दुनू दंडवत भ' धरती पर लोट' लगैए आ विलाप कर' लगैए।)

च्यवन : सुकन्ये!

सुकन्या : स्वामी!

च्यवन : आब बेसी नहि नचबियौ। क्षमा क' दियौक!

सुकन्या : बेस! थम्हू! स्थिर होइ। जाउ, क्षमा केलहुँ।

दुनू : धन्य हे देवी। बड़ उपकार...*(जाए लगैए)*

सुकन्या : थम्हू! एक टा प्रण करू!

दुनू : आज्ञा देवी!

सुकन्या : आब कोनो एहन कृत्य नहि करब।

दुनू : नहि करब। नहि करब। किन्नहु नहि करब।

सुकन्या : जँ केलहुँ।

दुनू : तखने बनि जैब। आगाँ देव, पाछाँ बकरी।

(जाए लगैए)

च्यवन : थम्हू अश्विनी कुमार।

दुनू : *(थम्हि)* आज्ञा महर्षि।

च्यवन : अहाँ लोकनि, हमर युवावस्था आपस दियौलहुँ। ताहि लेल धन्यवाद। आब अहाँ ओ प्राप्त करू, जे हम गछने छी।

दुनू : नहि! किछु नहि चाही। किछु नहि चाही।

च्यवन : से नहि हैत। अहाँ चाही, नइँ चाही हम तँ देबे करब।

दुनू : प्रस्थान करबाक अनुमति देल जाओ।

च्यवन : सोमरस पानक अधिकार सेहो नेने जाउ।

(दुनू केँ विश्वास नहि होइत छै।)

दुनू : की कहल?

अग्र. : सोमरस पानक अधिकार

अनुज : देवराजक विचार

च्यवन : बदलि देलियनि।

दुनू : बदलि देलियनि!!

च्यवन : स्वर्गलोक क' सिधारू। देवराज स्वयं देताह आमंत्रण। अपनहि हाथे देताह पात्र। सोमरस सँ लबालब करैत।

दुनू : अशेष धन्यवाद महर्षि। अशेष धन्यवाद।

च्यवन : सुकन्या मोन रहतीह?

दुनू : बकरी बला श्राप मोने रहत।

च्यवन : सैह कल्याणकारी हैत। आब सिधारू।

दुनू : प्रणाम महर्षि! प्रणाम देवी।

च्यवन : शुभास्ते पंथान।

(दुनूक प्रस्थान। सुकन्या आ च्यवन।)

सुकन्या : स्वामी!

च्यवन : प्रिय!

सुकन्या : अहाँ केँ आशंका नहि भेल।

च्यवन : रंचमात्र नहि।

सुकन्या : सामान्य मानवी छी। भ्रम भ' सकैत छल।

च्यवन : नहि भ' सकैत छल।

सुकन्या : अहाँ एतेक निश्चिंत केना भ' जाइत छी स्वामी!

च्यवन : हम अहाँ सँ परिचित छी प्रिय! अहाँ नेत्रक द्वार मे पैसि हृदय तक देखैत छी। अहाँ केँ भ्रम भइए ने सकैछ।

(सुकन्या आवेश सँ च्यवन केँ देखैत छथि।)

सुकन्या : किंतु स्वामी अश्विनी कुमार पतित कर' चाहैत छलाह । भ्रष्ट आ अपमानित कर' चाहैत छलाह।

च्यवन : प्रिय! ई हुनकर स्वभाव छनि!

सुकन्या : एहन दुष्ट, कपटी केँ वरदान किऐ देल?

च्यवन : ई, हम्मर स्वभाव अछि प्रिय!

(दुनू एक-दोसरा केँ मुग्ध भ' देखैए। सूत्रधारक प्रवेश।)

सूत्रधार : एहि सुरम्य वन मे। सुकन्या आ च्यवन। प्रकृतिक संग प्रकृति जकाँ रहैत रहलाह। स्नेह सँ सुरभित बरसात बहैत रहल।

एहने शुभ मोड़ पर कुणाल विरचित नाटिका, विराम लैत अछि।

कोरस : विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह एतहि शेष होइत अछि।

समवेत : नमस्कार।

(अंतिका, अप्रैल-जून, 2013)

प्रेमक विस्तार उर्फ
श्वेताक आविष्कार

स्थान : (1) राज परिसर
(2) वन प्रदेश

भूमिका

उद्घोषक : नाटकक सूत्रधार
श्वेता : राजनर्तकी
अतिरथ : राजा
नीलम : श्वेताक सखी, नर्तकी
शीलम : श्वेताक सखी, नर्तकी
कंचुकी : राजसेवक
दरबारी :

(संगीत। प्रकाशक संग राज परिसरक नृत्यशाला। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : एक टा छलाह राजा। राजा नहि महाराजा। नाम छलनि अतिरथ। से महाराजा अतिरथक दरबार मे सम्मानपूर्ण स्थान छलैक—संस्कृति, शिल्प आ कलाक। नियमितता छलैक संगीत, नृत्य, चित्रांकन, अभिनय सबहक आयोजन मे। बेस रुचि लैत छलाह महाराज। बेस आनंदित रहैत छल गुणवंत-कलावंत। गुँजायमान रहैत छल रंगमहल। सूर आ तालक मंदाकिनी बहैत छल।

(घूँघरुक स्वर। श्वेताक प्रवेश।)

यैह छथि, हमर कथा नायिका—श्वेता। नृत्य-महलक नव्यतम नर्तकी।

(श्वेता, नृत्यक विभिन्न मुद्राक अभ्यास जकाँ करैत छथि।)

आगत छै वाषिक समारोह—नृत्य आ संगीतक। समारोह मे सेवामुक्त हेतीह वर्तमानक राजनर्तकी। चयन हेतै नव राजनर्तकीक। श्वेता छथि प्रबल प्रत्याशी। संभावना छै, हिनके चयन हेबाक। से आगत समारोहक कल्पना मे मगन छथि श्वेता। हृदय मे आशंका आ विश्वास झिलहरि खेलाइत छनि। रोम-रोम पुलकित बुझाइत छनि।

(उद्घोषकक प्रस्थान। प्रकाश श्वेता पर।)

श्वेता : आह! कतेक नीक लगैत छै सब किछु। सुंदर, शुभ, अनुपम। होइत छै कामना—एतहि रही, नहि जाइ कतहु। अहा! ई मंद-मंद सिहकैत बसात, बसात मे फूलक सुगंधि। बसात मे मिझरायल संगीत आ हुलास। हँ! यैह छै। स्वर्ग छै तँ यैह छै। यैह छै स्वर्ग, यैह छै।

(विराम। संगीत आ श्वेताक नृत्य-मुद्रा।)

सघन प्रशिक्षण—सात वर्षक। कहियो विराम नहि। तैयो बुझाइत अछि जेना बीतल हो सात टा दिन। बुझाइत छल जे अस्सी योजन दूर, से दिन अछि काल्हि। अझुके पीठ पर। संझुके परात, काल्हि हैत हमर नृत्य, कला-मर्मज्ञ महाराज अतिरथक समक्ष। काल्हि धन्य हैत हमर जीवन। सार्थक हैत हमर साधना, पूरत मनोकामना!

(कल्पना मे लीन भ' जाइए। प्रकाश अतिरथ पर। ओ सिंहासन पर बैसल आ गंभीर। तद्नुरूप पार्श्व-संगीत।)

अतिरथ : हँ! हम प्रेम करैत छी कला सँ। आदर करैत छी कलाक। कला जे निरपेक्ष छी। शरीरक महत्त्व एतबे जे ओ संवाहक छी कलाक। तँ चित्त मे शांति चाही। हृदय मे स्थिरता चाही। मस्तिष्क मे विलक्षणता चाही। नेत्र मे ओ तेज चाही जे देखय कला केँ शरीर सँ फराक क'क'। विवेक हो, जे नीर केँ हटाक' क्षीर पर संकेंद्रित हो। तखने संभव अछि परिदर्शन-कलाक सौंदर्य सँ, ओहि सँ निस्सरित आनंद सँ।

(प्रकाश संपूर्ण दरबार पर। एक कात अन्य दरबारी दोसर कात वादक लोकनि। मध्य मे नृत्य करैत श्वेता। नृत्यक अंत भेला पर पहिने महाराज दू बेर साधु! साधु! कहैत छथि। तखन अन्य दरबारी 'साधु-साधु' कहैत छथि। श्वेता अपलक महाराज दिस देखैत अछि। ओकरा आँखि मे नेह छै। महाराज भावविहीन रहैत छथि। दरबारी सब कानाफुसकी करैत अछि। प्रकाश क्रमशः मात्र श्वेता पर।)

श्वेता : नगर-भ्रमण करैत, महलक प्रांगण मे टहलैत, रथ पर आरूढ़ कतेको बेर देखल महाराज केँ एहि विगत सात बरख मे। आइ देखल एत्तेक ल'ग सँ। की ने की भ' गेल। अपन मोन नहि रहल अपन।

(विराम। पार्श्व संगीत)

लगैत छल एनमेन सपना जकाँ। सूर्य सन देदीप्यमान। नहि, क्षुद्र आकर्षण नहि। अपरूप, सम्मोहन। परंतु आश्चर्य! एहनो की संभव छै! विश्वास

नहि होइत अछि। अद्भुत निरपेक्षता छल महाराजक मुद्रा मे!

(विराम)

ओ नहि देखैत छलाह हमरा। नहि देखि रहल छलाह एक नर्तकी केँ। देखैत छलाह नृत्य। नर्तकीक देह सँ फराक नृत्य! वाद्य-शिल्पीक काया सँ फराक संगीत। नृत्य-गतिक कुशलता आ संगीतक सौंदर्यक परिदर्शन। परंतु कलाकार सँ निरपेक्षता केना संभव भ' सकैए। सुंदरताक मर्मज्ञ, सुंदरी सँ निरपेक्ष केना भ' सकैए! की...महाराज...स्त्री-विरक्ति नामक व्याधि सँ ग्रस्त तँ ने छथि...

(प्रकाश एसगर अतिरथ पर।)

अतिरथ : नहि! स्त्री सँ विरक्त नहि छी हम। नहि छी स्त्री-विरोधी। माता, स्त्री छथि। तखन केना भ' सकैत छी स्त्रीक विपरीत। आदर करैत छी स्त्रीक हम। अश्लील-फूहड़ आचरण मान्य नहि हमरा। प्रशंसा मे उत्साहक अतिरेक, अश्लीलता अछि, अश्लीलता रहत। एकर वर्जना करैत छी हम।

(विराम। भाव-परिवर्तन)

जनैत छी हम। हमरा संत कहैत अछि प्रजा। प्रचलित छै सर्वत्र, जे हमरा विषय-भोग सँ आसक्ति नहि। कोना ई सब निश्चित भ' गेलै, हम नहि जनैत छी। परंतु हम जनैत छी, जे स्त्री मात्र मे हमरा कोनो आकर्षण नहि लगैत अछि। स्त्री-संगक कामना नहि होइत अछि। तेँ हमरा आँखि सँ नहि झलकैत अछि एहन कोनो लालसा। संभवतः तेँ कोनहु स्वयंवर मे हमरा कंठ मे जयमाल नहि पड़ल।

(विराम। अपन बात पर अड़ैत सन।)

तैयो! हम स्वयंवर मे जाइत छी। आमंत्रण केँ अस्वीकार नहि करैत छी। जाइत छी स्वयंवर मे। ओहि उत्सवक सौंदर्य सँ आनंदित होइत छी, हृदय सँ पुलकित होइत छी।

(विराम! स्वर मे दृढ़ता।)

नहि! हम अविवाहित नहि रहब। हमरे पर नहि ठमकत हमर वंश-परंपरा। एही निमित्त हम करब विवाह। परंतु एहि लेल होब' वाली पत्नीक विषय मे सोचब अनर्गल अछि। प्रेम करब तँ नितांत मूर्खता थिक, एक टा अकाजक काज!

(अतिरथ पर सँ प्रकाशक लोप। एसगर उत्तेजित सन श्वेता पर प्रकाश।)

श्वेता : अजगूत सिद्धांत अछि। प्रेम, मूर्खता! प्रेम करब अकाजक काज! तखन मनिषी लोकनि जे कहलनि—प्रेम सर्वोत्तम भाव अछि, प्रेम ईश्वरक अराधना सँ ऊँच कर्म अछि। से की मिथ्या? कवि जे कहैत छथि—कुसुम बिना मकरंद तहिना प्रेम बिना की जीवन, से अनर्गल! तखन हुनका देखिते हमर करेज, मुँह मे किऐ आब' लगैए? किऐ भ' जाइए सर्वांग कंटकित? एक अनिर्वचनीय भावना सँ ग्रस्त किऐ भ' जाइए संपूर्ण अस्तित्व? किऐ नहि बुझाइत अछि किछु, हुनका अतिरिक्त?

(विराम। सखी नीलम आ शीलमक प्रवेश। दुनू नुका क' श्वेताक बात सुनैत अछि)

हुनका लेल मुदा धन सन? केना भ' गेलै वास, एहन सुंदर शरीर मे एहन कठोर हृदयक? केना?

(विराम)

परंतु! हमहू क' लेलहुँ अछि प्रण! हम क' देबनि हुनका विवश। हम बाध्य क' देबनि हुनका। ओ स्वयं करताह विवाहक प्रस्ताव! हमरा सँ विवाहक याचना कर' पड़तनि हुनका। कर' पड़तनि याचना। हँ!

(नीलम आ शीलमक प्रत्यक्ष प्रवेश)

नीलम : सपना तँ नीक अछि। मुदा नीक की बेजाय। सपना तँ सपने भेल।

श्वेता : एह नीलम। बात गढ़ब, बेस सीखलौए अहाँ!

नीलम : हम बात नहि गढ़ै छी श्वेता। अहाँ केँ मना करैत छी। जीवन सँ खेलौड़ि जुनि करू। एकरा बुझौअलि जुनि बनाउ।

शीलम : अहाँक प्रण कहियो पूरा नहि हैत श्वेता। एतबा अहाँ मानि लिअ।

श्वेता : किएक? हमरा मे प्रण केँ पूरा करबाक क्षमता नहि। हम ओहि जोगरक नहि। कहू-कहू सखी! की हम सुयोग्य नहि।

शीलम : सब तरहें योग्य छी। सुयोग्य छी अहाँ। अपूर्व सुंदरी छी। अपरुपा छी। मुदा ताहि सँ किछु ने हैत। एतबा अहाँ जानि लिअ।

नीलम : महाराज नहि लेताह अहाँक संज्ञान।

श्वेता : केना नहि लेताह संज्ञान। अहाँ सब देखब। आखिर सखी, ओ मनुखे छथि ने।

नीलम : हमरा तँ संदेह होइए।

शीलम : हे-हे नीलम! अकरहर करैत छह। मनुख हेबा पर संदेह। सेहो महाराजक लेल। केना बजैत छ' तों।

नीलम : ऐं हे शीलम। तोरा नइँ लगैत छह। सिंहासन पर मनुख नइँ कोनो मूरूत

छै। हमरा तँ लगैए।

श्वेता : केना भ' सकै छी अहाँ एहन हृदयहीन। महाराज केँ मुरूत कहनाइ, अन्याय अछि अहाँक। हँ, ओ आन पुरुष जकाँ स्त्रीक लेल आफन नहि तोड़ैत छथि। अहाँ केँ हुनक ई छवि अद्‌भुत नहि लगैत अछि? हमरा तँ लगैत अछि। आह! अपना भावना पर एतेक नियंत्रण!

शीलम : नियंत्रण तँ तखन, जखन भावना हो। जे नहि अछि, ताहि पर नियंत्रण की? एतबा किएक नहि बूझैत छी?

नीलम : हमर तँ अनुभव यैह कहैए। नहि छनि भावना। साफे नहि छनि।

शीलम : सब स्वयंवर सँ एसगरे अबैत छथि। एतबा तँ जगत ज्ञात छैक।

श्वेता : परंतु ओ आदर्श राजा छथि। प्रजाक समस्त लोक सुखी अछि। प्रसन्न अछि। ओ हिनका करुणानिधान, पराक्रमी, दयानिधान, प्रजावत्सल, संत, की-की ने कहैत छनि। एहि धरती पर आर के अछि एहन। केओ नहि। एकमात्र महाराज अतिरथ।

नीलम : आह! श्वेता! एना उत्तेजित जुनि होउ सखी। महाराजक लेल हम सब एक टा क' नाम छी। ने मुँह ने कान, ने हाथ ने पएर!

शीलम : नाम आ ओकर कला। बस! रूप केँ नहि जनैत छथि। एतबा धरि निर्विवाद छै सखी!

श्वेता : नहि जनैत छथि तँ जानि लेताह। एकरा लेल उचित नहि, निंदा-अपवाद!

नीलम : सब बातक लेल छैक उचित आ अनुचित।

शीलम : व्यक्ति के अनदेखार करब की उचित?

नीलम : कला केँ देखब आ कलाकार केँ अनदेखार बूझब उचित?

श्वेता : जे आइ अनुचित अछि से काल्हि उचित नहि भ' जाएत, से अहाँ एखने केना कहैत छी? कहलहुँ ने। महाराज रूपक, देहक, व्यक्तिक महत्त्व जनताह।

नीलम : हमरा तँ असंभव लगैए। तेँ मना करैत छी। बिसरि जाउ महाराज केँ।

शीलम : ई संसार बड़की टा छै। एक सँ बढ़िक' एक छथि एत'। एतबा जानि लिअ!

श्वेता : हम जनैत छी सखी। अहाँ दुनू गोटे हमरा बड्ड मानैत छी। जेठ बहीन जकाँ। अहाँ सबहक अवज्ञा करैत हमरा कष्ट भ' रहल अछि। परंतु आब त' हम प्रण क' लेलहुँए सखी।

(दुनू सखी, श्वेता सँ लिपटि जाइए।)

(आब प्रकाश मे मात्र श्वेता। संगीत मे मानसिक उहापोह।

आलोड़न।)

श्वेता : कष्ट तँ असाध्य अछि। मस्तिष्क कहैए, सखी सबहक अनुकूल कर। हृदय से नहि कर' दैए। अंतस मे एक टा फाँस अछि गड़ल! अंतस खूने-खूनाम लगैए। नहि। हम मस्तिष्क केँ बूझा लेब।

(विराम)

सत्य कहैत छथि नीलम। शीलम सत्य कहैत छथि।... जान झोंकि देने रही प्रदर्शन मे हम। सब छलाह चमत्कृत। सबहक आँखि मे प्रशंसा। चारू भर पुष्पवृष्टि! परंतु महाराज! जनिका लेल हमर नृत्य, से महाराज शून्य मे देखैत सन। मुर्तिवत्! ने उष्मा ने भाव!

(विराम)

जेरक-जेर अबैत अछि। संपन्न, संभ्रांत, कुलीन, शक्तिमान आ रूपवान। पुष्प, स्वर्ण, प्रशंसा आ कविताक बरखा होइत अछि। सब हमरा सँ प्रणयातुर। हमर गुणगान मे कवि बनल जाइत सब...परंतु हम जनिका मुँह सँ सुन' चाहैत छी... कोनो बोल, हमरा बारे मे। से बजिते नहि छथि। प्रस्तरवत रहैत छथि। रहथु। हुनका हमर चिंता नहि। कोनो बात नहि। हमरा अपन चिंता करक चाही ने। हम अपन प्रण पर अटल रहब।

(नीलम-शीलमक प्रवेश।)

नीलम : कतेक बेर कहू अहाँ केँ। अहाँक प्रण निरर्थक अछि।

शीलम : महाराज अहाँ दिस तकबो नहि करताह।

नीलम : आइ तक ककरो दिस नहि तकलनि। हुनको प्रण छनि ने।

शीलम : स्वयंवरा के ई मुरुत बुझाइत हेथिन। तेँ ने सब स्वयंवर सँ खालिए हाथ अबैत छथि।

नीलम : यथार्थ केँ मानू सखी। वास्तविकता केँ बुझू। एत्तेक रास सुंदर, स्वस्थ आ संपन्न युवा सब अबैत छथि।

शीलम : ओ सब अहाँ सँ स्नेह करैत छथि।

नीलम : किनको वरण करू! विवाह करू। सुखी रहू!

शीलम : जे सुख पत्नी बन' मे छैक श्वेता, से रानी बन' मे नहि। एतबा मानि लिअ'।

नीलम : अप्पन पति, अप्पन बाल-बच्चा, अप्पन घर! यैह छै सुख! नर्तकीक जीवन सँ कतेको गुणा बढ़ि!

शीलम : श्रेष्ठ आ सुंदर।

नीलम : पत्नीक जीवन श्वेता। अहाँ पत्नी बनू, रानी नहि!

श्वेता : अहाँ जे कही सखी! हमरा ल'ग विकल्प रहल कहाँ। हम रानी-महारानी नहि। प्रेमक पात्र टा बन' चाहैत छी सखी। हमरा चाही मात्र प्रेम।

शीलम : हे! ई रूप आ यौवन सब दिन नइँ रहत। एतबा गीरह बान्हि लिअ'

श्वेता : निस्संदेह नहि रहत शीलम। मुदा हमरा नर्तकीए बनल रहब नीके लागत। हम घुँघरुए पहिरने मरब!

(दुनू सखी श्वेताक मुँह दबैत अछि। घराजोड़ी क'क' कनैत अछि।)

(स्थान परिवर्तन। मंदिरक रास्ता। मंदिरक पार्श्व मे अबैत अतिरथक पैर पर श्वेता माला रखैत अछि। अतिरथ अकचका जाइत छथि।)

अतिरथ : ई की? के अहाँ?

श्वेता : राजनर्तकी, श्वेता!

अतिरथ : कथीक कामना?

श्वेता : महाराजक दर्शन। चरण-वंदन।

अतिरथ : अनावश्यक कामना अछि। धृष्टता भेल ई। नर्तकीक स्थान छैक रंगमहल नइँ तँ आवास! अहाँ अनुशासन तोड़बाक दोषी छी।

श्वेता : मंदिर तँ होइत छै सबहक लेल महाराज। एत' सब आबि सकैत अछि ने महाराज! आ की नइँ आबि सकैत अछि?

अतिरथ : आबि सकैत अछि! परंतु ओहि काल मे नहि, जखन हम अबैत छी। ओहि बाटे नहि, जाहि द'क' हम अबैत छी?

श्वेता : आज्ञा शिरोधार्य महाराज!

(अन्हार! पुनः प्रकाश! आब एसगर श्वेता!)

श्वेता : की केओ एतेक हृदयहीन भ' सकैत अछि!! अनुराग हो तँ तकरा व्यक्त करब अपराध भेलै? भावनाक अभिव्यक्ति अनर्गल बात भेलै? ...सखी लोकनिक कथा सत्य लागि रहल अछि...नहि! हे मन! स्थिर होअ' हम परास्त नहि हैब! हम विवश क' देबनि महाराज केँ। हुनका आब' पड़तनि। हमरा ल'ग आब' पड़तनि हुनका!

(अन्हार! पुनः प्रकाश। नदी कातक रास्ता! अतिरथ भ्रमण करैत बाट पर। दोसर कात सँ श्वेता आबिक' पुनः राजाक पयर पर पुष्प माल्य रखैत अछि।)

अतिरथ : अहाँ! एत्तहु आबि गेलहुँ। की कहने छलहुँ हम? बेर-बेर अहाँ उद्दंडता

करैत छी। अहाँक ई दुस्साहस!

श्वेता : महाराज! क्षमा हो महाराज! अपनेक आज्ञा छल, मंदिर जेबाक समय बदलि लेब। हम बदलि लेलहुँ। परंतु महाराज! ई स्थल तँ मंदिर नहि।

अतिरथ : निश्चय नहि! परंतु एना बेर-बेर हमर सान्निध्य प्राप्त करबाक प्रयास। अनुचित अछि। अतीव अप्रिय लगैत अछि हमरा। हमरा सँ भेंट करबाक प्रयास वर्जित होइत अछि। हम स्वयं बजाएब तखने आयब! ई हमर आदेश अछि।

(अतिरथक प्रस्थान! छगुन्ता मे पड़ल श्वेता स्तब्ध रहि जाइए।)

श्वेता : की ई राजा सरिपहुँ प्रस्तरवत् छथि। आ की लोक जे हिनका संत कहैत अछि तँ हिनकर एहन व्यवहार छनि! अपन छवि केँ अक्षुण्ण राख' दुआरे करैत छथि एना। आ की एक नर्तकी केँ अपना सँ बात करक योग्य नहि बुझैत छथि। नर्तकी हैब अयोग्यता भेलै? ...भ' सकैए सार्वजनिक स्थल पर अपन भावना व्यक्त नहि कर' चाहैत होथि! एकांत मे सहज मानवीय रूप प्रकट भ' जानि। हमरा एहन एकांत अवसर ताक' पड़त! परंतु ई एकांत केना भेटत? की करू हम!

(अंधकार! पुनः प्रकाश। दरबारक दृश्य! संगीत आ नृत्य। एकाएक श्वेता नचैत-नचैत थम्हि जाइए। सब अवाक् रहि जाइए।)

अतिरथ : नृत्य थम्हल किएक? की भेल? नर्तकी ठीक छथि!

श्वेता : हँ! हम एकदम ठीक छी महाराज!

अतिरथ : संगीत-संगत मे विसंगति तँ भेल नहि!

श्वेता : संगीत मे कोनो विसंगति नहि भेल महाराज।

अतिरथ : तखन नृत्य किएक थम्हल?

श्वेता : हम नृत्य नहि क' सकब!

अतिरथ : नहि क' सकब! ई अनुशासन तोड़ब हैत। राज-सिंहासनक अनादर मानल जैत।

श्वेता : हम अनुनय करैत छी। नृत्य नहि क' सकब!

अतिरथ : तखन गायन करू!

श्वेता : गायन सेहो नहि क' सकब!

अतिरथ : ने नृत्य ने गायन! अहाँक मस्तिष्क अपना स्थान पर अछि तँ नर्तकी!

श्वेता : निश्चित रूप सँ निर्धारित स्थान पर अछि महाराज! हम ने नृत्य करब ने गायन!

अतिरथ : परंतु किएक? कारण स्पष्ट करू!

श्वेता : हम स्पष्ट करब महाराज! परंतु एकांत मे।

अतिरथ : एकांत मे?

श्वेता : हँ महाराज!

अतिरथ : एवमस्तु!

(थपड़ी पीटैत अछि। शांति। प्रकाश समेटि क' श्वेता आ अतिरथ पर आबि जाइए।)

अतिरथ : नर्तकी! हम प्रतीक्षा क' रहल छी!

श्वेता : महाराज! हमर एक टा याचना अछि!

अतिरथ : याचना!

श्वेता : हँ महाराज!

अतिरथ : कथा स्पष्ट करू।

श्वेता : महाराज! हम एकांत मे मात्र अहाँक उपस्थिति मे नृत्य कर' चाहैत छी!

अतिरथ : एकांत मे! मात्र हमरा उपस्थिति मे?

श्वेता : एहि लेल याचना, जे अहाँ एहि नर्तकीक आवास मे पधारबाक कृपा करी!

अतिरथ : हम अचंभित छी! एहन धृष्टता! एत्तेक दुःसाहस!

श्वेता : दासी प्रार्थना करैत अछि महाराज! अहाँक चरण-रज सँ हमर आवास पवित्र हैत। अपन कलाक प्रदर्शन मात्र महाराजे लेल क'क' नर्तकी धन्य-धन्य हैत!

अतिरथ : असंभव! एक टा राजा, नर्तकीक भवन मे जाए! कल्पनातीत!

श्वेता : परंतु किएक महाराज! इतिहास साक्षी अछि अनेको सम्राट, कतिपय अहुँ सँ पैघ राजा, नर्तकीक महल मे सहर्ष गेलाह! सामान्य लोकक ओत' गेला सँ श्रेष्ठ व्यक्तिक महानता मे क्षय नइँ होइत छैक महाराज! अपितु वृद्धिए होइत छैक! सूर्यक किरण, शीतल मंद-पवन, महल आ मड़ैया मे अंतर नइँ करैत अछि। चानक शीतलता ऊँच-नीच नइँ देखैत अछि। ईश्वर, मनुष्य मात्रे केँ एक समान बनबैत छथि...

अतिरथ : आब आर एक शब्द नहि! अहाँक बुद्धिमत्तापूर्ण उपदेश सुनबाक समय नहि अछि हमरा लग। जाउ! अहाँ अविलम्ब हमरा दृष्टि सँ फराक भ' जाउ! जाउ!

(श्वेता क'ल जोड़ि ठेहुन रोपि प्रार्थना करैए)

श्वेता : अहाँ उदार छी। राजा छी। प्रजावत्सल छी। की अहाँ सँ किछु प्राप्त

करबाक अधिकार हमरा नहि ?

अतिरथ : कहू ? कतेक स्वर्ण चाही ? कोन भवन चाही ? कतेक भूमि दिय' हम अहाँ केँ ?

श्वेता : हमरा चाही, हमरा भवन मे अहाँक उपस्थिति। मात्र अहींक लेल नृत्य करबाक अवसर चाही। अहीं मात्र लेल गायनक सौभाग्य चाही!

अतिरथ : अहाँ सीमाक अतिक्रमण क' रहल छी। अहाँ जे चाहैत छी से असंभव अछि।

श्वेता : *(दृढ़ होइत)* हमरा सँ अहाँ केँ भय तँ ने होइत अछि महाराज?

अतिरथ : नर्तकी! भय अहाँ केँ हेबाक चाही।

श्वेता : नहि महाराज! भय हमरा नहि होइत अछि। अहाँ एकांत मे हमरा संग रहबा सँ डेराइत छी! अहाँ हमर प्रशंसा कर' सँ डेराइत छी। अपना चारू भर फुसिक मर्यादाक शीश महल ठाढ़ केने छी अहाँ। भय अहाँ केँ अछि। एहि शीश महल के टुटि जेबाक। हमरा कोनो भय नइँ। हम तँ अहाँ सँ प्रेम करैत छी आ निःसंकोच कहैत छी।

अतिरथ : ओह! चरम! पराकाष्ठा! *(औंठी बहार क'क' श्वेता पर फेकैए।)* एहि क्षण रंगमहल सँ निर्गत होउ। आइ सँ रंगमहल मे अहाँक प्रवेश वर्जित रहत! जाउ!

(औंठी श्वेताक गाल पर लगैत छैक। रक्त बहराइत छैक। श्वेता औंठी उठाक' एक क्षण देखैए। पुनः अतिरथ दिस देखैए। प्रस्थान। अंधकार।)

(नदी तटक रास्ता पर प्रकाश। श्वेताक प्रवेश।)

श्वेता : रंगमहल सँ बहरा गेलौं। चूबैत रक्त आ झहरैत नोर संग छल। नदीक शीतल जल, मुक्त क' देलक नोर आ रक्तक ताप सँ।

(उपर देखैए।)

हजारो-हजार तारावलि सँ भरल आकाश। केना स्नेह सँ देखि रहल छथि हमरा दिस! आह! मोन आह्लाद सँ भरल जा रहलैए!...

ई विचार हमरा मोन मे पहिने किएक नहि आएल?

...हजारो-हजार तारागण सँ सज्जित आकाश! सरिताक चंचल जलधार। मंद-मंद बहैत बसात! नृत्यक गति मे लीन जकाँ गाछ-पात। अहा! बिनु मँगनहि। बिना कामना के प्राप्त होइत ई सुख।...ई सब पहिने हमरा ध्यान मे किऐ नहि आयल? अनेरे हम स्वयं केँ त्यक्त मानि बैसलौं। ई सब हमरा संग छथि। नहि, संगे टा नहि! स्वागत मे बाँहि

पसारने छथि।

(आनन्दित भ' जाइत अछि।)

भल केलनि अतिरथ जे हमर याचना नहि मानलनि! हमरा तँ एहि अपरूपक प्राप्ति लिखल छल।

(प्रार्थनाक मुद्रा मे बैसैत अछि।)

हमरा स्वीकार करू! हम जेहने छी, तेहने मे हमरा अपना अंक मे समेटि लिअ। अपन कृपाक महासागर सँ एक बूँद द' दिअ हमरा। कृतार्थ करू हमरा। अपना हृदय मे स्थान दिअ।

(क्रमशः अंधकार! उद्घोषकक प्रवेश। प्रकाश उद्घोषक पर।)

उद्घोषक : श्वेताक अवसाद हेरा गेलै। विषाद मेटा गेलै। अपमान आ उपेक्षा बिसरि गेलि। रमि गेल प्रकृतिक सौंदर्य मे। भ' गेल मगन आंतरिक आनन्द मे। परंतु अतिरथ! हिनका लेल तँ भ' गेलनि सब किछु विपरीत। मोन लगनि नहि। कतहु नहि। ने राज-काज मे। ने रंगमहल मे। ने नृत्य मे। ने संगीत मे। ने खेल-तमाशा मे। ने भ्रमण मे। तटस्थता बिला गेलनि। स्थितिप्रज्ञता नहि जानि कत' चल गेलनि। देखाए लगलनि सब ठाम श्वेताक अक्श! नचैत श्वेता। गबैत श्वेता। प्रेमक निवेदन करैत श्वेता। कनैत-उदास श्वेता। जखन-तखन, आँखिक सोझाँ श्वेता आ कान मे ओकर स्वर। बड़ बेमन भ' गेलाह अतिरथ!

(प्रस्थान। प्रकाश एकाकी अतिरथ पर।)

अतिरथ : जेना रिक्त भ' गेल अछि अंतस। शून्य! भकोभन्न!... बाहर सँ सब किछु अछि ओहिना। पूर्ववत्!... दू टा स्वयंवर-सभा मे सहभागिता केलौं। पड़ोसी देशक राजकीय यात्रा पर गेलौं। ...प्रतिदिन रंगमहल मे, होइतहि अछि विभिन्न कलाक प्रदर्शन। उपस्थित रहितहि छी। ...परंतु हरदम कथूक अभाव बुझाइत अछि। खाली-खाली सन। की ई अभाव ओहि गायिका-नर्तकीक तँ ने अछि!...बाकी सब प्राणहीन कठपुतरी सन बुझाइत अछि। गायन मे रस नइँ। नृत्य मे भाव नइँ। सब किछु कृत्रिम सन, यांत्रिक सन लगैत अछि। स्पंदन नहि। सौंदर्य नहि। ओ नर्तकी तँ कला-सौंदर्यक चरम छल। ...परंतु ओ ढीठ छली। जिद्दी छली। ई ओकर अवगुण छलै। खतरनाक अवगुण। परंतु तखन हमर हृदय किएक अछि एतेक व्याकुल? जाइत-जाइत ओकर ओ दृष्टि, रहि-रहिक आँखिक सोझाँ आबि जाइत अछि। ओकर बोल कान मे गनगनाइत रहैत अछि। की हमरा सँ भूल तँ ने भेल?...ओकर

तँ एतबे ने कामना छलै जे हम ओकर गायन सुनिऐ, नृत्य देखिऐ, एसगर मे। ई कोनो अनर्गल बात तँ नहि भेलै! अनुचित किछु नहि छै एहि मे। तखन हमरा एहि पर क्रोध किएक भेल? बिना विचार के ओकरा प्रताड़ित किएक क' बैसलौं हम?...ई हमरा मानसक दुर्बलता भेल ने...निश्चय! दुर्बलता भेल...

(घुर-बहुर कर' लगैए।)

ठीक छै। हम अपना भूलक सुधार करब। हम एसगर मे ओकर गीत सुनब, नृत्य देखब! परंतु ओहि नर्तकीक—श्वेताक आवास पर नहि। राजमहल मे। हम एखने आदेश दैत छी।

(थपड़ी पीटैए। कंचुकीक प्रवेश।)

कंचुकी : आज्ञा महाराज।

अतिरथ : राजनर्तकी श्वेता केँ अविलम्ब उपस्थित होब' कहियनु!

कंचुकी : *(हिचकिचाइत)* महाराज...ओ...

अतिरथ : की भेल! आदेशक पालन हो!

कंचुकी : क्षमा महाराज! परंतु राजनर्तकी तँ आब नहि आबि सकैत छथि।

अतिरथ : नहि आबि सकैत छथि? किएक?

कंचुकी : ओ...ओ...अपना महल मे नहि छथि।

अतिरथ : महल मे नहि छथि। राज्य मे तँ छथि ने?

कंचुकी : नहि महाराज!

अतिरथ : नहि?

कंचुकी : महाराज! संभवतः ओ आब एहि पृथ्वीए पर नहि छथि!

अतिरथ : पृथ्वी पर नहि छथि। अर्थात्...।

कंचुकी : संभवतः जल-समाधि भ' गेलनि हुनकर। हुनक वस्त्र आ आभूषण, नदीक जल सँ प्राप्त भेल अछि।

अतिरथ : मृत देह?

कंचुकी : नहि महाराज। राजनर्तकीक मृत देह प्राप्त नहि भ' सकल। संभवतः मांसभक्षी, जलचरक आहार भ' गेल।

(अतिरथ अवाक्, स्तब्ध रहि जाइत छथि। पुनः घुर-बहुर कर' लगैत छथि। एकाएक थम्हि जाइत छथि।)

अतिरथ : ईहो भ' सकैत अछि जे जल-धारा मे भसिया क' ओ कतहु कछेर लागि गेल होथि आ जीवित होथि!

कंचुकी : अवश्य भ' सकैत अछि महाराज! परंतु...

अतिरथ : परंतु हमरा ई सब सूचना पहिने किऐ ने देल गेल?

(कंचुकी माथ झुकाक' चुप्प ठाढ़ रहैत अछि।)

हुनक वस्त्र आ आभूषण कत' प्राप्त भेल?

कंचुकी : नदीक कछेर मे महाराज!

अतिरथ : हम ओत' जाएब!

कंचुकी : हम अन्वेषण-दल केँ अविलंब पठबैत छी महाराज! जँ राजनर्तकी जीवित हेतीह तँ ओ लोकनि हुनका ताकि अनताह!

अतिरथ : ई काज अहाँ केँ पहिने कर'क चाहैत छल। आब हमरा कर' पड़त। हम स्वयं अन्वेषण करब। चलू।

कंचुकी : जे आज्ञा महाराज!

(रथ पर चढ़बाक आ रथ केँ चलेबाक अभिनय। नदी-तट पर रथ रुकैत अछि।)

कंचुकी : महाराज! यैह ओ स्थल अछि।

(अतिरथ रथ सँ उतरिक' चारू कात निरीक्षण करैत छथि। पुनः रथ पर सवार होइत छथि।)

अतिरथ : रथ केँ सोझे दिशा मे ल' चलू।

कंचुकी : आगाँ एहन विकराल अरण्य अछि महाराज। बाट नहि छै। अपनेक संग पूरा अस्त्र-शस्त्र सेहो नइँ अछि। अरण्य, हिंस्र पशु, पक्षी आ सरिसृप सब सँ भरल छै महाराज!

अतिरथ : आज्ञाक पालन हो!

(रथक परिचालन मे बाधा होइत छै। वृक्ष, लता, जानवर...निरंतर बाधा उत्पन्न करैत छै। रथ थम्हि जाइत छै।)

कंचुकी : नितांत निर्जन अरण्य अछि।

अतिरथ : सैह तँ जँचबाक अछि। अरण्य सरिपहुँ निर्जन अछि।

कंचुकी : एत'कने अवकाश छै महाराज! वृक्षक सघनता कम छै। हमरा लोकनि बहुत दूर तक आबि गेल छी। अपने कने विश्राम कैल जाओ। अश्व सेहो बेस क्लांत भ' गेल अछि।

अतिरथ : बेस! ओहि जल-प्रपात ल'ग चलू!

(दुनू रथ सँ उतरैत छथि। कंचुकी, अश्व केँ रथ सँ मुक्त करबाक अभिनय करैत अछि। दुनू गोटे झरना दिस बढ़ैत छथि। ओत' एक

टा कुटी देखाइत छै। कुटीक आगाँ श्वेतवसना श्वेता बैसल छथि। अतिरथ हुनका सोझाँ जाक' ठाढ़ होइत छथि। श्वेता आँखि खोलैत छथि।)

(आश्चर्य सँ) श्वेता!

श्वेता : अतिरथ!

(श्वेता ठाढ़ होइत छथि। दुनू एक दोसरा केँ देखैत रहैत छथि।)

अतिरथ : श्वेता! हम अहींक अन्वेषण मे एत' तक एलहुँ। अहाँ केँ देखि क' हम कत्ते प्रसन्न छी—कहि नहि सकैत छी। अहाँ जे चाहैत छलहुँ सैह भेल! हम तत्पर छी। एकांत मे अहाँक गीत सुनब स्वीकार्य अछि हमरा। हृदय सँ स्वीकार अछि।

श्वेता : स्वीकार अछि!

अतिरथ : हँ, श्वेता! अहाँक जे कामना छल तकर हम आदर करैत छी!

श्वेता : परंतु हमरा तँ आब कोनो कामना नहि।

अतिरथ : कोनो कामना नहि?

श्वेता : नहि राजन्!

अतिरथ : परंतु अहाँ बेस व्यग्रता सँ एकर याचना केने रही!

श्वेता : कामना आ याचना हमर अतीत अछि राजन्!

अतिरथ : परंतु हम। महाराज अतिरथ। अहाँक ल'ग स्वयं आयल छी। एना हम जीवन मे पहिल बेर केलहुँ अछि।

श्वेता : हमरा लेल आब एकर कोनो अर्थ नहि राजन्!

अतिरथ : श्वेता! हम अहाँ केँ राजधानी ल' जेबाक लेल अयलहुँ अछि। चलू श्वेता! आपस चलू।

श्वेता : हम आब आपस नहि भ' सकब राजन्!

अतिरथ : परंतु हम...हम जे अहाँ सँ प्रेम करैत छी...हम निश्चयतः प्रथमहि दर्शन मे अहाँ केँ अपन हृदय मे बसा चुकल छी...हँ! एकरा स्वीकार कर' मे हमरा असौकर्य छल... भय होइत छल...

श्वेता : हम कृतज्ञ भेलहुँ राजन्! परंतु हमर आपसी आब संभव नहि।

अतिरथ : सुनू श्वेता! पहिने हमर बात सुनू! आब अहाँ राजनर्तकी नहि, राजरानी बनिक' राजधानी चलब। राजरानी महारानी श्वेता...

श्वेता : नहि राजन्! आब हम रानी सेहो नहि बन' चाहैत छी।

अतिरथ : परंतु, अहाँ तँ हमरा सँ प्रेम करैत छी।

श्वेता : करैत छलहुँ।

अतिरथ : छलहुँ?

श्वेता : हँ राजन्! आब हमरा ओकर निरर्थकताक ज्ञान भ' गेल!

अतिरथ : निरर्थकता।

श्वेता : आब हमरा प्रेमक असली स्वरूप सँ परिचय भेल अछि। आब हम तकरे आनन्द मे मगन छी। आह राजन् हमर खुशी कल्पनातीत अछि!

अतिरथ : असंभव! एत' एहन कोनो पुरुष...

श्वेता : अछि राजन्! सब ठाम उपस्थित ओ परम-पुरुष छथि! हम अहाँक कृतज्ञ छी राजन्! हमर एहि आनन्दक कारण अहीं छी।

अतिरथ : हम?

श्वेता : हँ राजन्! ने अहाँ हमर तिरस्कार करितहुँ, ने हमर निष्कासन होइत, ने हम स्वयं केँ चिन्हि सकितहुँ। आब हम द्वंद्वहीन छी राजन्! यैह मूल अछि हमर आनंदक।

अतिरथ : हम?

श्वेता : हँ राजन्! अहाँ। अहीं ओत' हमर प्रणय-निवेदन केँ द्रोह मानल गेल। घृष्टता आ अनुशासनहीनता कहल गेल। हम पाथर पर अपन हृदय केँ बजारिक' मात्र पीड़ा केँ आमंत्रित केलहुँ। दारुण व्यथा टा भेल हमरा! निष्कासन भेल तँ आश्रय ताक' लगलहुँ। आ देखू! हमरा की भेटल?

अतिरथ : की?

श्वेता : अमूल्य भंडार। खजाना।

अतिरथ : अमूल्य खजाना! कत' अछि? हमरो तँ देखाउ!

श्वेता : खजाना अहाँक अंतस मे अछि राजन्! मलिनताक झाँपन दुआरे अनदेखार अछि। हटाउ ओकरा आ अकलुष आनंदक अमूल्य भंडार सँ परिचित होउ। ओकर दर्शन करू। तखन अहाँ केँ कथुक आवश्यकता नहि रहि जायत!

(अतिरथ एकटक देखैत रहि जाइत छथि। श्वेता बजैत-बजैत चलैत छथि।)

श्वेता : कतेक मनोरम अछि ई स्थल। गाछ-वृक्ष, फल आ फूल, निरंतर प्रवाहित निर्झरिणी, उन्मुक्त आकाश। कोनो अवरोध नहि। कोनो वर्जना नहि। छैक मात्र प्रेम आ आनन्द। एत' चर-गोचर-अगोचर सब हमरा

सँ प्रेम करैत छथि। हम सब सँ प्रेम करैत छी।

(प्रस्थान)

(अतिरथ अपन मुकुट आ अस्त्र-आभूषण रथ पर राखि दैत छथि। श्वेताक अनुगमन करैत छथि। कंचुकी विवश भेल ठाढ़ रहि जाइत अछि। अन्हार!)

(प्रकाश मात्र उद्घोषक पर)

उद्घोषक : राजा अतिरथ आपस नहि भेलाह। श्वेता सेहो आपस नहि भेलीह। कहल जाइत छै जे ओ लोकनि प्रकृतिक संगीत मे मिलि गेलाह। एकमएक भ' गेलाह।

(मधुर संगीत। यवनिका)

(अंतिका, जुलाइ-सितंबर, 2014)

प्रेमक परीक्षा उर्फ
सुप्रभा आ अष्टावक्र

स्थान : (1) वन-प्रदेश
(2) राज-दरबार
(3) स्वर्ग

भूमिका :

उद्घोषक : नाटकक सूत्रधार
महर्षि वदन्य : सुप्रभाक पिता
अष्टावक्र : सुप्रभाक प्रेमी, महर्षि कहोदक पुत्र
महर्षि कहोद : अष्टावक्रक पिता
सुजाता : अष्टावक्रक माय
महर्षि उद्वालक : अष्टावक्रक नाना
श्वेतकेतु : अष्टावक्रक मामा
(अष्टावक्र सँ चारि-पाँच वर्षक जेठ)
सुप्रभा : अष्टावक्रक प्रेमिका,
महर्षि वदन्यक पुत्री
द्वारपाल : महाराज जनकक दरबारक प्रहरी।
महाराज जनक : मिथिलाक राजा
वंदी : मिथिलाक राजपंडित
उर्वशी : स्वर्गक अप्सरा
बालक अष्टावक्र : विकलांग।
बालक श्वेतकेतु :

(पहिल दृश्य)

(आश्रम। महर्षि वदन्य आ अष्टावक्र। महर्षि बैसल। अष्टावक्र ठाढ़। दुनूक चेहरा पर आवेश। महर्षि विरक्त आ अष्टावक्र उत्तेजित आ स्वयं केँ संयमित करबाक प्रयास। उद्घोषक प्रवेश।)

उद्घोषक : देखि रहल छी अपने लोकनि, वन-प्रदेश मे एक टा आश्रम। महर्षि वदन्यक आश्रम थिक ई। ई जे ठाढ़ आ उत्तेजित युवा ऋषि छथि, हिनक

नाम छनि, अष्टावक्र।...की कहल। एखन आठ ठाम टेढ़ कहाँ छथि? ठीक कहल। कहियो आठ-ठाम टेढ़ छलनि हिनक शरीर। आब नहि छनि।...की? केना भेल ई चमत्कार? सैह तँ कहैत छी!

(सुप्रभा, स्वयं केँ अ'ढ़ मे रखैत सन एहि कात सँ ओहि कात होइत छथि।)

पहिने हिनका सँ परिचित होउ। ई भेलीह सुप्रभा। महर्षि वदन्यक पुत्री। सुप्रभा आ अष्टावक्रक मध्य प्रगाढ़ अनुराग छनि। से अष्टावक्र महर्षि सँ विवाहक अनुमति लेब' अयलाह। स्वाभाविक छै। सुप्रभा सेहो उत्कंठित छथि।

(उद्घोषकक प्रस्थान)

अष्टावक्र : प्रभो! केना कहू आब हम? हमरा संग, कोनो कष्ट नहि हेतनि सुप्रभा केँ। परंतु अपने गंभीरता सँ हमरा बात पर सोचितहि नहि छिऐ।

वदन्य : सोचबो नहि करब हम वत्स! सोचबो नहि करब! तँ जुनि करू हमरा चंचल करबाक प्रयास। यैह उचित हैत जे अहाँ हमरा आर विरक्त नहि करी। आब अहाँ प्रस्थान करू।

(उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : अष्टावक्र व्यथित छथि। महर्षिक अस्वीकार सँ हतप्रभ छथि। ओ सुप्रभा सँ स्नेह करैत छथि। सुप्रभा हिनका सँ स्नेह करैत छथि। दुनू सक्षम छथि। गंधर्व-विवाह क' सकैत छथि। परंतु महर्षिक आज्ञाक बिना विवाह कर' नहि चाहैत छथि। महर्षि बुझैत छथि। हिनका दया अबैत छनि। एहि सुंदर, युवा आ योग्य ऋषि केँ निराश करैत कचोट होइत छनि। परंतु की करताह महर्षि! हृदय केँ कठोर करैत छथि। पुत्रीक विवाहक लेल जेहन पात्रक ओ कल्पना केने छथि ताहि मे अष्टावक्र कतहु नहि अबैत छथि। विवश छथि महर्षि।

(उद्घोषकक प्रस्थान।)

वदन्य : आब कोनो अर्थ नहि एत' ठाढ़ रहबाक। जाउ! हमरा किछु आवश्यक कार्य करबाक अछि। करा चुकल छी अवगत अपन भावना सँ, मंतव्य सँ। आब अहाँ प्रस्थान करू।

अष्टावक्र : चलि जैतहुँ हम! हमरे टा बात रहैत तँ एही क्षण करितहुँ प्रस्थान। परंतु समस्या छै दू गोटेक। हमरे टा नहि।

वदन्य : अच्छा! तँ अहाँ अनको मोनक बात जनैत छी।

अष्टावक्र : हमर कथन सत्य अछि से अपने जनैत छी प्रभो! सुप्रभा केँ हमरा सँ नेह छनि ओहिना जेना हमरा सुप्रभा सँ अछि। हमरा दुनू गोटे केँ अपनेक आशीर्वाद चाही!

वदन्य : कहियो नहि भेटत। बारंबार से कहि चुकल छी हम! ई असंभव अछि।

(विराम)

अष्टावक्र : कथी सँ अछि अपनेक विरोध। नहि बुझि पाबि रहल छी हम? किएक नहि भ' सकैत अछि हमर-सुप्रभाक विवाह! किएक?

वदन्य : स्पष्टीकरण देब, हमर बाध्यता नहि। तेँ आर समय नष्ट नहि करू। जाउ आ मोन मे नीक जकाँ बैसा लिअ। अहाँ संग सुप्रभाक विवाह संभव नहि। आब अहाँ सुप्रभा सँ भेट करबाक प्रयास नहि करब।

अष्टावक्र : *(चिचिआइत)* ई अन्याय अछि, अधर्म अछि।

वदन्य : की बजलहुँ अहाँ? अन्याय, अधर्म!

अष्टावक्र : *(शांत होइत)* हँ प्रभो! ई हमर आत्म-सम्मान अछि जे हमरा संयमित रखने अछि। तेँ हम दयाक याचना करैत छी अपने सँ। अनुमतिक भीक्षा मँगैत छी। निरंतर अपमानित भइयो क' प्रार्थना करैत छी, निवेदन करैत छी!

वदन्य : ओह!

अष्टावक्र : जँ हमरा अपन प्रतिष्ठाक चिंता नहि होइत तँ क' लेने रहितहुँ सुप्रभा सँ विवाह। नहि करितहुँ अपनेक अनुमतिक परवाह! परंतु अपने! ओह! ओह!

(पयर पटकैत प्रस्थान। उद्घोषकक प्रवेश!)

उद्घोषक : बजबाक लेल बाजि तँ गेलाह अष्टावक्र, परंतु लगले अपन असंयम पर क्षोभ भेलनि। बिना अनुमतिक विवाह क' सकैत छथि। से कहबाक कोन आवश्यकता छल।

(बाट पर अष्टावक्र। स्वागत कथन।)

(उद्घोषकक प्रस्थान)

अष्टावक्र : ओह! ई हमरा की भ' गेल? एना क्रोध करब, क्रोध मे ओ सब बात बाजब! अनुचित भेल। घोर अनुचित! महर्षि केँ अपना पुत्री पर शंका होब' लागल हेतनि! ओह! कतेक कष्टकर बात भेलै ई! ...कष्ट... हम की कम कष्ट भोगि रहल छी?...जतेक प्रार्थना कैल ततेक रुष्ट होइत गेलाह। जाए दिऔ। थोड़ेक आर रुष्ट भेल हेताह। होथु ग'! हमरा

लेल ई कोन नव बात भेल। सब हमरा पर रुष्टे तँ होइत गेलाहए। माएक गर्भहि मे रही तँ पिता रुष्ट भ' गेलाह। श्राप द' देलनि। आठ ठाम टेढ़ भेल जनमलहुँ। तेँ ने ई नाम—अष्टावक्र!

(प्रस्थान। दृश्यांतर)

(दोसर दृश्य)

(ऋषि कहोदक आश्रम। ऋषि छात्र लोकनि केँ शिक्षा दैत। बगल मे गर्भवती ऋषि पत्नी सुजाता बैसल किछु करैत। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : तँ ई अछि ओ समय जखन अष्टावक्र गर्भ मे छथि। पिता ऋषि कहोद, शिष्य लोकनि केँ शिक्षा द' रहल छथि। गर्भ भार सँ परिश्रांत छथिन माता।

(विद्याध्ययनक स्वर! सुजाता किछु गुनगुना रहल छथि। एकाएक पार्श्व स्वर अबैए।)

स्वर : अशुद्धम् पिता, अशुद्धम्! शुद्ध पाठ छैक...

(पाठ पढ़ैत अछि)

कहोद : के बाजल! के केलक ई धृष्टता?

स्वर : क्षमा पिता! क्षमा! पाठ अशुद्ध छल तेँ...

सुजाता : हमरा गर्भ सँ ई स्वर आबि रहल अछि स्वामी। हमरा बच्चाक स्वर अछि ई। *(अह्लाद सँ भरि जाइत छथि।)*

(छात्रक पार्श्व स्वर)

छात्र : *(पार्श्व स्वर)* चमत्कार! चमत्कार! अजन्मा शिशु ज्ञानक भंडार! चमत्कार!

(कहोद केँ तामस होइत छनि।)

कहोद : चमत्कार अछि अवश्य। परंतु भरल छै अहंकार। ज्ञानक अहंकार। ओही मद मे चूर केलकए अनादर। पिताक अनादर जे अछि अक्षम्य अपराध। गर्भहि सँ टेढ़ बात करैत छह।

(हाथ मे जल ल'क' श्राप दैत छथि। जाह! तों आठ ठाम टेढ़ भेल जन्म लेबह!)

(सुजाता हाहाकार क' उठैए।)

सुजाता : आह नाथ! ई की कैल अहाँ।

कहोद : जे कैल से उचित कैल। एतेक टेढ़ी! जाह! शरीरो सँ टेढ़ भ' जाह!

सुजाता : आह नाथ! ई केहन उचित? अपनहि संतान केँ अपने सँ अपंग हेबा श्राप केना उचित? हे ईश्वर! हमर एहि अजन्मा शिशुक एहन दुर्भाग्य। हिनक जीवन-यापन केना हेतनि? आठ ठाम टेढ़ भ'क' की करताह? कत' जेताह? केना जेताह?

(कहोद केँ पश्चाताप होइत छनि।)

कहोद : हँ प्रिय! आवेश मे हम अनुचित क' बैसलहुँ। अपना संतानक प्रति अन्याय केलहुँ हम। हा हंत! हम अपराधी भ' गेलहुँ। विपन्नता मे अगबे तामस भरि गेल अछि।

(सुजाता पतिक वेदनाक अनुभव करैत छथि।)

सुजाता : आह नाथ! जे भ' गेलै ताहि लेल आब व्यथित जुनि होउ!

कहोद : नहि प्रिय! हमर ई अधम कृत्य...

सुजाता : नहि ऋषिवर! विचलित जुनि होउ। स्थिर करू हृदय केँ। अहाँ तपस्वी छी। सिद्ध पुरुष छी। अभिशाप द' सकैत छी तँ अहाँ वरदानो द' सकैत छी।

कहोद : प्रिय! सत्य कहैत छी अहाँ। हमर सभक ई पुत्र, पूर्वहि सँ अतिज्ञानी छथि। किनकहु सँ परास्त नहि हेताह। सर्वत्र यशलाभ करताह। धीर, विवेकी हेताह—एहि तामसी पिताक अपराध केँ क्षमा करताह!

सुजाता : आह ऋषिवर! एहन हेताह हमर पुत्र यौ!!

कहोद : हँ यै! हिनका लेल जँ किछु भौतिक साधन उपलब्ध रहितनि!... ई हमर कर्तव्य अछि। परंतु की करू? कोनहु टा उपाय नहि होइछ दृष्टिगोचर।

सुजाता : सुनैत छिऐ, मिथिलाक राजा जनक, बड़ ज्ञानी छथि।

कहोद : सत्य वचन प्रिय! परंतु हिनका दरबार मे उपस्थित होइ तखन ने कोनो प्राप्तिक संभावना।

सुजाता : हम बुझलहुँ नहि प्रिय!

कहोद : मिथिलाक राजमहलक द्वार पंडित छथि—वंदी! पहिने हिनकहि सँ शास्त्रार्थ होइत छै। शर्त छै, जँ विजयी हैब तखनहि दरबार मे प्रवेश। अन्यथा...

सुजाता : अन्यथा?

कहोद : जल-समाधि!

सुजाता : अर्थात मृत्यु?

कहोद : हँ प्रिय!

सुजाता : तखन छोड़ू। दोसरो दरबार सब तँ छै।

कहोद : छै तँ। याचना क'क' सेहो देखि चुकल छी। तखन सोचैत छी, हमहू तँ शास्त्रेक अध्ययन-मनन केलहुँ सब दिन। तेँ मिथिला जाइ, सैह उचित। हँ हम जाएब मिथिला। देखब, केहन उद्भट विद्वान छथि—वंदी। हिनक आतंकक अंत हमरहि हाथे हेतै।

(निश्चित क' लैत छथि। पत्नी सँ।)

अहाँ हमर प्रतीक्षा करब प्रिय। हम अहाँक पिता, गुरुवर महर्षि उद्दालक केँ सूचित करैत जायब। अहाँ चिंता जुनि करब। हमर प्रतीक्षा करब।

(महर्षि कहोदक प्रस्थान। सुजाता हाथ जोड़िक' महर्षिक बाट दिस देखैत प्रार्थना करैत छथि।)

सुजाता : हे मातः। महर्षिक प्रयास सफल होनि। किनकहु जल-समाधि नहि हो। एहन सुबुद्धि देबनि। दुर्गा! दुर्गतिहारिणी। दुर्गा-दुर्गा!

(उद्घोषकक प्रवेश)

उद्घोषक : महर्षि कहोद, मिथिलाक हेतु प्रस्थान केलनि। यैह देखू! आबि रहल छथि, महर्षि उद्दालक, सुजाताक पिता आ भ्राता, बालक श्वेतकेतु।

(उद्दालक आ चारि-पाँच वर्षक बालक श्वेतकेतुक प्रवेश। सुजाता, पिता आ भ्राता केँ देखि आनन्दित होइत छथि।)

सुजाता : प्रणाम पिताश्री!

(सुजाता, पिता केँ प्रणाम करैत छथि। पिता आशीर्वाद दैत छथि।)

उद्दालक : सुखी होउ पुत्री! पुत्रवती होउ।

(श्वेतकेतु बहिन केँ प्रणाम करैत अछि। सुजाता भाइ केँ दुलार करैत छथि।)

उद्दालक : पुत्री! हमरा, जामाता कहोद सँ वार्तालाप भेल अछि। हमरा सब ज्ञात भ' गेल अछि पुत्री। चलू! पिताक आश्रम चलू। जामाताक आगमन तक ओतहि रहब। अहाँ दू-जीवा छी। एहना मे, कम-सँ-कम शिशुक जन्म पर्यंत, नैहर-वास श्रेयस्कर छै पुत्री।

सुजाता : हँ पिता! हुनको यैह आदेश छलनि। परंतु आशंका सँ हृदय उद्वेलित अछि तात।

उद्दालक : नहि पुत्री! अहाँ केँ उद्वेलित नहि हेबाक चाही। संभाव्य, हेतै। द्वार पंडित वंदी जँ उद्भट विद्वान तँ जामाता कहोद सेहो ककरहु सँ उन्नते छथि, न्यून नहि। यैह टा हेतै जे जामाता विजयी भ'क' अओताह।

सुजाता : सैह होउक! अहुँक आशीर्वाद हुनका संग छनि पिता।

(हाथ जोड़ि)

दुर्गा! दुर्गतिहारिणी! दुर्गा! दुर्गा!!

श्वेतकेतु : अहाँ चिंता नहि करू बहिन। ओ अयबे करताह। अहाँ जल्दी सँ चलू।

सुजाता : वाह! हमर अनुज तँ बेस बाज' लगलाह अछि।

श्वेतकेतु : बहिन!

(सुजाता, भाइ केँ दुलार करैत छथि।)

उद्दालक : विलम्ब कथीक पुत्री?

सुजाता : कोनो विलम्ब नहि पिता।

(सुजाता भीतर जाइत छथि। नान्हि टा मोटरी लेने बाहर अबैत छथि। आश्रमक फट्टक सटबैत छथि।)

चलू पिता।

(तीनूक प्रस्थान। दृश्यांतर।)

(तेसर दृश्य)

(महर्षि उद्दालक आश्रम। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : समय, अपना गति सँ आगू बढ़ैत रहल। महर्षि कहोद आपस नहि अयलाह। अष्टावक्रक जन्म भेल। ओ चल'-फिर' लगलाह। कहोद नहि घुरलाह। अष्टावक्रक लेल महर्षि उद्दालक पिता छलथिन आ श्वेतकेतु ज्येष्ठ भ्राता समान।

(महर्षि उद्दालक आबिक' बैसैत छथि। उद्घोषकक प्रस्थान। अष्टावक्र आबिक' महर्षिक कोरा मे बैसि किछु-किछु पुछ' लगैत छथि। श्वेतकेतुक प्रवेश। ओ अष्टावक्र केँ, महर्षिक कोरा मे बैसल देखि खिसिया उठैत छथि।)

श्वेतकेतु : की नान्हि टा बच्चा जकाँ करैत छी अष्टावक्र। उतरू कोरा पर सँ।

अष्टावक्र : किएक? हम नहि उतरब।

श्वेतकेतु : एतेक टा भ'क' लोक कोरा पर नहि बैसैत छै।

अष्टावक्र : परंतु हम बैसब। हम अपन पिताक कोरा पर बैसल छी।

श्वेतकेतु : नहि। ई अहाँक पिता नहि छथि!

अष्टावक्र : हमर पिता नहि। *(ऋषि सँ)* हम, अपनेक पुत्र नहि छी?

उद्दालक : नहि वत्स! हम अहाँक...

(अष्टावक्र पूरा बात सुनने बिना दौड़िक' माए केँ पकड़ने अबैए।)

अष्टावक्र : मातेश्वरी! हमर पिता के छथि? कत' छथि ओ?

सुजाता : सुनू पुत्र! अहाँक पिताक नाम अछि महर्षि कहोद। ओ महाराज जनक सँ भेट कर' मिथिला गेलाह। अहाँक जन्म सँ पहिनहि। आपस नहि अयलाह। बारह बरख भ' गेल। कहलनि, हमर प्रतीक्षा करब। हम प्रतीक्षा क' रहल छी पुत्र!

(भावुक होइत छथि। पुनः अपना पर नियंत्रण अनैत अष्टावक्र केँ दुलार करैत छथि। उद्दालक आ श्वेतकेतुक परिचय दैत छथि।)

ई हमर पूज्य पिताश्री थिकाह। अहाँक मातामह।

अष्टावक्र : नानाश्री!

सुजाता : हँ पुत्र! श्वेतकेतु अहाँक मातुल छथि।

अष्टावक्र : मामाश्री।

सुजाता : हँ पुत्र!

अष्टावक्र : पिताश्रीक आपस नहि हेबाक कारण की भ' सकैत अछि?

सुजाता : संभवतः ओ दुष्ट वंदीक...

(कंठ अवरुद्ध भ' जाइत छनि।)

अष्टावक्र : अहाँ चुप किऐ भ' गेलहुँ माताश्री। कहू! की भेलनि पिताश्री केँ? के अछि ई वंदी?

उद्दालक : वंदी, मिथिलाक द्वार पंडित छथि पुत्र! किंवदंती छै, जे हुनका सँ शास्त्रार्थ मे परास्त होइत छथि, तनिका जल-समाधि लेब' पड़ैत छै।

अष्टावक्र : जल-समाधि? तँ की पिताश्री, द्वार-पंडित सँ परास्त भ' गेलाह?

उद्दालक : आब तँ सैह बुझाइत अछि वत्स!

अष्टावक्र : *(उत्तेजित होइत)* जँ सैह, तँ हम जायब मिथिला। देखबनि जे केहन छथि वंदी। कत्तेक ज्ञान छनि हुनका!

उद्दालक : अहाँ मिथिला जायब?

अष्टावक्र : हँ माता! हम मिथिला जायब। पिताश्री केँ आपस आनब। नहि तँ हुनकर बदला लेब।

(सुजाता अष्टावक्र केँ पकड़' चाहैत छथि। ओ हाथ झटकि क' फराक भ' जाइत छथि। किछु सोचैत छथि। श्वेतकेतु पश्चातापक

मुद्रा मे अष्टावक्रक ल'ग अबैत छथि।)

श्वेतकेतु : हम अपना व्यवहार लेल लज्जित छी अष्टावक्र। हमरा सँ अपराध भेल।

(श्वेतकेतु अष्टावक्रक हाथ धरैत छथि। अष्टावक्र, श्वेतकेतु केँ आश्वस्त करैत छथि।)

अष्टावक्र : नहि मातुल! अहाँ दुखी जुनि होउ। अपितु अहाँ तँ हमर उपकार कयल अछि। अही बहन्ने हम सत्य सँ अवगत भ' सकलहुँ। आब, हमर एक टा संकल्प अछि।

श्वेतकेतु : संकल्प, केहन संकल्प?

अष्टावक्र : हम मिथिला जायब। अहूँ संग चली तँ उत्तम।

श्वेतकेतु : हम अवश्य चलब। किंतु अहाँक उद्देश्य की अछि?

अष्टावक्र : अपन पिता केँ मुक्त करेनाइ!

श्वेतकेतु : आब, ओ अहाँ केँ भेटताह?

अष्टावक्र : तखन हम द्वार पंडित वंदी सँ शास्त्रार्थ करब। हुनका परास्त करब।

श्वेतकेतु : वंदी केँ परास्त करब।

अष्टावक्र : निश्चित!

श्वेतकेतु : परंतु बहिन आ पिताश्री सँ यात्राक अनुमति नहि भेटत!

अष्टावक्र : हमर एक टा योजना अछि।

श्वेतकेतु : योजना? केहन योजना?

अष्टावक्र : महाराज जनक, एक विराट यज्ञक आयोजन क' रहल छथि। हमरा लोकनि एहि यज्ञ मे सम्मिलित हेबाक लेल अनुमति लेब।

(कहैत माए आ नाना ल'ग अबैत छथि।)

श्वेतकेतु : विचार तँ उत्तम अछि।

अष्टावक्र : हमरा लोकनि, यज्ञ मे वेदपाठ करब। जँ महाराज प्रसन्न भेलाह तँ धनक उपहार देताह। हमरा लोकनि नानाजी केँ ओ धन आनिक' देबनि।

श्वेतकेतु : पिताश्री कहैत छथि जे महाराज जनक विद्वान, गुणग्राही आ उदार राजा थिकाह।

उद्दालक : निश्चय, महाराज जनक सर्वतोभावेन प्रशंसाक पात्र छथि पुत्र!

दुनू : तखन हमरा लोकनि केँ यात्राक आज्ञा आ आशीर्वाद दिय'।

(दुनू, उद्दालक आ सुजाता केँ प्रणाम करैत छथि। दृश्यांतर।)

(चारिम दृश्य)

(स्थान : वन-प्रदेशक रास्ता। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : अष्टावक्र गेलाह मिथिलापुरी। किछु समयोपरांत घुरलाह तँ ओ आठ ठाम टेढ़ नहि स्वस्थ सुंदर आ युवा सुंदरतम अष्टावक्र छलाह। चमत्कार भेल छलै। चमत्कार!

(नेपथ्य सँ स्वस्थ अष्टावक्रक स्वर। उद्घोषक प्रस्थान।)

अष्टावक्र : *(नेपथ्य सँ)* एहि सब बात केँ तँ अनेक बरख भेल।

(प्रवेश करैत)

डेढ़ दशक भ' गेल। आइयो सब टा घटना आँखिक सोझाँ नचैत अछि।

(नेपथ्य सँ सुप्रभाक स्वर)

सुप्रभा : *(नेपथ्य सँ)* अष्टावक्र। कने थम्हू अष्टावक्र!

(प्रवेश करैत)

एतेक तीव्र गति सँ किएक चलि रहल छी?

(अष्टावक्र सुप्रभा केँ देखि प्रसन्न होइत अछि।)

अष्टावक्र : अहाँ कत' छलहुँ? आश्रम मे नहि देखलहुँ। अहाँ की एत' हमर प्रतीक्षा क' रहल छलहुँ सुप्रभा?

(सुप्रभा चिंतित आ जिज्ञासु अछि।)

सुप्रभा : अहाँ पिताश्री सँ भेट केलियनि? ओ एखनो अपने जिद पर अड़ल छथि?

अष्टावक्र : पूर्णतः अड़ल छथि। मिसियो भरि टस-मस नहि। हम, सब जतन क'क' देखि लेलहुँ। ...सुप्रभा! महर्षि हमरा सँ एना विमुख किएक छथि?

सुप्रभा : नहि अष्टावक्र! ओ अहाँ सँ विमुख नहि छथि। वस्तुतः अपन एकमात्र पुत्रीक विवाह ओ कोनो विपन्न ऋषि सँ नहि करब' चाहैत छथि। हुनक अभिष्ट कोनो राजकुमार छथि। पिता हमरा रानी बनब' चाहैत छथि।

अष्टावक्र : आ अहाँ? अहाँ की चाहैत छी?

सुप्रभा : हम की चाहैत छी से अहाँ केँ ज्ञात नहि?

(विराम)

अष्टावक्र : हम-अहाँ जे चाहैत छी से महत्त्वपूर्ण की राज-पाट?

सुप्रभा : ओ मानैत छथि जे हम बच्चा छी। अबोध छी। कोनो महत्त्वपूर्ण निर्णय स्वयं नहि क' सकैत छी।

(मोन मे जेना कोनो खुराफात आयल होनि से सोचि मुस्कुराइत छथि। स्वर आ मुद्रा नाटकीय भ' जाइत छै।)

ओ सोचैत छथि जे ऋषि तँ अध्ययन आ तपस्या मे लीन रहैत छथि। एहना मे ऋषि पत्नीक उपेक्षा होइत छै। ओकर उचित प्राप्य ओकरा नहि भेटैत छै।

अष्टावक्र : उपेक्षा। अहाँ से बुझैत छी?

सुप्रभा : उपेक्षा तँ नहि। मुदा देखू ने, ऋषि तँ किछुए दिनक उपरांत अपना पत्नी सँ निरपेक्ष भ' क' ज्ञान-ध्यान मे तल्लीन भ' जाइत छथि। एमहर पत्नी, मात्र आश्रमक अंश भ'क' रहि जाइत छथि बेचारी। हुनका लेल ऋषि ल'ग समय नहि रहैत छनि!

(अष्टावक्र आश्चर्य सँ सुप्रभा केँ देखैत छथि।)

अतएव! पिताश्रीक संकल्प छनि जे ओ हमरा लेल एहन वरक संधान करताह जे धन-धान्य सँ पूरित हो, हमर चिंता करए, जीवन पर्यंत हमरा सँ नेह करए। अहाँ ऋषि छी। तेँ एहि योजना सँ अहाँ पृथक भ' जाइत छी।

अष्टावक्र : कोनो राजकुमार हमरा सँ बढ़िक' प्रेम देत?

(सुप्रभा खिलखिला क' हँसैए।)

सुप्रभा : अरे रे! अहाँ तँ गंभीर भ' गेलहुँ। हम मात्र पिता श्रीक भावना सँ अहाँ केँ अवगत करौलहुँ अछि। एहि सँ अहाँ केँ हुनक प्रतिक्रियाक अर्थ लागि सकत।

अष्टावक्र : अहाँ हँसैत छी। हमरा तँ अबूझ-अथाह लगैत अछि। महर्षि सहमत नहि हेताह तँ हम की करब?

सुप्रभा : *(विश्वास सँ)* मात्र निश्चिंत रहब। हमरा अहाँक प्रेमक शक्ति सँ, पिताश्री केँ अपन धारणा बदल' पड़तनि।

(अष्टावक्र चुपचाप वृक्ष सब केँ देखैत रहैए।)

एना मुँह नहि लटकाउ। प्रसन्न रहू अष्टावक्र।

अष्टावक्र : कथी पर प्रसन्न रहू सुप्रभा। केना प्रसन्न रहू!...

सुप्रभा : शुभ आ संदुर सोचिक' प्रसन्न रहू। अहाँ मोन पाड़ू जे श्राप सँ अहाँ केना मुक्त भेलहुँ। स्वस्थ ओ सुदर्शन भ' गेलहुँ। अपन पिताश्री केँ आपस अनलहुँ। हमर पिताश्रीक सहमति सँ कतेको गुणा कठिन काज छल ओ।

(दुनू जेना अतीत मे देखैत हो। प्रकाश मे परिवर्तन। दृश्यांतर।)

(पाँचम दृश्य)

(मिथिला राजक मुख्य द्वार। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : अष्टावक्र आ श्वेतकेतु पहुँचि गेलाह मिथिलापुरी। नगरक शोभा देखैत, यज्ञ भूमि दिस विदा गेलाह।

(स्वर आ भंगिमा बदलि, द्वारपाल बनि जाइए।)

समस्त नागरिक केँ ज्ञात हो, महाराज विदेह जनक, नगर-भ्रमण हेतु बहरायल छथि। समस्त नागरिक सुनथु...

(अष्टावक्र आ श्वेतकेतुक प्रवेश)

द्वारपाल : हे यौ कूबड़ू महाराज! हटू बाट पर सँ कात होउ!

(दुनू गोटे ध्यान नहि दैत अछि।)

यौ आँखि-कान तँ अछि ने! महाराजक सवारी आबि रहल छनि तकर घोषणा नहि सुनलिऐ की?

(बाँहि पकड़ि कात कर' चाहैए। अष्टावक्र विरोध करैत छथि।)

अष्टावक्र : बाट पर चलबाक अधिकार मात्र महाराज लग सुरक्षित नहि छनि। हमरो ई अधिकार प्राप्त अछि।

द्वारपाल : की बजलहुँ?

अष्टावक्र : हम बजलहुँ जे बाट पर चलबाक अधिकार जतेक महाराज केँ छनि, ततबे हमरो अछि।

(दरबारी सबहक संग महाराज जनकक प्रवेश)

जनक : की बात छै? ई बालक द्वय के छथि?

(अष्टावक्र आ श्वेतकेतु महाराज केँ प्रणाम करैत छथि।)

अष्टावक्र : महाराज! अपनेक प्रहरी, हमरा लोकनि केँ बाट पर चल' सँ मना क' रहल छथि। हिनका एना करबाक अधिकार नहि छनि।

जनक : से अहाँ कोना कहि सकैत छी?

अष्टावक्र : महाराज! बाट पर चलबाक प्रथम अधिकार नेत्रहीन लोकनिक छनि। एकरा बाद विकलांग आ तखन महिला लोकनिक। एकरा बाद बोझ ल'क' जाइत लोकक अधिकार छै। राजाक अधिकार एकर बाद होइत छनि। परंतु जँ ब्राह्मण अबैत होथि तँ राजा सँ पहिने हिनकर अधिकार भ' जाइत छनि। तेँ अपने सँ पहिने बाट पर चलबाक अधिकार हमरा लोकनिक अछि।

जनक : वाह ! हम प्रभावित भेलहुँ। अहाँ लोकनि के छी ? अपन परिचय दिय'।

अष्टावक्र : महाराज हमरा लोकनि यज्ञक दर्शन कर' आ विद्वान लोकनिक विचार-विमर्श सुन' आयल छी।

जनक : परंतु ओ विमर्श तँ विद्वान लोकनिक लेल होइत छै। अहाँ लोकनि बालक छी। की बुझबै ?

श्वेतकेतु : हमसब ठीक बुझबै महाराज।

अष्टावक्र : हम श्रीमान वंदी सँ सेहो भेट कर' चाहब।

जनक : वंदी, बालक सँ विमर्श नहि करैत छथि। हुनक स्पष्ट निर्देश छनि जे विमर्शक समय बालक लोकनिक प्रवेश वर्जित रहय।

अष्टावक्र : परंतु हम तँ हुनका संग शास्त्रार्थ करबाक प्रण क' चुकल छी महाराज।

जनक : *(आश्चर्य सँ)* वंदी संग शास्त्रार्थ! अहाँ पराजित हैब आ वंदी अहाँ केँ नदी मे भसा देताह।

अष्टावक्र : *(हाथ जोड़ि)* महाराज ! अपन क्षमता सिद्ध करबाक अवसर देल जाओ। हम परास्त हैब तखने ने हमरा भसा देताह।

जनक : *(असमंजस मे)* परंतु अहाँ एखन नेना छी।

अष्टावक्र : वयस सँ हम नेना छी अवश्य! शरीर सँ आठ ठाम टेढ़ सेहो छी। परंतु बुद्धि के वयस आ रूप सँ संबंध नहि। सब वृद्ध व्यक्ति बुद्धिमान नहि होइत छथि। सब अल्पवयस्क मूर्ख नहि होइत अछि।

जनक : किंतु...

अष्टावक्र : कोनो संशय नहि महाराज! हमरा एक बेर अवसर देल जाओ।

(जनक अष्टावक्र केँ ध्यान सँ देखैत छथि।)

जनक : हम अहाँक आँखि मे दृढ़ निश्चय देखि रहल छी। हमरा संग आउ। हम अहाँ सँ किछु पुछ' चाहैत छी।

अष्टावक्र : हम तत्पर छी महाराज।

जनक : चलू। शास्त्रार्थ मंडप चलै छी।

(सबहक प्रस्थान)

(छठम दृश्य)

(शास्त्रार्थ मंडप। एक कात वंदी, दोसर कात अष्टावक्र आ श्वेतकेतु मध्य मे महाराज जनक बैसल। उद्घोषकक प्रवेश)

उद्घोषक : अष्टावक्र महाराज जनकक बीच बेस संवाद भेल। महाराज अष्टावक्रक

योग्यता सँ प्रभावित भेलाह। महापंडित वंदी सँ अष्टावक्रक शास्त्रार्थ निश्चित भेल।

(उद्घोषकक प्रस्थान)

वंदी : देखू! की विचित्र परिस्थिति अछि। एक तँ बालक दोसर आठ ठाम टेढ़! तकरा संग शास्त्रार्थ करबाक आदेश!

(पार्श्व सँ सामूहिक हँसबाक स्वर)

अष्टावक्र : वक्रोक्ति आ हास सँ कोनहु लाभ नहि पंडित प्रवर। शास्त्रार्थक अपेक्षा अछि। तत्पर होउ...

वंदी : कूब्बड़ बालक संग शास्त्रार्थ। हा...हा...हा...

(पार्श्व सँ सामूहिक हँसी।)

अष्टावक्र : हँसब बाद मे। मध्यस्थ के हेताह, पहिने से निश्चित करू।

वंदी : मध्यस्थो राखब। हा...हा...हा...। राखू। जनिका चाही। एहि दोसर

(श्वेतकेतु केँ देखबैत)

केँ मध्यस्थ बनायब।

अष्टावक्र : महाराज जनक, एहि शास्त्रार्थक मध्यस्थ होथि, से हमर आग्रह!

(नेपथ्य सँ 'जय हो, जय हो'क ध्वनि)

जनक : हम मध्यस्थता स्वीकार करैत छी। होउ। आरंभ करू। प्रथम प्रश्नक अधिकार अतिथिक छनि। प्रस्तुत होउ।

(संगीत। शास्त्रार्थ आरंभ होइत अछि। क्रमशः वंदी अस्तव्यस्त होइत छथि। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : शास्त्रार्थ चलैत छै। शंका आ समाधान। खंडन आ मंडन। प्रश्न आ प्रतिप्रश्न। क्रमशः वंदी अस्तव्यस्त होइत छथि। अष्टावक्रक पलड़ा भारी सँ भारी होइत जाइत छनि। प्रश्नक प्रहार सँ वंदी निरुत्तर भ' जाइत छथि।

(समवेत आश्चर्यक स्वर। उद्घोषकक प्रस्थान)

जनक : बालक अष्टावक्र केँ विजयी घोषित कैल जाइत अछि। महापंडित वंदी परास्त भेलाह।

(समवेत आनन्दक स्वर।)

समवेत : नीक भेलनि।

बड़ अतत्तह करैत छलाह।

पराजित पंडित केँ पानि मे भसबैत छलाह।

आब अपने पार छनि।

जनक : महापंडित वंदी पराजित भ' जेताह। उपन्यास सन लगैत अछि। आश्चर्य लगैत अछि। परंतु सत्य तँ यैह थिक। आब परंपरानुसार विजयी पंडित बालक अष्टावक्र केँ अधिकार छनि जे ओ पराजित पंडितक लेल दंड विधान करथु।

अष्टावक्र : जहिना ई पराजित पंडित केँ जल-समाधि दैत छलाह हिनको संग सैह कैल जाए!

(भावुक होइत)

ओहि विद्वान सब मे सँ हमर पिता सेहो छलाह।

(वंदी मुस्कुराति छथि।)

वंदी : हमरा लेल ई कोन दंड भेल। हम वरुण-पुत्र छी। पानिए तँ हमर घर-दुआरि अछि।

अष्टावक्र : तखन तँ हमर पिता केँ अहाँक घर मे सुरक्षित हेबाक चाहियनि।

वंदी : निश्चित सुरक्षित छथि।

श्वेतकेतु : अन्य विद्वान सब सेहो?

वंदी : हँ! समस्त विद्वान, जनिका पानि मे भसेबाक घोषणा भेलै, सब सुरक्षित छथि, स्वस्थ छथि, प्रसन्न छथि।

जनक : महापंडित वंदी!

वंदी : आज्ञा महाराज!

जनक : ओहि रहस्य केँ उद्घाटित करबाक समय आबि गेल अछि!

वंदी : हँ महाराज!

अष्टावक्र : रहस्य?

वंदी : हमर पिताश्री एक यज्ञक संकल्प लेलनि। एहि लेल किछु उद्भट विद्वानक आवश्यकता छलनि। शास्त्रार्थक बहन्ने, हुनका लोकनि केँ जल-समाधिक ब्याजें एहि आवश्यकताक पूर्ति कैल गेल। यज्ञक समापन भ' चुकल अछि। कोनहु क्षण ओ विद्वान लोकनि एत' उपस्थित होब'वला छथि...हे लिअ'। ओ लोकनि आबि गेलाह!

(विद्वान सबहक आगमन। अष्टावक्र केँ हुनक पिता चिन्हि जाइत छथि। अष्टावक्र अपन पिताक पैर पर खसैत छथि। ऋषि कहोद, पुत्र केँ छाती सँ लगबैत छथि।)

कहोद : अष्टावक्र!

अष्टावक्र : आज्ञा पिताश्री।

कहोद : हम अहाँ सँ अतिशय प्रसन्न छी। जाउ! एहि सरिता मे स्नान करू।

अष्टावक्र : प्रसन्न छी तेँ स्नान क' लिअ। प्रसन्नता सँ स्नानक कोन संबंध?

कहोद : तर्क नहि पुत्र! आज्ञाक पालन करू।

अष्टावक्र : जे आज्ञा पिताश्री!

(अष्टावक्र पानि मे पैसि, डुबकी लगबैत छथि। उपर अबिते ओ सोझ आ स्वस्थ भ' जाइत छथि। चारू भर सँ आश्चर्य मिश्रित स्वर।)

अष्टावक्र : ई केहन चमत्कार पिताश्री। सरिताक जलक महिमा की अहाँक आशीर्वाद।

कहोद : कने-मने दुनू।

जनक : आजुक दिन चमत्कारक दिन अछि। एतेक रास महापंडित लोकनि आइ एत' एक संग छथि। अल्पवयस्क होइतहुँ ज्ञानक महासागर छथि अष्टावक्र आ जे क्षण भरि पहिने आठ ठाम टेढ़ छलाह से एक स्वस्थ, सुदर्शन रूप मे आबि गेलाह। परंतु हिनक नाम अष्टावक्रे रहत आ युग-युग तक ई जानल जेताह।

(पार्श्व सँ साधु-साधुक समवेत स्वर आ पुष्पवर्षा। सब विमुग्ध छथि। दृश्यांतर।)

(सातम दृश्य)

(वन प्रदेश। उद्घोषकक प्रवेश। हिनक संभाषणक क्रम मे अष्टावक्र आबि गाछक जड़ि मे बैसैत छथि।)

उद्घोषक : हँ! बेस कठिन छल महापंडित वंदी केँ शास्त्रार्थ मे परास्त करब। अष्टावक्र तकरा सहजता सँ क' बैसलाह। पिता भेटलथिन। शरीरक अवगुण बिला गेलनि। महाराज जनक सँ मारते रास उपहार भेटलनि। माता सुजाता आ मातामह महिर्ष उद्दालकक प्रसन्नताक बखान संभव नहि। जीवनक ओहि सुखद क्षणक स्मृति ठोर पर मुस्की बनि पसरि जाइत छनि। अष्टावक्र खुजिक' मुस्कुराइत छथि।

(उद्घोषकक प्रस्थान। सुप्रभा मारतेरास फूल सँ आँचर भरने प्रवेश करैत छथि। अष्टावक्र मुस्कुराइत देखैत छथि।)

सुप्रभा : अहाँक मुस्की बड़ मोहक अछि। हरदम एहिना मुस्कुराइत रहू। हमरा तँ होइत छल जे अहाँ मुस्किएनाइए बिसरि गेल छी।

(अष्टावक्र प्रेम सँ सुप्रभा केँ देखैत छथि।)

अष्टावक्र : हम प्रातः काल पुनः महर्षि सँ भेट करबनि। भ' सकैए, एहि बेर ओ मानि जाथि।

(सुप्रभा फूल सँ अष्टावक्रक शृंगार करैत श्वेत कमलक माला पहिरबैत छथि।)

सुप्रभा : हमर समस्त शुभकामना अहाँक संग रहत, एहि पुष्प माल्यक रूप मे।

(दुनू एक-दोसरा केँ देखैत छथि। दृश्यांतर।)

(आठम दृश्य)

(प्रातः काल। महर्षि वदन्यक आश्रम। महर्षि ध्यान मग्न। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : प्रातः काल। महर्षि वदन्यक आश्रम। ध्यान तोड़ैत महर्षि नेत्र खोलैत छथि तँ देखैत छथि, अष्टावक्र केँ एम्हरे अबैत। गरदनि मे श्वेत-कमलक माला। आँखि मे आत्म विश्वास भरल। महर्षि विरक्त होइत छथि।

(उद्घोषकक प्रस्थान। अष्टावक्रक प्रवेश।)

(अष्टावक्र, महर्षि केँ सविनय प्रणाम करैत छथि।)

वदन्य : अहाँ पुनः किऐ अयलहुँ ? किएक हमर समय नष्ट क' रहल छी अहाँ ? की हम स्पष्टतः नहि कहि चुकल छी जे अहाँ हमर पुत्रीक योग्य नहि छी ?

अष्टावक्र : एक बेर हमरा स्वयं केँ योग्य सिद्ध करबाक अवसर तँ दिय'! हमर परीक्षा ल' लिय!

वदन्य : की परीक्षा देब अहाँ ?

अष्टावक्र : जे अपनेक आदेश हो!

वदन्य : एकबेर सोचि लिअ'!

अष्टावक्र : सोचनहि छी महर्षि। अपने हमर परीक्षा लेल जाओ।

वदन्य : बेस! हमर शर्त अछि, अहाँ एक वर्ष धरि सुप्रभा सँ भेट नहि करब!

अष्टावक्र : सुप्रभा सँ भेट नहि...

वदन्य : एतबहि मे विचलित भ' गेलहुँ।

अष्टावक्र : (हृदय केँ मजबूत करैत) हमरा स्वीकार्य अछि।

वदन्य : तखन पूरा बात सुनू...अहाँ सुप्रभा केँ देखियो क' नहि देखब। बाट पर

भेट हैत तँ नहि चीन्हब। ओ बजौतीह, परंतु अहाँ नजि बाजब।...एहिना करैत एक बरख बिताउ आ तखन हमरा ल'ग आउ। हम अहाँक प्रस्ताव पर विचार करब।

अष्टावक्र : अशेष धन्यवाद महर्षि। ई समाचार, सुप्रभा केँ कहि अबियनि?

वदन्य : कथमपि नहि। सुप्रभाक लेल, अहाँक अस्तित्व एहि क्षण सँ विलुप्त भ' रहल अछि। एक बरख लेल।

अष्टावक्र : एहि क्षण सँ?

वदन्य : हँ!

अष्टावक्र : तखन अपने एक टा कृपा कैल जाओ! एखन जे निश्चित भेल अछि तकर सूचना सुप्रभा केँ देल जाओ।

वदन्य : कथमपि नहि। ई बात हमरा-अहाँक मध्य टा रहत।

अष्टावक्र : हम बरख भरि हुनका सँ अपरिचित भ' जायब। भ' सकैत अछि ओ हमरा लेल किछु अन्यथा सोचि लेथि?

वदन्य : अहाँ आ हुनका मे स्नेह अछि, सैह कहैत छी ने अहाँ?

अष्टावक्र : हँ महर्षि!

वदन्य : तखन चिंता कथीक? स्नेह मे अन्यथाक कोन स्थान? आ जँ अन्यथा भेल तखन तँ ओ स्नेह नहि।

अष्टावक्र : स्नेह अछि आ रहत महर्षि। हम प्रेमक एहि परीक्षा मे उत्तीर्ण हैब। आब, एक बरखक उपरांते हम अपनेक दर्शन करब।

(प्रणाम क'क' प्रस्थान।)

वदन्य : *(अष्टावक्र केँ जाइत देखैत!)* एहि परीक्षा मे उत्तीर्ण हैब तखन ने आयब! देखा चाही! समय चमत्कार करैत अछि। विशेषक' युवा हृदय मे।

(दृश्यांतर)

(नवम दृश्य)

(वन-प्रदेशक बाट। महर्षि वदन्यक आश्रम सँ अबैत अष्टावक्र स्वगत बाजि रहल छथि।)

अष्टावक्र : बड़ कठिन परीक्षा अछि। वर्ष भरि सुप्रभा सँ अनजान भ'क' रहब! एकाएक अपरिचित भ' जायब। सुप्रभा एहि परीक्षा सँ अनभिज्ञ छथि। हमर व्यवहार विचित्र लगतनि हुनका। हृदय मे क्लेश हेतनि। हुनका हेतनि जे हम विमुख भ' गेलियनि।

(पदचाप केँ अकानि जोर सँ चल' लगैत छथि। दौड़ैत सुप्रभाक प्रवेश।)

सुप्रभा : अष्टावक्र! थम्हू अष्टावक्र। एना पड़ायल किएक जाइत छी। पिताश्री सँ भेट भेल? की कहलनि ओ?

(अष्टावक्र अपन गति बढ़ा दैत अछि।)

अष्टावक्र! अहाँ एना किऐ क' रहल छी। थम्हू ने! हमरा दौड़ल नहि होइत अछि। अष्टावक्र! अष्टा...

(ठोकर लगैत छनि। खसि पड़ैत छथि।)

आह!

(अष्टावक्र एक क्षण ठमकैत छथि। तुरंत हृदय केँ मजबूत करैत तेजी सँ प्रस्थान करैत छथि।)

अष्टावक्र! अष्टावक्र!

(आश्चर्य आ पीड़ा मे देखैत रहि जाइत छथि।)

(दृश्यांतर।)

(दसम दृश्य)

(महर्षि वदन्यक आश्रम। महर्षि वदन्य शांत चित्त सँ टहलि रहल छथि। हहाएल-फुहायल अष्टावक्रक प्रवेश।)

वदन्य : आबि गेलहुँ अहाँ। भ' गेल परीक्षा देल?

अष्टावक्र : नहि महर्षि। परीक्षा तँ अवश्य देब।

वदन्य : तखन? वर्षक उपरांत आबक बात छल। एक्कहि प्रहरक उपरांत अयबाक कारण?

अष्टावक्र : एक टा जिज्ञासा अछि।

वदन्य : केहन जिज्ञासा अष्टावक!

अष्टावक्र : की हम एक बरख लेल आन ठाम जा सकैत छी?

वदन्य : *(व्यंग्य सँ)* कायर जकाँ पलायन करब? की अहाँक प्रेम, कसौटी पर कसेबा सँ घबड़ा रहल अछि? हम से जनैत छलहुँ। ई प्रेम क्षणिक उन्माद अछि। गंभीर भावना नहि। यैह कारण अछि जे हम अनुमति नहि देलहुँ।

अष्टावक्र : आह! अपराध भेल। जिज्ञासा, हमर प्रेमक प्रति अपराध भेल। क्षमा प्रार्थी छी। हम एत्तहि रहब। एत्तहि रहब महर्षि। कत्तहु नहि जायब।

(सुप्रभाक प्रवेश। अष्टावक्र ओकरा देखैत घुमि जाइत छथि। तेजी सँ प्रस्थान करैत छथि। सुप्रभा केँ अतिशय आश्चर्य लगैत छनि। ओ व्याकुल भ' जाइत छथि। पिता दिस देखैत छथिन। ओहो अलक्षित भ' गेल छथि।)

सुप्रभा : अष्टावक्र मे ई केहन परिवर्तन! अपरिचित सनक व्यवहार क' रहल छथि। ई की भेलै? अष्टावक्र तँ देखाइत नहि छथि। देखाइत छथि तँ एना पड़ाइत छथि जेना मरखाहा पाड़ा खेहारैत होनि। तखन की करू? हँ। पिताश्री सँ पूछैत छियनि! *(घुमिक' सोर करैत छथि।)* पिताश्री! पिताश्री!

वदन्य : **(प्रकाश मे अबैत।)** हँ पुत्री! की कहैत छी?

सुप्रभा : पिताश्री, अष्टावक्र अहाँ सँ भेट कर' आयल रहथि?

वदन्य : एखनहु आयल छलाह!

सुप्रभा : प्रातः काल?

वदन्य : हँ! प्रातः काल सेहो आयल छलाह।

सुप्रभा : की वार्तालाप भेल? हम जानि सकैत छी पिताश्री?

वदन्य : अवश्य पुत्री। अही सँ संबंधित अछि।

सुप्रभा : हम उत्कंठित छी पिताश्री।

वदन्य : ओ अहाँक संग विवाहक अनुमतिक प्रार्थी छथि। हम कहलियनि जे ओ सुस्थिर भ'क' अपन भावना सँ अवगत होथु। विचार करथु।

सुप्रभा : विचार? आबहु विचार करक छनिए। जँ सैह तँ करथु विचार? हमरा सँ दूर किऐ पड़ाइत छथि? अपरिचित सन व्यवहार किएक करैत छथि।

(महर्षि पुनः अलक्षित भ' जाइत छथि।)

की अष्टावक्रक विचार अस्थिर अछि? अपना हृदयक बात बुझ' मे आर समय चाहियनि हुनका? की प्रेम आ विवाहक विषय मे हुनकर बात सब ओहिना छल।

(घुर-बहुर करैत छथि।)

की ओ हमरा बिसर'क ओरिआओन मे छथि? हुनक भावना मे परिवर्तन भ' रहल छनि? नहि! ई हम की सोच' लगलहुँ? परंतु ओ हमर कोनो खोज-खबरि किऐ नहि लैत छथि। हमरा किऐ अबडेरैत छथि? हमर सोझाँ पड़ितै किएक घुमि जाइत छथि? किएक पड़ाइत छथि? की हुनक

आकर्षण कोनो दोसरक प्रति तँ ने भ' गेलनि ? आह! हम फेर अनर्गल बात सोच' लगलहुँ!... मुदा हम करू की ? की करू हम ?

(घुर-बहुर करैत छथि।)

की, ई कोनो योजना तँ नहि! पिताश्रीक कोनो शर्त तँ नहि जे हमरा सँ सायास अज्ञात राखल जा रहल हो ? हँ! यैह बात छै। निश्चित यैह बात छै। अष्टावक्रक परीक्षा लेल जा रहल छनि! परंतु एकर अविध की छै ? ...आब ई अवधि जे हो...हम अष्टावक्रक सहयोग करबनि! हम बहरेनाइ कम क' देब। हमरा हृदय मे तँ अष्टावक्र छथिहे। तखन कोन बात! हुनके देखब! हुनके सँ बात करब! परीक्षाक ई अवधि केँ हम बिता लेब...

(संगीत आ रहस्यमय प्रकाश जाहि मे सुप्रभा आ अष्टावक्र फराक-फराक दहाइत सन लगैत छथि। दृश्यांतर।)

(एगारहम दृश्य)

(महर्षि वदन्यक आश्रम। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : बीत' लागल परीक्षा अवधि। दिन पर दिन आ राति पर राति। अष्टावक्र आ सुप्रभा। अपन-अपन कर्तव्य पर दृढ़। हृदयक व्याकुलता के शमन करैत। अंततः बीतल बारह मास, तीन सौ पैंसठि दिन आ राति। पूर्ण भेल परीक्षाक अवधि।

(महर्षि वदन्य, आश्रम मे अष्टावक्रक प्रतीक्षा करैत। उद्घोषकक प्रस्थान। प्रसन्नचित्त अष्टावक्रक प्रवेश।)

अष्टावक्र : प्रणाम महर्षि!

वदन्य : आयुष्मान भव' वत्स!

अष्टावक्र : महर्षि! हम अपनेक आज्ञाक अक्षरशः पालन केलहुँ ने ?

वदन्य : हँ वत्स! एहि मे कोनहु संदेह नहि!

अष्टावक्र : *(प्रसन्न होइत)* तखन, विवाहक अनुमति छै ?

वदन्य : एखन नहि वत्स!

अष्टावक्र : महर्षि!

वदन्य : यद्यपि एहि मे अहाँक कोनहु टा हाथ नहि से हम निश्चित छी। तथापि ई परीक्षा अहाँ सुप्रभाक सहयोग सँ उत्तीर्ण भेलहुँ अछि!

अष्टावक्र : परंतु...

वदन्य : कहलहुँ ने! अहाँ शर्तक अक्षरशः पालन केलहुँ। परंतु सुप्रभा संभवतः

अंदाज लगा लेलनि। ओ योजना केँ गमि लेलनि आ सायास आश्रम सँ बहरेनाइ कम क' देलनि।

अष्टावक्र : ई तँ स्वाभाविके छै महर्षि। ई हमरा लोकनिक प्रेमक प्रमाण अछि!

वदन्य : मानल। परंतु सुप्रभाक सहयोग अहाँक परीक्षा केँ सहज क' देलक। अतएब एकर क्षतिपूर्ति कर' पड़त!

अष्टावक्र : आज्ञा देल जाओ!

वदन्य : अहाँ एक मास तक उर्वशीक संग, हुनका भवन मे रहिक' आउ।

अष्टावक्र : उर्वशी!

वदन्य : जनैत छी ने? उर्वशी, स्वर्गक प्रमुख अप्सरा थिकीह।

अष्टावक्र : जे आज्ञा।

वदन्य : तखन जाउ! एहि क्षण प्रस्थान करू।

अष्टावक्र : प्रस्थान सँ पूर्व, सुप्रभा सँ भेट कर'क अनुमति देल जाओ।

वदन्य : कथमपि नहि!

अष्टावक्र : मात्र एक क्षणक लेल। हुनका देखब आ प्रस्थान करब।

वदन्य : कहलहुँ नहि तँ नहि!

(महर्षि घुमि जाइत छथि। अष्टावक्र एक क्षण ठाढ़ भेल देखैत छथि। पुनः प्रस्थान करैत छथि। चलैत-चलैत बजैत छथि।)

अष्टावक्र : अद्‌भुत बात क' रहल छथि महर्षि। पुनः नव बात! उर्वशी सँ भेट करू! हुनका संग मास भरि वास करू। बेस! सेहो करैत छी। हेतीह उर्वशी सुन्दरतम अप्सरा! ताहि सँ हमरा की? हमर उर्वशी, मेनका, रंभा...सब सुप्रभा छथि। मात्र सुप्रभा।

(कहैत प्रस्थान। दृश्यांतर।)

(बारहम दृश्य)

(रोशनी आ अन्य मंच-उपकरण सँ उर्वशीक महलक दृश्य। संगीत आ नृत्य। उद्‌घोषकक प्रवेश।)

उद्‌घोषक : उर्वशीक महल अर्थात स्वर्गक सर्वोत्तम स्थल मे सँ एक। जकर उपमा नहि, जकर बखानक सामर्थ्य वाणी मे नहि। तेहन अनुपम स्थल। जत' सब किछु नीक, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ। हरदम आनन्द, उल्लास, हर्ष, नृत्य-संगीत, सौंदर्य...

(उद्घोषकक प्रस्थान। अष्टावक्रक प्रवेश। नृत्य छोड़ि उर्वशी हिनक स्वागत करैत छथि।)

उर्वशी : अहाँक स्वागत मुनिकुमार! हमर परम सौभाग्य जे अहाँ सन जगतख्यात ज्ञान-गुण-सागरक चरण रज सँ हमर अकिंचन भवन पवित्र भेल।

(अष्टावक्र अचंभित आ सम्मोहित अछि।)

अहाँ केँ पाबि हम धन्य-धन्य भेलहुँ। हमर जीवन सार्थक भ' गेल।

अष्टावक्र : की अलौकिक दृश्य। केहन अनुपम सौंदर्य!

उर्वशी : आउ मुनिकुमार। भवनक अंत:भाग मे आउ!

(नृत्य-संगीत। बदलैत प्रकाश! उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : उर्वशी आ अष्टावक्र! अष्टावक्र आ उर्वशी। दुनू संग-संग! मास भरि तक! नृत्य आ संगीत! लागल जेना चुटकी बजबैत बीति गेल एक मास!

(उर्वशी आ अष्टावक्र! उद्घोषकक प्रस्थान)

उर्वशी : अहाँ प्रसन्न छी ने अष्टावक्र!

अष्टावक्र : हम अतिशय प्रसन्न छी सुंदरी!

उर्वशी : अहाँ कोनो मनोकामना केँ पूरा कर' आयल रही एत'?

अष्टावक्र : हँ, अप्सराश्रेष्ठ! हमरा हृदयक सब सँ प्रिय कामना!

उर्वशी : बेस! एक मासक अभीष्ट अवधि बीति गेल। काल्हि अहाँक मनोकामना हृदयक सब सँ प्रिय कामनाक पूर्ति हैत।

अष्टावक्र : *(प्रसन्न होइए)* काल्हिए।

उर्वशी : हँ मुनिकुमार! काल्हिए। मात्र एक दिनक प्रतीक्षा आर!

अष्टावक्र : अवश्य! अवश्य!

उर्वशी : तँ एखन दिय' आज्ञा।

अष्टावक्र : काल्हुक प्रत्याशा मे!

उर्वशी : अवश्य! अवश्य!

(उर्वशीक प्रस्थान। चारू भर घुमैत अष्टावक्र। उद्घोषक गबैत अबैए। प्रकाश मे तेजी सँ परिवर्तन होइत रहैत छै।)

उद्घोषक : *बीतल रजनी, ज्यों युग बीतए*
दिन केर आगम भेल।
मनक काम्य जे क्षण ने पूरय
मनुआ रटिते गेल॥
तिल-तिल क' दिन के अवसानो

भेल ने अएली सजनी।
पुनः रएनि, पुनि उगि गेल चंदा
अएली अपरूप रमणी॥

(विवाहक सज्जा मे उर्वशीक प्रवेश। अष्टावक्र उर्वशी केँ देखिक' चमत्कृत होइत अछि।)

अष्टावक्र : आह! उर्वशी! अहाँ सुंदरतम छी। एखन तँ अहाँक सौंदर्यक तुलना कथू सँ नहि भ' सकैत अछि।

उर्वशी : हम अहाँक मनोकामना पूर्ण कर' चाहैत छी मुनिकुमार!

अष्टावक्र : *(सुप्रभा केँ सोचैत)* हमर मनोकामना!

उर्वशी : अहाँ हमरा सँ विवाहक कामना रखैत छी ने! आइ, हमर-अहाँक विवाह होयत।

अष्टावक्र : हमर-अहाँक विवाह! नहि अप्सरा श्रेष्ठ! हमर मनोकामना ई नहि।

उर्वशी : हमरा सँ विवाहक कामना नहि। अहाँ आजन्म कुमारव्रती तँ ने छी?

(हँसैत अछि)

अष्टावक्र : हम विवाह करब। परंतु अहाँ संग नहि।

उर्वशी : की हमरो सँ बेसी सुंदर कोनो स्त्री छथि!

अष्टावक्र : निःसंदेह! अहाँक सौंदर्य सर्वश्रेष्ठ अछि। जीवन मे एहन सौंदर्य हम प्रथमे-प्रथम देखलहुँ। हम सोचियो नहि सकैत छी जे अहाँ सँ बेसी सुंदर आ आकर्षक कोनो दोसर स्त्री एहि ब्रह्माण्ड भरि मे हेतीह!

उर्वशी : तखन हमरा संग परिणय-प्रस्ताव सँ अस्वीकार किऐ?

अष्टावक्र : किएक तँ हम अहाँ सँ प्रेम नहि करैत छी।

उर्वशी : की ई संभव अछि? अहाँ परिहास क' रहल छी।

अष्टावक्र : नहि हे अतुलनीय सौंदर्यवती! हम सत्य बाजि रहल छी।

उर्वशी : अहाँ हमरा पीड़ा द' रहल छी मुनिकुमार।

अष्टावक्र : क्षमाप्रार्थी छी। अहाँ केँ कष्ट देबाक कल्पना स्वप्न पर्यंत मे संभव नहि हमरा लेल।

उर्वशी : तखन अहाँ हमर चिंता-भावना किऐ नहि बुझि रहल छी?

अष्टावक्र : हम आभारी छी हे सौंदर्यक देवी।

उर्वशी : हम अहाँक विद्वता आ चरित्र सँ विमोहित छी। यैह कारण छल जे मास भरि हम अहाँक संग रहलौं।

अष्टावक्र : हमरा तँ होइत छल जे महर्षि वदन्यक आदेश सँ अहाँ एना केलौं!

उर्वशी : *(बात मोड़ैत)* के छथि ओ सुंदरी जनिका सँ अहाँ प्रेम करैत छी?

अष्टावक्र : सुप्रभा! महर्षि वदन्यक पुत्री।

(उर्वशी उत्तेजना मे टहलैत छथि।)

उर्वशी : *(स्वगत)* आइ तक एना केओ नहि केलक। जे हम कहल सैह भेल। देवराज इन्द्र पर्यंत जकरा सँ असहमत नहि होइत छथि तनिका ई मुनिकुमार अस्वीकार क' रहल छथि! अविश्वसनीय लगैत अछि। *(अष्टावक्र सँ)* मुनिकुमार! अहाँ भूल क' रहल छी से जानि लिअ!

अष्टावक्र : भूल?

उर्वशी : ओ मुनिकुमारी अहाँक उपयुक्त नहि छथि! ...की हमरा सँ सुन्दरी छथि?

अष्टावक्र : नहि! अहाँ सन सौंदर्य किनको नहि भ' सकैत छनि!

उर्वशी : हमरा सन लावण्य, आकर्षण, प्रतिभा आ वैभव छनि हुनका मे?

अष्टावक्र : नहि! नहि छनि।

उर्वशी : तखन अहाँ महान भूल क' रहल छी से मानि लिअ।

अष्टावक्र : क्षमाप्रार्थी छी। हम नहि मानि सकब।

उर्वशी : हमर त्याग क'क' हुनका अपनाब' चाहैत छी! की द' सकतीह ओ अहाँ केँ?

अष्टावक्र : अपन संपूर्ण प्रेम। आर की चाही?

उर्वशी : एक बेर आर सोचि लिअ अष्टावक्र! अहाँ हमरा संग विवाह करैत छी तँ देवराज पर्यंत केँ अहाँक भाग्य सँ ईर्ष्या हेतनि। अहाँ ब्रह्माण्डक समस्त सुख-सुविधा, हमर अंतहीन वैभवक स्वामी हैब!

अष्टावक्र : हम सामान्य ऋषि पुत्र छी अप्सरे! सांसारिक सुख-वैभव मे हमरा रंच-मात्रक रुचि नहि। हम अहाँक प्रति कृतज्ञ छी उर्वशी। अहाँ आ अहाँक संग बिताओल ई समय हम आजीवन मोन राखब। परंतु हमर आवास अछि पृथ्वीलोक। हम ओत' आपस जाए चाहैत छी। हमरा आज्ञा दिय'।

(प्रस्थान करैत अछि। पुनः घुमिक' ठाढ़ होइत अछि आ आदर भाव सँ मुस्कुराइत अछि।)

अहाँ हरदम प्रसन्न रही आ एहिना सुंदर बनल रही!

(घुमिक' तेजी सँ प्रस्थान। दृश्यांतर।)

(तेरहम दृश्य)

(महर्षि वदन्यक आश्रम! चिंतित दुखी आ उद्विग्न सुप्रभा आश्रमक दुआरि पर बैसलि।)

सुप्रभा : ई की भ' रहल अछि हमरा संग। भरि वर्ष हमरा सँ दूर भगैत रहलाह अष्टावक्र। परंतु कात-करोट सँ देखि तँ लैत छलियनि। आब तँ एकदम निपत्ता भ' गेल छथि। एक मास सँ कत्तहु नहि देखाइत छथि! सब ठाम ताकि अयलहुँ! केओ नहि जनैत अछि जे कत' गेलाह ?...कत' गेलाह अष्टावक्र ? हँ! पिताश्री केँ ज्ञात हेतनि! हुनकहि सँ पुछैत छियनि।

(सोर करैत)

पिताश्री! पिताश्री!

(वदन्यक प्रवेश)

वदन्य : *(प्रवेश करैत)* की सुप्रभा ? की भेल पुत्री ?

सुप्रभा : पिताश्री ? अहाँ केँ ज्ञात अछि ? अष्टावक्र कत' गेलाह ?

वदन्य : हँ पुत्री। हम जनैत छी जे अष्टावक्र एखन कत' छथि!

सुप्रभा : कत' पिताश्री ?

वदन्य : स्वर्ग लोक मे।

सुप्रभा : *(भय सँ चीत्कार करैत)* पिताश्री!!

वदन्य : ओ सदेह स्वर्गलोक गेलाह अछि पुत्री! एखन ओ उर्वशीक महल मे छथि!

सुप्रभा : उर्वशी! ओ अप्सरा। हुनका ओत' किएक गेलाह अष्टावक्र ?

वदन्य : *(सोचबाक अभिनय करैत)* भ' सकैए, विगत वर्ष मे ओ उर्वशीक सान्निध्यक लेल यत्न केने होथि। उर्वशी प्रसन्न भेल हेथिन आ दुनूक विवाह भ' गेल हो!

सुप्रभा : उर्वशी सँ विवाह! नहि! अष्टावक्र एना नहि क' सकैत छथि!

वदन्य : किऐ नहि क' सकैत छथि ? पूर्व मे कतेको ऋषिगण अप्सरा सँ विवाह केने छथि! ताहि पर सँ उर्वशी तँ अप्सरा मे अग्रगण्य छथि!

सुप्रभा : हमरा विश्वास नहि भ' रहल अछि।

(दुनू हाथ सँ मुँह झाँपि लैत छथि। किछु क्षणक उपरांत माथ ऊपर उठबैत छथि।)

हम किएक ने जानि सकलहुँ ? अवस्से, हुनका संग किछु एहन-ओहन, भ' गेलनिहें!

(निराशा मे पिता केँ देखैत छथि।)

वदन्य : सुप्रभा! पुत्री स्वयं केँ आर कष्ट नहि दिय'। जे अहाँ केँ बिसराक' ककरो अनका संग चलि गेल, तकरा लेल अपन जीवन नष्ट जुनि करू। हम, अहाँक लेल स्वयंवरक आयोजन करब। समस्त राजा लोकनि केँ आमंत्रित करबनि। अहाँ जनिका संग चाहब, विवाह करब। रानी बनिक' राज करब। सुखी रहब।

सुप्रभा : नहि! नहि पिताश्री *(आँखि मे नोर भरि जाइत छनि।)* हम आन किनको संग विवाह नहि क' सकब!

वदन्य : तखन अहाँ की करब?

सुप्रभा : हम अष्टावक्रक प्रतीक्षा करब!

अष्टावक्र : *(नेपथ्य सँ)* प्रतीक्षाक आवश्यकता नहि सुप्रभा!

(प्रवेश क')

हम अहाँक सम्मुख छी!

(सुप्रभा आ महर्षि आश्चर्यचकित होइत छथि।)

अष्टावक्र : प्रणाम महर्षि! हम अपनेक आज्ञाक अक्षरश: पालन कैल। आर कहल जाओ। हम की करी?

वदन्य : *(खुशी आ आश्चर्य सँ)* अष्टावक्र! अहाँ उर्वशी सँ विवाह नइँ केलौं?

अष्टावक्र : हम सुप्रभा सँ विवाहक लेल प्रयत्नशील छी महर्षि! जनिका सँ हम प्रेम करैत छी। आब अपनेक की आदेश छै?

(महर्षि वदन्य भावुक भ' जाइत छथि।)

सुप्रभा : अहाँक आँखि मे नोर? नहि पिताश्री! हम आ अष्टावक्र कखनहु अपनेक इच्छाक विपरीत कार्य नहि करब।

वदन्य : हम अनुमति दैत छी पुत्री! एही क्षण, अहाँ संग अष्टावक्रक विवाह होयत। अहाँ एहि वृद्ध पिता केँ छोड़ि आइ चलि जायब। ई तकरे नोर अछि! पुत्रीक विवाह, पिताक लेल हर्ष आ पीड़ा एक्कहि संग अनैत अछि।... जाउ! श्वेत कमल-माल्य ल'क' आउ!

(सुप्रभा दौड़िक' दू टा माला अनैत छथि। महर्षिक चरण पर रखैत छथि। महर्षि दुनू केँ एक-एक टाक' माला दैत छथि। स्वयं मंत्रोच्चारण करैत छथि। दुनू एक-दोसरा केँ माला पहिरबैत छथि। महर्षि, अष्टावक्रक हाथ मे, सुप्रभाक हाथ दैत छथि। मंत्रोच्चारणक स्वर। संगीत। दृश्यांतर।)

(चौदहम दृश्य)

(वन-प्रदेश। सुप्रभा आ अष्टावक्र एक-दोसराक फूल सँ श्रृंगार करैत छथि। उद्घोषकक प्रवेश।)

उद्घोषक : जहिना स्वर्ण मे आगि सँ आबए आर निखार
प्रेम, परीक्षा दैत अछि, तँ होइछ आर प्रगाढ़।
प्रेम सँ बढ़िक' भाव ने दोसर, महिमा अपरंपार
आउ करी सब मिलि एक स्वर सँ, प्रेमक जय-जयकार!
नमस्कार!

(संगीत! यवनिका!)

(अंतिका, जुलाइ-सितंबर, 2014)

●●●

मूल्य : ₹ 690/-

ISBN 978-93-88799-77-5

9 789388 799775

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)